संजीवनी

(कशमीरी - काव्य भजन संग्रह)

आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट "गरीब"
'भाई जी'
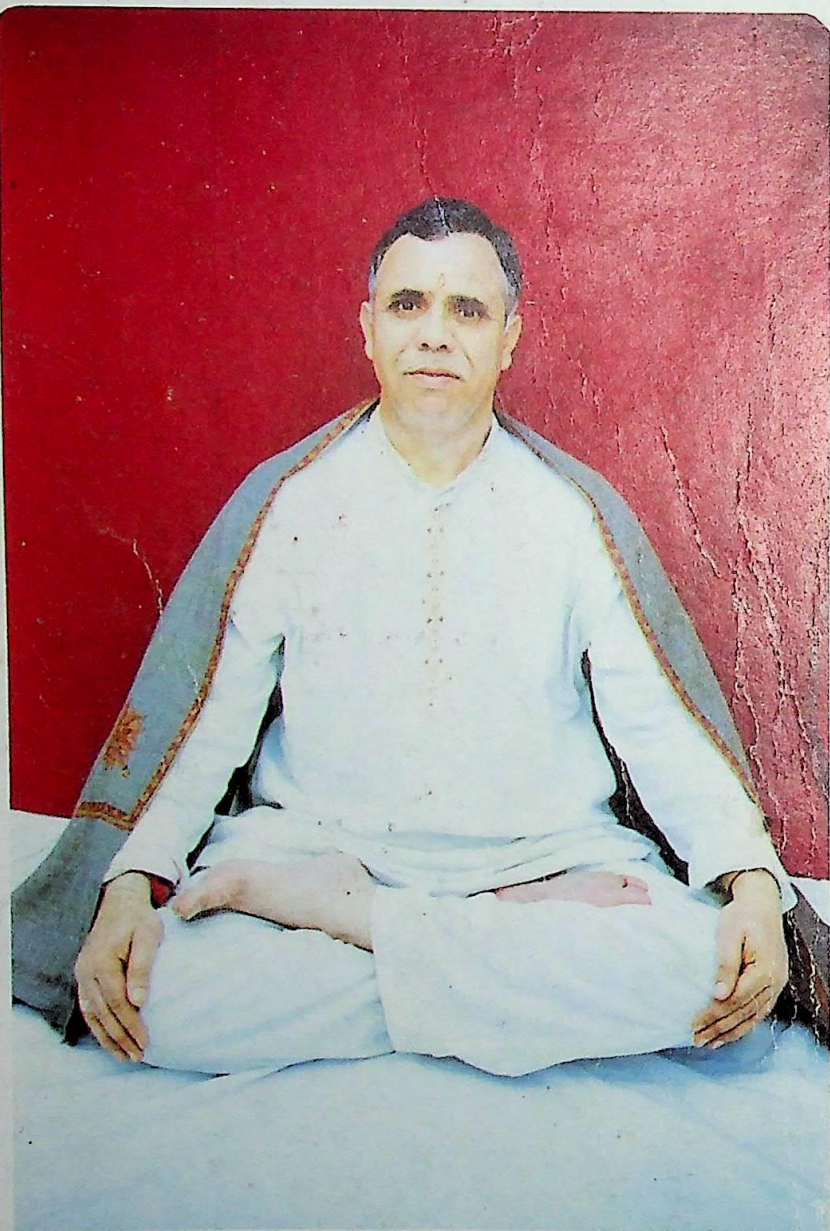
आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट "गरीब"
'भाई जी'

ॐ सत्यं शिवं सुन्दरं ॐ गुरुवे नमः ॐ सत्यं एव जयते ॐ

संजीवनी

(कशमीरी-काव्य भजनसंग्रह)

ॐ

लेखकः

आनन्द स्वामी प्राणनाथ भट्ट

''गरीब'' (भाईजी)

To
Revered &
respected
Dr. B. L. Kaul
With mission
of horizon —
to perpetuate
eternal springs
and immortalize
the practical
Philosophy
with echoing
manifestati-
ons of Shiva

10:4:2007 Bhaiji

ॐ सत्यं शिवं सुन्दरं ॐ गुरूवे नमः ॐ सत्यं एव जयते ॐ

लेखक : आनन्दस्वामी श्री प्राण नाथ भट्ट
''गरीब''-'भाई जी'

सम्पादक : श्री चमन लाल रैणा,

संकलनगण : श्री रमेश चन्द्र जद्ध
श्रीमति विजय रैणा,
प्रो० कृष्णा कौल
श्रीमति पम्पोश जद्ध

संयोजक : गुरू परिवार

प्रेरकगण :

प्रोफेसर गिरिधारी लाल भट्ट, श्रीमति व श्री चूनीलाल पंडिता, श्रीमति व श्री पुष्करनाथ पंडिता, श्रीमति ललिता रैणा, श्रीमति व श्री इकबाल कृष्ण रैणा, डा. एम.के. कौल, प्रो. डी.एन. सन्तोष, श्रीमति व श्री नन्ना जी भट्ट, श्रीमति व श्री अनूप कौल, श्रीमति व श्री पी एल. धर, श्रीमति मोहिनी त्रछल, श्रीमति संतोश राज़दान, श्रीमति रत्ना जद, डा० आर.एल. धर, डा० एम. एन. कोतरू, प्रो. पी.एन. तुफची, श्री सी.एल. वान्गनू, प्रो० शांता कौल, श्री नरेन्द्र नाथ वातल, प्रो० उदयचन्द्र रैणा, श्री आलोक शर्मा, श्रीमति लाजवन्ती, श्रीमति तोशा रैणा, डॉ० विनोद भट्ट, श्री सुधीर चंचल, श्री विश्व नाथ प्रकाश तथा श्री विनोद भट्ट

मैं कितने भक्तजनों के नाम गिनूं जिन्होंने इस भक्ति माला को सींचा और प्रेरणा शक्ति भर कर इसको छपवाने का अतुलनीय भार सम्भाला!

- *लेखक*

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सुश्री गुरविन्दर कौर

लेज़र टाईपसेटिंग : श्री मनोहरलाल सचदेवा

आवरण : भगवान अमरनाथ ज्योर्तिलिङग

शीर्षक़ : संजीवनी

संस्करण : २००० (द्वितीय)

मूल्य : २०० रुपये

मुद्रक : मीनाक्षी प्रिन्टस, ३३, पाण्डव नगर,
नई दिल्ली-८

अच्छर पाऽरि्यज़ान

देवनागरी लिपि हुँज़व मात्रायव अलावॅु यिमु मात्रायि केंह खास काऽशिरि आवा्ज़ॅु प्रकटावनु बापत यथ भजनसंग्रहस मंज़ पाननावॅुनॅु छे आमचॅु, तिम छे यिथॅु पाठ्य :–

अऽ : अऽछ (आंख), मऽछ (मखी), लऽर (मकान)

आ : आऽठ (आठ), हाऽल (आदत), वाँऽस (आयु)

ॅु : ज़ॅु (दो) सॅुह (शेर), बॅु (मैं)

ॅू : सॅूत्य (साथ), तॅूर (ठंड), कॅूत्य (कितने)

ॆं : छेंट्य (जूठे), फेंक्य (कंधे), लेंज (हांडी)

ॊं : नोंट (घड़ा), लोंट (पूंछ), होंल (टेडा)

ऽ : भऽखॅुत्य् (भक्त),

ज्ञाऽनी (ज्ञानी),

पऽतिम (अंतिम)

भावुँगुहुल

भावुँ गन्यिरस तुँ लोंलु सन्यरस गौ सऽदुँरन कोंलुँ पाज़ करून। साधनायि हुँन्दिस खलस मँज़ आयम अथ्यि थप्यि थोंसि केंह भावुँ पम्पोश तुँ लागान छुस तिमय पनुँन्यिस यूगीश्वरस तुँ अलौकिक शिव स्वरूप सतुँग्वरस। स्वर्गीय पिता श्रीयस ति छुस पनुँन्य भावुँमाल अर्पित करान यिम ज़न थदि पायिक्य भखत्य, अभ्याऽसी तुँ नित्यनेमी आऽस्य। फुँरिस तल रटिथ म्यें लीलायन हुन्द म्येछर आपरावान तुँ शायद योहय भावुँ–ब्योल गव प्रथान म्यान्यन अन्तः करणन मँज़। मयान्य माता श्री स्यज़ुँरुँ भावुँच लोलुँहुँच दीवी छुस कलुँ पनुन वंदान योंसुँ म्यें दोंह रात आऽही करान छि!

माता 'ब्रारिमाऽज्य' म्यान्यि गामुँच (मुरन–पुलवामा कशमीरुँच) सों अलौकिक शिहिज्य बून्य यथ नागुँ जोयि हुन्द सन्यर आगरुँबलुक आलोक रास करान छु, स्वय माऽज्य राज्यिरैन्य कुँरिन सायि अस्यि वनुँवाऽस्यन तुँ कुल ज़गतस। योहय दीवीद्वार छु म्यान्यि दिलुँचि दुबुँरायि हुँन्ज़ शवास–प्राण गती।

म्योन भावुँ पोशि गोंद यथ मंज़ अलग–अलग भावुँ पोश सम्तायि हुँनदिस गोंदिस अन्दर पनुन जहार तुँ रंग छ़टुँनुँच कूशिश करान छि–वोंन्य गव अम्युक अनुमान ह्यकन भऽखुँत्य, साधक तुँ श्रद्धालू कऽरिथ यिमन यि लय तुँ अलौकिक कल सन्येमुँच़ तुँ गन्येमुँच़ छि। तजरुबन हुन्ध्यन हाऽदिसातन तुँ हाऽरिसातन मँज़ छि गाह ब्यगाह स्यदि स्योंद या वँगुँ पाऽठ्य अमारुँ बऽरुँचि मऽस्सती साधना रूँपी तंऽदुरस सहनशख्ती रूँपी ड़कुँनुँ ध्युन युथ नुँ रेंह तुँ तेह चमत्कारुँच दज़ुँवुँनिय आवुँरेंन्यि मँज़ अभ्याऽस्य

र्कमन सूरय् करन। अऽकिस भऽरखुॅतिस छु वारुॅयाह भ्रमुॅ गचुॅ देह लरि हुॅनदिस शुन्यि खानस मंज़ श्रोपुॅरावुॅन्य तुॅ ब्यऽपुॅरावुॅन्य प्यवान। बुॅ छुस अख अदुॅना दास पनुॅनिस टाऽठिस सतुॅग्वरस (यिम मयानि बापथ त्रिकालदर्शी शिवस्वरूप यूगीश्वर छि) वछ़ि वाँऽलिजि लोलुॅ हऽत्य नाद लायान। आभासस मँज़ जाग्रत अवस्थायि वाऽतिथ छु भऽखुॅत्य सुशुफ़्ती सऽदुॅरस छ़ालुॅ माऽरिथ ति मनुॅच स्थिती सम्भावस मंज़ ठहरावान।

यि 'संजीवनी' भजन रूॅपी पोशि माल छि म्यान्यन अन्तःकरणन हुँन्ज़ सों फुलय यथ मंज़ सोंत तुॅ हरुद यकसू गऽछ़िथ तरावथ लभानं छु। विश्वास सऽदुॅरस मंज़ छु ज्ञान, ध्यान तुॅ भऽखुॅती वोंदुॅभव लभान येंल्यि सम्पर्ण जाविदाऽनी लबान छु। योंद यि (संजीवनी) परन वाल्यन तुॅ टाठ्यन भऽखुॅतयन मन मुशिकावि त्येंल्यि ज़ानुॅ म्याऽन्य साधना गऽय सफल। यथ 'संजीवनी' मंज़ छु म्ये "महिम्ना स्तोत्र", "सोंदाम चरित्र", "गौरी अस्तोती) काऽशिरावुॅनुच कूशिश कऽरुॅमुॅच़।

म्योन काऽशुर अनुवाद ह्यकि नुॅ हूबहू तीय अऽसिथ यि अम्युक संस्कृत आगुर छु। वोंन्य गव तोति ह्यकन भऽखुॅत्यज़न अम्युक आनन्द कम ज़्यादुॅ लऽबिथ यिम नुॅ संस्कृत परान छि।

बुॅ छुस पनुॅनिस परमुॅ पूज्य साक्षात शिवस्वरूप 'आनन्द स्वराज्य सरस्वती' महाराज्यस (मनसा वाचा कर्मना),—कुलहम सत कर्म ह्यथ अर्पित गछ़ान तुॅ यि ग्वनुॅ वखुॅनय ति छुस तिमुॅनुॅय अर्पित करान।

सम्पूर्ण ग्वरुॅ परिवारुक आभार प्रकट करुॅनुॅ वराऽय ह्यकि नुॅ म्ये करार यिथ यिम छि म्यान्यि नरि ज़ंगुॅ, वाऽणी, योन्यि तुॅ छ़ोग। यि संजीवनी यीत्यन मरहलन तान्य वातुॅनावनस तुॅ अथ शेर

पाऽरय करुँनस मंज़ छुस बॖ कुलहम ग्वरुँ परिवारुक आभार शत शत बार प्रकट करान। खास कर श्री चमनलाल रैना जियुन यिमव यथ 'संजीवनी' तमि अनुमानुँ तरतीबुँ दिच़ येंम्यि सूॅत्य अथ नोंवुय ज़ुव ज़्यतु लोंग। तिंहज़ि अथ प्रगाड़ भऽखुँती, प्रेंयमस तुँ विश्वासस छु म्योन प्रणाम। ब्येयि श्री रमेश कुमार जद, सुश्री विजय रैना, सुश्री पम्पोश जद तुँ प्रोंफेसर सुश्री कृष्णा कोलुन ति छुस बॖ आभार प्रकट करान यिमव ज़न बेलूस प्रयास कऽरिथ यि 'संजीवनी' नावुँच भजन माला छपावनस तान्य वातुँनाऽव। यिहुंन्द प्रेम, सर्म्पण तुँ विश्वास वुछिथ छुम पनुँनुय पान लोंकुट बासान। खासकर सुश्री विजय रैनायि हुँन्द ध्युत छु पूज्यनीय तुँ प्रंशसनीय यिमव यि संजीवनी हुँन्ज़ म्याऽन्य भजन माला लोलुँ तुँ प्रेयमुँ सान छपावुँनुँ बापथ तयार कऽर। बॖ छुस श्री सी.एल. पंडिता, श्री पी.एन. पंड़िता, श्री अनूप कोल, श्री अय–के–रैना, श्री नना जी भट्ट, सुश्री तोशा जी रैना, सुश्री ललिता जी रैना, सुश्री मोहनी त्रिछुँलुँन ति आभार प्रकट करान यिमव ज़न यथ संजीवनी यछ़ तुँ पछ़ भऽर।

न्यन्ध्या या स्तुती छनुँ अऽकिस संतस ह्यकान पनुँनि मार्गु निश ड़ाऽलिथ। न्यन्ध्या छि तऽमिस मल तुलान तुँ स्तुती छि तऽमिस व्यंच़ार सऽदुँरस कुन प्रवाहित करान। यिमन मनसा–वाचा–कर्मणा समर्पण आमुत आसि, तिमन छु टेंछर मेछर, पाप तुँ पोंन्य, न्यन्ध्या तुँ स्तुती समनबलुँकिस गोंफुँबलस मँज़ समतायि हुन्द प्रकाश वुज़नावान। प्रथ कांह आत्मुँस्वरूप छु शिवस्वरूप। सतग्वर तुँ प्रभू हाऽविन अथ जहार तुँ अथ फोंलिन अलौकिक भावुँ पम्पोश। संसारस मंज़ रूज़िथ व्यवहारस मंज़ मनुक त्याग छु परमुँ सऽदुँरुक प्रकाश तुँ चिन्तन तुँ मनन

छि अथ त्यागस ग्वरुॅ रागुक निष्काम बन्धन नाऽल्य त्राऽविथ अलौकिक भ्रमस्थिती तान्य वातनावान। सृष्टी छि परमुॅ शख्ती हुॅन्ज़ लीला। पोंज़ तुॅ सनातन छु सतुॅग्वर तुॅ पारब्रह्म परमीश्वर।

अऽस्य ति तरुॅहव यथ भवुॅसरस–लो लो करान–दय तुॅ सतग्वर बूज़िन असि वनुॅवास्यन हुॅन्द फ्रकुॅ होंत आलव। बुॅ छुस गुल्य गंऽड़िथ माऽफी मंगान योंद यि 'संजीवनी' ल्येखुॅनस मंज़ तुॅ भावुॅ पम्पोश फोंलुॅरावनस मंज़ कमी आसन रोज़ुॅमुचुॅ। तिमन प्रेयमियन तुॅ भख्तीज़नन ति छुस माऽफी मंगान यिहुॅन्ध्य नाव म्ये पनुॅनि यथ सुमरनि मालि मंज़ प्यमुॅत्य आसन।

शाहजी (सुश्री तेजा भट्ट) हुॅन्द छुस बुॅ स्यठा आभार प्रकट करान येंमि ज़न पऽज़्य पाऽठ्य यि संजीवनी पायि तकमीलस तान्य वातनावनस मंज़ बोंड़ वारुॅ योगदान ध्युत। तसुन्द त्याग, तपस्या, समर्पण तुॅ पतिवृता धर्म वुछिथ छुन वासान यि छि महान देवी। तसुॅन्धि अथुॅवासुॅ वराऽय ह्यकि नुॅ म्याऽन्य साधना सफल सपुॅदिथ तुॅ ब्येंयि पनुॅनि परिवारुक ति छुस बुॅ आभाऽरी यिमव अथ लोल सग ध्युत।

शत शत नमस्कार
प्रेंयमियन तुॅ भख्त्यजनन

तुहुन्द दास
प्राण नाथ भट्ट गरीब
'भाई जी'
गांधी नगर, जम्मू (कश्मीर)
(मुरन पुलवामा)

प्रस्तावना एवं आमुख

परमार्थ के असीम विस्तार में विलीन शिव स्वरूप बुद्ध पुरुष के संबंध में वर्णन करना मुझ जैसे अल्प ज्ञानी तथा साधारण मनुष्य के लिए जहाँ एक ओर अपार आनन्द तथा सौभाग्य का सुअवसर है वहाँ दूसरी ओर बहुत बड़ा दायित्व भी है। इस दायित्व को निभाते हुए जिन ज्योर्तिरमयी स्वरूप के विषय में "संजीवनी" नामक अमृतवाणी की पहली भजन श्रृंखला प्रस्तुत करते हुए परिचय देना मेरा सौभाग्य है वह हैं आनन्द स्वामी 'श्री प्राणनाथ भट्ट गरीब' जिनको अपने प्रिय भक्तजन "भाईजी" के नाम से पुकारते हैं, ओर जिन्हें अपने सत्गुरू 'मस्ताना' के नाम से पुकारते थे!

पूज्यनीय भाईजी महाराज की अमृतवाणी जो उनकी भजन श्रृंखला में से छलकती है, स्वयं ही उनके अस्तित्व का परिचय प्रदान करती है। प्रभुत्व से प्रेरित पाठक एवं भक्तजन साधना के प्रखर अनुभवों से उभरी हुई काव्यवाणी की सुगन्ध से स्वयं ही परम् आनन्दित होकर स्वामी जी के शिव स्वरूप का आयाम छूँ लेंगे। वास्तव में ऐसा कहना उचित होगा, कि परमार्थ के रहस्यात्मक एवं कठोर वर्ण परम आनन्दमयी मार्ग को जानने के लिए तर्क, वाद–विवाद तथा सन्देह से ऊपर उठना ही एक मात्र कीमिया है, प्रभु द्वार तक पहुँचाने का एवं गुरू अनुग्रह का पात्र बनने का! धर्म हृदय की सूक्ष्म ग्रन्थियों के सहज हो जाने का नाम है। जिस क्षण यह हृदय की ग्रन्थियाँ सहज रूप धारण करती हैं, उसी क्षण हृदय की आँख खुलती है और श्रद्धा जन्म

लेती है। अतः यह भजन श्रृंखला ऐसे ही पाठक एवं भक्तजनों की भेंट है जो श्रद्धा के पात्र हैं ओर जिनके हृदय की आँख खुल चुकी है। मैं कामना करता हूँ कि जो भक्तजन परमार्थ की अमृत रसधार से वंचित हैं, वह भी इस भजन श्रृंखला के मार्धुय को इस सीमा तक चख लें कि – उनके यहाँ भी प्रभु की अमृत रसधार का झरना फूट पड़े।

महाराज की एक संक्षिप्त झलक

एक साधारण ग्रामीण घर में जन्में इनके परिवार में पाठ–पूजा का वातावरण बहुत ही गहन रूप से विद्यमान था। उनके पिताश्री कठोर नित्य नियमी थे, जिसके फलस्वरूप उनके अन्तःकरण भी धार्मिक वातावरण के अश्रुसिन्धु से अंलकृत रहे। अर्न्तगर्भ में छिपा हुआ कवि भी उनकी अल्प आयु अर्थात विद्यार्थी काल से ही प्रभावशाली काव्यवाणी के रूप में उमड़ पड़ा। इसका प्रमाण यह है कि केवल सत्तरह (17) वर्ष की आयु में ही उन्हें आकाशवाणी ने सबसे छोटा 'कन्ट्रेकटिड' कवि नियुक्त किया, जो अपने आपमें एक श्रेय है। कश्मीर में श्रेष्ठ गायकों ने इनकी दर्द भरी काव्यवाणी को अपने मधुर स्वरों में पिरो लिया, और इस प्रकार उनके गीत सारे कश्मीर के घर घर में प्रचलित हो उठे तथा सभी धर्मों के लोगों ने काफी सराहा। इनके काव्य प्रभुत्व एवं निपुणता की प्रंशसा कश्मीर के प्रकाण्ड कवियों जैसे पं० दीनानाथ नादिम एवं अब्दुल अहद जरगर ने सन् १९७०–७१ ई० में अपने प्रभावशाली शब्दों में की और भविष्यवाणी की कि 'गरीब' ने अपनी विचारधारा को जिस आस्कता से उतारने का प्रयास किया है उससे यही आभास होता है कि वह अति आतुर

है "उड़ान भरने को"! वास्तव में उनकी 'उड़ान' उनके काव्य में आरम्भ से ही निहित थी जो समय बीतने पर काव्य से रिचा अर्थात (ऋषि की वाणी) में अन्तरित हो गई। ज्यों–जयों समय आगे बढ़ता गया इनके अन्दर का बीज परमार्थ रूपी वृक्ष में बदलता गया। इस सन्दर्भ में यह कहना उचित होगा कि जब तक एक कवि अपना अनुभव दृव्य, मायावी अर्थात व्यवहारिक रूप की गनना को लेखनी में उतारता है वह कवि कहलाता है, और जिस क्षण वह बाहर से अन्दर चला जाता है उसका आयाम परिवर्तित हो जाता है। तद्नुसार ऐसी श्रेणी में कवि के अर्न्तगर्भ की 'अनुभूति' साधना से झर–झर फूटती हुई ईश्वरी साक्षात्कार का अनुभव काव्य की ऐसी मीठी रसधार छोडती है, जो अमृतवाणी का रूप धारण कर 'कविता' से 'रिचा' बन जाती है। इस प्रकार 'रिचा' का निर्माता अर्थात ऋषि रूपान्तरित होता है। प्रस्तुत काव्य संग्रह मेरी दृष्टि में रिचा संग्रह है और महाराज एक ऐसे आधुनिक ऋषि हैं जिनको समझने के लिए उनकी भजन श्रृंखला को प्रेम, श्रद्धा, विश्वास एवं समर्पण सहित उच्चारण से साधक घन को स्वयं अनुभव होगा कि प्रत्येक रचना गहन साधना और गुरू कृपा की प्रतीक है, अर्थात साक्षात्कार की प्रतिलिपी है। इस सन्दर्भ में यह वर्णन करना अनिवार्य हो जाता है कि उनके आत्म प्रकाश की अगवानी एक घटनाक्रम से जुड़ी है! जिस का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ कि आप 17 वर्ष की आयु के थे कि आपका गौतमनाग में विराजमान स्वामी सर्वानन्द जी के आश्रम में अपने पिताश्री के साथ जाने का अवसर मिला। आप

उनके साथ आश्रम में पहुँचे ही थे कि उनके यहाँ कुछ भक्त तथा शिष्य मण्डल के कुछ सदस्य उपस्थित हो गये। तदोपरान्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आपको चाय बनाने के लिए कहा। यह आज्ञा मिलने पर आप अत्यन्त विचलित हो गये क्योंकि आपको चाय बनाने का कोई अनुभव ही नहीं था। चाय की सामग्री यद्यपि स्वामी जी ने आपको सौंप दी परन्तु आपको अँगीठी जलानी भी नहीं आती थी। अँगीठी जलाने का बहुत प्रयास करने के उपरान्त आप निराश हो कर वापिस स्वामी जी के यहाँ गये तथा विवशता से विलाप किया कि आपसे आग सुलगती ही नहीं है तो चाय कैसे बनायें। स्वामी जी ने आपको टोका और वापिस जाकर फिर प्रयास करने की प्रेरणा दी। ज्योंही आप वापिस अँगीठी के पास पहुँचे तो चाय को उबलते हुए देखकर आप चकित रह गये। अंगीठी पर चढ़े हुए लोटे में चाय तैयार हो गई परन्तु आपको चिन्ता लगी कि इतने सारे लोगों के लिये यह चाय पर्याप्त नहीं है और विचलित हो गए। जब स्वामी जी को चाय शीघ्र आने में विलम्ब प्रतीत हुआ तो उन्होंने आपको बुलाया और आपकी संवेदना को देखकर आदेश दियाकि लोटे का ढक्कन बन्द करके एक सिरे से चाय डाल दी जाय। आश्चर्य की बात है कि सब लोग जब चाय पी चुके थे तो आपने ढक्कन उठाकर पाया कि चाय पूरी की पूरी मौजूद थी। इस घटना पर आप दंग रहे गये और आपमें एक अपूर्व जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यहीं पर आपमें आत्मज्ञान की ओर प्रेरणा की चिंगारी भड़क उठी; और परमार्थ रहस्य की खोज ने जन्म लिया।

स्वामी सर्वानन्द जी परम तपस्वी थे। रात को देर होने के कारण आप गौतमनाग से श्रीनगर नहीं जा पाये क्योंकि आपके पिताश्री पहले ही विदा हो चुके थे। इसीलिए आपको स्वामी जी के पास ही ठहरना पड़ा। आपको स्वामी जी ने दूसरे कमरे में सोने को कहा पर आपने विनती की कि आप अकेले डर जाते हैं तथा स्वामी जी के साथ ही सोने का आग्रह किया। स्वामी जी मान गये और आपको अपने पास ही सुलाया। रात को आप जागते रहे परन्तु स्वामी जी को भ्रम हुआ कि आप सो चुके हैं। अपने आपको आश्वस्थ करके कि बालक सो चुका है स्वामी जी साधना में लग गये। साधना की अवधि में स्वामी जी को कुण्डलनी के योग में विलीन होते हुए आप अत्यन्त प्रभावित हो गये और रात भर उनकी साधना को दृष्टि गोचर करते रहे। आप बाल्यवस्था में अत्यन्त भावुक थे। रात्रि का सारा दृश्य अनुभव करने के पश्चात् अगले दिन प्रातः आपने स्वामी जी के साथ उनकी साधना के विषय में वाद–विवाद किया। तद्ोपरान्त वे विडम्बना में पड़ गये कि बालक उनका सब कुछ देख चुका है और फलस्वरूप आपको यह बात अपने तक रखने को कही। आपके विदा होते समय स्वामी जी ने यह भविष्यवाणी की कि आपको अपने सद्गुरू पथ प्रर्दशक अग्रिम तीन वर्षों के पश्चात् स्वयं ही ढूँढ लेंगे। ठीक तीन वर्ष उपरान्त आपको अपने गुरूदेव 'स्वामी आनन्द स्वराज सरस्वती' मिल गये जो कलकत्ता के थे और गुलमर्ग से आगे द्रंगबल के घने जंगल में गहन तपस्या में व्यस्त थे। उनके चरणों में आपको १६७१ से आलोक का प्रशाद

लेने का सौभाग्य प्रापत हुआ। इसी अवधि के अर्न्तगत आपके पिताश्री का भी स्वर्गवास हो गया, जिनका अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् आप एक बार शमशान भूमि पर गये जहाँ एक विराट रूप के साधू आपके सामने खड़े हो गए और आपके हाथ में एक फूल थमा दिया। इस घटना ने आपके जीवन की कायाकल्प की और आप पूर्ण रूप से परमार्थ रहस्य में अपने गुरूदेव के चरणों में ध्यानमग्न होते गये। गृहस्थी होते हुए भी आपकी साधना ऊँचे आयाम लेने लगी और गुरू चरणों का प्रशाद आपको निरन्तर उपलब्ध होता रहा। यद्यपि आपका विवाह भी हुआ और सन् १९७५ में गृहस्थ धारण करना पड़ा, आप गृहस्थी का दायित्व निभाने के साथ–साथ परमार्थ में तीव्र रूप से अग्रसर होते गये जिसका प्रमाण प्रस्तुत 'संजीवनी' भजन माला की एक–एक लीला में विद्यमान है। आपके परिवार के साथ आपकी पूज्यनीय मातश्री सोना भटनी एवं आदरणीय अर्धान्गिनी श्रीमति तेजा भट्ट का भरपूर सहयोग–आपकी अलौकिक उपलब्धियों के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं।

संजीवनी भजन संग्रह :

शिव दर्शन के श्रेष्ठतम अनुभवों का एक अलौकिक रूपान्तरण:

पूर्वकालसे कश्मीर शिव दर्शन की खोज का एक अनुपम केन्द्र रहा है। अभिनवगुप्त, उत्तपलदेव, जगधर भट्ट तथा अन्य जाने–अनजाने महापुरूष इस धरती पर जन्में जिन्होंने शिवदर्शन को एक अनूठी दिशा प्रदान की। लल्लेश्वरी एवं रूप–भवानी

जैसी योगमाताओं के चरण कमल भी इसी पृष्ठभूमि पर अभिव्यक्त हुए। पिछले दो शतकों के अन्तर्गत आलोक के मार्ग पर स्वामी परमानन्द, स्वामी कृष्ण जराजदान, स्वामी आफ्ताबजू, स्वामी लक्ष्मण जूवुलबुल नागामी, स्वामी प्रकाश राम, स्वामी सहजानन्द, स्वामी वोनकाक, स्वामी टिकाकाक स्वामी मास्टर जिन्दा कौल इत्यादि जैसे महापुरूषों ने अपनी—अपनी अमृतवाणी के माध्यम से शिवदर्शन की भरसक पुष्टि की। शिवदर्शन के आनन्द सागर की गहनत्तम खोज में अभिनवगुप्त के काल में आदि गुरू शंकर आचार्य, स्वामी परमानन्द के समय डा० विशाल जैसे प्रकाण्ड महात्माओं ने कश्मीर में शिवमत की अथाह खोज की, इसका निर्वाह किया और अपने प्रखर अनुभवों को भारतवर्ष के अन्य केन्द्रों तथा स्थलों तक पहुँचा कर इसे ख्याति प्रदान की। भगवान 'ओशो' ''जिन्हें इस शताब्दी के महानतम दार्शनिक की उपाधि से जाना जाता है,'' ने कश्मीर में शिवदर्शन का स्वर्णिम शब्दों में वर्णन करते हुए इसे आलोक की 'अन्तिम कला' का नाम दिया है और इसी संदर्भ में लल्लेश्वरी को भरसक प्रशंसा की है। आलोक की इसी कड़ी में आनन्द स्वामी भाई जी ''प्राण नाथ भट्ट गरीब'' महाराज की अभिव्यक्ति प्रस्तुत ''संजीवनी'' नामक भजन श्रृंखला के माध्यम से हाती है, जिसकी एक—एक लीला शिवदर्शन के प्रखर अनुभवों की अनुभवशाला को प्रदर्शित करती है। लीलायें, वाक तथा छंद उच्चारण करते अर्थात् गाते—गाते भक्त के अन्तरगर्भ में इस प्रकार अँकित हो जाते हैं कि भक्त उन्हीं का हो जाता है। योग, कुण्डलिनी क्रिया एवं समाधि में अर्जित लीलायें अनुभव की उच्च चोटी का सीधा संदेश

इस प्रकार उपलब्ध कराती हैं कि भक्त परम आनन्द से पल्लवान्वित हो जाता है। संताप और सन्देह भस्म–सात हो जाते हैं, धीरे–धीरे समर्पण तथा श्रद्धा का अंकुर फूट पड़ता है, और भक्त भेंट ही चढ जाता है।

इस भजन श्रृंखला को प्रकाशित करने में, श्री रमेश कुमार जद्ध, सुश्री विजय रैणा, सुश्री पमपोश जद्ध तथा प्रोफेसर कृष्णा कौल को मैं सहयोग देने के लिये अपना अपार आभार व्यक्त करता हूं। जिन दूसरे भक्त जनों ने इस संकलन को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है वह हैं श्री तथा श्रीमति चुनीलाल पंडिता, श्री तथा श्रीमति पुष्कर नाथ पंडिता, डॉ आर.एल.धर, श्री तथा श्रीमति इकबाल कृष्ण रैणा, सुश्री ललिता रैणा, श्री तथा श्रीमति नन्ना जी भट्ट, सुश्री संतोष राजदान, श्री तथा श्रीमति पी.एल. धर, श्री तथा श्रीमति अनूप कौल, सुश्री तोशा रैणा, श्री विनोद कुमार भट्ट, डा० एम.के. कौल, प्रोफेसर डी.एन. सन्तोष, सुश्री मोहिनी त्रिसल, श्रीमति रत्ना जद्ध इत्यादि।

अन्ततः सभी भक्त जनों तथा प्रभु प्रेमियों से मेरा विनम्र निवेदन है कि इस लीला संग्रह का अनुस्मरण करके अपने जीवन को आनन्दमय, सुगम तथा सुखदायी बनाने का कष्ट अवश्य करें।

धन्यवाद।

सम्पादक
चमनलाल रैणा (मीमन्दर, शोपियान)
अखिल भारतीय
आयुर्विज्ञान
संस्थान, नई दिल्ली

सम्पादकीय : द्वितीय संस्करण

"संजीवनी" भजन श्रृंखला की मृदुल बेला आध्यात्मिक एवं अलौकिक अनुभवों से उभरी झर–झर वाणी, भक्त जनों के अनुरोध पर दूसरे संस्करण के रूप में वर्ष २००० की सहस्त्राब्दी आगमन के उपलक्ष में प्रस्तुत है! आशा है कि नई सहस्त्राब्दी का आगमन विश्व शांति, प्रेम, सद्भाव तथा धर्म के उत्थान की असीम संभावनाओं के समावेश की ओर अग्रसर होगा। हिंसा, आतंक तथा अधर्म चरम सीमा तक पहुंच चुके हैं। मानव शांति के कल्याण के लिये विश्व शांति की अति आवश्यकता है! कोई भी संघठन अर्थात संघठन बल तब तक निष्प्राण एवं निष्क्रियी है जब तक उस के साथ आत्म/आध्यात्मिक बल जुड़ा न होगा। यह आत्म/आध्यात्मिक बल प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार को सींचने तथा प्रबल बनाने के लिये भजन तथा सत्संग ही वास्तविक् आध्यात्म की ओर ले जाते हैं इसके लिये सच्चे सद्गुरु और सच्चे आध्यात्मविध की उपलब्धि एवं उपस्थित परम सौभाग्य है, परन्तु पात्र एवं योग्य भक्त होना भी उतना ही आवश्यक है! समय के अर्न्तर्गभ की माँग है कि हम सब उस आत्मिक एवं आध्यात्मिक् बल को जाति, सभ्यता, राष्ट्र वरन विश्व में व्यापक् बनाने में अपनी अपनी क्षमताओं के अनुस्वार सक्रीय् योगदान दें! उस दिशा, उस लक्ष, उस आत्मज्ञान, उस आत्मबल, उस अपार आनन्द को अर्जित करने के लिए मात्र उपाय है भक्ति और भजन! यह वह सेतु है जो जगत कल्याण के अग्रिम और अंतिम छोरों को मिलाता है!

अतः सभी भक्त जनों से सविनय अनुरोध है कि इस 'संजीवनी' नामक् भजन श्रृंखला में प्रस्तुत भजनों को अपने जीवन में उतारने का कष्ट निष्ठा सहित करने की कृपा करें। सम्भव है कि ऐसा करने में जीवन से जुड़े सुख समृद्धि तथा परमात्मा से मिलने की कला मिल जाये और परम आनन्द का अनन्त द्वार खुल जाये! तब इस भजन संग्रह के जन्म दाता का लक्ष भी पूरा हो जायेगा।

इस भजन संग्रह को भक्तजनों के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझ दास को असीम आनन्द का अनुभव हो रहा है! यदि कहीं कोई कमी अथवा त्रुटि रही होगी तो अपने इस दास का ध्यान कृपया आकर्षित करने में कोई संकोच न करें।

आप का परम शुभचिंतक एवं दास!

सम्पादक
चमन लाल रैणा
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान
संस्थान नई दिल्ली

२०–०३–२०००
(फाल्गुन पूर्णिमा, होली)

विषय सूची

नोट : इस भजन संग्रह के अन्त में सुदामा चरित्र, गौरी अस्तुती तथा शिव महिम्न स्तोत्र कशमीरी भजनों के रूप में सम्मिलित हैं।

— **सम्पादक**

लीला नं. १

गॅन्पत यार तरुँवय साऽरी तत्यि समुँवय
गुल्य गँड़िथ तस मंगुँवय तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि गुलुँज़ार।

१. सेद्धियन हुन्द छु दाता श्यख्ती यस छि माता
यऽचुँ काऽल्य द्राव साथा तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि गुलुँज़ार।

२. शंकरस छुय यि संतान भख्त्यन छु आऽही करान
तिमन रुँऽत्यफल छु कांछान तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि गुलुँज़ार।

३. पादन मीठिँ दिमुँसय खिरुँ ख़ंडुँ थाल भरुसय
पोशि वर्षुन बुँ करुँसाऽय तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि गुलुँज़ार।

४. भावुँ पोश शेरि लागोस हालि दिल तत्यि भावोस
वत्यिवत्यि याद पावोस तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि सु गुलुँज़ार।

५. ***गरीब*** छुस घरि प्रारान मन्यि मंज़ तस छु छारान
बेकसन छु तारुँ तारान तत्यि छुय नाग्यन्ध्रहार
सारिनुँय दियि असि तार नारस करि सु गुलुँज़ार।।

* * *

V. Imp.

लीला नं. २

.चुँ छख राऽग्न्या .चुँ छख शारिका
.चुँ छख शक्ती .चुँ छख माता
बुँ छुस नादार स्यठा लाचार
.चुँ बख्शनहार ज़गतअंबा।

१. .चुँ छख दुर्गा करान छख नाश
दोंखन दाध्यन तुँ सन्तापन
म्यें मा गऽय ज़ोंलुँ खोंतुम मां राह
तवय लज्य नांव यिमन शाठन
म्यें गऽय ज़्यव कऽज्य मंगय क्या बो
मंगुन मां तोंग म्यें अज़ताम ज़ांह
बुँ छुस नादार स्यठा लाचार
.चुँ बख्शनहार ज़गतअंबा।

२. यिमन पम्पोश न्यत्रन छुय
अलौकिक गाश म्यें मा ज़ोंनुम
म्यें मर्दुँहोंस पान नुँ मदुँ वोंलुम
नअ मन पनुनुय म्यें ज़ांह मोंजुम
तुँ मन मां यारुँबल नोंवुम
म्यें तुल थोंद छुस प्योमुत सरि राह।

बुॅअ छुस नादार स्यठा लाचार
.चुॅ बख्शनहार ज़गतअंबा।

३. .चुॅ छख़ ज्ञानन अन्दर थोंद ज्ञान
.चुॅ छख ध्यानन अन्दर बोंड़ ध्यान
चुॅ छख माज्यन अन्दर बऽड़ माऽज्य
छुसय संतान वंदय ना प्राण
.चुॅ भख्त्यन पानुॅ मोय चावान
म्यें चावुम ज़ाऽन्य हुन्द दामा
बुॅ छुस नादार स्यठा लाचार
.चुॅ बख्शनहार ज़गतअंबा।

४. हच़रलद छुस बिहिथ चूरे
प्ययी मां ज़ांह नज़र दूरे
लऽगिम छोंख आऽन्तुॅ रोंस जिगुॅरस
तिमय ललुॅवुॅन्य म्यें छिम मूरे
बुॅ नेह गटि मंज़ करान फरियाद
चुॅ त्रावख ना प्रकाशुक गाह
बुॅ छुस नादार स्यठा लाचार
.चुॅ बख्शनहार ज़गतअवबा

५. .चुॅ छख आकाश पातालस
मारान छाल अकी सातस

म्यें सोम्बुरूम ओंश तुॅ दिमुॅहय गोंड़

तवय दरुॅ अऽछ लज्यम रातस

म्यें र्ददिल यीय तमन्ना अख

म्यें दासन मंज़ .चुॅ गंऽज़ुॅरखना

बुॅ छुस नादार स्यठा लाचार

.चुॅ बख्शनहार ज़गतअंबा।

६. **गरीब** मु.चुॅराव दारे बर

प्रकाशय मन बनी मन्दर

मनस अन्दर बिहिथ ठोंकुर

.चुॅ पूज़ा पाठ अऽमिसॅंज़ कर

म्ये वाँऽलिंज्य आयि फटुॅनस वोंन्य

.चुॅ सन्मोंख पान म्यें हावखना

बुॅ छुस नादार स्यठा लाचार

.चुॅ बखशनहार ज़गतअंबा।।

* * *

लीला नं. ३

तींज़ु चान्यि गलि म्यऽन्य पापॅ शीनॅं माऽन्यी
शिवनाथ चाऽन्यी करान पूज़ा
वासुक तॅं चन्द्रम छुय च्यें लूभाऽनी
शिवनाथॅं चाऽन्यी करान पूज़ा।

१. शिव छय शक्ती दाऽसी चाऽन्यी
त्रिज़गथ पालॅं कर पालना साऽन्यि
त्रिकाल दृष्टी छय चाऽन्यि राऽन्यी
शिवनाथॅं चाऽन्यी करान पूज़ा।

२. अमरनाथ कैलास छिय छ़ारऽन्यी
प्राऽरि प्राऽरि यिनॅं तन प्रान्यी साऽन्यि
सतॅगोरॅं वथ हाव छिय अनॅंज़ाऽन्यी
शिवनाथॅं चाऽन्यी करान पूज़ा।

३. हन्यि हन्यि आयि कल चाऽन्यी घनाऽन्यी
खोंट सोंन प्रारब्ध वुज़ॅंनावतन
शेरतख खुरिलद साऽन्य डेंकॅंलाऽन्यी
शिवनाथॅं चाऽन्यी करान पूज़ा।

४. भावॅंनागरादस छि पम्पोश चाऽन्यी
नतॅं कति वुज़िहे नागन पोन्य
चोर वेद चेंय छिय लोंलि ललॅंवाऽन्यी
शिवनाथॅं चाऽन्यी करान पूज़ा।

५. दीविय तुँ दिवताः छिय च़्यें वनॅवाऽन्यी
रासुॅमंडुला बन्योव काऽलास कोंह
शिवलऽग्न चोंन तिम तति छि वखुॅनाऽन्यी
शिवनाथुॅ चाऽन्यी करान पूज़ा।

६. प्रेंमुॅ–भावुॅ गरि गरि छिय च़्यें पूज़ाऽन्यी
प्राण ध्यान च्योनुय छु च़्येंय अर्पण
शिनिहस मंज़ गछ़तुॅ नाद बोज़ाऽन्यी
शिवनाथुॅ चाऽन्यी करान पूज़ा।

७. **गरीब** धारुॅणयि ध्यान धाराऽन्यी
असार सार च्योन व्यछ़नावि कुस
गछ़ि मस सूहमसू बोज़ाऽन्यी
शिवनाथुॅ चाऽन्यी करान पूज़ा।।

* * *

लीला नं. ४

ओंश गोंम जाऽरी चेय प्राऽरि प्राऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश,
मन्यि कामन छम लगय पाऽरि पाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोंश।

१. मोह घटि मंज़ छुस नठ नठ चायम
कुसू वथ हाव्यम छुस अनज़ान,
वर कास मुचुँराव बरुँन्यन ताऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

२. मन प्राण वथुँरय पम्पोश पादन
छुम चोन आदन टोठतम चुँय,
नतुँ छुम कृन्जुँल्यन पोन्ब साऽरि साऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

३. आकार ओंकार मन्यि मंज़ुँ खारूम
गोंडुँ अबुँसावुम हन्यि हन्यि पान,
अदुँ बोज़ लोंतुँनम पापुँन्यि बाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

४. पापव रोटुमुत शापव वोलुँमुत
गोंलुँमुत दाध्यव दोंखुँवुँय सूँत्य
ज़ीन्य ज़ीन्य येत्यि गॅयि पतुँ हाऽरि हाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

५. भावुँच्यि कोंछिमज़ लोंलि लोंलि ललुँवथ
सत्गोरुँ सथ छम हावुम मोंख
गोंड दिमय अशिवान्यि ध्यान धाऽरि धाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

६. सन्यास धोरूथ काऽलास वाऽसी
दीविय तुँ दिवता दाऽसी चाऽन्य
सूरुँ मति चुँय छुख भस्माधाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

७. यि छु भ्रम सोरूय काया छि छ़ाया
यि छि बस चाऽन्यी माया अख
जऽटि छय गंगा अमृत धाऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।

८. फलि फलि प्रोंण ज़ग कडुँ कति ओंन् छुस
खुरि लद कर्मस वोंन दिमुँ क्या
गरीबो ध्यान धार पख साऽरय् साऽरी
कासतम खाऽरी थावतम गोश।।

* * *

लीला नं. ५

ध्यानस तुॅ श्रानस पानस अपानस
असि काऽम बस नाराणस सूॅत्य्।

१. आऽविज्य तुॅ ज़ाऽविज्य आश लाग ध्यानस
गोरॅुनाथ ह्यन सअ पानस सूॅत्य
पय थव गाऽफ़िलो तथ लामकानस
असि काऽम बस नाराणस सूॅत्य।

२. त्रोॅपुॅरिथ दारि बर छाव पोश पानस
पम्पोश नाऽड़ी ज्ञानस सूॅत्य
पतॅ मा लगॅुहम ज़ोलानॅु खानस
असि काऽम बस नाराणस सूॅत्य।

३. अबॅुदी तुॅअ असॅुली रूप प्रज़ॅुलि पानस
ज्योति स्वरूप थव ध्यानस सूॅत्य
भऽख्ती तुॅअ शक्ती छि मंज़ न्यरॅुवानस
असि काऽम बस नाराणस सूॅत्य।

४. बॅुति मोॅल करॅुहा तस जान्यि जानस
सय गोॅडॅु सोज़स पनॅुनुय पान
त्युथ लाल छुनॅु येॅत्यि कुन्यि दुकानस
असि काऽम बस नाराणस सूॅत्य।

५. रऽज्य छय लऽजिमुँच तथ मोंयख्वानस
येंत्यि मस्तानस छु आगुर यार
तुँत्य छाय कासख पनुँनिस पानस
असि काऽम बस नाराणस सूँत्य।

६. गंन्ड़ येंल्यि मुचुँरन आऽईनुँखानस
खासन सूँत्य् आसि खासुल खास
गरीबन पुशिरोव पान भगुँवानस
असि काऽम बस नाराणस सूँत्य।।

* * *

लीला नं. ६

हमसू दारि बेंह न्येह घटि फेरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव
पुशरिथ मन प्राण तस लाग शेरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

१. ग्रटॅुबलॅु कऽड़िज़्यन ऊँके ज़्येरे
ग्रटॅुपलॅु यिनॅु छ़लॅु लगियो पान
प्रेयमुक श्रेह तत्यि हेंरि बोंनॅु फेरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

२. नादॅुब्यन्द दोंन म्युल ज्योती न्येरे
ज़्यव ताल लयि यिथ खारि ॐकार
पर पान त्राऽविथ शिवनाथ न्येरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

३. चॅु तॅु बॅु तॅु हुतॅु सु अति क्या न्येरे
लछि नोंव आऽसिथ छुय बेनाव
बेशुमार जोंयि अकि आगरॅु न्येरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

४. अऽछ दरॅु लज्यिमचॅु च्यान्ये वेरे
पछि़ हुॅन्ज़ थफ छम वछिसॅुय मंज़

लुकुॅमोंत अन्यिगोंट वति वति गेले
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

५. किथुॅ कुॅऽन्य ख़सुॅ अथ थजुॅरुॅचि हेरे
वुकुॅरनुॅ मा यिमुॅ करुॅतम थफ़
नज़ुॅरा तिछ़ कर युथ ड़र न्येरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।

६. ***गरीबुॅन्यि*** निशकल भावना न्येरे
समुॅयिक्य ठऽरि येंल्यि कास्यम यार
आंगुॅनय सान्ये मुशका फेरे
ज़्येरे ज़्येरे सूहम भाव।।

* * *

लीला नं. ७

'पज़रुॅच चे़नुॅवन'

चन्दॅ छोंन तय न्यथुॅ नोंन येंल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

१. शुरि बाऽच़ भाऽय तय बन्द, साऽरी करुॅनय फंद
मायायि च़कुॅरस मंज़ आसख गोमुत बंध,
कस पूश्य कस वोंत अंद यल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस़ लगि पानो।

२. पापन हुॅन्ज़ गागुॅर, वन कस पुशिरावख
यस यस येंत्यि दारख, पतुॅ कत्यि नखुॅ वालख
वोन्दुॅ कस वन भावख येल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

३. तावि अन्दर गुरूना छरटुॅ छ्रट करुॅनावी
अऽकि सुॅय ब्रुॅज़्यसुॅय मंज़ हेंरि प्यठुॅ बोंन ठासी
ज़न प्रलुॅया बासी येंल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

४. काल गव कालुॅ शाहमार अऽम्य कऽरय कम संगसार
कम कम बलुॅवीर अऽम्य पलुॅसुॅय मंज़ कऽरय–खार
पथ च़लुॅनस छुनुॅ वार येल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

५. आंदन श्रेह भख्तीय प्रावान सुय मोंख्ती
प्राण गव ध्यानसुॅय लय सोंय् गऽय शिव शक्ती

त्यें'ल्यि बन्यि नऽन्य योंख्तीय, येल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

६. मन वोंन्य वुज़ॅुनावुन, दयलोंन प्रज़ॅुनावुन
गटॅु कुठि चलॅुरावुन, गाशस नखॅु थावुन
रसॅु रसॅु मस चावुन, येल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

७. पर–पान मऽशिरावुन, केवल सुय छ़ारून
अडॅुखुर शुर छुय मन लोंल्यि लोंल्यि ललॅुनावुन
मोंछि मंज़ बन्द थावुन येंल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

८. रूम रूम शहलावी येल्यि दयगथ हावी
न्यरॅुवान प्रावॅुनावी कंऽडिज़ाल छ़यनॅुरावी
पतॅु कुस कस रावी येल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

६. प्रकाश दारि कुन फेर सुल कर यिनॅु गछि च्येर
ब्रोंठ कुन जल जल न्येर डेंशख नव पाऽव हेर
सोंम करिज़ि अखॅु अखॅु बेर, येंल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

१०. यूगॅु सेतारूक सोंज़ दिवता बोंज़नावन
च्योन दामानॅु अछॅु रछॅु तारॅुकव जरॅुनावन
यूगॅुनीय वनॅुनावन येंल्यि न्येरख पानो
लमॅु लमॅु लगि प्राणन, वसॅु खस लगि पानो।

११. धर्मराज़ुॅ धर्मक्य पोश हेरि बोनुॅ वथुॅरावी
इन्द्रराज़ुॅ इन्द्रलूक ह्यथ् अमृत प्यठुॅ त्रावी
अऽगनुॅराज़ुॅ असुॅनावी येंल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

१२. भखत्यन छु पानुॅ भगुॅवान निनुॅ विज़ि ब्रोंठुॅ न्येंरान
जोय सऽदुॅरस छि मेलान तुॅथ्य छिय वनान न्यरॅवान
ज्ञानस रऽलिथ गव ध्यान येंल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।

१३. ज़न्मन हुन्द अन्दरुॅ मल, यिनुॅ ***गरीबो*** रोंज़िुॅ तल
काम क्रूध रऽटिथुॅय तल, लोंलुॅ वान्यि जल जल छल
मन युथ बनी यारुॅबल, येल्यि न्येरख पानो
लमुॅ लमुॅ लगि प्राणन, वसुॅ खस लगि पानो।।

* * *

लीला नं. ८

हन्यि हन्यि येल्यि सन्यि माऽज्य च्योंन नाव
बोंठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव
पतुँ ज़ोर क्या करि सऽदुँरुक वाव
बोंठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव।

१. संसार ज़ालुँ छुस वलुँनुँ आमुत
मायायि हॅन्ज़ि रज़ि गंडुँनुँ आमुत
मारुँ गोस नतुँ जल गंड़ म्यें मुच़ुँराव
बोंठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव।

२. मन छुनुँ डंजि किथुँ धारुँ च्योन ध्यान
रऽट्य रऽट्य तोति छुम च़ूरि न्येरान
बोंड़ न्याय छुम यीय गोंडुँ म्ये अँजुँराव
बोंठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव।

३. बॅऽड़ कथ छि पाऽपियस भख्ती दिन्य
पापन हुँन्दि मूल कऽडि कऽडि निन्य
शक्ती छख माज्य योंख्तीय म्यें हाव
बोंठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव।

४. त्रोंपरिथ दारि बर तोंति हावस
हंगुँ मंगुँ लागान छिमय दावस
आऽरतिस अम्यि निश जल म्यें मोंकलाव
बोठवाति पानय म्यें फुटमुँच़ नाव।

५. लूभस छि बाऽज्यवठ क्रूधस सूॅत्य
नावि वाऽल्य भ्रम दिथ मायायि कूॅत्य
चीरुॅवुॅन्य दुॅऽल्य छिम यीरवन्यि नाव
बोठवाति पानय म्यें फुटमुॅच़ नाव।

६. राज्यरेन्य माऽज्य च़ुॅय बख्शनहार
च़्येंय रोंस व्यतरावि कुस म्योंन बार
गरीबॅन्य भख़्ती अनतुॅ च़ुॅय छाव
बोंठवाति पानय म्ये फुटमुॅच़ नाव।।

* * *

लीला नं. ६

लोंलुँ होंत आलव माऽज्य भवाऽन्य बुँ लायानुँ
चन्दुँ छोन तुँ परिुछ़ँयोन प्रारान बुँ च़्येंय
.जुव जान वन्दुँहय चुँय छुसथ छ़ारानुँ
चन्दुँ छोंन तुँ परुँछ़योन प्रारान बुँ च़्येंय।

१. ग्वरुँद्वार सूँत्यन स्वर्गद्वार मेलानुँ
सम्भावुँ छावान लवुँ हऽत्य पोश
कोंनुँ छख जल जल आलव बोज़ानुँ
चन्दुँ छोंन तुँ परुँछ़्योन प्रारान बुँ च़्येंय।

२. दम शम कऽरिथुँय यूगी च़्यें पूज़ानुँ
भक्तिज़न छिय शेरि लागान पोश
सतुँसंगुँसुँय मंज तिम छिय च़्यें डेंशानुँ
चन्दुँ छोन तुँ परुँछ़्योन प्रारान बुँ च़्येंय।

३. सुँह सवारि छुय माजिं विज़ि विज़ि आसानुँ
चंन्द्रम च़्यें आऽधीन दीवता ह्यथ
अवतारुँ रूपुँ छुय .च़्यें भगवान संतानुँ
चन्दुँ छोन तुँ परुँछ़्योन प्रारान बुँ च़्येंय।

४. अष्टा दशबोंज़व अन्न भऽगरावानुँ
भ़रुँत्यन .चुँ चावान अमृत छख
ज्ञाऽनी छि च़्येंय निश वोंपदीश प्रावानुँ
चन्दुँ छोन तुँ परुँछ़्योन प्रारान बुँ च़्येंय।

५. प्रारब्ध फुॅल्य छुस कति कति सोम्बॅरानुॅ
यीरुॅ पान गोंमुत बोठ लागुॅतम
शख्ती हुन्दॅ आगुर छख चुॅ पाऽन्य पानुॅ
चन्दुॅ छोन तुॅ परुॅछ़्योन प्रारान बुॅ चे़ंय।

६. मायायि हुॅन्ज़ि रज़ि छुस वलुॅनुॅ यिवानुॅ
पाप पोंन्य छुस नुॅ केंह ज़ानान बों
स्यकुॅ न्येब वनतम कति छख रोंज़ानुॅ
चन्दुॅ छोन तुॅ परुॅछ़्योन प्रारान बुॅ चे़ंय।

७. ध्यानुॅयूगस मंज़ मा छख रोज़ानुॅ
ब्रह्मरन्ध्रस मंज़ ज्योती स्वरूप
किनुॅ **गरीबॅन्य** झोंफुॅरि मंज़ चुॅ रोंज़ानुॅ
चन्दुॅ छोन तुॅ परुॅछ़्योन प्रारान बुॅ चे़ंय।।

* * *

लीला नं. १०

आलव म्याऽन्य मा गुॅयि कऽन्य पऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम
सम्भावुॅ वुछिमख येंत्यि तय तऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

१. सूॅत्य छुय आसान कैलासपतिये
सन्तान गन्पत सेद्वि दाता
वीद छिय मोखुॅ मंज़ुॅ न्येरान सऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

२. आऽरुॅत्य छि आमुॅत्य छिय आरुॅहऽतिये
दरमान्दुॅ गाऽमुॅत्य करुॅतख दया
नाद माज्यि लायान छिय न्यन्दुॅरिहऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

३. पादन अर्पण छिय पोशिफऽतिये
छख सर्वशख्ती हुन्द आधार
दोरान तुॅ लारान आयि मऽत्य मऽत्यि
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

४. ज्ञानुक आगुर छख सरस्वतिये
भखुॅत्यन गरि गरि रऽछिथख लाज
प्राण शेरि लागय ज़न कारिपऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

५. नाना रंग चाऽन्य वोंज़ुल्य तय छऽतिये
त्रन भवुंनन प्यठ छख करान राज
डयेकुंबजि भावॅ पोश लागुॅ लवुॅहऽतिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।

६. तुलुॅमुलि ति वुछिमख ब्येंयि पॅबऽतिये
अष्टादशबोज़ा .चुॅय शारिका
पकुॅनाव ***गरीबुॅन्य*** भख्तीय रऽथिये
माऽज्य पार्वतिये पादि प्रणाम।।

* * *

लीला नं. ११

रोप़द्यद ति .चुंय ललुँध्यद ति .चुंय
म्याऽनिस मनस मंज़ बास .चुंय
कर्मस पनुन अथुं डाऽलिथुंय
दोंखुं दाऽध्य् ज़न्मुंकि कास .चुंय।।

१. मोह स्यन्ध्यि माऽज्य तार दिम
किथुं तरुँ म्यें तथ व्यस्तार दिम
यिम काम क्रूधुँक्य बार छिम
दोंख दाऽध्य ज़न्मुँक्य कास .चुंय।

२. वुँन्य दिथ ति वन्यि नय आयुँहम
यिनुँ बोंड़ि में नावुँय रठ .चुं नम
सूहम क्या गव पय दितम
दोंख दाऽध्य ज़न्मुँक्य कास .चुंय।

३. यथ म्यानि फुचिमचि़ देह लरे
कॅऽत्य कॅऽत्य अकोंत गव गरि गरे
खारान पन लोंसम नरे
दोंख दाऽध्य ज़न्मुँक्य कास .चुंय।

४. छालन तुं बालन लोंगनस
प्रारब्ध नारन ज़ोलुँनस
मायायि वुछ छऽन्दुंरोवनस
दोंख दाऽध्य ज़न्मुँक्य कास .चुंय।

५. ललत्राग चोंनुय नाग छुय
रंग अऽरिन्य हुन्द तत्यि बाग छुय

दोंन मंज़ कुन्यी फऽज्य लोलुॅ हिय
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास चुॅय।

६. चंचल मनस हांऽकल दितम
सूहम क्या गव पय दितम
संसार पतुॅ कुस छ़ल करयम
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास चुॅय।

७. छ़्योटुॅ अन्न प्यवान येल्यि आत्मस
त्येल्यि कति छु रोज़ान होश ह्यस
मन छुय बनान चंड़ाल तस
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास चुॅय।

८. आहार अन गव सुय करून
हेछिनावि युस रूत रूत स्वरून
सतुॅसंगुॅ पानस रंग घ्युन
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास चुॅय।

९. वेंच़ारकिस नागस खसन
वुछ भावुॅ की पम्पोश ज़न
ठोंकुर मनुक गछ़िना प्रसन्न
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास .चुॅय।

१०. दरबार चोंनुय बुॅति खसय
दूरेंर बुॅ कोंता वोंन्य ज़रय
चावुन **गरीब** अज़ आगुॅरय
दोंख दाऽध्य ज़न्मुॅक्य कास चुॅय।।

* * *

लीला नं. १२

कर्मुं खुर्य्य कास वोंन्य आमुॅत्य छिय शरण
छिय परण पेमुॅत्य पादन तल।

१. संसार छ़लुॅ छ़लुॅ असि छ़ऽलुॅरावन
तोत्यि छुनु वातन असि चोक तल
यन्द्रे छि अऽन्दुॅरी वांऽलिंज प्राटन
छिय परण पेमुॅत्य पादन तल।

२. ड्यकुॅ बजि माज्ये ड्यकुॅ छुय शोंलन
अऽस्य छिय ड़ोंलन खाकस मंज़
साऽन्य पाप मा छख तारुॅचि़ तोंलन
छिय परण पेंमुॅत्य पादन तल।

३. अष्टादशबोंज़व ज़गतस सोंज़न
गोंडुॅ छख बोंज़न भऽखुॅत्यन नाद
घरि घरि तिमुॅनुॅय सन्मोंख रोंज़न
छिय परण पेंमुॅत्य पादन तल।

४. पोज़ अपुज़ कऽरि कऽरि घरुॅ सोंम्बुॅरावन
नाहकय गोबुॅरावन अऽसि पान
लाल मोंलुल छिय अऽसि रावुॅरावन
छिय परण पेंमुॅत्य पादन तल।

५. पापन हुॅन्दि मूल छख चुॅय प्राटन
फुटिमित्यि दिल माऽज्य वाटन चु़ॅय

अनुग्रह कर असि लऽगिमॅुत्य छि शाठन
छिय परण प्येमॅुत्य पादन तल।

६. मायायि हुन्द वाव छुम दॅुन्यिरावन
लूभॅुच्य वुनल वुन्यिरावन छम
क्रूधुक नार छुम हन हन ज़ालन
छिय परण प्येमॅुत्य पादन तल।

७. तुल मुलि अमृत रूॅप छख धारण
दोंध कंध नाबद भावन छिय
अऽडि अशिवोन्य छिय पादन भा़वन
छिय परण प्येमॅुत्य पादन तल।

८. साऽरी त्राऽविथ रोंट चोंन दामन
असि छि मन्यि कामन यिख ना सोन
सतसंगॅु रंग दितॅु सान्यन जामन
छिय परण प्येमॅुत्य पादन तल।

९. पम्पोंशन मंज़ छुय चोंन आसन
घटॅुज़ोंल कासन भखॅुत्यन छख
गरीबस हृदयस मंज़ छख आसन
छिय परण प्येमॅुत्य पादन तल।।

* * *

लीला नं. १३

प्रातःकालीन लीला

निशकाम भावनायि श्राणा कऽरिज़िहे
मनुँ किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोंव
प्रभात समयस अऽछ मुचऱिज़िहे
मनुँ किन्यि सोंरिज़िहे सुय लछिनोंव।

१. सूहम सू सुँय पूज़ा कऽरिज़िहे
एकान्त तपुँ ऋयोश बऽनिज़िहे जान
गोफुँबलुँ अन्यिघटि गाशा वुछिज़िहे
मनुँ किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोव।

२. वेचारुँनाग के वान्यि मन छऽलिज़िहे
अनुभवुँ ज्ञान ज़ाऽलिज़िहे अभिमान
इन्द्रे चूरन न्यन्दुँरि मंज़ फऽरिज़िहे
मनुँ किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोव।

३. प्रकृती छि माता अस्तोती कऽरिज़िहे
सतोगन मंऽगिज़िहेस रूत सन्तान
देंह मोह त्राऽविथ आत्मा रऽछिज़िहे
मनुँ किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोव।

४. भ्रमुँरन्ध्रस मंज़ प्राणुँय रऽटिज़िहे
अनाहद नादस थऽविज़िहे ध्यान

तऽथ्य लयि सॅुत्य मन अपर्ण कऽरिज़िहे
मनॅु किन्यि सोंरिज़िहे सुय लछिनोव।

५. न्यत्रन मोह कुय ज़ाला तुलिज़िहे
पतॅु मां बासिही मान अवमान
सम्भाव सम्दृष्टि सोंरव दोंरव व्यनदिज़िहे
मनॅु किन्यि सोंरिज़िहे सुय लछिनोंव।

६. सम्साऽरि आऽसिथ वाऽराऽिग बनिज़िहे
वासना माऽरिथ रऽटिज़िहे थान
ज्योती अखंडॅुचि हृदयि दारि रऽटिज़िहे
मनॅु किन्यि सोंरिज़िहे सुय लछिनोव।

७. सथ गव सदाशिव व्यथ नाल रऽटिज़िहे
गूँ गूँ त्राऽविथ वऽटिज़िहे पान
पम्पोश न्यत्रव दर्शुन करिज़िहे
मनॅु किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोव।

८. सरॅु कुय पम्पोश लेम्बि मंज़ फोलिज़िहे
तऽथि मंज़ रऽलिथॅुय वुछिज़िहे पान
गरीबो सथ च्यथ .चॅुति मस गछ़िज़िहे
मनॅु किन्यि सोरिज़िहे सुय लछिनोव।।

* * *

लीला नं. १४

प्रकाश-प्रभातुॅच माता

फों॑ल प्रभात यलुॅ गऽयि बरुॅन्यन ताऽरी
प्यॅव प्रकाश हेंरि बों॑न च़ोंपाऽरिये
मायि मऽत्य तुॅ लोलुॅ हऽत्य आयि ननुॅवाऽरी
प्यव प्रकाश हेंरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये

१. लूभुॅवुॅन्य तुॅ शूभुॅवुॅन्य सुॅह सुॅय खऽसिथ छख
बेशक सन्मोंख ज़गत अम्बा
परमुॅ प्रकाश गव चेंय निश जाऽरी
प्यव प्रकाश हेरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।

२. ज़ोंलि यिनुॅ गछुॅहम अफसूस मां ख्यख
वेलुॅ छुय दर्शनुक तुॅअथ छा शक
वुन्यि वुन्यि दारि बर यलुॅ गऽयि साऽरी
प्यव प्रकाश हेंरि बों॑न च़ोंपाऽरिये।

३. ज्योती द्रायि नागुॅ खऽचुॅ आकाऽशी
दीवी तुॅ दिवता आयस शरण
वऽन्दि वऽन्दि तिम माज्यि लऽग्य पाऽरि पाऽरी
प्यव प्रकाश हेरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।

४. शीवुॅनाथन कऽरुॅस पोशि अंबाऽरी
अछुॅ रछुॅ छि वनुॅवान चोंपाऽरिये

गण्पत जियस आयि गोंडुॅ अनुॅवाऽरी
प्यव प्रकाश हेरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।

५. भगवान छु ललवान राजुॅ कोंमाऽरी
छुस दपान संतान बुॅ च्योनुय छुस
यूगी तुॅ सत्ज़न च़्यें आज्ञाकाऽरी
प्यव प्रकाश हेरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।

६. अऽसि चाऽन्य सन्तान चाऽरी तुॅ फ्याऽरी
अनुग्रह असि थऽविज़ि जाऽरिये
यीयतनय आर छिय हलम धाऽरि धाऽरी
प्यव प्रकाश हेंरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।

७. तुलुॅमुलिच्य राऽगन्या हिमालुॅच्य हाऽरी
कवुॅ गऽयि यिछ़ असि जुदाऽइये
वनुॅवास गाऽमुॅत्य करान छिय ज़ाऽरी
प्यव प्रकाश हेरि बोंन च़ोंपाऽरिये।

८. बड़ि दरबार मा द्राव कांह खाऽली
गरीबन डाऽल्य सूज़ भावुॅ पम्पोश
रोपोश बिहिथ छुय करान वीलुॅ ज़ाऽरी
प्यव प्रकाश हेंरि बोंनुॅ च़ोंपाऽरिये।।

* * *

लीला नं. १५

स्यदी हुँन्दि राज़ुँ पोंत्रो

कराऽयो गूरुँ गूरो

ललुँवथो पूरुँ पूरो; करऽयो गूरुँ गूरो

शिव जीयन्यि टाठि पोंत्रो कराऽयो गूरुँ गूरो।

१. गणपतयार तरुँयो तत्यि जारुँपार करुँयो

म्यति स्योंद अथुँ डाल्तो कराऽयो गूरुँ गूरो।

२. मनुँवारि पोश चारुँयो, वारि वारि शेरि लागँयो

धारुँणायि ध्यान धारुँयो करऽयो गूरुँ गूरो।

३. प्रक्रम दिमय अऽन्दि अऽन्दि, लागय भाँवु पोशि गोंदि

गणिशिबलुँ पाद छलुँयो कराऽयो गूरुँ गूरो।

४. सेद्धियन हुन्द चुँअ अवतार बेकसन छुख मददगार

वृथ च्योन न्यथ बुँ धरुँयो, कराऽयो गूरुँ गूरो।

५. बन्द गोस वालुँ वाशे घटुँ कास हाव गाशे

प्रकाश दारि यितुँमो कराऽयो गूरुँ गूरो।

६. शिवजियन, वर च़्यें द्वितुँनय, पोंरवतुँकार मोंख्त़ जोंरनय

मनुँकुय प्रंग बुँ गरुँयो कराऽयो गूरुँ गूरो।

७. ***गरीबस*** कलस प्यठ खार ब्रोंठुँ छुम दज़ुँवुन नार

अमि नारुँ मंज़ म्यें कडुँतो कराऽयो गूरुँ गूरो।।

* * *

लीला नं. १६

छेंट्योमुत मन बुॅ कत्यि नावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन
यि लूभुक वाव छु दुॅन्यिरावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

१. वछस छिम गऽध्य गऽमुॅत्य वुछितव
अच्छर छिम हऽल्य गऽमॅत्य पऽरितव
गोमुत कोंल छुस नुॅ केंह भावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

२. अऽछन पचिर्फ्युर कोरुम कर्मन
त्यौंगल कूधुॅक्य म्ये पतुॅ लारन
छि मृगतृष्णा म्यें भ्रमुॅरावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

३. बुॅदेह धाऽरी मनुष्य ओसुस
अंहकारन बुॅ म्यचि़ सोवुस
दिवान वोंटुॅखूर पथर पावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

४. यि दर्दुॅच्य लय छि परुॅदन तल
बऽनिथ दच्छि रांऽठ पानुॅय वल
छु दोंन हुन्द म्युल यि नऽन्यिरावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

५. यि अपुॅज़्युक सोंथ यिवान वऽस्य वऽस्य
छि पापुॅक्य हेल्य यिवान खऽस्य खऽस्य
गऽछ़िथ दम फुटय छु वोंश त्रावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

६. दया गोंरूँसुॅन्ज़ छि तऽस्य सपुॅदन
फुटिथ युस सर दियस पादन
तऽमिस छुनुॅ ज़ांह ति परुॅ पावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

७. सन्यर सऽदुॅरूक चें परुॅखावन
थज़र आकाश नन्यर हावन
कमन वीरन छु व्यसुॅरावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।

८. **गरीबस** आव लुॅयि किन्य गाश
मगर यिनुॅ गछ़ि म्यें राज़स फाश
गटे छुय गाश च़ऽलुॅरावन
तवय ग्वरद्वार छुसय छ़ारन।।

* * *

लीला नं. १७

सन्तन तुॅं साधन हुॅन्धिनुॅय नादन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़
पूज़ा कऽरिज़्यस न्यरमल पादन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

१. पोन्य छुम छावान कत्यि नागरादन
स्यकि शाठन मंज़ द्रायि दऽरियाव
त्रेशि हत्यिनुॅय छुय त्रेंश होमुॅरावन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

२. गोॅणदान आऽसिथ न्यरगोॅण आसन
बासन भास्कर शिव सुन्द स्वरूप
यूगी तुॅं ज्ञाऽनी छि अथ व्यस्तारन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

३. पम्पोश नाभि मंज़ छि सृष्टि धारण
भ्रम छुय बहानय छुख नुॅ चेनान
पाऽरिज़ान सपुॅदी ज़ाल तुल न्यत्रन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

४. कन्यितल केम्य वोॅन कुस छुम पालन
बालुॅ छ़ायि लालन ध्युतुॅनस नाद
क्योम बन्योव भख्त्यज़न आनन तुॅ फानन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

५. स्वर्गुॅद्वार ह्योर छुय दीवद्वार आसन
अमि ह्योर आसन विश्वास द्वार
लरि लोंर ग्वरुॅद्वार अऽत्य करचुॅ धारण
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

६. चऽकुॅरन अन्दुॅरुॅय चऽकुॅरा आसन
सूक्षम प्रकाशुक छु तथ रंग–साज़
पानुॅ छुय बेरंग असि छु रंगुॅनावन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।

७. **गरीबो** द्वारुॅ मंऽज़्य नवद्वार आसन
वुध्यूगुॅच्य जोय छय साज़ वायान
वाऽराग वत्यि छुय राग मन्सावन
कन थव वुन्यि छुय आदन बोज़।।

* * *

लीला नं. १८

ॐ शब्द साज़ुक मस प्यव कनन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू
सेंकि शाठन मंज़ फोंल्य पोशि चमन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम-सू।

१. ओंम गव मरहम लागुन छोंकुन
दोंखन तुँ दाध्यन ति छुय दवा
अऽय मूर्ख पानस कित्य ज़िसि चुँ खनन
ज़्यव तनुँछि दपन सूहम सू।

२. ओम आदि अन्तस ति ह्योर छुय खसन
ॐ त्रन भवुँनन दिवन छु गाश
गाशुक आगुर ओमुँय छि दपन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

३. शिवस ओंमुँय शक्ती छु दिवन
भखुँत्यन अनुग्रह छु करन दय
रबाबुँ मनुक ओंम ज़्येरि वज़न
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

४. बऽल्य छुख माययि रज़े लमन
यि छय ज़िसिसं वालन बोंन
दरुँ दिथ अत्यि छुख वारऽय खमन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

५. इन्द्रे छि मनस हगुँ मंगुँ फरन
तवय छि बुलन गाटुँल्य ताम

तमुँहुक गुँज़ा यिमन छु वयन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

६. ॐ शब्दुँ सूँत्यन इन्द्रे छि च़मन
च़लन तुँ पतुँ कत्यि रलन बोज़
यूगी छु यिमन हुँन्ज़ रास रटन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

७. पानस अपानस करुँनाव मिलुँवन
अन्यन अऽछन गाश हो आम
वुनल यि लूभुँच्य सोंतिथ छि प्यवन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

८. ओमुँकुय मन्थर मंज़ शाह रगन
शाहस तुँ शिवस छि मिलुँवन सोंय
सोंय लय छि मनस सोरूद अनन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

६. कथ क्युत यि अपुँज़्युक रंग प्रंग चुँ गरन
यि प्रंग छु नटन कलस प्यठ
किछ़ हिश लंका सोंत्यि वुँछ़ दज़न
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

१०. सृष्टि छि ओमुँच्य वुछुस त्रिकारण
ज़न्म छु दिवान ब्रह्म सुन्द रूप
पालन छु वेंशनो शिव संहारन
ज़्यव तनुँ छि दपन सूहम सू।

११. कथ गरि कथ छुख नाहकय गरन
असुॅलुच्य कथ मा सनन छय.
पोंत वन गऽछ़िथ प्रुॅछ़ तपुॅ ऋषण
ज़्यव तनुॅ छि दपन सूहम सू।

१२. व्यच़ार बठ्यन प्यठ यूगीज़न
ध्यानस तुॅ प्राणस करान म्युल
सुय राज़ श्रपिथ गव ददुॅ नयन
ज़्यव तनुॅ छि दपन सूहम सू।

१३. प्रेमुक श्रेह अचि़ दिलुॅचन वतन
प्रेमुॅकि आगर तन मन नाव
अन्द वन्द रूज़िथ मंज़ गोर्वधन
ज़्यव तनुॅ छि दपन सूहम सू।

१४. ओम गाशि बुॅत्यि छुस ब्रोंह ब्रोंह पकन
प्रकाश वतन थकन नुॅ कांह
ज़न्मादि ज़न्मन हुॅन्दि दाऽध्य बलन
ज़्यव तनुॅ छि दपन सूहम सू।

१५. ***गरीब*** चान्यन यिमन कथन
सनन छु पानय पनुन पान
दयि सुॅज़ि लयुॅ सूॅत्य दुॅय छ्ंयम च़लन
ज़्यव तनुॅ छि दपन सूहम सू।।

* * *

लीला नं. १६

V.IMP IMP.

पानय पानस छुख मन्दुँछावान
कोनुँ प्रजुँनावान पनुँनुय पान
यकबार मरुँनुँच्य घऽर मऽशिरावान
कोंनुँ प्रज़ँनावान पननुय पान।

१. मन छुय नुँ डंजि, छुय लंज्यि लंज्यि फेरान
त्येल्यि साध करुँनय क्या अथुँरोंट
नारस पोख्तुँकार वोंठ छिय त्रावान
कोंनुँ प्रजुँनावान पनुँनुय पान

२. दुयितुक पान छुख बऽल्य रंगुँनावान
अदोंयतुँच्य माल फिरुँनावान छुख
पानय पानस छुख भ्रमुँरावान
कोंनुँ प्रजुँनावान पनुँनुय पान।

३. निश छुय पानस छुख नुँ प्रजुँनावान
वछुँ अऽछ आऽसिथ रावान गाश
ह्यनुँरस मंज़ छुख केम्य सोम्बुँरावान
कोंनुँ प्रजुँनावान पनुँनुय पान।

४. क्रूधुक नार छुय ताल्यि किन्य न्येरान
क्याज़ि छुख सगुँवान लूभुँच्य थऽर
तमुँहुँक्य पोश छुख वत्यि वत्यि छावान
कोंनुँ प्रजुँनावान पनुँनुय पान।

५. काऽल्य सूऱ्य गछुँनय तमुँहुँक्य सामान
पतुँ छा मानान वीलुँ तय ज़ार
येम्य ज़ोंल अवुँलय तस क्या छु रावान
कोंनुँ प्रज़ुँनावान पनुँनुय पान।

६. बानस ठानुँ तुल लावुँ छुय न्येरान
बदबू छि न्येरान छय ना यिवान
अन्यिरस मंज़ अत्यि क्या चुँ नऽन्यिरावान
कोंनुँ प्रज़ुँनावान पनुनुय पान।

७. ***गरीबो*** रोपोश पोश गछ़ छावान
पनुँन्यन तुँ परुँध्यन चावान गछ़
सम्भाव च़्यथ छीय दयगथ प्रावान
कोंनुँ प्रज़ुँनावान पनुनुय पान।।

* * *

लीला नं. २०

छुव समय रोंख बदुँलान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान
सुल्यि गरि छिव नुँ सखुँरान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

१. ाल वोल कालुँ ओंबुरन
वुन्यि वुजुँमलति ज़ोंतन
प्रलुँयिक्य करन सामान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

२. क्यमखाब खासुँ अऽतुँलास
वलुँनुय छुय चेंय त्रावुन
जामुँ तन नारुँ दज़ान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

३. सत्संग जामुँ रंऽगितव
नादान पायस प्यतव
पतुँ नुँ बीछिथ ति मेलान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

४. रंगन येल्यि हर तर द्राव
पतुँ मां रूज़ कांह ग्राव
शुमशान बन्यि गुलिस्तान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

५. त्रुक हय छुख राज़ि पिन्हा
साज़ि जिगॅुरस थव पय
होश थव गोशव सान
पानॅु कऽरितव पनॅुन्य ज़ान।

६. गगॅुरायि या वुज़ॅुमल
त्रटॅु बारानॅु वऽसितन
लरि लोंर रोज़ि भगॅुवान
पानॅु कऽरितव पनॅुन्य ज़ान।

७. यूगॅुबल बनरव न्यरॅुमल
गोरॅुद्वार अछॅु जलॅु जलॅु
समनबल समन जानान
पानॅु कऽरितव पनॅुन्य ज़ान।

८. तस मर्ग फरि क्या वन
यस पनुन ग्वर आयतन
पुशरिथ तऽस्य पनुन पान
पानॅु कऽरितव पनन्य ज़ान।

९. वोंलॅु बोर वाल नखॅु प्यठ
सिरॅु पाऽठय वऽन्यमय कथ
कथि मंज़ कोंथ छि न्येरान
पानॅु कऽरितव पनॅुन्य ज़ान।

१०. ठान दिथ छावुँ अन पान
पोख्तुँ ब्योल मोंख्तुँ न्येरान
तिम छि लाले बदखशां
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

११. रंगुँ यन्द्रुक कृच्य कृच्य
बूज़िथ क्या न्येरी
मनुँच्य माल कोनुँ सुमरान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

१२. शुन्य गर्भुँ ह्यनुँ आमुत
सु प्रकाश तस छु ज़ामुत
वुछ यिमव लोंबुख इरफान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।

१३. **गरीबो** यूत मव ज़्येठ
यिनुँ लगि पानुँसुँय हेठ
सूर्यमित्य तस छि अरुँमान
पानुँ कऽरितव पनुँन्य ज़ान।।

* * *

लीला नं. २१

अऽन्दुॅरिम किताब परखना
लोतुॅ लोंतुॅ वरख फिरखना
शब्दन अन्दर अचख ना
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१. लन्जि लन्जि चुॅ फेर शब्दन
सन्धि छेद कर चुॅ दरमन
ओंमकारुॅ सारुॅ न्येरन
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

२. अछ तो अन्दर चुॅ पानस
मतुॅ सन तुॅ यथ जहानस
ध्युन छुय हिसाब निदानस
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

३. नेरख लंगन तुॅ लंजन
ह्यनुॅ यिख चुॅ तापुॅ चंजन
वोनुॅमय म्ये राज़ थव कन
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

४. रतुॅ छेपि ग्वरस लगुन छुय
रसुॅ रसुॅ अऽती गली दुॅय
मन शान्त तेंल्यि च्यें स्पुॅदी
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

५. कुस क्या वनी चुॅ मो सन
कुन्यि पाऽठ्य रठ पनुन मन
सोंय माल गछ़ चुॅ सुमरण
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

६. बूज़िथ ति लाग ड़लुॅकाव
कर्मुक चुॅ न्याय अंऽजुॅराव
कऽम्य क्या वोंनुय चुॅ मऽशराव
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

७. अभ्यासुॅ यूगुॅ रऽटिज़्यन
अऽछिनुॅय अन्दर चुॅ रऽछिज़्यन
छ़ेंपि. चूरि पतुॅ चुॅ वुछिज़्यन
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

८. चिरिग्युश करख तुॅ रावख
छ़ोंपि मंज़ सन्यर चुॅ प्रावख
एकान्त कुठ सजावख
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

९. हेंछिनय चुॅ ड़ालुॅ मारख
नन्यिवानुॅ मन्दुॅछावख
पानस चुॅ पामुॅ थावख
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१०. ज़ेंवि ध्युन कुलुफ छु रूत जान
शायद बनी यि वरुॅदान
बन पोंखतुॅ कर चुॅ व्याख्यान
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

११. ग्वरुॅ पाद युस छु पूज़ान
वोंपुॅदान तस छु ब्र ह्मुॅज्ञान
अंदुॅरिम न्यबर छु न्येरान
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१२. गोंर कंड़िय कड़ी च्यें पादन
वाती सु पूरुॅ दादन
समुॅखी सु न्यथुॅ प्रभातन
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१३. तामस छु त्रामुॅ बानय
सत्गोंण सोंनुॅच्य छि कानय
प्रजुॅलान छु पाऽन्य पानय
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१४. शेरी सु कर्मलीखा
करि स्यऽज़ सु भाग्यरेखा
सोंय ग्वरुॅ दया करीना
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१५. करुँ शेंशतुॅरूक च़्यें च़ापुन
शांऽती वनस च़्यें वातुन
हावुन छु रावुॅरावुन
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१६. युस पोंखतुॅ कोंधि मंज़ द्राव
सुय मोंखतुॅ हार ह्यथुॅ आव
रूज़िथ न्यबर अन्दर च़ाव
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१७. टिकुॅ तार गिंदि सु तारस
गुलज़ार खसि सु नारस
दय टोठि पोंखतुॅकारस
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।

१८. वलुॅ पख **गरीब** पानस
फालव चुॅ तुल दुकानस
सोंदा मुॅ कुॅन बेंगानस
गछ़ वोंन दिवान जिगरो।।

* * *

लीला नं. २२

कथ प्येठ. चुॅं मारान ड़ालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय
सोंम त्राव खोंर यख ड़ालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय।

१. कथ प्येठ चे़ बऽल्य अभिमानुॅं
कम शानुॅं मूरान गऽय
अज़ नय पगा लग्यि ज़ालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय।

२. प्रोंन क्युथ गोंन्दुर ह्युव ज़ाख
पतुॅं हाय मऽथित द्राख
रोंपुॅं तन चे़ कऽरुॅंथन कालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय।

३. दुयतुक रोंछुथ शाहमार
अपुॅंज़्युक कोंरूथ व्यवुॅंहार
कामन चुॅं रोंटुनख नालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय।

४. छ़ठ अहमुॅं नारुॅंच्य लऽज्य
अत्यि वासना थऽर फोंज्य
मंज़ भाग गोख पामालुॅं
हेंरि लालुॅं वुछान छुय।

५. भ्रमुं रूप ओसुय पान
क्या लालि बदरवशान
अजुॅकार वोंन्य बेहवालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

६. मन यारुॅबल पोंश चाय
मथुॅ मांड़ कऽरिथ द्राय
लतुॅमोंन्जि कोंरुख बेहालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

७. अभ्याऽस्यि यूगी ज़न
येत्यि योर कत्यि वुच्छिहन
बीठुॅय अऽछन मुंह ज़ालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

८. बऽल्य पूथ्य परान छुख
कत्यि पानुॅ नचान छुख
बऽल्य छुख दिवान टुंगुॅ शालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

६. कत्यि आख गछुन कोंत
कुस वातुॅनावी तोंत
बोज़ी चेंय पतुॅ कुस नालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१०. सरुॅ येंम्य ति कोंर येत्यि पान
रिंदुॅ चाव सुय मोंयखान

चावान मोंय कलुॅवालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

११. रहबर पनुन ग्वर छ़ार
करुॅर्नोव सुय दियि तार
कर पान तऽस्य हवालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१२. क्रयकर तुॅ दयुॅ वथ रठ
ब्रह्मज्ञान ममता च़ठ
आकाऽश्य मारख छ़ालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१३. मन दून्यि हुमख पान
समुॅयूगुॅ थन पेंयि ज्ञान
मस्तानुॅ पुर कमालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१४. समता खोंरन लाग रव्राव
ममुॅतायि दंद फुटुॅराव
रोंज़ी नुॅ पतुॅ मलालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१५. षठच़क्रुॅ अन्दर फेर
रसुॅ रसुॅ चुॅ न्यबर नेर
फोंलुॅनय च़े संगरमालुॅ
हेंरि लालुॅ वुछान छुय।

१६. रंग रूँप वाऽरन गोंल
सोंन्दर बन्योख बेड़ोल
राऽवुँय चेँ कोंस पोंत चालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

१७. वुच्छि वुच्छि ति लोगुथ ओंन
मायायि मंज़ गोंय त्रोंन
अऽम्य वोलुँनय पतुँ दालुँ.
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

१८. संन्ध्या तुँ प्राणायाम
अपुँज़ुय कोंरूथ सुबुँ शाम
वन कर फिरुँथ मन मालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

१९. अऽत्य पनुँन्यि गोंफि मंज़ रोंज़
पतुँ यूगॅ वनुँवुन बोंज़
देवानुँ दम संभालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२०. व्यस्तार वुच्छ आकाश
ओंबुँरस चटान प्रकाश
गाशस ति ह्योर जलालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२१. वज़ि तार जिगुँरुँच्य याम
बेंराम लबि आराम

मस्तान वन मस्वालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय

२२. तुलि तन समय घटुँकार
अिस मटि छि पनुँन्य खार
ज़ाऽलिथ छिना मशालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२३. ग्वरद्वार दिवय लुँज्य
संतन तवय लुँज्य रऽज्य
यूगी यिवान तोंत सालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२४. रावख चुँ गन्यिरस मंज़
कर नेरुँनुक अत्यि संज़
सन्यिरस चुँ गच्छ़ हवालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२५. कुबुँ तुल तुँ दुबुँ मो रोंज़
अऽन्यसारि कन दिथ बोंज़
शाहस चुँ कर शाहमालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।

२६. **गरीब** मंज़ तय अन्द
संसार सोंरूय फंद
रोट मारुँमोंत मेंत्यि नालुँ
हेंरि लालुँ वुछान छुय।।

* * *

लीला नं. २३

कर्मन तय अर्कमन गंड़ कोरुँनय कोंर्कमन
छय छेंटेमुँच़ तंन मन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

१. जंग वोंथ येल्यि धर्मन, सब्ज़ार गव दऽर्धुवन
भरुँ गऽय कम हीवन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

२. न्यठ ओंगुँज्य माल सुमरण, मायायि ओंल येंरन
छऽकुँरिथ चुँ तरफातन, पोश बऽल्य लागान छुख।

३. यिथय छा कार अंदन, छोरूँय छुख पोंन्य मंन्धन
छ़ऽरिसुँय प्यठ चुँ रिज़ॅन पोश बऽल्य लागान छुख।

४. पांऽच़न शन तुँ सतन, खुर आय कर्मुँ वतन
रंगुँनाव वारुँ बदन पोंश बऽल्य लागान छुख।

५. पऽटिस छा पोट बनन, सेंकि छा ओट वनन
रज़ि रोंस क्याज़ि लमन पोश बऽल्य लागान छुख।

६. रंगुँरेज़ बानुँ रंगन, अकुँस प्यव खास अंगन
नंगुँ रूद तोत्यि मंगन, पोश बऽल्य लागान छुख।

७. हुय वऽछ़ अर्धरातन, थरुँ थरुँ चायि सादन
सोंथ्य छेंन्यि लोंलुँ वादन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

८. यस दोंख सोंख व्यपन, तस छि दरियाव श्रपण
सुय छु तऽच़ ताऽव तपन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

९. अऽन्दुॅरी कल छि गनन, अदुॅ छुस सनुॅ लगन
बन्धुॅनन पन छ्यनन, पोश बऽल्य लागान छुख।

१०. कुन्यि पाऽठ्य छुनुॅ मोंटन, वुजुॅमल मंज़ त्रटन्
हाऽव्य हाऽव्य बुथ छु खटन, पोश बऽल्य लागान छुख।

११. अऽतुॅरा अथन मलन, ज़ाल्यव किन्य छि चलन
पवनस आसि रलन, पोश बऽल्य लागान छुख।

१२. कऽन्य शेंछ गऽयि कनन तत्यि जानानुॅ समन
बन्यि दीदार कमन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

१३. वाव छुनुॅ कॉंऽसि वुछन राऽयलन ताम दुॅनन
बरुॅ गऽयि ददुॅ चमन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

१४. अवुॅलय युस छु नमन, तस मां लोंचि लमन
तस छि थफ ज्ञानुॅ थमन, पोंश बऽल्य लागान छुख।

१५. **गरीब** मां फ्यूर वनन, बेंबि मंज़ नारुॅ मनन
तऽथ्य मंज़ पान तपन, पोंश बऽल्य लागान छुख।।

* * *

लीला नं. २४

फुतुँ फुतुँ गोंमुत वुछतम पानस
नज़रा करतम हे
तापुँ वुडुँर मंज़ सेंकि माऽदानस
साया थवतम हे।

१. काऽल्य मरून छुम पायस प्यमुँहा
छ्रटुँ–छ्रट मा करुँ हा
कामुँ ज़िसिस मंज़ त्येलि कवुँ फुटुँहा
नज़रा करतम हे।

२. दोंयनसॅ कामन सुबह तय शामन
क्रूधन नार गोंड सतुँक्यन जामन
कन्यि कन्यि कोड़ॅहस कोंत अंदगामन
नज़रा करतम हे।

३. तिहरिस खाऽरिथ गोंडुँ रब कऽरुँहम
मदुँहऽस्य अहमन अऽछ पऽट गंऽडुँनम
तिलुँवाऽन्य दांदस चँऽड़ चँऽड़ कऽडहम
नज़रा करतम हे।

४. वाऽरन कऽरुँनम वुछ मोंछि मूरन
कूरिथ त्रोवुस अऽन्दरिम चूरन
रसुँ रसुँ असुँलस निश गोस दूरन
नज़रा करतम हे।

५. कुस बुथ ह्यथ अचुॅ यथ गोरुॅद्वारस
बर नय मुचुॅरेंम तेंल्यि पान मारस
थफ नय करि बुॅत्यि मटि पान खारस
नज़रा करतम हे।

६. ओंगनुय आऽसिथ दोंगुॅन्यार पुॅठु गोंम
मंज़ व्यवुॅहारस दुॅयतुक त्योंल प्योंम
त्रॅुशनायि क्रुॅम प्योंम ज़ाहरुॅय तेल्योंम
नज़रा करतम हे।

७. नेंरुॅबल तुॅ रूॅगी च्येंय निश आमुत
आशा चाऽन्य ह्यथ छुस घरि द्रामुत
गाशा रटुॅने गोंफ बल चामुत
नज़रा करतम हे।

८. ज़ोंनुम मा घर वांगुॅज्य वोरूय
छल गोंर कुलहुम बुथ्य फियुर सोंरूय
वुकरन मां यिमुॅ वालुम बोंरूय
नज़रा करतम हे।

९. अऽश्य फेंरि नुॅय चुॅत्यि माला कर तो
गछ़ गोंरूॅ पादन जल जल जर तो
सोंत शिहलिथ पतुॅ न्यन्दुॅरा कर तो
नज़रा करतम हे।

१०. गोंर छुय आगुर मन सर भर तो
सतुॅ चे सेंदि मंज़ श्राना कर तो
बेरंग पोंशन हुन्द रंग रठ तो
नज़रा करतम हे।

११. वादुॅ **गरीबुन** कुस येंत्यि पाल्यम
त्यागुॅच्यि गजि मंज़ रागस ज़ाल्यम
ममता त्राऽविथ समता प्राव्यम
नज़रा करतम हे।।

* * *

लीला नं. २५

ॐ नमः शिवाय पऽरिव लोंलुँ मायि
मोंकुॅलनुक उपाय ॐ नमः शिवाय।

१. भक्तिभाव पोंश, फ़ोंलिम बरुॅजोंश
लाग आयि आयि, ॐ नमः शिवाय।

२. देवादि देव, सु छु महादेव
नम रटि नावि, ॐ नमः शिवाय।

३. परमुँ थान ह्योंर, गोंरुँ द्वार तोंर
मारान ग्रायि, ॐ नमः शिवाय।

४. ब्रशभ वाहन, सूॅत्य आसन
आकाऽश्य द्रायि, ॐ नमः शिवाय।

५. शीश नाग ह्यथ, ज़हर कोंण्ड़ चथ
गोंफि मंज़ चा़यि, ॐ नमः शिवाय।

६. चूरि अछ़ कुठ, सतुॅच्य रज़ वुठ
थव श्रू ऽच़ जायि, ॐ नमः शिवाय।

७. अमर कोंण्ड़ नाव, बदन शहलाव
परुॅध्यन छ़ायि, ॐ नमः शिवाय।

८. शक्ति पाद वात, पख चुॅ दोंह रात
मोंकुॅलि कर्म न्याय, ॐ नमः शिवाय।

९. अऽगुॅनुॅ तऽल्य न्येर, पवनुॅ ह्योंर फेर

अछ़ स्मृणायि, ॐ नमः शिवाय।

१०. आत्म देह भास, मरनुॅ भय कास

कर तुॅ उपाय, ॐ नमः शिवाय।

११. ***गरीब*** गछ़ि कोंत, कुस वात्यि तोंत

कुसू पुशरावि, ॐ नमः शिवाय।।

* * *

लीला नं. २६

मन छुय तीर्थ सन तो पानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो
रिन्दुॅ पान ज़ाल ज़िन्दय परवानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

१. गंगाये मंज़ कऽरिथय श्रानो
पाप वसुॅनय कत्यि देवानो
कर्मुॅच्य गांगल कास बेगानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

२. गोरुॅ वाकस रछि करतम जल जल
कवुॅ गछुॅहम बिन्दराबन गूकल
अऽन्य खल्यि दर्शुण कत्यि बनि पानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

३. च़ोंन च़ूरन मंज़ मन गोमुत बन्द
व्यस्तारस मंज़ कत्यि लबुॅहम अन्द
गोंकुल करताम च़ोंल भगवानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

४. बृज भूमि गाऽमुॅच़ अज़ तल तल
बृज वाऽसी लूभी बेंयि र्निबल
मुह माया छख वुनुॅ वालानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

५. बिन्दराबन मा रूद बिन्दुॅराबन
रासुॅ मंडुल कृष्णुन कति वुछहन
तत्यि राक्षस लूभी रोंज़ानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

६. तत्यि ब्राह्मण कावुॅज्य ज़न गाऽमुॅत्य
ब्रह्मचे वुनुॅले मंज़ ह्यनुॅ आमुॅत्य
कंगालन वन ,क़र पूरानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

७. सतुॅचे त्रकुॅरे मंज़ अछ़ पानो
त्राव तूलिथ लोंलुक ज़ंऽपांनो
बन मस चथ लोंलुक मस्तानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

८. तीर्थन गऽछ़्य गऽछ़्य वन क्या न्येरी
हऽज्य कर्मुॅच्य रुॅख वन कुस शेरी
गोंरूॅ पादन पान कर कुॅबानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

९. गुपिथुॅय वुछ तींथन फिरनावी
घरुॅसुॅय मंज़ गोंर्वधन हावी
छ़ुय गल्यि गल्यि अमृत चावानो
मव फेर ओंर म्यान्यि जानानो।

१०. जंगुॅलन फेरान पानुॅय रावीय
अऽन्दुॅरिम कऽन्य शेंछ तत्यि कुस भावीय

ग्वर छुय शांऽती वन ह्वावनो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।

११. पऽक्य पऽक्य पाद छिय बऽल्य लोसानय
वुछ वुछ तीर्थ क्या लारानय
मन यारॅबल कर कों़रथम श्रानो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।

१२. मनचे गंगायि पाज़ा करतम
इन्द्रे शोंमुरिथ मन माल ज़पतम
गंगा माता यीयि पाऽन्य पानो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।

१३. सन्ययाऽस्य पलुँवन मतुँ जांह सन्तम
गर्भुॅच्य कोंछि मंज़ सूहम गरतम
सूहम सुॅय मंज़ जूझ रोंज़ानो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।

१४. नन्दगाम नन्द गोंरियुन कत्यि वुछहम
ठग ब्राह्मण वत्यि वत्यि मा बुछनम
कृष्णुन जूलुॅ गछ़ घरि अऽलुॅरानो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।

१५. मोह दंरियावस यीरुॅ यिनुॅ गछ़हम
कामुॅकिस हयनुॅरस मंज़ यिनुॅ फटुॅहम
गरीबन वन्यि कोंड़ परमस थानो
मव फेर ओ̃र म्यान्यि जानानो।।

* * *

लीला नं. २७

शिवस छुमय आव आवय
राजरेंन्य घरुँनावय,
हुरिय् ओंकदोंह आवय
राजरेंन्य घरुँनावय।

१. तपुॅऋष वऽथ्यय बोंन् बोंन
माज्यि हुँन्दि बोंज़ने गोंण
घटि मंज़ गाश आवय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

२. परबतस दित्यिम ना वऽन्य
पोंखरिबलुॅ कऽडुॅमख नऽन्य
प्रथ जायि सम्भावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

३. ब्रह्महण रऽटिनय पाद
शब्दुॅ ब्रह्म थनुॅ प्यव नाद
नादुॅ मंजुॅ गाश द्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

४. लि़वुॅन्यि लऽग्य घर तय बार
प्रज़ल्यव कुल समसार
सोंज़ि ओंम बोजुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

५. ओंकदोंह प्यठ सत्‌म ताम
वनुँवान शहरुँ तय गाम
स्वर्गुं लूक यूरि आवय
राजरेंन्य घरुँनावय।

६. आकाश प्यठ व्यमानन
दीवघन पोंश त्रावन
बुॅत्यि पान वथुॅरावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

७. द्वार पूज़ा करान कम
यिमव कोंर च़्येंय सरुँखम
तिमन श्रेंह चोंन भावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

८. द्वादश ड़लुॅ द्रायख
पतुॅ शांत ड़ल च़ायख
छुय अलौकिक प्रभावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

९. मुचुॅरूस मस विगिन्यव
द्रायि शिव ज्यूत्य न्यत्रव
अन्यन ताम गाश आवय
राजरेंन्य घरुँनावय।

१०. सिर्यि तीज़ ड्यकुॅ ताबान
नाऽल्य तारख च़्यें ज़ोंतान

ड़ाऽल्य दिल पिलुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

११. चऽन्दुॅर छिय दोंति जऽऱ्य जऽऱ्य
बेंयि छि ओंमकार गऽऱ्य गऽऱ्य
मोंखतुॅमाल नाऽल्य त्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१२. ब्येंरंगस वुछिव कम रंग
तवय लोग करून सतुॅसंग
प्रेयमुॅ रंग नोंन द्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१३. हुऱिय आऽठम दोंह च्योन
फोंल्यि सोन अज़लय लोन
पतुॅ रोज़न नुॅ ग्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१४. शिव जियिन्य कर्मुलीखा
वुछिनि आव विशवकर्मा
शिव रोंन्यि वजुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१५. हुऱिय आऽठम छि ताबान
मांऽज़िरात शोंलुॅ मारान
मीनायि शर द्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१६. लोंलुॅ मांऽन्ज़ आऽडुॅरावान
सरस्वती छि भाऽगरावान
मुशकुॅ अदुॅफर द्रावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१७. यूगुॅ द्वार द्राव यूझी
वुछिन्यि आयि शिव शक्ती
बुॅत्यि दारि मुचुॅरावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१८. शिवजी आव वरुॅने
वेंष्णुॅ आव जऽशिनुॅ करुॅने
शिव लग्न परनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

१६. अष्टा दशबोंज़व छख
बाऽगरान लोंल तय सोंख
ओंश मोंखतुॅ जरुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

२०. दोंन मंज़ वुछ क्युथ सम
यिथुॅ कऽन्य मॉऽज़ तय नम
गमन गव चले जावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

२१. वत्यि वत्यि पतुॅ अतुॅगथ
छुनुॅ ध्युन विशवास च्यथ

सोंन बन्यि नारुँ द्रावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२२. ॐस मंज़ श्रपिथ सूहम
तऽत्य वज़ान साज़ि मदुँहम
वोंन दिथ नोंन द्रावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२३. सतुँसंग चानि वेरे
खोंतुस ना चानि हेरे
कारिपऽत्य शोलुँनावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२४. महाराज़ शिवजी च्योंन
अऽस्य वन्दोंस कबीलय क्रोन
नारदुँन्यि ज़ंगि द्रावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२५. देवलूक आयि दिवता
विष्णुँ ब्रह्मा पितामाह
वुछ नचान कमि चावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२६. शिवस नखुँ ज्यूत्य शक्ती
गरीबस दिचुँन भख्ती
ठानुँ दिथ आस छावय
राजरेंन्य घरुँनावय।

२७. शिवचो़ंत्र दशी हुॅन्ज़ राथ
प्रज़ॊलान आयि बुतरात,
प्रेयमुॅ रास गिन्दुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

२८. मंगुन छुय ति मंग वुन्यिक्यन
राजरेन्य रंज़ुॅनावि मन
रूत भोंग सोंज़ुॅनावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

२६. सिर्यि सास गाश त्रावान
यऽज़ुॅमन छु पानुॅ भगवान
शीश नाग सालुॅ आवय
राजरेंन्य घरुॅनावय।

३०. प्राणनाथ प्राण शिवनाथ
गरीबस सूॅत्य दोंह राथ
अमरनाथ घरी हावय
राजरेंन्य घरुॅनावय।।

* * *

लीला नं. २८

वनय क्या क्या म्य गुदॅर्योंम
येंल्यि गोंरूँदीव याद प्योंम
ऋषिवारि मंज़ सु आयोंम
येंल्यि गोंरूँदीव याद प्योंम।

१. यूगॅु मंडॅुलॅु प्यठॅु आव योर
नव द्वार त्राऽवॅुन दोर
लोंचॅुरावॅुन्यि आव म्योन बोर
येंल्यि गोंरूँदीव याद प्योम।

२. गाशि तारख छि ताबान
नक्षत्रन मंज़ छि शोलान
गृहध्यन सिर्यि चमॅुकान
येंल्यि गोंरूदीव याद प्योम।

३. अरॅुरवोंल कर्यम तस क्या
सु छु म्योन अज़ॅुलु लोना
करान छुय युगॅु जशिना
येंल्यि गोंरूँदीव याद प्योम।

४. शुमशान किन्य वुन्यि द्राव
ज़नहा पऽक्य गाशि दरियाव
अलौकिक त्युथ छुस प्रभाव
येंलि गोरॅुदीव याद प्योम।

५. अन्तःकरणन तल
न्येरान छु अमृत ज़ल

च्यन तथ रिंदुॅ जल जल
येंल्यि गोंरूॅदीव याद प्योम।

६. समय छुस ना पंजन तल
आगुर छु तस यूगुॅ बल
तस कुस करि येंत्यि छ़ल
येंल्यि गोंरूॅदीव याद प्योम।

७. शाहज्यूत्य तस छि मिलुॅवन
हमसू तस छु दरुॅमन
छना तस मन्यि कामन
येंल्यि गोंरूॅदीव याद प्योम।

८. गोंरूॅदीव करूम आऽही
रात दोंह वुछिहथ चुॅय
वऽन्दय् वऽन्दय् लगुॅहय बुॅय
येंल्यि गोंरूॅदीव याद प्योम।

९. मंजुॅ बाग छुम सु रोज़ान
तोत्यि कऽन्य शेछि सोज़ान
दरुॅ परदुॅ कथुॅ बोज़ान
येंलि गोंरूॅदीव याद प्योम।

१०. ***गरीब*** छुय कूत भाग्यवान
न्यत्रुॅ पोश गोंरस लागान
नेह गटि ति शोलुॅ मारान
येंल्यि गोंरूॅदीव याद प्योम।

* * *

लीला नं. २६

त्याग-अभ्यास-यूग

मनुँचे मनकल्यि नार वुह्नोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान
अन्धुँकारस मंज़ चोंगा ज़ोंलुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

१. वाऽरान पानस पान आलुँनोंवुम
हंगुँ मंगुँ अथि आम परुँमुक धाम
हन्यि हन्यि मदुँ पान रसुँ रसुँ वोंलुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

२. लूभुँचि लोंचि अज़ गंड मुचुँरोंवुम
काऽरिथ चोंरूम सोंन तय त्राम
भख्ती हुँदि रसुँ पान सगुँनोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

३. सतुँकिस यन्द्रस पन येल्यि खोंरूम
अपुँज़्युक गंड मुचुँरोंवुम तान्य
चक्रस मंज़ पाना नचुँनोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

४. वोलुँ बोंरस तोंल बार करुँनोंवुम
काम क्रूध ज़ाऽलिथ हुमुँमस पान

प्रेमुक मनथुॅर मन परॅुनोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

५. यूगॅु के मन्थॅुरॅु पान ह्योर खोंरूम
रसॅु रसॅु अत्यि ठहरोंवुम पान
तपॅु ऋषिनॅुय सूॅत्य ज़ान करॅुनोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

६. दयि सुँन्ज़ि लयि सूॅत्य हेंयस होश थोंवुम
ओम के कोंम्बॅु अबॅुसोंवुम पान
गम गोंसॅु त्राऽविथ पान लोचॅुरोवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

७. सहजॅु व्यच़ारॅु नागॅु पोंन्या छोंवुम
पाप मल त्रोंवुम अऽतिनॅुय बस
यकॅुबार सम्भावॅु पान लोचॅ़रोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

८. पानस अपानस नॅु येल्यि ब्यन ज़ोंनुम
त्येलि क्या म्यें रोंवुम तॅु लोंभुम क्या
रावुन तॅु लबुन बस मशिरोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

९. येछ़ि तय पछ़ि सूॅत्य दय नाव गोरुम
पतॅु कत्यि सोंरूम कृणजिल्यन पोन्य

मटि बार विज़ि विज़ि सुति नखुॅ वोंलुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

१०. परुॅमय थानस पान शेरि लोंगुम
वेरि तऽमि सुँज़ि अभुॅसोंवुम पान
पान मनुॅसाऽविथ अदुॅ फ्रख त्रोवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।

११. ***गरीबन*** स्वर्गस बर मुचुॅरोवुम
तोंत्यि मां जांह भ्रमुॅरोंवुम पान
सोरूय पुशरिथ आनन्द प्रोंवुम
दम दिथ प्राणन होंवुम पान।।

* * *

लीला नं. ३०

''ग्वरुॅ लीला''

ग्वरुॅ चान्यि माये आयि पूज़ाये
शोंज़ुॅ भावुॅनाये लायय नाद
मंज़ वत्यि यिनुॅ प्येयि कर्मुक न्याये
शोंज़ुॅ भावुॅनाये लायय नाद।

१. परुॅछयन्य वनुॅवाऽस्य च़ऽल्य च़ऽल्य आये
कत्यि फोंर रावुन जंगलस मंज़
माता सीतायि क्रख क्रख लाये
शोंज़ुॅ भावुॅनाये लायय नाद।

२. पाप तय पोंन्य यिम त्राऽविथ आये
सम्भावुॅ च़ाये यूगस मंज़
इन्द्रे गगरन दुॅह दिथ आये
शोंज़ुॅ भावुॅनाये लायय नाद।

३. पुशरिथ सोंरूय तऽस्य् पतुॅ द्राये
ग्वरद्वार च़ाये रटुॅन्ये पाद
सुय पाद मन्यि मंज़ ललुॅवान आये
शोज़ुॅ भावुॅनाये लायय नाद।

४. परुँमय थानस छुख थज़ि शाये
बेपरवाये यूत मो लाग
वथ हाव नतुँ छुनुँ मोंकुँलनपाये
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

५. पोंत कल गाल कर सोन उपाये
दर्शन डेड़ि तल चाने आय
असि श्रह वुज़नाव दितुँ तिछ़ माये
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

६. छ़ेय्निमचि़ कायायि छ़ा कांह उपाये
त्येंलि क्या छ़ोंडुथ पाये सोन
रवाक़स मीलिथ यिनुँ गछ़ि ज़ाये
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

७. अनुग्रह चान्ये अन्दि म्योन न्याये
स्यन्दि ज़लुँ लेम्बि मंज़ फोंलि पम्पोश
द्वादश ड़लुँ मऽन्ज़्य पकुँनाव नावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

८. अन्तःकर्णन कुस घरुँनावे
कुसुँ हेछ़िनावे ॐ गव राम
दोंनुँ हुँन्ज़ मिलुँवन कुस प्रज़नावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

Imp.

९. गोरुँ वाख सीनस चाखा ध्यावे
मन मन्थुँर ज़पुँनावे प्राण
वसि खसि मंज़ सूहम परुँनावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

१०. लाल मोंलूल छुय परुँदन छ़ाये
खासन तत्यि छय जाये बोज़
गोरुँ शब्दुँय बस तोंत वातुँनावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

११. सन्त्र्यथ कोरुँमुत सुति परुँखावे
तूल्य तूल्य त्रावे सोंन तय त्राम
काऽरिथ नारस मंज़ व्यगुँलावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

१२. दाऽन्य दाऽन्य पानय कहवचि खारे
नखुँ मां वाले सोंनुँ कन्यि त्राम
ज्ञानुँचि कहवचि मन प्रज़ुँनावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

१३. रंग रंग फुटुँज्यन गंड़ मुचुँरावे
प्रोंन ज़ग चारे थावे ब्योंन
प्रोंन तत्यि पज़ुँरूक गाशा हावे
शोंज़ुँ भावुँनाये लायय नाद।

१४. ग्वर छुय प्रारान वुन्यि छुख यपारे
पतॅु मां प्रारे येल्यि गछ़ि चेर
माऽलॅु छु लोंगुमुत स्यन्दि अपारे
शोंज़ॅु भावॅुनाये लायय नाद।

१५. बूज़िथ नाव म्येति दिल गोंम तारे
शाब्दुक मस मेत्यि वसि मंज़ प्यव
पोंशि फुलय लॅुज्य मनॅुचे वारे
शोंज़ॅु भावॅुनाये लायय नाद।

१६. शिनिहस मंज़ ज़ूला करॅुनावे
देह लरि ज़ाले ॐ कुय चोंग
मोंख्ती त्राऽविथ भख्ती प्रावे
शोंज़ॅु भावॅुनाये लायय नाद।

१७. ***गरीबन*** थफदिच़ तस अऽन्यि सारे
नोंन यिनॅु न्येरख पारे मंज़
पानस मंज़ पानय व्यपॅुरावे
शोज़ॅु भावॅुनाये लायय नाद।।

* * *

लीला नं. ३१

''ग्वरुँ लीला''

ग्वरस पनुँनिस बरस तल गछ़
परन प्यथ पूज़ि लागुस मन
दपुस तम्यि शब्दुँ साज़ुक मस
बुँ चमुँहा छम म्यें मन्यि कामन।

१. तमाह सोरेंयम नज़र करतम
म्ये क्या फोंर्यम पज़र वनुँतम
वुनल लूभुँच म्यें वथ ड़ालन
बुँ चमुँहा छम म्यें मन्यि कामन।

२. हऽड़ी मन क्रूधुँ नारन वोंल
यपाऽरय अऽन्यि अऽन्यि होंपाऽरिय कोंत च़ोंल
तवय रोटुँमय म्यें चोंन दामन
बुँ चमुँहा छम म्यें मन्यि कामन।

३. दपी ग्वरद्वार तनुँनाव मन
तुँ अदुँ कर पतुँ चुँ गोंरुँधारण
च़ुँ छुख वुन्यि खाम पोंख्तय बन
बुँ चमुँहा छम म्यें मन्यि कामन।

४. अनुम पछ़ छुस बेंपछ़ गोंमुत
थऽकिथ छेन्यिथुँय पथर प्योंमुत

छु मन मोह न्यन्दुॅरि वुज़ुॅनावतन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

५. करुॅन्य छय क्रय च़्यें पानस बोज़
दिमय पय अदुॅ चुॅ बोज़ख सोंज़
मगर रोज़ ज़ागि रात ओ ध्यन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

६. सु.वत्यि वत्यि छ़ाय हिश रोज़ी
अऽचि़थ अन्दर न्यबर बोज़ी
च़्यें कासी छ़ाय बनख सतुॅज़न
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

७. अन्दर अऽचि़थुॅय च़्यें परुॅखावी
मगर मां तोंत्यि केंह भावी
यिथ्यन निश छुनुॅ खऽटिथ रोंज़न
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

८. सु छुय बेलाग तुॅ बेपरवाह
सु छुय बेदाग दिलन हुन्द शाह
दुयी त्राऽविथ कुनुय बासन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

९. सु छुय स़्योंद सादुॅ यूगी ज़न
सु फल्यि फल्यि प्रोण तुॅ ज़ग चा़रन

सु सेवाभाव छु प्रज़ुॅनावन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१०. सु छुनुॅ सऽन्यिाऽस्य रटान पोतुॅवन
सु छुय सम्साऽरि्य येंत्यी आसन
तऽमिस छुनुॅ कांह ति ब्यन बासन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

११. तऽमिस नारय छि दऽज़ुॅमुॅच़ वस
तवय फ्यूर प्रेयमुॅभावुक रस
तऽमिस छा गम ज़ि क्या सपुॅदन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१२. तऽमिस छुय भऽक्ति भावुक जोश
सु फऽल्य फऽल्य तोत्यि छुय रोपोश
तऽमिस झोंफुॅर छि आनन्दवन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१३. ति क्या गव छ्योंट सु क्यागव श्रूच़
न सोम्बुॅरान पोंन्य न पापुॅय रूद
टें्यछर म्येछर नुॅ तस बासन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामंन।

१४. छु अहमस तऽम्य कलय चोंटुमुत
तवय छुन ज्ञान वऽटिथ थोवुॅमुत

मगर प्रकाश छु छ़टुँ मारन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१५. तवय दोपुॅमव रऽटिव तस पाद
दिमव तस नाद करव फरियाद
सु थावेव लोलुॅ नादन कन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१६. सु पकुॅनावी चुॅ ब्रोंह कुन न्येर
चुॅ खस ह्योर ह्योर सु लागी हेंर
छि दोंन द्वारन कुन्यी मिलुॅवन
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१७. गोंरस पुशराव चुॅ मन तय प्राण
समनबलुॅ लाग तऽम्य सुन्द ध्यान
करान सुमरण यिनो लगि छ़ेंय्न
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

१८. गोंरुॅय हावी च्यें सत्गोंर बोज़
गंऽड़िथ गुल्य तस चुॅ सन्मोख रोज़
गरीबो तऽथ्यं दपान दर्शुण
बुॅ चमुॅहा छम म्यें मन्यि कामन।

* * *

लीला नं. ३२

"यूगी"

होंपोंरय यपाऽरय च़ोंपाऽरय वुछन

दपन छु यूगी आंगन च़ाव

स्योद अथुॅ सु ड़ाली कमन कमन

दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

१. मुशुक छु फ्येरन वतन वतन

दपन देंवानुॅ गोंमुत छु वाव

दपन भऽर्‌य भऽर्‌य छि पोशे चमन

दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

२. तिमन तिमन वतन छु पकन

यिमॅन नुॅ पकन छि आदम ज़ाथ

शाने बदखशां तस लाल चन्दन

दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

३. पकन पकन छु क्या ताम ज़पन

श्रपन छि मनस तस दरियाव

त्युथ ह्युव सऽदुॅर छुनुॅ ज़ांह ग्रज़न

दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

४. मस्तान मस खाऽस्य भरन छु कमन
यिमन छु सनन दय सुन्द नाव
दुॅय छख गलन तुॅ दिल छिख रलन
दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

५. समय छु आऽधीन वुछ सत्ज़नन
तिमय छि कालस ति करन ग्रास
तिमय छि शिनिहस ति अपोर तरन
दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

६. तीज़ुॅचि ज़ुॅचुॅ छख पकन तुॅ नच़न
अच़न छि अन्दर कऽरिथ ध्यान
सुय गाश प्यवन छुय यारुॅबलन
दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

७. हुबाबुॅ दिलुक येल्यि त्येल्यि कड़न
दपन छि मुशिक्योव सोन्तुक वाव
नतुॅ आरुॅवल मा खसि आरुॅपलन
दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

८. दीवी तुॅ दिवता छि पतुॅ पतुॅ पकन
अछुॅ. रछुॅ. छि नच़न तुॅ दिवन मीठ्य
छिस मांऽज़ मथन अथन तुॅ नमन
दपन छि यूगी आंगन च़ाव।

९. ज़न कामुॅदीवा महाराज़ुॅ मदन
वनुॅवुन छु गछ़न चो़ंपासे
दिवय छि लऽज्यमुॅच़ मंज़ राज़ुॅबलन
दपन छि यूगी आंगन चा़व।

१०. **गरीब** अन्दकुन तऽमिस छु वनन
गनन छु आमुत मेत्यि दयुॅ नाव
यि लय वांऽलिंजि मंज़ छम सनन
दपन छि यूगी आंगन चा़व।

* * *

लीला नं. ३३

ग्वरस कुन लोलुॅ नाद

१. चुॅ यिखुॅना सोन दरुॅदिल हाल भावय
गऽयम कम चाख अज़ुॅलस तिमति हावय।

२. गोंमुत दम फुऽटय श्रपिथ पानस अन्दर छुस
बिहिथ बालादरे्यन प्यठ छुख कड़ान मुस।

३. दपान तथ दरदुॅ बागस वुन्यि फोंलान सूर
कोंरून लूठा फोंरूम दोहल्यी म्ये सऽन्य चूर।

४. यि क्युथ वोंशलुन छु खोतुमुत आसमानस
अऽछन पचिफ्युर छु गोंमत जानि जानस।

५. करेय़म कोंमुॅ म्यें छ़ायन सूॅऽत्य् रातस
दप्योथम हावुॅ दर्शुण न्यथ प्रभातस।

६. समय छुम शांदुॅ ड़ोंलुमुत छुख नुॅ बोज़ान
गहे नखुॅ यिथ ति छुख पतुॅ चूरि रोज़ान।

७. गऽजिम हन हन तुॅ पनुॅ पनुॅ छुम गोंमुत पान
दयावान वनुॅनसुॅय मा छुख चुॅ मन्दुॅछान।

८. स्यज़र म्योन क्याज़ि खोरूथ तखुॅतद्वारस
पज़र म्योन ज़ोलुॅथन कवुॅ लोलुॅ नारस।

९. चुँ छुख ना शानुँ बोड़ त्योलि कोंनुँ बख्शान
म्यें गव सऽरि प्येंठ्य ति छुख ना सेर सपुँदान।

१०. वन्दस मंज़ वोंन्द ति मा शेहलौवथम ज़ांह
त्योंगल चापान बुँ पानस अथ सोंनुख मां।

११. छोंकन बुलगार येत्यि छा कांऽसि सपुँदान
त्वय दुरदानुँ खाकस मंज़ परेशान।

१२. मनुँक्य कोंतर वुफान आऽस्य आसमानन
मगर तकदीर वावन ठाऽस्य बालन।

१३. खबर छा बालुँ बुज़्य गऽय किनुँ पथर पेंयि
दपान अनुँहाऽरि मऽछ़िल्य ख्वाब राज़ुँबल गऽय।

१४. अमारन चाऽन्य घर तय बार लूटुम
दिचोंमस कोंछ़ जिगर मां तोत्यि ब्यूठुम।

१५. दपान कोसुँ पोशि महारेन्यि ड़ोल्यि वऽसिथुँय
दपान गऽयि ना वटुँस्य वुछ ब्रांधुँ खऽसिथुँय।

१६. यि क्युथ वर ओस अज़ुँलस तस खबर मा
तऽमिस दोंन लोंलुँ चऽशिमन लऽज्य नज़र मा।

१७. पज़र मनुँकुय कऽड़िथ मयिखानुँ दोरान
तचर छुनुँ ज़िन्दगी हुँन्दि दोंह छि सोरान।

१८. सु मोंखुॅ प्रोंन कोंत सना चो़ंल वुन्यि यपाऽरी
दपान देवानुॅ गाऽमुॅत्य तस छि साऽरी।

१६. वछस मंज़ पोशि टूरेयन गंड़ छि मुच़रान
करान मस्तानुॅ वावस दिल परेशान।

२०. सो मसुॅवल शानुॅ कऽरि कऽरि द्रायि फटिय फऽटिय्
यि छेन्य योम्बुॅरज़ला कत्यि रूज़ खऽटिय खऽटि्य।

२१. दकन लऽज्य आरुॅवल मंज़ आरुॅपलनुॅय
तऽमिस जानान फेरान यारुॅबलुॅनुॅय।

२२. यिमा तस अज़ुॅलसुॅय रूॅख हऽज्य छि गाऽमुॅच़
तवय मां आरुॅपलुॅनुॅय प्यठ सोत्येमुॅच़।

२३. बुॅ कथ दिमुॅ ज़्यव म्यें निश क्या रूद बाकी
म्यें गऽयि रूम बानुॅसुॅय क्या चावि साकी।

२४. वनुन गव बाज़ुॅरस मंज़ ड़ोल वायुन
वनुन पोंज़ गव सु पानस लायिनावुन।

२५. मत्यो तिम प्रान्यि वतुॅ मां बालुॅ छेऽम्बि गऽय
पकान तिम यार तत्यि वनुवाऽस्य मां गऽय।

२६. शोंज़र मनुॅकुय ति फ्याऽनिथ कऽम्य सना न्युव
बुथ्यन मुल मायि लागान दिल खोटी छिव।

२७. वुठन प्यठ रंग रोगन मुशक छुनुॅ दाऽन्य
तवय गिरुॅदाबुॅनुॅय यारानुॅ लऽञ्य म्याऽन्य।

२८. कलेय्म ज़्यव करुॅन्य त्राऽवुॅम इबादत
रफाकथ वोन्य कर्यम कांह छुम नुॅ हाजथ।

२९. अऽन्दुॅरि वारि तिमं छि सारन लूकुॅ हॅन्ज़ सन
तिमय खासन अन्दर गाटुॅल्य छि आसन।

३०. खबर छनुॅ क्या पगाह ह्यथ आसि आमुत
दपान कालय प्रलय मा आसि ज़ामुत।

३१. च़ुॅ वन नतुॅ क्याज़ि यिछ़ चलुॅलार लऽज्यिमुॅच़
तवय मोंसूम अऽछन अऽश्यि धार लऽज्यिमुॅच़।

३२. मऽतिस मागस ति मा शेहलोवुथस नार
तवय अनुॅहाऽर्य ख्वाबन रोव अनुॅहार।

३३. **गरीबो** ज़ूनुॅ पछ पोंत छायि न्येरन
रऽटिथ पोंत वन बयाबानन ति फेरन।।

* * *

लीला नं. ३४

ग्वरुॅ लीला

good

ग्वरुॅ दामानस लाल ताबानय

कम जानानय बोज़

लोलुॅ व्येमानस खऽत्य परवानय

कम जानानय बोज़।

१. लोल तय अमृत कुस आऽडुॅरानय
स्वर्गस यलुॅ गऽयि दाऽर
कामदीव लायान तीरि मिजिगानय
कम जानानय बोज़।

२. ग्वरुॅ द्वारस आऽस्य पान वथुॅरानय
मांझान अन्तःकरण
बेरंगुॅमंज़ आऽस्य रंग न्येरानय
कम जानानय बोज़।

३. पायि बऽड़िस आसुॅ हूरुॅ वनुॅवानय
म्योन मस्तानुॅ बाहोश
अथ पोशस कुलहम देवानय
कम जानानय बोज़।

४. यूगुँनीय लालस आसुँ वनुवानय
मोंल छुनुँ न्येरान तस
तीजुँचि त्येह छनुँ अथ मूरानय
कम जानानय बोज़।

५. चऽशिमुँ छय पुरमस ज़न पयमानय
मयरवानुँ जाऽनी यार
बाऽगुँरान साकी वुछ पाऽन्य पानय
कम जानानय बोज़।

६. च्यथ आकाशस गाश ललुँवानय
वासुँनायि रोंस लोंग रास
इन्द्राजुन साज़ अति मन्दुँछानय
कम जानानय बोज़।

७. श्वासुँच्यि खोंन्यि मंज़ ओंम ज़ोतानय
हमसू छु पानुँ भगवान
नालुँमत्यि गाशन रोंट नाराणय
कम जानानय बोज़।

८. गोंरुँ सुँन्ज़ घरुँव्यठ सुय व्यतुँरानय
येम्यि कोंर तमुँहस सूर
चूरि सूरस मंज़ कम दुरदानय
कम जानानय बोज़।

१०. आदि अंतुॅ रोंस्तुय पर्ुमय थानय
परमुॅ प्रकाशुक द्वार
नाद ब्यन्द अऽथि्य मंज़ छुम रोज़ानय
कम जानानय बोज़।

११. यूझियन हुँन्ज़ जाय मंज़ शीशिरवानय
शुान्यि मंज़ गाश न्येरान
गाशुक आगुर छुख पाऽन्य पानय
कम जानानय बोज़।

१२. शुरि भाषि कऽरि कऽरि वुफ त्रावानय
सु छु म्योन आदुॅन्य यार
शोंद यारान छुनुॅ जांहति सोरानय
कम जानानय बोज़।

१३. चेंय चेंय त्रेश छनुॅ म्यति हमानय
अथ छा मूरान तेह, चेंय चेंय त्रेश छम
बेंयि हुॅरानय
कम जानानय बोज़।

१४. बेगानुॅ ग़छुॅहम कोंत दूरानय
तत्यि मा ज़ानीय कांह
वाऽनिस छि ग्राखुॅय वेंदि आसानय
कम जानानय बोज़।

१५. ज़ुवुॅ जान गोरुॅसुॅय दिव नज़ुॅरानय
पोशि कन्यि दिस मन प्राण
निशकाम भावुॅ गछ़ शेरि लागानय
कम जानानय बोज़।

१६. विश्वासुॅचि रज़ि खार ह्योंर पानुॅय
वसुॅवास बिल्कुल त्राव
पानय वातुॅनावी मयिरवानय
कम जानानय बोज़।

१७. ग्वर छुनुॅ नऽन्यि पाऽठ्यि पान हावानय
अंऽदुॅरिम पाऽदुॅ कर ज़ान
सु हा छुय तारुॅचि़ पूरुॅ तोलानय
कम जानानय बोंज़।

१८. ***गरीबन*** गुपिथुॅय रोंटुस दामानय
तस छु बेयि हाजथ क्या
दऽज़ि दऽज़ि परवानुॅ गाश त्रावानय
कम जानानय बोंज़।

* * *

लीला नं. ३५

पुरमस शबाबस मंज़ मस्तानुॅ मस खामोश

छ़ऽट्य छ़ऽट्य प्रकाश हरसू, फऽल्य फऽल्य ति छुम रोंपोंश।

१. ज़न जोंयि सऽदुॅरस म्युल
तत्यि दोंन यकुत बिल्कुल
गाशस छु ललवान गाश
दीदन छु गोमुत म्युल,
यॆल्यि अन्दर वज़न सोज़
त्यॆल्यि लब गछ़न खामोश
छ़ऽट्य छ़ऽट्य प्रकाश हरसू
फऽल्य ति छुम रोपोश।

२. आकाश च्यतुक सार
पानय छु खोंदुॅमोंख्तार
यस पिल्यि नज़र ह्योर कुन
ज़ानुन सु भख्तावार,
शुन्य मंज़ गऽछ़िथ बेदार
मस्तानुॅ छुम बाहोश
छऽट्य छऽट्य प्रकाश हरसू
फऽल्य फऽल्य ति छुम रोपोश।

३. यूगीश्वरस वुछिने ग्वरद्वार बुॅत्यि चायोस
यकुॅबार मऽशिथ गोम योंत करुॅन्यि क्या आयोस
द्वादश ड़लस मंज़ु बाग,
छावान अलौकिक पोंश
छ़ऽट्य छ़ऽट्य प्रकाश हरसू
फऽल्य फऽल्य ति छुम रोपोश।

४. रावान नज़र छम
वऽस्य वऽस्य प्यवान छिम अंग
रंगुॅवारि मुश्कान रंग
येल्यि छुम बनान सत्संग,
बेरंग पनुन शाह छुम
चूरि रऽटिथ गोश
छ़ऽट्य 'छ़ऽट्य प्रकाश हरसू
फऽल्य फऽल्य ति छुम रोपोश।

५. मुचुॅराव चऽशिमय पूर
युथ गछ़ि नज़रि बद दूर
रूम रूम गछ़न शादाब,
दिल शाद बन्यि मखमूर
छ़ऽट्य छ़ऽट्य प्रकाश हरसू
फऽल्य फऽल्य ति छुम रोपोश।

६. चे़नान चु़ॅ छुख ना

कथ वारुॅ **गरीबुॅन्य**

शाहॅमार नज़र राऽछ्य

आसान फकीरुॅन्य,

हरसू मकान तऽम्य सुन्द

छुय सोन जिगर गोश

छ़ऽट्य छ़ऽट्य प्रकाश हरसू

फऽल्य फऽल्य ति छुम रोपोश।

* * *

लीला नं. ३६

चुॅ अछ़ अन्दर तुॅ कर कीर्तन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन
वज़न छुय साज़ अन्दर परुॅदन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

१. मगर बाहोश म्यें कुन थव कन
यि माया छय ओंतन वातन
ग्वरस वऽन्द्य वऽन्द्य चु़ॅ लग पादन
त्रिवेणी दोन संगम सपुॅदन।

२. श्रद्धा भावय चु़ॅ मुचु़ॅराव बर
ओंमुक मन्थुॅर निरन्तर पर
रऽटिथ दम शम चु़ॅ गछ़ अर्पण
त्रिवेणी दोन संगम सपुॅदन।

३. चु़ॅ यिनुॅ रावख वुछिथ व्यस्तार
रऽटिथ दम बोज़ तत्युक गुफ़तार
न छुय तथ छ़्यन न छुय बन्धन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

४. न्यराकार छुय गहे साकार
अनन्तस मंज़ छु मूलाधार

रऽटिथ आसन छु न्यरवासन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

५. पवन छा जांह तोंतन वातन
येंत्यन दोंन छुय विलय सपुॅदन
भर्खुॅत्य भगवान कुनुय भासन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

६. ज़ुॅच़न प्रकाश छु तारन सोज़
अलौकिक लय च़ुॅ पानय बोज़
यिमन दोंन मंज़ छु सम आसन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

७. सतन मडुॅलन चें फेरून छुय
मंड़ल शांतुक चेंय ज़ेनुन छुय
बनख अदुॅ पूरुॅ यूगी ज़न
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

८. द्वादश ड़लुॅ करून गछ़ि श्रान
रऽटिथ मन प्राण करून ग्वरुॅ ध्यान
बनी मन अदुॅ चें शाऽती वन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

९. सुगव गाटुल तुँ ज्ञाऽनीज़न
खऽसिथ अर्शस ति बोंन बासन
करन पूज़ा रऽटिथ दर्मन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।

१०. **गरीब** आगुर छु यस दर्मन
सु गछ़ि ज़ानुन छु आनन्दघन
कऽरिथ सरखम रऽटिथ दामन
त्रिवेणी दोंन संगम सपुॅदन।।

* * *

लीला नं. ३७

शिव-लीला

शिव शिव कोंर येम्य लोंभ न्यरुँवान
तऽम्य लोंभ पानय परुँमय थान
ज़ाऽन्य वाल्यि कऽन्य शेंछ छुखुँ बोज़ान
तऽम्य लोंभ पानय परुँमय थान।

१. दोंब्य वानुँ कन्यि प्यठ छऽलिज़्यम पान
शिव गंगायि मंज़ कऽरिज़्यम श्रान
सत्संगुँ जामुँ रंगुँ बन यकसान
तऽम्य लोंभ पानय परुँमय थान।

२. शिव छुय हन्यि हन्यि मन्यि गारून
कन्यि अंबुँरस मंज़ लाल छारून
सन्यरस गवुँहरुँ लाल ताबान
तऽम्य लोंभ पानय परुँमय थान।

३. दिलुँच्यन तारन हुँन्दुँ वाय सोज़
पतुँ धारणा दिथ तऽथ्य मंज़ुँ रोज़
ग्वरुँ पाद रठ अदुँ सपुँदी ज़ान
तऽम्य लोंभ पानय परुँमय थान।

४. शिव छाय कासी चली गांगल
शोंभ न्यरुँमल सुय करी मंगल

अमंगल वुडुॅर खसि कोंग असुॅमान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

५. ब्रह्मा विष्णो बेंयि दिवता
सारी सृष्टी हुन्द कर्ता
तपुॅ यज्ञन्यि ज़पुॅ किन्यिं च्येय छि सुमराण
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

६. खंऽड्यि बानस लगि पानय वाठ
आवुॅलुॅनि वेंथि वातुॅनावी गाठ
भ्खऽतिस छु मोंखुॅतुॅहार सुय नवन्यधान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

७. भय चठ दय रठ तऽस्य भर लोल
सुय हो कासी जिगुॅरुक्य होल
गछ़ मंगुस भखती भिक्षा दान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

८. मन छुय पारूद छ़लुॅ मारून
यूगुॅ बलुॅ छुय पान तारुॅ तारून
मन्यि मंज़ुॅलिस गछ़ शिव ललुॅवान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

९. कोंलुॅवान कर फेंरि प्रेमुक पोन्य
शहलावि दऽदिमित्यन आगुर वोन्य

बंजुॅरन खसि ब्योल पोख्तुॅ हेल्यि सान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

१०. छ़ोंपिचे घन्यिरय च़ूरि थव पान
सन्यिरस वाऽतिथ करू शिवुॅ ध्यान
दोंन हुन्द जंग च़ल्यि बन्यि यकुॅसान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

११. सन्यि रुॅच्यि कन्यि तलुॅ जूग्य रोज़ान
यूगुॅ माया रऽत्नधीप ज़ालान
ओमकारुॅ ज्ञानुॅ ज्योती छि न्येरान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

१२. सूरुॅमऽत्य मऽल्य ह्योत कुलहम सूर
सूरुॅ अम्बुॅरन फऽल्य गाशि कनुॅदूर
सरुॅताज़ुॅ हीवन गऽय शुमशान
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

१३. वातुॅनय घाठ यिनुॅ वत्यि रावख
शिव मन्थऽर योंद मुॅशरावख
छ़ऽल्यि छांगरि त्येल्यि गछ़ुॅनय प्राण
तऽम्य लोंभ पानय परुॅमय थान।

१४. मनुॅ की मन्यि फऽल्य शिव मालि तार
अऽन्दुॅरिम सऽन्यच़ूर गछ़न मिरुॅमार

मन मन्दर बन्यि तीर्थ जान
तऽम्य लोभ पानय पर्ॅमय थान।

१५. मनॅु कनॅु वाल्यंन शिव पन तार
सुय छुय पोशवुन मौख्तय हार
भक्तयो नित्य नेम गछु सुमरान
तऽम्य लोब पानय पर्ॅमय थान।

१६. पर्ॅमस चथ छुय पान रावान
शिवॅु मस चथ सम्भाव प्रावान
छा पतॅु मुमकिन ड़लि पाऽर्य ज़ान
तऽम्य लोब पानय पर्ॅमय थान।

१७. आशुतोष वऽनितोस शक्तीनाथ
या ज़ीवॅुदाऽरियन हुन्दॅु प्राणनाथ
सोन छुखा कर्ॅनोव अऽस्य वन्दोय प्राण
तऽम्य लोब पानय पर्ॅमय थान।

१८. ***गरीबस*** शिवॅुड़ल फोंल्य पम्पोश
सन्यिरस दम दिथ रूद रोपोश
अमृत कोंड़ बन्योस पन्ॅनुय पान
तऽम्य लोब पानय पर्ॅमय थान।।

* * *

लीला नं. ३८

''ज़गत माता लीला''

दामुँनस माऽज्य चीरुँ थफ कऽरुँमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय
चान्यि अनुग्रह पोशि वन फोल्यिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१. यूगुँ माया छि चाऽन्य प्राऽन्य दाऽसी
भाग्यवान तिमय यिम छि वनुँवाऽसी
सम्साऽरी मायायि रऽटिनय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

२. राश लोंब तऽम्य येम्य प्राऽव भख्ती
तऽस्य निश थनुँ पेंयि पानुँ शख्ती
शांत मंडुँलस मंज़ दुँय गऽजिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

३. ज्ञानवान लारेयि यूगयबल
प्रेयमुँ वत्यि भकुँत्य वाऽत्य पोंखरेबल
चऽकुँरीशवर नचान चऽकुँर वुछिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

४. अऽकिनगोम निश शिवायि वाऽत्य लोलुॅ वाऽल्य
भावुॅ पम्पोश मालुॅ त्राविहस नाऽल्य
सन्ताप तापुॅ किय आख च़ल्यिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

५. त्रिपोर–सोंन्दुॅरा तत्यि खनुॅबरुॅन्ये
शक्ती शिव आमुत छु वरुॅन्ये
मेंत्यि चाऽन्य पाद शेरि प्यठ वऽरिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

६. तुलुॅमुलि नाग राऽज्ञन्या द्रायख
ज्योती स्वरूप च़ुॅय मूक्षदायक
मेंत्यि लोलुॅ अशिवान्यि पाद छऽलिमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

७. मंज़ुॅगाम राऽज्ञन्या च़ुॅय सन्मोंख
गुपुॅकारुॅ ज़ेष्ठा गुपिथुॅय छख
ज़ीठ यारुॅ अशिवान्यि ब्रान्द छोलुॅम्य
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

८. नाराण नागय सीताहरण
शक्ती पातस आमुॅत्य शरण
पुष्करुॅ पोशि वारि रास ग्युन्दुमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

९. बाऽध्यपोरुँ भर्ख़ुत्यव कोंड़ च्योन पय
न्यरुँमायायि नागुँ वसुँवुँन्य जोंय
राज्यरेंन्यि म्याऽन्य माऽज्य भऽविनय जय
अर्ॅधुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१०. परुँबतुँ शारिकायि लोंग दरुँबार
गाशि वत्यि आकाऽश्य वोंथ स्वर्गुद्वॉर
गऽन्यिशिबलुँ भर्ख़ुत्यन रऽज्य लऽज्जिमय
अर्ॅधुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

११. वासकुरि कोरुँथम ध्यानस म्युल
सम्भावुँ ह्योरुँ ह्योरुँ खोंत मोंखतुँकुल
धारुँणायि वारि मेत्यि गुल फोंल्यमय
अर्ॅधुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१२. मनुँसर नावि द्रास सोपोर कुन
अऽन्यसारि वोतुस ऋषिपीरून
न्यत्रुँद्वार तत्यि गोरुँद्वार वुछिमय
अर्ॅधुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१३. अनतनागु नागुँबलुँ दाग छऽलिमय
मातायि वनुँवान आसुँ विगिन्ये
मन मन्दुँरस मंज़ प्रंग गोरुँमय
अर्ॅधुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१४. मटुॅन्यकिन्य वोतुस गोतमनाग
सन्तन तुॅ साधन हुन्द छु प्रयाग
बोन्यितल तपुॅबलुॅ बाग फोंल्यिमय
अर्धुॅरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१५. सम्साऽर्य मस येत्यि व्यवुॅहारस
कत्यि अचुॅनय श्रूचिस द्वारस
वत्यि वत्यि पतुॅ लारनख कोंकरुॅमय
अर्धुॅरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१६. तमुॅहुॅच्यन न्यत्रन मंज़ छि वासना
अऽन्य अऽन्य तोत्यि ब्ययि ब्ययि तृष्णा
बस दपान परिवार किथुॅ फोंल्यिमय
अर्धुॅरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१७. धन ध्यार दरबार बेंयि सन्तान
बस गऽछ़ि रोज़ुॅन्य येत्यि सोखुॅसान
मायायि रज़ि यिम चीरुॅ गंऽड़िनय
अर्धुॅरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।

१८. तिर्थन मथुॅमांड़ यिमव कऽरुॅहय
तिमव महाकालस नाद ध्युतहय
नन्यिवानुॅ राख्यसन नाश करुॅतय
अर्धुॅरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय

१६. **गरीबस** चाव चोन नाव थ्यकुन
टाऽठ्य चाऽन्य ह्यथ ग्वरुँ द्वार पकुन
लोलुँ कोन्धि मंज़ मेत्यि पान पोंयमय
अर्धुरातन चाऽन्य गोंण गेंविमय।।

* * *

लीला नं. ३६

''ग्वरुॅ लीला''

ग्वरुॅ द्वारस वलुॅ पाऽरि पाऽरि् लगव
अत्यि जल जल अऽस्य अनुॅवाऽर्‍य रटव
बन्धन साऽरी सम्साऽर्‍य च़टव
अत्यि जल जल अऽस्य अनुॅवाऽर्‍य रटव

१. संगरमालुॅ फोंज्य चऽज्य घटि हुॅन्ज़ रात
साक्षात शिव शंकर अमरनाथ
बालन पऽत्य खोरुॅ ननुॅवाऽर्‍य पकव
अत्यि जल जल अऽस्य अनुॅवाऽर्‍य रटव।

२. हीवन दिच़ क्रख मऽत्य कोंस्तूरन
कोंत नेरख जूझी छुय दर्मन
वलुॅ छोंचि वत्यि अऽस्य वटुॅवाऽर्‍य तरव
अत्यि जल जल अऽस्य अनुॅवाऽर्‍य रटव।

३. झ्रेंजि तमुॅहुॅक्य नद्‌रीय गंऽड़िमित्यछिव
वासुॅनायन हुँन्दि पोर रंऽगिमित्य छिव
रंगुॅसाज़स वलुॅ फर्याऽद गछ़व
अत्यि जल जल अऽस्य अनुॅवाऽर्‍य रटव।

४. ग्रटुॅबल वाऽतिथ ग्रटुॅवाऽलिस वन
कर कर छुख लूभचि पोंयि चुॅ पिहन
अिस वालख ना मुह बाऽर्‌य लोंतव
अत्यि जल जल अऽस्‌य अनुॅवाऽर्‌य रटव।

५. गुल्य गंड़ करुॅनाऽविस तार मंगुस
खोरन तल कलुॅ त्राऽविथ वनुस
मुह स्यन्दि मंज़ अऽस्‌य लाचाऽरय फटव
अत्यि जल जल अऽस्‌य अनुॅवाऽर्‌य रटव।

६. भख्तीय हुँन्ज़ि नावे यूगुक नम
रठतम कोंरमुत छुम चे़ंय सरुॅखम
मेंत्यि मुच़राव बरुॅन्यन ताऽर्‌य हतव
अत्यि जल जल अऽस्‌य अनुॅवाऽर्‌य रटव।

७. छुनुॅ केंह ति **गरीबस** त्येलि परवाह
येल्यि मनसर आनन्द कोंड़ बनिमा
त्येल्यि मा पेंयि वऽस्‌य संसाऽर्‌य छटव
अत्यि जल जल अऽस्‌य अनुॅवाऽर्‌य रटव।।

* * *

लीला नं. ४०

''न्येंदो 'र व्यवहार''

मव कर घरुॅ घरुॅ वुन्यि आख नो अरुॅ

हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव

यथ सम्सारस न छु बुथ न छि थर

हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

१. वासनायि राऽयलन टख ध्युव निशकल

नतुॅ गन्यिरुॅच्य वत्यि वातख कोंत

ममुॅतायि आऽलिस कुन्यि छ़लुॅ नाश कर

हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

२. सऽदुॅरस म्युल गव अज़ुॅलय आगरुॅ

कतुॅरस कतुॅरस गव दरियाव

अमि आगर वान्यि मेंत्यि बोंर मनसर

हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

३. तमहुॅचि रज़ि प्यठ अऽछिनुॅय लऽज्य बोंछि

कोंछि मंज़ वछितल ललवान कुस

तऽस्य पुशराव घरुॅ कासी अरुॅसरुॅ

हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

४. वुछ वुछ कूत्य बुछि़य येत्यि कालुॅ सर्फव
दरुॅ अऽछ येत्यि लज्यि मरुॅनस प्यठ
खोरुॅ न्यठुॅ प्यठ लोंग शेरस ताम दरुॅ
हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

५. ग्वरुॅ महाराजस अशिवान्यि पाद छल
रसुॅ रसुॅ वाली पापुॅन्य बाऽरि़य
मुह स्यन्दि तारी कासी मरुॅ मरुॅ
हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

६. भ्रॅमुचे वुनुॅले यिनुॅ यिख येत्यि ह्यनुॅ
छ़यन तेल्यि कत्यि गछि़ ज़न्मन चेंय
लतुॅ मोंन्जि पान गछि़ यियि कत्यि अथि घरुॅ
हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

७. बालुॅ बह्मचा़ऽरी लाऽगिथ करू घर
ख्यलुॅवथरा बन मनुॅसर रोंज़
मरुॅ मरुॅ च़ल्यि येल्यि बनुॅहम अमर
हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

८. पाठ पूज़ा कर अऽचि़थुॅय अन्दर
त्रोंपुॅरिथ दारि बर ठहराव पान
मन मन्दर बन्यि आनन्दुक घरुॅ
हरुॅ हरुॅ हरुॅ स्वर कीशव नाव।

९. चल़ॅुनय दो 'ख दाऽध्य शांऽती प्ययि थनॅु
मन यारॅुबल वस्यि जऽरि्य अऽरि्य पोन्य
डा़लॅु मारान न्येरि सन्मोंख शंकर
हरॅु हरॅु हरॅु स्वर कीशव नाव।

१०. ब्रह्मा विष्णो सॅूत्य सॅूत्य महेशवर .
दॅशन डेड़ि तल गुल्य गंऽड़िथ रोज़
आकाऽश्य पोशन हुन्द खसि अंबरॅु
हरॅु हरॅु हरॅु स्वर कीशव नाव।

११. हऽल्य हऽल्य स्योद स्योदॅु कऽरिथम अच्छर
डेंकॅुलोन फोलॅु म्योन अनुग्रह चोन
गरीब वोंटि् अकि चान्यि आसरॅु तरॅु
हरॅु हरॅु हरॅु स्वर कीशव नाव।।

* * *

लीला नं. ४१

दम दिथ रठ दम, दमुँ दमुँ वज़ि बम

ज़ीरुँ बमुँ मंज़ न्येरि ज़्येंरे कलंदर

विशवास ल्येम्बि फोंल्य पम्पोश कम कम

ज़ीरुँ बमुँ मंज़ुँ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

१. दून छुय दोनान कर्मुँ खुरिय ज़न फम्ब
दून्य दून्य मोंचि़ क्या असुँलस गछि़ कम
वुन्यि छय सुलुँ गऽर जल कर सरुँखम
ज़ीरुँ बमुँ मंज़ुँ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

२. सगुँदरुँ राऽस्य गोंय पोन्य मंज़ फ्राटन
ज़ोंल्यि गोख लोगुँनख स्यकिल्यन तुँ शाठन
खंजि गऽयि चूरुँ चूरुँ वोंन्य क्या चुँ वाटन
ज़ीरुँ बमुँ मंज़ुँ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

३. खम त्राव सम रठ समुँतायि मंज़ अछ़
ममुँतायि हुँन्दि जामुँ कड नालुँ अदुँ नछ़
पतुँ मां रोज़ी वसुँवास अखुँ रछ़
ज़ीरुँ बमुँ मंज़ुँ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

४. लूभक्य ह्यड़र मां गगुँरायि फटुँनय
क्रूधुँच्य तबुँरुँ त्येल्यि ज़ंगुँ मा चटुँनय

मोह कामदीव वन पतॖ मा फ़रॖनय
ज़ीरॖ बमॖ मंज़ॖ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

५. राग मन्साऽविथ साज़ वुज़ॖनाऽविथ
राज़ परखाऽविथ तॖ पान प्रज़ॖनाऽविथ
पाप पोंन्य कुलहम तऽस्य पुशराऽविथ
ज़ीरॖ बमॖ मंज़ॖ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

६. सैंकि सहरावस ताफ यिख छाऽविथ
तपॖच्ये कोंधि मंज़ पान पयनाऽविथ
सोंखॖ दोंख ममता तऽस्य पुशराऽविथ
ज़ीरॖ बमॖ मंज़ॖ न्येरि ज़्येरे कलंदर।

७. सोंकर्म कोंकर्म यक़बार त्राऽविथ
त्रिशनायि होस . छुनॖ जल मंन्साऽविथ
गरीब भावॖक्य भर मुचॖराऽविथ
ज़ीरॖ बमॖ मंज़ॖ न्येरि ज़्येरे कलंदर।।

* * *

लीला नं. ४२

''ग्वरुँ ग्वन''

ग्वर छु क्रूधस पुरुँ ज़ालान
शांत सागर ज़न बनान
दोंख तुँ दाऽध्य संताप चंजि तस
जांह ति छिनुँ व्याकुल करान।

१. आसि पोंयिमुत पान लरि लरि
येंम्य महा पुरुषन येंत्यी
ज़ाँह अच़्या वन बारुँवन सुय
येंम्य गोंरस पुशिरोव पान।

२. ग्वर चमत्काऽरी बनी योंद
सीर प्ययि मंज़ आमुँसुँय
सुय गुरू छुय पूज़ि लायख
यस नुँ दुँह डेंकि छय खसान।

३. युस नुँ हारान आसि ओंश
नन्यिवान अऽन्दरी बस चुँहान
च़ूरि च़ूरे पादुँनय तल
बस छु थल्यि थल्यि तस वुछान।

४. युस छु यथ ममुँतायि लरि
फुटुँरान दर देवार बोज़

पतुॅ अम्युक काठ पान ज़ालान
तऽथ्य अन्दर शोमुॅरान पान।

५. यथ वनान शमशान अऽस्य छीय
सुय तसुन्द आनन्दवन
दरभि आसन सूरुॅसुॅय मंज़
स्वॅर्गु कोसम छिस फोंलान।

६. यस छि न्यत्रन ज्यूत्य न्येरान
बेंयि छि शोंद अन्तःकरण
युस छु सखुॅरिथ अवलुॅ सोंतय
सुय अमर शांऽती लभान।

७. यस छु सन्मोंख पानुॅ भगवान
तोत्यि छुनुॅ दर्शुन मंगान
भक्ति भावय दासुॅ भावय
वस पनुॅन्य तस ख्येंन्य दिवान।

८. छुम **गरीबो** क्या म्यें प्रावुन
काऽल्य मंन्सावुन छु पान
यिय बुॅ दारस त्यीय बुॅ होंरस
छ़्यन अऽती ग्रावन लगान।

* * *

लीला नं. ४३

ग्वरुँ द्वारस आसुँ अछि दारि वनुँवान
पूँरि्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात
अर्धुँरातन आऽस्य कोंगुँ टूरि्य चावान
पूँर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

१. दरपरदुँ रास आऽस्य रागुँ रोंस खेलान
पर तुँ पान त्राऽविथ फेरान आऽस्य
अऽन्दि अऽन्दि फीरिथ मंज़ बाग प्रावान
पूँर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

२. र्स्वगुँचि पोशि थरि पोश वोथुँरावान
आऽस्य मुशकावान अन्तःकरण
अऽछ्य वऽट्य वऽट्य आऽस्य गाश सोंम्बरावान
पूँर्य ज़न त्रावान मांज़ीरात।

३. दुयतुँक्यन जामन चाख आऽस्य ध्यावान
सम्तायि प्रावान आऽस्य अऽतुँलास
प्रेयमुँक्य प्यालुँ लालुँ आऽस्य पिलुँनावान
पूँर्य ज़न त्रावान माँऽज़्यीरात।

४. दऽध्यिमित्य अंग अंग अज़ शहलावान
र्कमुँखुर्य कासान सत्गोंर ओस

ममुॅतायि हंन्ज़ रज़ आऽस्य छ्यन्रावान
पूॅर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

५. इन्द्रय चूरन ओंस शोंमरावान
पतुॅ भ्रमुॅरावान ओस नय कांह
अष्टुॅ रंगुॅ चक्रुक यक रंग हावान
पूॅर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

६. सऽंसाऽर्य वत्यि पऽध्य आऽस्य नहनावान
आऽस्य मऽश्रावान बनधन प्राऽन्य
बन्धुॅनन हँन्ज़ बेड़ि ग्वर फुटुॅरावान
पूॅर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

७. अथुॅवास कऽर्य कऽर्य लोल मोलुॅनावान
पावान याद सन्मोंख दर्शुनं
तिय याद कऽर्य कऽर्य मन वुफुॅनावान
पूॅर्य ज़न त्रावान मांऽज़ीरात।

८. वेलुॅ छुय मेलुॅनुक कथ ***गरीब*** प्रारान
छुनुॅ कॉह माँज़ान कस दिख क्या?
व्यपुॅराव सीरि हक गछ़ ललुॅनावान
पूॅर्य ज़न त्रावान माँज़ीरात।

* * *

लीला नं. ४४

च़्यथ वुजुॅमलुॅ नाद गगुॅराये
तिम हय द्रायेयि यूगयबल
आयि आये च़ायि ग्वफाये
तिम हय द्रायेयि यूगयबल।

१. नाग पोखरे त्राव्यरव छ़ाये
नाऽगिन्नी च़ायि पोंखुॅर्‌यन तल
रंगुॅ साज़ द्राव मंज़ रंगुॅ नावे
तिम हय द्रायेयि यूगयबल।

२. गंगुॅबल तिम डुंगुॅ दिथ द्राये
धारुॅणाये समनबल वाऽत्य
लऽज्य न्यत्रन अऽशि दर्दुॅराये
तिम हय द्रायेयि यूगयबल।

३. बुॅत्यि लारान कथ पोंत छ़ाये
तथ जाये म्युल दीदन
यैल्यि स्वाहा तेंल्यि नुॅ अभिप्राये
तिम हय द्रायेयि यूगयबल।

४. राग त्राऽविथ पोंखतुॅकार द्राये
मा तिमन ज़ांह ग्राये लऽज्य

नातुॅवानन वऽछ़ थथुॅराये

तिम हय द्रायेयि यूगयबल़।

६. ग्वरुॅ पादन यिम शरण आये

तिम हय चा़येयि शोंमरिथ पान

यितुॅ गुछ़ॅ निश मोंकुॅलिथ आये

तिम हय द्रायेयि यूगयबल।

७. सन्यिरुॅच्य कथ घन्यिरस छा़ये

नन्यिरस मंज़ भावी क्या

वल **गरीबो** वन कथ छा़ये

तिम हय द्रायेयि यूगयबल।।

* * *

लीला नं. ४५

छोंकन बुलगार दिलन शहजार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी
दोंखन यलगार अन्यन दीदार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

१. करी युस राऽत्य रातस आहुज़ाऽरी
न्यथ प्रभातस ताम
बन्यस अऽश्य धार मोंखतयहार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

२. म्यें लुॅयि किन्य चूरि दिच़ नज़रा
वुछुम हर शायि चोंनुय गाह
फोंलान संगर मनऽक्य कोंहसार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

३. परुॅथ पानय इबारथ म्यान्यि
कर्मयलान्यि दिमुॅहय मीठ्य
म्यें लोब ठहराव च़ऽज्य च़लुॅलार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

४. गहे दीदन तुॅ नादीदन
गहे वीदन अन्दर पूर्ण

गहे अक्षर कुनुय ओमकार

गमन गमखार नज़र चाऽन्यी

५. गहे वुछमख म्यें ग्वर लाऽगिथ

गुपिथ पालान अयाल म्योंनुय

गहे आसन रऽटिथ ग्वरद्वार

गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

६. गहे छुख गोशवारन मंज़

गहे वाऽरान जहातन मंज़

गहे छुय आऽन्तुँ रोंस्त व्यस्तार

गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

७. गहे ज़न माय लाऽगिंथ छुख

वुछान मायायि हुन्द संसार

गहे लाऽगिथ न्यन्दुॅर बेदार

गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

८. दमन मंज़ दम बुॅ गंऽज़ुरान छुस

ब्रॅुज़्यन हुँन्दि चि़ह ति सुमरान छुस

गहे बेदम गहे दमदार

गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

९. छि त्रनुॅवय गोंण च़्यें मंज़ न्येरान
यिमन मा लोर छुख रोज़ान
गहे न्यरुॅगोंण गहे साकार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

१०. गहे सथ तय असथ त्राऽविथ
बऽनिथ शिवुॅ रूॅप जटा धाऽरिथ
शिन्यस हियोंर चोन ज्योती द्वार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।

११. ***गरीब*** नाचीज़ पकिहे कोंत
अगर करुॅहख नुॅ तस अथुरोंट
छु महिमा चोन अपरमपार
गमन गमखार नज़र चाऽन्यी।।

* * *

लीला नं. ४६

भऽखुँत्यो सन तो मन वाज्यि खन तो
हलुँ कर जल जल बन तो साद
साधुल वान्ये तन मन छल तो
हलुँ कर जल जल बन तो साध।

१. दारि तल द्वारस हारि लिवनतो
द्वारस खारान कर्मुक क्रूल
दर्दुच्यि रगि मंज़ साज़ वज़न तो
हलुँ कर जल जल बन तो साध।

२. वादुँ ओस वसुँलुकं चश्मुँ गऽय कन तो
मन पारूद रिंदुँ रऽटिथुँय गऽय
नाल ओस नालान तर दामन तो
हलुँ कर जलुँ जल बन तो साध।

३. यूगुँ महारेंन्य छांड़ान वरदन तो
कीमाब ज़न गव सुति नायाब
यीय वुच्छिथ होंहराय वऽछ़ साधन तो
हलुँ कर जल जल बन तो साध।

४. येंत्यि छुनुँ काँह कांऽस्यि ज़ांह सादन तो
मारुँ मत्यि मव मार मंज़ वत्यि पान

येंत्यि वन कस छु कऽम्यसुन्द आदन तो
हलॖ कर जल जल बन तो साध।

५. रंगॖ यन्द्रन कम खारान पन तो
सनॖ लोग आऽकॖलन डींशिथ यीय
बेकॖल राज़ि दिल कत्यि व्यपॖरन तो
हलॖ कऱ जलॖ जल बन तो साध।

६. सत्संगॖची गऽयि येंत्यि कामन तो
येंत्यि साधन ताम लऽग्य इलज़ाम
दरदाम देवानॖ गऽयि अर्पण तो
हलॖ कर जल जल बन तो साध।

७. देह अभिमानस दितॖ गर्दन तो
मतॖ अथ सन तो कुस करि क्या
वाऽनिस तॖ ग्राकस अज़ॖलॖ मिलॖवन तो
हलॖ कर जल जल बन तो साध।

८. गाशि टेंच्यि हेंरि यस पेंयि दर्मन तो
गोंफि च़ाव दम दिथ नोंन मा द्राव
वासना दऽज़ तस कांऽज़ॖल्य वन तो
हलॖ कर जल जल बन तो साध।

९. धारुँणायि आऽव्युल यस छ्योन पन तो
वन तो तस कत्यि ज़न्मन वाठ
यिरुँवुँन्य नाव कर लऽज्य गाठन तो
हलुँ कर जल जल बन तो साध।

१०. ***गरीब*** खलुँ मंज़ुँ फल सोंबरन तो
हाजथ रवा सु छु पाऽन्य पानय
पान मेंत्यि बासान वोंपुँरुँय ज़न तो
हलुँ कर जल जल बन तो साध।

* * *

लीला न. ४७

''ग्वरुँ लीला''–अस्तुति

चोवथस तनुँ सोर्योम तमः

ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः

परवान छुस छुख म्योन शमाः

ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१. दमदार पयहम सोज़ वुज़ुँनाव
ग्वरुँ पादन तल करू ठहराव
तथ शान्त सऽदुॅरस वोंत छु मा
ग्वरुॅवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

२. अन्तःर्कणन यऽन्दुॅरे फरन
ग्वरुॅद्वार यिम छिनुँ श्राना करन
पंच़ भूतस मुल माये ब्रह्मा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

३. संतोश रोपोश छुय बाहोश
पुर जोश न्यर दोश फऽल्य पम्पोश
न्यरुॅलीफ पां फ्योर अत्यि धरि मा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

४. रसुॅ रसुॅ अछ़ अथ गोरुॅ गोंफि मंज़
अन्यिघटि मंज़ करिसु गाशुक संज़
गाश आकाशस नालुॅ रटि ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

५. सनुॅवुन सोज़ बोज़ कन धाऽर्य धाऽर्य
हंगुॅ मंगुॅ बरुॅ बुक यिनय अऽच्छ टाऽर्य
आनन्द बन्यि परमानन्दा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

६. अशि गंगुॅ वान्यि ग्वरुॅ पाद जल छल
दाऽन्य दाऽन्य अदुॅ गल्यि कर्मुक मल
प्रारब्ध अथि फोंल रटुॅहम ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

७. क्रान्यि द्राख लान्यि छुख कर्मय चूर
युथ छुख त्युथ छुख म्यें छुख मन्ज़ूर
नखि ड़खि यस छुख छुनुॅ तस गमा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

८. भ्रम चोंल सन्मोंख लोंभ दर्शुन
त्रैशिहत्यिनुॅय छुनुॅ वोंन्य क्रेशुन
पदमुॅ आसन बन्योव सिंहासना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

९. त्रेंयि दलुँ कोंडुँथस कोरुँथम सोंत
आऽखुँरस फोंलहम यावुन मोंत
गोशि गोशि म्यान्य पोश छावखना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१०. बेताल वैताल भूत गऽयि दूर
कार्तिक ज़ून्यि मन्यि फोंल कोंगुँ टूर
मायायि चूरन सूर गव ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

११. पचभूत शऽमिथुँय़ द्राव अदिभूत
कर्मह्यून आऽसिथ बनोंवथस सपूत
शांत ड़ल परुँमय थान छुना
ग्वरुँवे नमः ग्वरुँवे नमः।

१२. ज्योती प्रकाशुक यस म्यूल राज
आनन्दवनुँ कुय सुय छु महारांज
यमुँराज़ुँ तऽम्यि सुँन्दि भय च़लि ना
ग्वरुँवे नमः ग्वरुँवे नमः।

१३. ग्वरुँ पाद रठ वात परमस थान
ग्वरुँ मन्थुँर गछ़ लोंल्यि ललुँवान
कांऽसि यिनुँ भावुँहम सीरि पिन्हा
ग्वरुँवे नमः ग्वरुँवे नमः।

४. रसुॅ रसुॅ अछ़ अथ गोरुॅ गोफि मंज़
अन्यिघटि मंज़ करिसु गाशुक संज़
गाश आकाशस नालुॅ रटि ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

५. सनुॅवुन सोज़ बोज़ कन धाऽऱ्य धाऽऱ्य
हंगुॅ मंगुॅ बरुॅ बुक यिनय अऽच्छ टाऽऱ्य
आनन्द बन्यि परमानन्दा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

६. अशि गंगुॅ वान्यि ग्वरुॅ पाद जल छल
दाऽन्य दाऽन्य अदुॅ गल्यि कर्मुक मल
प्रारब्ध अथि फोंल रटुॅहम ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

७. क्रान्यि द्राख लान्यि छुख कर्मय चूर
युथ छुख त्युथ छुख म्यें छुख मन्ज़ूर
नखि ड़खि यस छुख छुनुॅ तस गमा
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

८. भ्रम च़ोंल सन्मोंख लोंभ दर्शुन
त्रैशिहत्यिनुॅय छुनुॅ वोंन्य क्रेशुन
पदमुॅ आसन बन्योव सिंहासना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

९. त्रेंयि दलुॅ कोंडुॅथस कोंरुॅथम सोंत
आऽखुॅरस फोंलहम यावुन मोंत
गोशि गोशि म्यान्य पोश छावखना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१०. बेताल वैताल भूत गऽयि दूर
कार्तिक ज़ून्यि मन्यि फोंल कोंगुॅ टूर
मायायि चूरन सूर गव ना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

११. पचभूत शऽमिथुॅय द्राव अदिभूत
कर्मह्यून आऽसिथ बनोंवथस सपूत
शांत ड़ल परुॅमय थान छुना
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

१२. ज्योती प्रकाशुक यस म्यूल राज
आनन्दवनुॅ कुय सुय छु महाराज
यमुॅराज़ुॅ तऽम्यि सुँन्दि भय चलि ना
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

१३. ग्वरुॅ पाद रठ वात परमस थान
ग्वरुॅ मन्थुॅर गछ़ लोंल्यि ललुॅवान
कांऽसि यिनुॅ भावुॅहम सीरि पिन्हा
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

१४. तुलकतुॅर अंमारत छु संसार सार
यिनुॅ अति नचुॅहम गछ़ख मिस्मार
देह ल्यजि प्राण ध्यान कारखना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१५. होंज़न तुॅ रादन गछ़ि नुॅ सनुन
वाय गोंछ़ पनुॅनुय न्याय अन्दुन
ग्वरुॅ ज्यूत्य् सऽत्य सऽत्य थावखना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१६. खण्डॅ वाव बऽनिथुॅय तत्यि रावुॅहम
पान हुमिथुॅय वुफ ह्योर त्रावुॅहम
ग्वरुॅ ध्यान पान ह्योर खारखना
ग्वॅरुवे नमः ग्वॅरुवे नमः।

१७. गर्भयात्रायि मंज़ शुन्य द्वार च़ाख
ह्यस होश कर यिनुॅ मशि ग्वरुॅ वाक
मायाय़ि हूरुॅ यिनुॅ फरुॅनय जांह
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

१८. शांत ड़लुॅ नखुॅ छुय मायायि ड़ल
गोरुॅ थव सन्मोंख च़ली गांगल
ड़लुॅहम तेंल्यि कत्यि यिख अथि जांह
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

१६. पाऽनिस तत्यि छुनुॅ बोंन कुन ज़ोर
आकाश ह्योर तत्यि सऽदुॅरन शोर
तम्यि तोर यूगी रोज़ान छुना
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

२०. दोंन म्युल सम्भाव थनुॅ प्यव गुल
कुलहम हमसू ग्यव्यि बुलबुल
बोल बोश तऽम्य सुन्द गोविन्दा
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।

२१. तुरीधाम विश्वास फोंल्य पम्पोश
सायि अस्यि सीरुॅनुॅय ग्वर सरपोश
गरीबन नोश कोंर जामे जमा :
ग्वरुॅवे नमः ग्वरुॅवे नमः।।

* * *

लीला नं. ४८

मनवारे मुशकुॅन्य.धारे, सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश
अथुॅ खाऽली अत्यि क्या दारे, सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

१. मंगवुन छुस पतुॅ तऽरि् चारे
बर दिथ च़ल्यि प्रेमुक भाव,
अन्यिघटि कुस वऽन्य दिथ छ़ारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

२. वेलुॅ वोत तस पतुॅ मा लारे
अऽन्य सारे क्या प्राव्यम
यिनुॅ सृष्टी काल संहारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

३. रंगुॅ मंज़ रंग मुशका त्रावे
नतुॅ प्रारे अम्बुॅरन मंज़
तस छि प्रारान तत्यि अऽछिधारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

४. प्रदिख्यनुॅ नुॅय मंज़ यस लारे
कुस लारे पतुॅ तीर्थन
यस फुलया लऽज्य घरुॅवारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

५. खमि सुय यस खोंत अटुॅबारे
चलुॅ लारे वाती कोंत
दम सूरिथ पतुॅ क्या लारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।

६. कस यारुॅ **गरीब** अथुॅ धारे
येंल्यि खारे रऽथ्य ओमकार
अऽछ वऽटिथुॅय तस पतुॅ लारे
सहज़ वारे फोंल्यिमो पोश।।

* * *

लीला नं. ४६

''ग्वरुँ अनुग्रह''

बुँ मा लवुँहा च़्यें रूस खंऽड़ हार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोभ ग्वरुँद्वार
कोंरूम सरखम लोंबुम मोंकजार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोभ ग्वरुँद्वार।

१. अजब लीला वुछिथ चाऽन्यी
बनान ज्ञाऽन्यी ति अज्ञाऽन्यी
नज़र चाऽन्यी छोंकन बुलगार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

२. च़्यें पूज़ान पाद छिय यूज़ी
मुनी ज़न बेंयि परम जूगी
गुपिथ शक्ती च़्यें मंज़ बिस्यिार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

३. बुँ चोर मायायि ओंसुस लोर
दया कऽरुँथम बऽनिथ बोंद्धब्रोर
म्यें आव ठहराव लोंभुम दरबार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

४. नमुन कस छुम च़्यें रूसतुॅय वन
यि सोंगो पान च्यें छुय अर्पण
मधुर वाऽन्यी च़्यें मुशकुॅन्य धार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

५. यि देह मेंचि़ त्रल बनाऽवुॅथ पोट
मिहीन ज़न द्राव ग्रऽटिने ओट
परम यूझी च़्यें जाऽन्यी यार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

६. च़्यें शक्ती हँन्ज़ म्यें त्राऽवुॅथ धार
खऽसिथ पेंठ पतुॅ ओंनुथ लतुॅ चार
प्रलय बास्योम ज़न सम्हार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

७. म्यें मां ज़ोन छुय थुरून बानय
थऽविथ सम्भाव म्यें मांझानय
लगय नावस रऽटुॅथ मटि खार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

८. च़्यें नचुॅनाऽवुॅथ यि यूगुॅच्य च्रऽट
यि ड़ींशिथ तूॅर म्यें पानस फऽट
म्यें दोंप वोंन्य छुम गछुन संघसार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

९. खऽसिथ अथ प्यठ म्यें गतुँ आयम
दयाये चान्यि वर द्रायम
च़्यें अथुँ ड़ोलुथ म्यें गव सम्च़ार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

१०. गऽलिस रसुँ रसुँ हजर कोसुथ
च़्यें तऽल्य किन्य क्रालुँ पन लोगुथ
च़टान बन्धन चुँ खोंदमोंखतार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

११. बुँ ओमुय बानुँ वुन्यि ओसुस
अऽन्दुँरि थपि चान्यि बऽचिरोवुस
मुहस अहमस कोंरूथ लुरूँपार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

१२. बंन्धन फुटुँरिथ पथर थोंवुथस
मुहुक श्रह तापुँ होंखुँरोवथस
म्यें त्राऽवुथ छाप पनुन यकबार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

१३. तुँ आऽखुँर कोंधि मंज़ त्राऽविथ
बन्धन साऽरी च़्यें लबि थाऽविथ
बऽनिथ क्राल पतुँ च़्यें गोंडुँथम नार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुँद्वार।

१४. दयाये चान्यि पयनय आस
च़्यें पुशरिथ पान बुॅ पोंखतय द्रास
च़ुॅ पानय मोंख्तुॅ पोंखतयकार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

१५. बुॅ दासन हुंन्द ति छुस अख दास
शाहन मंज़ शाह बनान विशवास
छि भख्ती चाऽन्य म्यें मोंखतयहार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

१६. छि कथ बाहम च़ुॅ कर खामोश
च़ुॅ फोंल बरुॅजोश मगर रोपोश
गुपिथ लालन च़ुॅ कर अम्बार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।

१७. शिवस शाहस गोंमुत अथवास
गिन्दान जोंय सागुॅरस मंज़ रास
गरीब न्यंगुॅलाव लोलुक नार
कोंरूथ अनुग्रह म्यें लोंभ ग्वरुॅद्वार।।

* * *

लीला नं. ५०

''अलौकिक म्युल''

V-good

बुॅति मॉऽज़ि गुल्यि ह्यथ प्राराॅसय

जानानसुॅय जानानुॅसुॅय

श्रेह आदुॅनुक वुज़ुॅनावुॅसय

जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

१. टेंक्यिा पनुॅन्य मिलनावुॅसय

शाऽहिद बुॅ विशवास थावसय

पतुॅ कर्मलीखा हावुॅसय

जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

२. यूज़ी चुॅ अऽन्यज़्यख सालसुॅय

गोंडुॅ वासना बुॅति ज़ालसय

अऽतुॅलास तन्यि वलुॅनावसय

जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

३. तप ज़प यज्ञन्य करुॅनावसय

च़ोंनुॅवय बुॅ वीद परुॅनावसय

वुॅऽन्ध्य वुॅऽन्ध्य लगस, ग्वरुॅनावसय

जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

४. खांदर कऽरिथ छुम पानसुॅय
पतुॅ पतुॅ पकुन मरुॅत्तानुॅसय
सुय गव रलुन न्यरुॅवानसय
जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

५. षटचक़ऽकरुॅ पान अऽलुॅरावसय
पतुॅ अष्टुॅदल तन नावुॅसय
रंग नावि तारेंम तारुॅसय
जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

६. ब्रह्मरन्ध्र यिनुॅ लगुॅ दावुॅसय
शाह ज्यूत्यि पान व्यपुॅरावसय
थफ जांह ति यलुॅ मां त्रावुॅसय
जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

७. पयमान भऽरि भऽरि थावुॅसय
सिंहासनस प्यठ चावुॅसय
लरि सुॅत्य लर अदुॅ त्रावुॅसय
जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

८. अन्तःकरण वोंथरावुॅसय
बुछप्रंङग मनुक वुफ़्नावसय
सर पादुॅनुॅय तल त्रावुॅसय
जानानसुॅय जानानुॅसुॅय।

९. दरवाज़ॅु लोंत मुचॅुरावॅुसय
शुन्य खान नखॅु पान थवॅुसय
खुमखानॅु न्यन्दॅुरा पावॅुसय
जानानसॅुय जानानॅुसॅुय।

१०. कथ चारि बतॅु छ़ुम छावॅुसय
किथ ठान तुलॅु वुन्यि खामॅुसय
सऽन्य कथ मॅु वन बेंगानसय
जानानसॅुय जानानॅुसॅुय।

११. छुनॅु लार केंह दामानसॅुय
सतॅु संग रंग ह्ययोंत पानॅुसय
इरफ़ान **गरीब** तत्यि थानॅुसॅुय
जानानसॅुय जानानॅुसॅुय।।

* * *

लीला नं. ५१

"मन छु तिंथुॅ प्रयाग"

चरखुॅ फिरनाव पनुॅनुय
तीर्थु द्वार मन हो छुय
रसुॅ रसुॅ वुज़ुॅनावनुय
तिंथुॅ द्वार मन हो छुय।

१. कचि़ बेंह दू़र मो न्येर
मनुॅ वाऽर पनुॅन्यी शेर
तमुॅहुॅक्य हामुॅ च़टुसुय
तिंथुॅ द्वार मन हो छुय।

२. लबन छुय लूभुक कछ
कामन तोंछनय वछ
पतुॅ छुख अत्यि फटुॅनुॅय
तिंथुॅ द्वार मन हो छुय।

३. रहदार पकुॅनावुन
सेंज़ि वत्यि कुन लागुन
ह्यटल गुर कापि रटुनुय
तिंथुॅ द्वार मन हो छुय।

४. राधे शाम वुछिहन
घरि घरि रास गिन्दन
हृदय गूकल बनुँनुय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

५. अमरनाथ कैलासनाथ
दंशुन म्येलि साक्षात
मन सरुँ वन्यि कडुँनुय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

६. रोपोश मंज़ गंभस
मुशुक फियूर प्रथ तंफस
अंग अंग आव रंगुँनुँय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

७. अऽछव छुख गाश छांड़न
मन छु जानानुँ मांड़न
छि हय तत्यि तुजिमुँच़ हुय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

८. ह्यनुँ आख मुह वुनुँले
गोख मा न्यन्दरि ज़ोंल्ये
घटुँ पछ गाश खटुँनुँय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

९. तल वस खार ल्यम्ब ह्योर
शीश नागस कास ठोंर
काया गछ़ि शोंदुॅनुॅय
र्तिथुॅ द्वार मन हो छुय।

१०. गोंरस कर पोंश पूज़ा
भावुॅ पोश लागुॅहस ना
चावि अमृत पनुॅनुय
र्तिथुॅ द्वार मन हो छुय।

११. फऽरिस तल ललुॅनावीय
अमृत कोंण्ड़ हावी
फिरुॅनावि रंग नावुॅनुॅय
र्तिथुॅ द्वार मन हो छुय।

१२. द्वारिकायि मथुराये
गछ़ गर्भयात्राये
फेर बिन्दुॅराबनुॅनुॅय
र्तिथुॅ द्वार मन हो छुय।

१३. घरि छुय वयकोंठ बोज़
ग्वरुॅ पादन तल रोज़
सुय पाद प्रज़ुॅनावुनुय
र्तिथुॅ द्वार मन हो छुय।

१४. विशवास द्वारुँ किन्य न्येर
नवद्वार वत्यि किन्य फेर
तत्यि छुनुँ कांऽसि मंगुँनुय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

१५. ***गरीबस*** घरी आनन्द
तत्यि छुस परमानन्द
तेंल्यि छुनुँ कुन गछुँनुय
तिंथुँ द्वार मन हो छुय।

* * *

लीला नं. ५२

अथुँवास करन तारस तरन
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय
नव द्वार वत्यि छुनुँ कांह फरन
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१. गृहध्यन च़्येंं तेंल्यि क्या वन सनुन
नखि ड़खि च़्येंं येंल्यि छुय गोंर पनुन
वत्यि वत्यि तसुन्द बस गोंन ग्यऽवुन
येंल्यि यिन शरण ग़्वरुँ पादुँनुँय।

२. अच्छरा प्रणव कुल सार छुय
अथ मंज़ बऽसिथ संसार छुय
अभ्यास अद्वेतय गाल दुँय
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

३. प्रणुँवस छि व़खुँनान वेद च़ोर
कऽम्य सार लोंभ कुस वोत तोर
यूझी चुँ बन कर दोरुँ दोर
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

४. मुह वाव छुय धकुँ धकुँ दिवान
कर वन चुँ छुख पोंत पोंत ह्यवान

छुख ना चुॅ वुन्यि पायस प्यवान
येंल्यि यिन शरण ग्वरॅ पादुॅनुॅय।

५. गोंरूँ ब्यबि अन्दर अचुनुयं छु क्रूठ
अमृत कोंड़स शाहमार ज़्यूठ
गोंडॅ ज़हर पतॅ अमृत छु म्यूठ
येंल्यि यिन शरण ग्वरॅ पादुॅनुॅय।.

६. अन्तःकरण तिमुॅनुॅय गरण
यिम नादॅ ब्यन्द खऽन्य खऽन्य कड़न
वस ताम ग्वरॅ पादन मलन
येंल्यि यिन शरण ग्वरॅ पादुॅनुॅय।

७. निष्काम भावय क्रय करन
ग्वरॅ लोलॅ गीता न्यथ परन
तलॅवारि धारे तल धरन
येंल्यि यिन शरण ग्वरॅ पादुॅनुॅय।

८. ग्वरॅ रूँपसुॅय मंज़ शिव वुछुन
सुय रूप अऽछिनुॅय मंज़ रछुन
पतॅ लीन तन मन तऽथ्य गछुन
येंल्यि यिन शरण ग्वरॅ पादुॅनुॅय।

९. चंड़ाल मन मा श्रोचि़ ज़ांह
विशवास अथ मंज़ रोज़ि मा
अऽ्न्य खल्यि बन्या जांह ग्वरुँ कृपा
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१०. सन्तन तुँ साधन निश गऽछ़िथ
सऽन्य चूर कवुँ थोंवुथन खटिथ
कोंडुँनय ग्वरन वेंधि अऽछ वऽटिथ
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

११. वोनमय पकुन छुय पानुँसुँय
थफ कर चुँ गोंरू दामानसुँय
पुशिराव तऽ्स्य मस्तानसुँय
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१२. वृचुँ म्यान्यि नऽच्य नऽच्य होंल गंड़न
शुन्य सुँय श्रपिथ प्रकाश च्यन
आनन्द अन्दुँ वन्दुँ तथ नुँ छ़य्न
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१३. रसुँ रसुँ चुँ वस अथ नागुसुँय
वाऽराग रज़ गण्ड़ रागसुँय
ग्रख श्रावुँनुँन्य लगि मागसुँय
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१४. करनोव ग्वर यियि तारुँबल
सखरिथ चुँ वसतो यारुँबल
लारूस पतय वात यूगुँबल
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१५. वसवास वोंनमय ड़ाल्यि वथ
प्रावख चुँ गथ विश्वास च्यथ
ईशान पूज़ान अथ छु न्यथ
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।

१६. निन्ध्या ***गरीबस*** पोरि क्या
छुनुँ तस तमाः वोंन्य सोरि क्या
छुनुँ लोर केंह तस होरि क्या
येंल्यि यिन शरण ग्वरुँ पादुँनुँय।।

* * *

लीला नं. ५३

''तपुन गव ग्वरुॅद्वार रटुन''

V. Imp.

त्योंगलन खसुन पतुॅ सूरि्य गछुन
मेंचि़ मेलुन गव ग्वरुॅद्वार रटुन
पतुॅ सूरस मंज़ गुलज़ार खसुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

१. आकारस मंज़ ओंमकार रटुन
तऽथ्य लयि मंज़ यिथ पतुॅ पान वटुन
तऽथ्य ज्योती पथ गछि़ पान छपुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

२. निष्काऽमी ह्युव संसार करून
वत्यि वत्यि सतुॅ कुय व्यवहार करून
गुरूॅ वाऽणी मन सर भरनावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

३. विशवासुक मंज़ुला गरुॅनावुन
तऽथ्य मँज़ ग्वरुॅ दीव गछि़ बेहनावुन
अच्छुरा वसवासुक नहनावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

४. मनुॅकुय क्रुॅम रसुॅ रसुॅ मदुॅ वालुन
सत्संग अभिमानय गछ़ि ज़ालुन
ग्वरुॅ शब्दय कामुॅय होंखरावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

५. आकाश बऽनिथ व्यस्तार लबुन
पतुॅ सन्यरस दम दिथ लाल रटुन
तम्बुॅलुन गव वत्यि प्यठ राज़ ननुन
मुशकावुन पतुॅ गोंरूॅद्वार पनुन।

६. फम्ब अहमुक हन्यि हन्यि अभसावुन
अभसाऽविथ पतुॅ यन्द्रस खारून
सोंम अथुॅ पतुॅ चरखा फिरनावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

७. आऽविजि कथि ज़ाऽव्युल पन खारून
सुय यन्द्र तुलिस प्यठ सोंम्बरावुन
कऽत्य कऽत्य श्वाससं मंज़ व्यपुॅरावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

८. भावुॅच्यि कोंछि मंज़ ग्वर ललनावुन
वसि हुन्द मस लोंत तस पिलनावुन
रोंन्यि पादन श्रोंन्यि श्रोंन्यि वुज़ुॅनावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

९. पांऽचन प्राणन मंज़ व्यपुॅरावुन
प्राणायामस मंज़ वुफुॅनावुन
पतुॅ ब्रह्मरन्ध्रस मंज़ प्रज़नावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

१०. मन भावुॅ बोंम्बुर ह्युव गछ़ि थावुन
पछ़ि पोशन हुन्द व्यूर तुलुॅनावुन
बस ग्वरुॅ पादन तल पतुॅ सावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।

११. अर्ज़न दीवुन ह्युव मन थावुन
सत्वरुॅ कृष्णुन रूप प्रज़नावुन
छुनुॅ आरुॅ **गरीबुन** ग्रज़नावुन
मुशकावुन पतुॅ ग्वरुॅद्वार पनुन।।

* * *

लीला नं. ५४

''ग्वरुँ आभास''

पनुन ग्वर अऽछन तल म्यें दोंह रात आसुन
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन
म्यें खुर्‌य खार कर्मुँच्य गोंछुम पॉनु कासुन
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

१. वन्दय चऽशिमुँ पादन
रटय लोलुँ दामन
रटथ नालुँमत्यि चीरुँ
मा खोचुँ पामन
अगर दूर ह्ययोतुँनम बुँ दिमुँ चाख जामन
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

२. सु मस्तानुँ मस छुम बिहिथ राज़ुँदारन
गऽमुच़ छस बुँ परिछेंन्य तवय खून हारन
सु छुम यूग सादन कमन सूँत्य यारन
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

३. प्रकाशिक्य छि आगर तऽमिस शोलुँ मारन
तऽमिस यूगुँ महारेंन्य छि आकाऽश्य छारन

अच्छन तस छु शिव तीज़ शिवरूप धारण
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

४. ड्यकस छस वुछान तस फोंलान लोलुं संगर
पम्पोश न्यत्रन अन्दर ज़न छि गवुँहर
तऽमिस छिम अऽछन मंज़ गुपिथ अमृतुॅक्यि सर
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्य बासुन।

५. गहे छुम म्यें बासान सुय मा महेशवर
मनुष्य रूप आऽसिथ ति बासान म्ये ईश्र
करान क्रूध अऽत्यी बऽल्य सु छुय शांत सागर
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

६. देवानुॅ पाँऽपूरि्य फिदा तस छि कम कम
तऽमिस निश छि कम कम जानानुॅ सरखम
सु स्योद सादुॅ लागान हावान नुॅ चमुॅखम
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।

७. **गरीबो** च्यें भावुॅन्य कमन छय पनुॅन्य कथ
कऽडुॅय नऽन्य यिमव बोज़ विशवासुॅची वथ
तिमय मूख्य सपदान प्रावान थऽज़ गथ
अलौकिक तसुन्द रूप मनस मंज़ म्यें बासुन।।

* * *

लीला नं. ५५

छ़य्फ दिन्य गोंफि मंज़ पतुँ छुनुँ कांह ड़र
घरुँ घरुँ फेरून मा गव जान
धारणायि अऽचि़थुँय ह्यो़र कुन रटुँ धरुँ
घरुँ घरुँ फेरून मा गव जान।

१. बऽल्य हाछ़ लागन ज़ागन हेंरि बोंनुँ
सतुँऋषि ताम गऽयि येंत्यि बदनाम
यूगीश्वर ताम येंत्यि अऽन्यिहय अरुँ
घरुँ घरुँ फेरून मा गव जान।

२. फालव ध्युव मव कुँन कांह सोदा
रिंदुँ छुनुँ कांह येंत्यि मोंलुँवान अथ
ह्योन ध्युन छुनुँ केंह बऽल्य छिख अरुँसरुँ
घरुँ घरुँ फेरून मा गव जान।

३. भावुँक्य बर येंल्यि गोंडुँ गोंडुँ गऽयि यलुँ
मुह वावन पतुँ फुटरिख बर
अन्तःकरुँणन तुजिहक थरुँ थरुँ
घरुँ घरुँ फेरून मा गव जान।

४. अनज़ाऽन्य क्या ज़ान्यि लालन हुन्द मोंल
ओंन क्या ज़ान्यि प्रोंण या ज़ग

लालुॅ फरोशी कूॅमत करि खरुॅ
घरुॅ घॅरुॅ फेरून मा गव जान।

५. वसवाऽस्य मन मां बन्यि यूगीशवर
सादुन यूग गव हुमनुय पान
विशवास रज़ि खस लबुॅहन ईशर
घरुॅ घरुॅ फेरून मा गव जान।

६. **गरीब** तन्हा च़ल येंत्यि कुन्यि छ़लुॅ
भावस वुछ कस आमुत छाव
कुन्यि पाऽठ्य तऽम्य सुन्द जल चारा कर
घरुॅ घरुॅ फेरून मा गव जान।।

* * *

लीला नं. ५६

"आहुज़ाऽरी"

LMP

२।१

भख्ती मंगय आऽही करूम
ग्वरुँनाथ पादन तल वरूम
रतुँछेंपि लगय परुँदय करूम
ग्वरुँनाथ पादन तल वरूम।

१. लूभुँक्य न्यथुँर पनुँन्यी शथुँर
पानय चटान पनुँन्यी वऽथुँर
व्यबचाऽरिय मन मा बन्यि मेंथुँर
ग्वरुँनाथ पादन तल वरूम।

२।१

२. नोंमुँरिथ बुँ कलुँ अथुँ धाऽरिथुँय
संसार कुय ज़ार हाऽरिथुँय
कहवचि पनुन पान खाऽरिथुँय
ग्वरुँनाथ पादन तल वरूम।

२।१

३. सरतल सरासर द्रायिसय
चेंय कुन फुटिथ वोंन्य आयसय
चाऽनिस फरिस तल चायिसय
ग्वरुँनाथ पादन तल वरूम।

२।१

४. आकाश गाश कोंछि मंज़ रोंछुम
गोंरूँ वाख मन यन्द्रस कोंतुम

रसुॅ रसुॅ गंडव मऽज़्य पन कोंडुम
ग्वरुॅनाथ पादन तल वरूम।

५. वेंनुॅपोश रोपोश रोज़ि मा
वुछ मुशकुॅ फोंत्य हयोंर सोज़ि ना
म्याऽन्यी व्यदाख तत्यि बोज़ि ना
ग्वरुॅनाथ पादन तल वरूम।

६. संसार माऽला बोज़ कथ
दोंह तारुॅ गतुॅरेंन्य मारि गथ
ग्रज़ुॅवुन्य दोंहय मा रोज़ि व्यथ
ग्वरुॅनाथ पादन तल वरूम।

७. छुख यूगुॅ पीठस प्य़ठ चुॅ मस,
कर वन तुलख अज़ुॅलस म्यें दस
पतुॅ राज़ुॅ यूगस बेंयि चुॅ खस
ग्वरुॅनाथ पादन तल वरूम।

८. पानय ***गरीब*** पानस वनान
वुन्यि राज़ि दिल मव कर बयान
गल्यि ज़ेंव तवय वुन्यि छम गछ़ान
ग्वरुॅनाथ पादन तल वरूम।।

* * *

लीला नं. ५७

सरुँ फोंलुँ-मुत नूरुँ-मोंत ''जूग्य''

यूगुँ वनुँवुन जूग्य बोंज़ुँनावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर
यूगुँ वान्ये गोंतुँ कडुँनावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

१. तारुँ जिगरुच्यि वारुँ वारुँ चार्यम
हमसु वायम दोंह तय राथ
राज़ि इरफान चूरि बोज़नावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

२. रायि चान्ये दारि वछुँ त्रावेंम
मा म्यें हावेंम पनुँनुय जलाल
न्याय अज़ुँलुक तेंल्यि म्यें अंज्ज़ुँरावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

३. गतुँरेंन्यि हुँन्दि् गथ करनावेंम
वुज़ुँनावेंम निष्काम भाव
अच़ुँ तऽस्य निश पतुँ मां रावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

४. राज़ुँबलुँ किन्यि येंल्यि पकुँनावेंम
गंडुँनावेंम हेंरि बोंनुँ नार
अन्यिघटि मंज़ पतुँ गाश हावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

५. पानुॅ भस्मा मेंत्यि मलनावेंम
पतुॅ हाव्यम कम गाशि लाल
सुय गाश वत्यि वत्यि पकुॅनावेयम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

६. यूगुॅ आसनस प्यठ बेंहनावेंम
वुफुॅनावेंम हयोंर आकाश
पंचभूतस पंच ग्यव त्रावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

७. कदुॅमन तल नाग वुज़नावेंम
छलुॅनावेंम पांऽछुॅवय प्राण
पाऽन्य पानस पोश लागनावेम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

८. सम्भावुॅक्य ड़ल वुछिनावेंम
वातनावेंम परुॅमय थान
गल्यि गल्यि वुछ अमृत चावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

९. तेंल्यि **गरीबस** कुस छ्यनुॅरावेंम
येंल्यि सु थावेंम रऽछुॅरिथ पान
ग्वरुॅदीव मा ज़ांह परुॅ पावेंम
तुल कदम लोंत कोंत गोंय च़्येर।

* * *

लीला नं. ५८

''चे़न्वन''

नव द्वार वति बुॅ न्येरय

संसार पोत नुॅ फेरय

गऽर गऽर गछ़ान छु चे़रय

मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो

१. केंहछ़ा म्यें चारुॅ करुॅतम

दाध्यन दवा म्यें बनतम

पनुॅनीय चुॅ लय म्यें अनतम

मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२. संसार यारुॅबल छुस

तारा मंगान च़्येय छुस

च़्येय रूस म्यें तारि वन कुस

मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

३. क्या करुॅ बुॅ राज़ यूगस

आवुॅर बुॅ कर्मयूगस

चो़ंटुमुत कलय म्यें भूगस

मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

४. करुँ क्या कऽमिस बुँ अथरोंट
तकदीर आसि यस खोंट
आसान तऽती छु अन्यिगोंट
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

५. जफ दुँह दिया प्रकाशस
गाऽमुँच़ बुद्धी छि नाशस
घटुँ चूरि रूज़ गाशस
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

६. तारख जऽरिथ च़्यें वुजमल
चान्यन कथन छुथोंद मोंल
वनवान छय च़्यें मसवल
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

७. यूझीश्वरन अन्दर छुख
भगवान परमुँ दामुक
ग्वरदीव म्योंन चुँय् छुख
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

८. नागन तुँ आबशारन
आगुर च़्यें छ़ालुँ मारन
फेरान चुँ दीवदीरान
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

९. लरि सॅूत्य लर बॅु त्रावय
ज़ख्मी हृदय बॅु हावय
खल वख च्यें चूरि हावय
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

१०. शुन्यॅु गर्भ हियोंर खसान छुस
पतॅु च्येय अन्दर अच़ान छुस
नोंमरिथ च्यें गुल्यि गंडान छुस
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

११. पोंत छाय चाऽन्य वुछना
थिखनय बॅु बाकॅु छ़टॅु ना
तेंल्यि चूरि चूरि वदना
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

१२. त्रोवुम कबीलॅु तय क्रोन
येंल्यि प्यव म्यें परतॅुवय चोन
यारान आदॅुनुक प्रोन
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

१३. शक्ति शिवस चॅु मंज़ बाग
सादान यूगॅु शिव राग
नय राग नय च्यें वाऽराग
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

१४. वांऽलिंज म्यें दुबुॅ छि फेरा़न
बरुॅ प्यठिय़ चुॅ चू़रि न्येरान
डेंकलोन कमन चु़ॅ शेरान
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

१५. दर्शुन म्यें च्योन सन्मोंख
बुलगार प्ययि बलन छोंख
भूगान रोज़ चु़ॅय सोंख
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

१६. लगहय बुॅ यूग ग्रायन
कोंमुॅ छुस करान च़्यें छ़ायन
दज़ुॅ मां बुॅ तापुॅ क्रायन
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

१७. अमृत अऽछन अन्दर छुय
डेंकुॅ तीज़ यू़गुॅ बलकुय
वुछ़िनुक म्यें खारुॅ अमिकुय
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

१८. मस्तानुॅ खून म्यान्ये
वलुॅ रंग चु़ॅ जामुॅ सान्ये
ज़िन्दुॅ छस बुॅ रा़यि चान्ये
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

१९. न्यत्रन श्रद्धा म्यें चाऽन्यी
विशवास कोंड़ भराऽनी
अऽथि् मंज़ छि जाविदाऽनी
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

२०. लाऽगिथ मय्त्र शऽत्र छिम
वऽदि वऽदि गछ़ान गऽध्य छिम
सऽदॅुरूक म्यें सोंन सबॅुर दिम
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

२१. ज़ुव जान टाऽठ्य छिम प्राण
चान्यन कथन छि कुर्बान
जांह अऽसि्य् ज़्यम्र नॅु मऽशिरान
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

२२. कथ कथ बॅु वाठ दिमॅु वन
सोंरूय छु चाख दामन
चुक्यिदार म्योंन चॅुय बन
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

२३. ध्यानस अन्दर म्यें चॅुय यिम
केंछ़ा म्यें अथॅु तुलिथ दिम
मुह काम क्रूध थपि निम
मस्तानॅु म्यान्यि मदॅुनो।

२४. छुस प्रार्थी बुॅ प्रारान
अऽन्यिसारि गाश सारान.
अथुॅ च़्येंय ग्वरस बुॅ धारान
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२५. गऽर् वात्यि येंल्यि म्यें मरुॅनुॅच्य
नारस अन्दर म्यें अच़ुॅनुॅच
वथ हाऽविज़्यम म्यें तरुॅनुॅच्य
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२६. रोंन्यि पाद खोंन्यि बुॅ ललुॅवय
छ़ेंपि च़ूरि मीठ्य दिमुॅहय
जल जल च़ुॅ हाव जलुॅवय
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२७. आकाश ह्योर खऽटिथ कस
हावान यूगुॅ शक्ती
बोंन म्यान्यि बापुॅथुॅय वस
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२८. अनुग्रह नवीद चोनुय
प्रज़लावि र्कमलोनुय
लऽगिनय च़्यें आय म्योनुय
मस्तानुॅ म्यान्यि मदुॅनो।

२६. शुन्यि वत्यि सु कोंत छु द्रामुत
कथ सुमरनायि चामुत
भऽरि भऽरि म्यें लोल आमुत
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।

३०. कम ह्यथ **गरीब** न्येरून
आकाऽश्य आसि फेरून
डेंकुँलोन पानुँ शेरून
मस्तानुँ म्यान्यि मदुँनो।।

* * *

लीला नं. ५६

(यूगुॅ साक्षात्कार)

१. येंत्यी द्रामुत तोंतुय अचा़न
पानय पानस नमान छुस
शन्यिहस मंज़ ज़न प्रकाश नचा़न
पानय पानस नमान छुस।

२. बर दिथ कुठिस मंज़ छुस अचा़न
कुलहम नचा़न म्येंय मंज़ ज़न
शाह तय शिव छुम हमसू बनान
पानय पानस नमान छुस।

३. ग्वर छुम शशिस वोंपदीश करान
स्वर पान थनॅु पेंयि त्येंलि ब्रह्मज्ञान
सु छुय च़्येय मंज़ चॅु कोंनॅु सनान
पानय पानस नमान छुस।

४. त्रेंगुण गुपिथ च़्यें मंज़ बसान
च़्यें क्याज़ि नठ नठ अचा़न छय
अथ मुह ज़ालस चॅु कोंनॅु च़टान
पानय पानस नमान छुस।

५. म्यें मंज़ शक्ती व्यथ ज़न ग्रज़ान
खमान अऽती हमान छुस

नाभ्यस थानस मंज़ छुस श्रपान
पानय पानस नमान छुस।

६. बॅुय काऽमी निष्काऽमी बनान
बॅुय छुस स्वाऽमी बनान दास
बॅुय छुस यूज़ी यन्द्रे रटान
पानय पानस नमान छुस।

७. म्यें मंज़ सोॅरूय बॅु कस प्रॅुछान
बॅु कोॅनॅु रटान ग्वरॅु सुन्द वाख
गवरॅु दीव यूज़ी चोॅपाऽरि नचान
पानय पानस नमान छुस।

८. सुय छुम अंगन अंगन रंगान
कुलहुम रंगन करान म्युल
कुन्यर भाऽविथ कुनुय बनान
पानय पानस नमान छुस।

६. बॅुय छुस चन्द्रमॅु शीतल बनान
अऽग्नॅुय बऽनिथ छ़टान नार
यन्द्रे अचान अऽथ्य मंज़ दज़ान
पानय पानस नमान छुस।

१०. बॅुय छुस विष्णो ज़गतस रछान
ब्रह्मा सृष्टी दिवान कॅुन
शंकर तांड़व नचुना करान
पानय पानस नमान छुस।

११. दमन बस्तन मंज़ शाह ग्रज़ान
दज़ान छु म्येंय मंज़ वस्तूरि वन
वसवासुक काठ अथ मंज़ दज़ान
पानय पानस नमान छुस।

१२. गीता पनुँन्य पानय परान
ज़्यव छम करान बऽल्य गांगल
ज़्यव छम पोंज़ तय अपुज़ परान
पानय पानस नमान छुस।

१३. कंड्यव मंज़ बुँय गोंलाब फोंलान
देह लरि आत्मा दज़ान चोंग
चुँ ज़ान यि चोंग छुनुँ जांह छ्येवान
पानय पानस नमान छुस।

१४. ग्वर छुम सऽन्य कथ खऽन्य खऽन्य कड़ान
दोंन म्युल गछ़ान चलान शक
बुँय छुस आरा सऽदुँरस रलान
पानय पानस नमान छुस।

१५. वऽराऽग्य ल्यऽत्रे कल छुस चटान
नटान छि कम कम कलंदर
संगर वाऽहरिथ गाशस रटान
पानय पानस नमान छुस।

१६. बुँय छुस यितुँ गछ़ कऽर्‌य कऽर्‌य चलान
बुँय छुस वावस करान राज

दाऽनी बुॅय छुस भिख्या मंगान
पानय पानस नमान छुस।

१७. द्वादुॅश ड़लुॅ मुॅऽज़्य तारस तरान
अपारि मनसर असान पोशा
शक्ती म्याऽन्यी छि सन्यिरस अच़ान
पानय पानस नमान छुस।

१८. मंडुॅलस मंज़ बाग **गरीब** नच़ान
प्राणन रटान छु ध्यानस मंज़
पतुॅ छुस पनुॅनुय पानुॅय वटान
पानय पानस नमान छुस।।

* * *

लीला नं. ६०

विज़ि विज़ि यिज़ि यपाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी
हानुॅ मां प्राऽरि प्राऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

१. जऽन्दुॅरुॅ दिथ चूरि थावथ
पतुॅ मां कांऽसि हावथ
करय पोशि अम्बाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

२. अन्दर कुठि बेंहनावथ
वसि हुन्द मस चावथ
गछ़य च्येंय लाऽरि लाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

३. छ़लुॅ गरि जोगि मो चल
पान त्रावय लतन तल
मरुॅ बोज़नय साऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

४. शोंध्य म्याऽन्य अन्तःकरण
तिमति वोंन्य आयी शरण

अख दया थव म्यें जाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

५. यूगॖ पीठ बॖ मंगय मां
न मगय मूख्यि दामा
न मंगय नऽन्य याऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

६. न मंगय भवु सरॖ तार
न मंगय धन तय ध्यार
गछ़य बस जान निसाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

७. न दपय शेर कर्मॖलोन
न दपय ज़ून्यि कास ग्रोन
न तुल म्याऽन्य पापॖ बाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

८. न दपय कमन सूॖत्य द्राख
यूगॖबल कमन सूॖत्य च़ाख
तेंल्यि किछ़ परदॖ द्राऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

९. बस चॖ रोज़तम सन्मोंख
पतॖ नव द्वारॖ मऽन्ज़्यि पख

बॖ करय दम शुमाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

१०. भख्ती हुन्द यि वरदान
अऽथ्य रोज़ॖ पूज़ा करान
गाश रटॖ साऽरि साऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

११. न्यत्रन छुय तीज़ॖ बल
ज़न आकाश न्यरॖमल
शुन्यि मंज़ गाश जाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

१२. कॖऽम्य नाहनोव नोंव प्रोन
कुस ज़ानि क्या छुख म्योन
भऽरि भऽरि् म्यें अऽशि टाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

१३. यारॖबल च़ॖ रटख नाव
युस च़्यें खोंश सुय च़ॖ बेंहनाव
ग्रावि जांह यियि नॖ वाऽरी
बॖ लगय पाऽरि पाऽरी।

१४. च़ूरि वुछ कम कम तऽरियि्
मेंन्द्य फऽटिय बोंठ वाऽत्य अऽर्य

कर्महीन गयि वुजाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

१५. ग्वरुॅ चान्यन चरुॅणन
हुन्द कत्यि करुॅ वर्णन
बस करय आहुजाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

१६. भख्ती पम्पोश ड़ल
ग्वरुॅ वाख अमृत ज़ल
चथ सुय रटुॅ वाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।

१७. **गरीब** भखुॅत्यन हुन्द दास
गिंदि तिमुॅनुय सूॅत्य रास
अथुॅवास रोज़ि जाऽरी
बुॅ लगय पाऽरि पाऽरी।।

* * *

लीला नं. ६१

''सर्म्पण''

जूऽग्य आमय यारुॅबुॅलिये
भावुॅसर म्यें पोश फलिये
तिमय लागस छऽलि्य छऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फोंल्यिे

१. सर्वुॅकद छु शमशाद ज़न
तऽम्य हय न्यू थपि म्योन मन
द्राव मा सु गंगुॅबऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

२. दर्भि आसन छु धाराण
शाहस सूॅत्य शिव छु खारान
द्राव शुन्यि गर्भु तऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

३. यूगी तस छि ललुॅवान
स्वर्गुॅ हूरुॅ तस छि मोंलुॅवान
लाल छिस जऽरि जऽरिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

४. वीदमाता तस छि सूॅत्य
तपुॅ ऋषि तुॅ बेंयि साध कूॅत्य

शांत ड़लुॅ मुॅऽन्ज़य् तऽरिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

५. अनाहद नादुॅ ब्यन्द द्राव
ज्योति प्रकाश तूरिय च़ाव
रूद च़ूरि यूगुॅबऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

६. येंलि फुटन अन्तःकरण
सुय गव युन सर्म्पण
ज्ञान मां यीयि बऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

७. जूगिस रऽटिम येंलि पाद
न्यत्रुॅ जोंयि द्रायि फऽरियाद
ज़्यव गऽयम गऽल्य गऽलिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

८. ओंश वसान ज़न आबुॅशार
जोगि हाव पनुन संसार
नतुॅ गछ़य मऽर्यि मऽरिये
भावुॅसर म्यें पोश फ़ोंल्यिे।

९. असुॅवुॅन्यि होंन्जि तऽम्य वोंन
म्योन राज़ सन्यि खोंतुॅ सोंन

वोंठ चॖु लाय सऽदॖुरॖबऽलिये
भावॖसर म्यें पोश फ़ोंल्यि।

१०. थज़ॖरॖ प्यठॖ वोंठ दिचॖम ना
ग्वरन कोंछि मंज़ रोंटुस ना
तोरनस हय तारॖबऽलिये
भावॖसर म्यें पोश फ़ोंल्यि।

११. शिव तॖ गोंरॖदीव कुन ज़ान
यूगी सु म्योन भगॖवान
कुस **गरीबस** हेंयि मऽलिये
भावॖसर म्यें पोश फ़ोंल्यि।

* * *

लीला नं. ६२

''वीद माता गायत्री''

गायत्री सृष्टि हुन्दुॅय आधार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार
अऽथ्य पान बुॅ आलुॅवान बारम्बार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

१. शक्ती कुलहम अऽत्य छि न्येरान
पतुॅ त्रन भवुॅनन मंज़ छि फेरान
पालान प्यत्रान कुल सम्सार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

२. ब्रह्म रूप शक्ती वीद माता
पालान यि ज़गुॅतस ज़गत अम्बा
रूद्र रूप धाऽरिथ करान संहार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

३. अऽथ्य मंज़ गुपिथ छुय ज्ञान तय ध्यान
देह धाऽरियन हुन्द आसुॅवेंन्य प्राण
यूगुॅ गर्भुॅ त्रावान अमृत धार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

४. आत्मुॅदेह परमुॅ प्रकाश अुॅथ्य मंज़
धारणा दिथ कर चुॅ वुछिनुक संज़

शुन्यि गर्भुॅ प्रज़ुॅलान न्येरि ओंमकार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

५. तपुॅ ऋषि यूझी तुॅ बेंयि ज्ञाऽनी
चाऽन्य माल नित्युॅ नेमुॅ सुमराऽनी
ओंम भूः भुवः स्वः सर्वुंआधार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

६. ब्रंमांड़ आकाश बेंयि पाताल
दर परदुॅ चमकान चाऽन्य गाशि लाल
यूझियव सन्मोंख लोंभुख दीदार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

७. चिन्तन मनन कर हुम अथ पान
गायत्री कोंडुॅ मंज़ कर गोंडुॅ श्रान
मन यन्द्रस कत कर्मु खुरि खार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

८. द्वादश ड़लुॅ न्येर शांत ड़ल वात
गायत्री माता वुछख साक्षात
शोलुॅ मारान छुस लोलुॅ दरबार
चोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

९. ब्रह्मा वेंशनो बेंयि शिवजी
भावुॅ पम्पोश पूज़ि लागाऩ छिय

ब्रह्मरन्ध्र ह्योंर ह्योंर चोन नवॅुद्वार
चॊनॅुवय वीद छिय करान नमस्कार।

१०. यूगियन हुँन्ज चॅुय यूगॅु माता
राज्यरेंन्य भॅखुत्यन हुँन्ज़ शारिका
चॅुय नवर्दुगायि हुन्द अवतार
चॊनॅुवय वीद छिय करान नमस्कार।

११. आनन्द वन वाति परमानन्द
पज़ि मनॅु स्वर तो गायत्री छन्द
सर्वानन्द बन्यि सर्वाकार
चॊनॅुवय वीद छिय करान नमस्कार।

१२. काम क्रूध लूभ मुह मा फरॅुनय
बेंयि पाप शाप मा यिन वलॅुनय
सतॅुसंग गायत्री हुॅन्ज़ वाय तार
चॊनॅुवय वीद छिय करान नमस्कार।

१३. अनाहद नादस गायत्री ताज
हरसू येंति तति तुॅम्य सुन्द राज
आकार अखंड़स रंग बेंशुमार
चॊनॅुवय वीद छिय करान नमस्कार।

१४. यूगॅुद्वार गोरॅुद्वार बेंयि स्वर्गुद्वार
च़्येंय ताबे छुय तिहुँद व्यवहार
समनबल यूगियव कोंरुय जयकार
च़ोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

१५. कुन्यि पाऽठ्य वातुन गछि़ ग्वरॅु माठ
तति हेंछिनावी गायत्री पाठ
त्यलि कर धारण जल ग्वरॅु द्वार
च़ोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

१६. ग्वरॅुदीवॅु सुँन्ज़ कथ जिगरस खन
गायत्री मन्त्र अऽथ्य मंज़ अन
हमसू द्वारॅु न्येरि गाशि अम्बार
च़ोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

१७. पांछ़ प्राण **गरीबुॅन्य** च़्येंय ललुॅवान
सोंघो पान च़्येंय छुय आलुॅवान
च़्येंय सुमरान फोंल्य लोंलुॅ गुलज़ार
च़ोंनुॅवय वीद छिय करान नमस्कार।

* * *

लीला नं. ६३

ग्वरॅ दीवॅ लगॅयो चान्यि लीलाये
पोशि पूज़ाये प्रारान छियि
धारणा दिथ छुख कथ थज़ि शाये
पोशि पूज़ाये प्रारान छियि।

१. पय च्योन छ़ारॅन्यि विगन्यि कोंत द्राये
दमनहालि द्रायेयि समनबल कुन
कामदीव यिनॅ अच्यि मंज़ धारणाये
पोशि पूज़ाये प्रारान छियि।

२. मन प्राण अर्पण च्येंय पथ द्राये
यिनॅ छ़ायि छ़ाये न्येरख दूर
यितॅ गछ़ कऽर्य कऽर्य संग वोन्य आये
पोशि पूज़ाये प्रारान छियि।

३. तपॅ पाऽर रऽटॅथम शुमशान जाये
सूरॅमत्यॅसॅय सॅत्य द्राये कोर
नवॅद्वार वत्यि किन्य फीरिथ आये
पोशि पूज़ाये प्रारान छियि।

४. इन्द्रलूकॅ वनॅवान विगन्यि कोंत द्राये
तस पोंत छ़ाये वुछिहस मा

ऋषिवारि वुछिन्ये तपुॅऋष आये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

५. ताऱुबलुॅ तार हयुत तऽम्य रंगुॅ नावे
सतुॅगोंर भावे कति असि राज़
यूगुॅबलुॅ मां रूद साधन छ़ाये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

६. काछुॅ ज़ून चमुॅकान द्रायि चान्यि माये
जिगरुॅक्य होल तऽम्य छ़ाये थऽवि
तारकन मंज़ बाग माऱुकन द्राये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

७. इष्टुॅ दीवी निश वात ज़ालाये
पऱुबत लाग शारिकाये पोश
सोंय माऽज्य घरि घरि थाव्यम साये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

८. मस्तान जोग्यो लगुॅयो बलाये
लऽगिनय आये रूमुॅ ऋषिनुय
अन्दुॅ वन्द पूशितन असि च्योन साये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

९. सम्सार छ़ऽल्य बुॅल्य यिनुॅ छऽलुॅरावे
तेंलि मा रावे प्राण तय ध्यान

नज़रे अकि चान्यि अन्दि म्योन न्याये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

१०. वलुॅ खोंर ठहराव मव मार ग्राये
मोकुॅलन पाये च़्येंय निश सोन
न्यत्रन लऽजिमुॅच़ अऽश ददुॅराये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।

११. ***गरीब*** छुस प्रारान एकांत जाये
वनुॅवाऽस्य द्राये बेंयि पोंत वन
यारय्न पऽत्य किन्य मां रूद छ़ाये
पोशि पूज़ाये प्रारान छिय।।

* * *

लीला नं. ६४

''श्वास प्राण लीला''

हा म्यानि पंच प्राणो
कोंत ओर च़ुॖ दूरानो
येंत्यि पान म्य गीरानो
कोंत ओर च़ुॖ दूरानो।

१. च़ोंन प्राणन सोंत्यम शाह
येंल्यि पंच प्राण च़लिहा
रूम रूम छिम वदानो
कोंत ओर च़ुॖ दूरानो।

२. पंच प्राण गव महाप्राण
शिव रूप शक्ती ज़ान
अथ सनान ज्ञानुॅवानो
कोंत ओर च़ुॖ दूरानो।

३. शुन्यि खानुॅ जाय रऽटुॅमय
शीशखानुॅ छ़ाय वुछिमय
यूगुॅबल च़्यें प्रारानो
कोंत ओर च़ुॖ दूरानो।

४. ग्वरुॅदीव धारणा दिथ
च़ालि च़ालि ओंश त्राऽविथ

पंच प्राण सुमरानो
कोंत ओर चॖु दूरानो।

५. यूझी तॖु ब्ययि यूगनीय
नखॖु यिथ ति दूराऽनी
तोति डऽज्यि नॖु पाऽरिज़ानो
कोंत ओर चॖु दूरानो।

६. पंच प्राण प्रकाश दीप
निष्पाप बेंयि न्यरलीफ
वावॖु हालि मंज़ दज़ानो
कोंत ओर चॖु दूरानो।

७. यस सम्पर्ण छु आमुत
गटि कुठि गाश ज़ामुत
छुनॖु पत सु व्यसॖुरानो
कोंत ओर चॖु दूरानो।

८. विशवास छु पानॖु भगवान
ग्वरॖुदीव अऽत्य छु रोज़ान
पंच प्राण सुमरानो
कोंत ओर चॖु दूरानो।

९. पंच भूतुक छु यीय सार
चोर त्राव पंच प्राण धार

तेंल्यि म्येल्यि न्यरुँवानो
कोंत ओर चु़ँ दूरानो।

१०. कनव ऋष माधवी वोंन
गग ऋष क्याज़ि रूद ब्योंन
तस आयि कनुँवानो
कोंत ओर चुँ दूरानो।

११. ***गरी़ब*** छ़ऽल्य बऽल्य छु न्येरान
गंर्धवन सूँत्य फेरान
रऽटिथ नालुँ जानानो
कोंत ओर चुँ दूरानो।।

* * *

लीला नं. ६५

१. गोंरूँ दीवस निश पान नो खऽटिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुॅ प्रकाश।

२. पान्यि तऽल्य प्रकाश नऽच्य नऽच्य वुछज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुॅ प्रकाश।

३. ग्वरुॅद्वार वाऽतिथ लोंत बर मुचरिज़िहे
पवनुॅ संगाठस कऽड़िज़िहे वाश।

४. लऽद्रुॅबल वाऽतिथ सोंदुरूँ खोंन्यि अऽचिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुॅ प्रकाश ।

५. अडुॅगरयन चाटन सूॅत्य नो पऽकिज़िहे
पाऽट्य मस्तस किह कऽरिज़िहे बेंदून।

६. पाँ ग्रटुॅ अऽन्दुॅरिम न्यबर नो कऽडिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुॅ प्रकाश।

७. नम चम चऽटिथुॅय शिवनाग खऽनिज़िहे
गन्यि शिव मायायि प्रऽन्यिज़िहे पान।

८. प्रणवुॅकिस सारस पान चुॅय वेंन्दिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुॅ प्रकाश।

९. ग्वरुॅ आऽज्ञन्यायि प्यठ न्यत्रुॅ ज्यूत्य वऽन्दिज़िहे
ज्ञानुॅ समृणायि प्यठ वुछज़िहे यार।

१०. भावुँसरुँ अशिवान्यि तस पाद छऽल्यिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुँ प्रकाश।

११. कामुँ गिरदाबस दमन हाल कऽरिज़िहे
शोंमरिथ पान पतुँ रऽटिज़िहे प्राण।

१२. पान मनुँसाऽविथ पतुँ दान रऽटिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुँ प्रकाश।

१३. ग्वरुँ सुँन्ज़ि श्राकि प्यठ वारुँ वारुँ पंऽकिज़िहे
रथ माज़ रतुँछेंपि वऽन्दिज़िहे पान।

१४. बलिदान ग़ऽछ़िथुँय वरदान रऽटिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुँ प्रकाश।

१५. लूकुँ न्यन्ध्याये लतुँ मोंड़ं कुँरिज़िहे
पोंट ज़न मंड़िज़िहे दुयतुक पान।

१६. अद्वैतस मंज़ बाग हिकटा कऽरिज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुँ प्रकाश।

१७. ***गरीबा*** शांत ड़ल दम दिथ चऽलिज़िहे
ग्वरुँ नावि तऽरिज़िहे ग्वफुँबल ताम।

१८. यूगिस्थानस प्यठ थख कऽड़िज़िहे
अऽछ वऽटिथ वुछज़िहे परमुँ प्रकाश।।

* * *

लीला नं. ६६

भय कास दय दियि पानय तार
गोंरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार
शख्ती त्रावी अनुभव धार
ग्वरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार।

१. रूम रूम सूहम न्येरी बोज़
गोंरूॅ पादन तल सन्मोंख रोज़
कच़ि रोज़ पानय बन्यि व्यस्तार
ग्वरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार।

२. शंख पदुॅमय मंज़ न्येरी नाद
कासी जन्मन हुॅन्ज़ सुय व्याध
दृष्टांत हावी अऽन्दरिम धार
ग्वरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार।

३. खम कास दम रठ शोंमरिथ रोज़
नोंमरिथ बोज़ख अऽन्दरिम सोज़
स्मृणायि वाऽतिथ कर गुफ्तार
ग्वरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार।

४. मोंखुॅ प्रोंणुॅ आंगन यऽच़ुॅ काऽल्य च़ाव
हंगुॅ मंगुॅ अन्यिघटि गाशा आव
यकुॅदम बदुॅल्योंव म्योन संसार
ग्वरुॅदीव कासी ज़न्मुॅच लार।

५. स्यदॖ पीठस प्यठ ब्यूठुम साद
वीदॖचि वाऽणी लोंभ ग्वरॖ नाद
अन्तःकरणन प्यव शहजार
ग्वरॖदीव कासी ज़न्मॖच लार।

६. आकाश वाऽणी गऽयि कनॖनॖय
यूगनीय वीदॖय आऽस्य ग्यवनॖय
वीदॖ गंभस द्रायि मुशकॖन्य धार
ग्वरॖदीव कासी ज़न्मॖच लार।

७. राधा कृष्णॖन्य मुरली वाय
गूरि्य गूपी वऽछ्य तऽथ्य मंज़ चाय
गूकल ह्यदय म्योन बन्यि नवॖद्वार
ग्वरॖदीव कासी ज़न्मॖच लार।

८. ललॖदेदि स्यदॖमाग्ल्य क्या भोवुय
लूकॖ न्यन्ध्यायि मां मन रोवुय
न्यन्ध्यायि ब्रोंठॖकन्यि बोंड़ हलमदार
ग्वरूदीव कासी जन्मुच्य लार।

९. लल आग्स अजॖलय यूगीश्वरी
पद्यमान्यि नाव प्यव ललीश्वरी
शिव ग्वफ़ रऽटिथॖय छोंतुन मां नार
ग्वरूदीव कासी ज़न्मॖच्य लार।

१०. ***गरीबनं*** यनॖ वुछ ग्वरॖ सुन्द ड़ल
नाभि मँज़ तनॖ वुज़ान अमृत ज़ल
नवद्वार पातॖज़्यन वॖछ स्वय धार
ग्वरॖदीव कासी ज़न्मॖच लार।।

लीला नं. ६७

ग्वरुँदीव लग्यो चेंय पाऽर्य पाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सत्थ अख चाऽन्य
अथुं च़्येंये कुन छुस ना धाऽर्य धाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य

१. फ्रख हऽत्य लारान आयि ननुँवाऽरी
वन सअ अनुँवाऽरी म्येलि असि कर
यिनुँ ज़ांह थवुँहम टाऽर्य चाऽर्य चाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

२. पनुँन्यव तुँ परुँध्यव कऽर नुँ ज़ांह याऽरी
मोंह मायायि लाऽर्य लाऽरी बोज़
ह्यनुँरस मंज़ गऽयम बदुँ बोंय जाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

३. म्यान्यि दादि ग्वरुँ च़्येंय तुज़िथ ना खाऽरी
निन्ध्यायि हलम धाऽर्य धाऽरी बोज़
अलौकिक गाश गछि च़्येंय निश जाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

४. काऽमी आऽसिथ ति छुख निष्काऽमी
स्वाऽमियन हुन्द ति चुँय स्वाऽमी बोज़

ढ़य्कुॅलोन शेरनस अनतुॅ जल वाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

५. धतुॅ छम गाऽमुॅचुॅ चान्यि अमाऽरी
कर यपाऽरी जूज़ त्राव्यम् पूरि्य
अऽश धारि भावुॅहस कर्म खुरि्य साऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

६. वऽन्दि्य वऽन्दि्य लगुॅयो अऽन्ध्य अऽन्ध्य च़ोंपाऽरी
फुटिमुत्यि मनुॅ आहुज़ाऽरी बोज़
नखुॅ यिथ बोज़तम कन धार्य धाऽरयि
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

७. मानुॅबल गोमुत छुय मुशक जाऽरी
अऽस्य छि सम्साऽरी क्या चे़नव
शुमशानुॅ भस्मस च़्यें नूरुॅ अनुॅवाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

८. ज़ऽध्यि छिम जिगरस चू़रि छिम साऽरी
वुन्यि वाऽरी मां आयि भावुॅनस
सम्सार बुछि मां कालुॅ शाहमाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

९. शुर्य भाव थाऽविथ ति सर्वआकाऽरी
सर्वआधाऽरी लेंम्बि पम्पोश

सर्वाकाऽरियस छि प्यालुॅ बरदाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।

१०. शुन्यि थानुॅ बोंन वस अऽस्य छि वनुवाऽसी
दास तय दाऽसी च़्यें प्रारान छिय
निराकार **गरीबस** गुरूॅ साकाऽरी
छम च़ोंपाऽरी बस सथ अख चाऽन्य।।

* * *

लीला नं. ६८

''केह वाख च़ाकय''

गोरुँ शब्दुँय रटुन गव ना त्यले
येंल्यि वुज़मल अच़न तहखानन मंज़
सुल्यि गरि वथिथ गछ़ि नुँ न्यन्दुँरि ज़ोंले
त्यलि नादब्यन्द वुछिहन शीशुँखानन मंज़

१. श्वासुँ सूँत्यन कामस गालिहे
कामुँशक्ति सूँत्य पालिहे कोल
क्रूध अग्नि ज्ञान सूँत्य ज़ालिहे
प्राण वुफुँनाविहे वावुँ हाले मंज़।

२. गोंरस तन मन प्राण छपे
विशवास गते फोंलन पम्पोश
रोंपोश पाऽठ्यि गोरुँद्वार अच़े
कच़े बेहिये गोरूँ लोल्यि मंज़।

३. गोरुँ नावस प्यठ कल पान वन्दे
ज़ुव जान वोंथरे गोरूँ च़रुँणन तल
शुरि बाऽच़ बाऽय बन्द तऽस्य निश थवे
परुँ मा प्ययिहे अदुँ ज़न्मुँ ज़न्मन।

४. गोरूँ वाकुँय अमृत कोंड़ वुज़े
सरस्वती न्येरे मोंखुँ पम्पोंश

रंगॅु रंगय युस सतॅु रंग रटे
सु मां नटे वावॅु हाले मंज़।

५. मरनॅु ब्रोंठॅुय युस घरॅु पनुन वुछे
सु मां यियिहे संसारस मंज़
ग्वरॅुनाथ ह्यथ आकाऽश्य वुफे
न्यरॅुवान वुछिहे ग्वरॅुद्वारस मंज़।

६. **गरीबस** ग्वरॅुदीव विज़ि विज़ि वुछे
भऽखॅुत्यन दियिहे ज़ॅुवॅु तय जान
पानस सॅूत्य सॅूत्य तिमन ति तुले
सुल्यि वाति हे यूगिस्तानस मंज़।

७. दुयतॅु किस दांदस हेंगॅुयचटें
कुनिरस मंज़ हाविहें यकसान
सम्भावस मंज़ युस युस फोंले
तस मां डले जांह पाऽरि ज़ान।

८. न्यरॅुवानॅुचि जोंयि सॅूत्य लय थवे
ह्यस होंश थवे लामकानन मंज़
भक्त्यो यिनॅु गछ़ख जांह न्यन्दॅुरि ज़ोंले
त्यलि मा फोंले लोलॅु प्रभात।

९. दम दिथ रोज़ संसार चे कल्ये
ज़हर यिनु चावी गल्यि गल्ये बोज़
यिनुॅ **गरीबो** वख तस तत्यि ड़ले
तेंल्यि कत्यि बले आदुॅन्य यार।

१०. वादुॅ लोलुक यिनुॅ मन्यि मंज़ चले
तेंलिय कत्यि रले न्यरुॅवानस मंज़
सन्यिरस श्रपिथ गोरुॅद्वारुॅय अचें
गरीबस वुछिहे छावान पोश।

११. रोपोश तऽस्य सूॅत्य नखुॅ नखुॅ चले
अदय बल्हि दोंख तय दाऽध्य
मस्तानुॅ शुन्यि मंज़ गाशा अन्ये
ओम ज्ञानुॅ अछिरुक वुछिहे वोंन्त
तऽथ्य वोन्तस मंज़ यकदम रले
त्यलि पलि प्ययिहे परमुक धाम।

* * *

LMP

लीला नं. ६६

साध मां ड़ोंल वादुँ घरुँ आव सोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुँये
जोयि तय सऽदुँरस छु यारानुँ प्रोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुये।

१. संग छुनुँ त्रकुँरे क्युथ बार पानस
म्यें तुँ जानानस छु तोंलुन क्या
तूल्य तूल्य असि त्रोव नोंवतय प्रोंनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुये।

२. छ़ाय काऽस शीशस प्रवुँ प्ययि पानस
तस नाराणस प्रतिबिंब होव
वावुँ हाल्यि मंज़ ज़ोल गाशि चोंग च्योनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुये।

३. रंगुँ रंगुँ लछि बऽध्य वुछि़य मेंत्यि साधुँय
अलख छु ना़दुँय अऽकिसुँय मंज़
गुपिथ छु नऽन्य पाऽठ्य केंचव ज़ोनुय
कांचुँ ज़ून्यि असि चोंल ग्रोनुये।

४. गछि कुठि गूँ गूँ बूजुम रातस
ओस अर्धुँरातस जऽशिने प्रभात

राज़ि इरुँफानस साज़ ओस चोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंब्रो ग्रोनुये।

५. ओप चोप कोरुँनम बानुँ येंल्यि मोंजुम
पतुँ छोंफ ध्युतुँनम तुँ वनुँहस क्या
थऽन्य खऽच़ ह्योंर ह्योंर भखुँत्यव ज़ोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुँये।

६. वुछिनय करुँनय पोशि कंड्ड़य अचुँनय
पतुँ वन करुँनय कम मरुँहम
हाशि गाशस छा न्येरान छोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुये।

७. ***गरीबन*** वारुँ ज़ोल नारुँ पनुँनुय पान
पोख्तुँकार मोंख्तुँब्योल ववुँने द्राव
मोंखुँतुँहार ताबान द्राव कर्मुँलोनुय
काचुँ ज़ून्यि असि चोंलो ग्रोनुये।।

* * *

लीला नं. ७०

इकॅुवटॅु न्येरव, पोंत मां फेरव

पाऽर मन्ऽच अऽस्य सुबॅु शाम शेरव

समॅुतायि वुछम म्यें ममता नॅु फरन केंह

दरॅुदाम रटन हे पयमान चमन हे

मयखान खमन हे तेंल्यि जोंयि ग्रज़न हे

अनुराग वुंठन हे कठॅुकोंश छु चलन हे

शुन्य गर्भॅु अचन हे रोपोश वुछन हे

तत्यि नॅु कांऽसि बुछन हे।।

इकॅुवटॅु न्येरव, पोंत मां फेरव

येंति राज़ुबलन कम जानान बलन सम

इरफान रऽटिथ बम भगवान ति सरॅुखम

श्रपिथ छुय शम दम बोल्यि करान सूहम

जानान पुरॅुनम विश्वास छु जामि जम

वसॅुवास छु सरॅखम **गरीबन** ह्योत नॅु गम।।

ग्वर छु सॅूत्य हरॅुदम तऽमी थफ म्ये कऽरॅुनम

गाशि प्रंग म्ये गऽरिनम अंगन रंग भऽरिनम

हमसु दारि द्राव कोर अख मन तॅु प्राण चोर।।

इकॅुवटॅु न्येरव, पोंत मां फेरव

यूगॅुबलॅु चोवुनस राज़ॅुबल पोवनस

कुडुर ज़िनि ज़ोलनस सूरुँ मंज़ खोरनस
तारुँबलु तोरनस शुन्य खान खोरनस
गाशि नखुँ थोवनस।।
तुरी धाम येंल्यि आव बतुँ देगि आम छाव
मुशकुँ अदुँफर ति द्राव खुमखानुँ शिव चाव
दमनहालि ग्वर द्राव रलुन गव चलुँन्य ग्राव
ग्वर शेंश्य छि न्येरान दोंन गोंमुत छु यकुँसान
अछुँ रछुँ छि वनुँवान वुछिनि आव भगवान
शिवजियुन यि वरुँदान ज़ालि सोन अभिमान
त्राव्यि लोलुँ दामान प्रावुँनावि न्यरूँवान।।
ग्वरुँ रूप टोठान ॐ रूप ज़ोतान
भऽखुँत्यन छु रव्यावान अनुग्रह ति ध्यावान
गरभुँ खोंन्यि सावान धर्मुँ पोश छावान
पाप पोन्य गालान छ्योट तुँ श्रूच ज़ालान
पनुन अथुँ ड़ालान आत्मुँ द्वीप ज़ालान
परमुँ रूप हावान तऽथ्य सूँत्य रलावान।।

* * *

लीला नं. ७१

V. Imp

शुमशान दऽज़ुँमुँच़ वाँऽलिज्य हावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा
नारूँ बुज़्य गछुँनय तिम लोलुँ ग्रावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

१. गोरूँ रूप भगवान नव द्वार हावय
स्मृणायि त्रावय समनबल पाद
परमुँ पदुँसुँय मँज़ चाऽन्य जाय थावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

२. ज्योती निदानस मन्ज़ गाश हावय
भय च़ऽलुँरावय यमुँ सुन्द बोज़
दय लोन टूठिथ दयगथ हावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

३. सम्साऽऱ्य वत्यि पऽध्य येंत्यि नहनावय
अलौकिक श्रेह वुज़नावय पूर
गोंरूँ वाख अमृत मन सगुँनावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

४. तहखानव मऽन्ज़्य ज्यूत्य पकुँनावय
शुन्य गर्भुँ हावय पूर्ण शिव
खुम खान आदुँनुक श्रेह आलुँनावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

५. परदॖ यिम दॖदॖक्य थोंद तुलॖनावय
हम खानॖ थावय शीरिथ प्रंग
ज़्योंन तय मरॖन्य पतॖ मऽशिरावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

६. सत कर्ममॖक्य मस खाऽस्य भरॖनावय
वीदॖ गीता परॖनावय बोज़
तपॖ बल की ऋषि यूरि्य अनॖनावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

७. भऽखॖती चाँऽगिस ज्ञानॖ ज्यूत्य हावय
मंऽरि मऽर्य ति थावय दज़ॖवुन चोंग
कर्मॖ खुरय ज्ञान यन्द्रस कतॖनावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

८. यिनॖ ओंश त्राऽविव येंल्यि चलि सु वावय
बतॖ अऽनिथ छावय छु प्रारून क्या
ग्वरॖ द्वारॖसॖय मंज़ मूक्ष द्वार हावय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

९. ***गरीबो*** चलुन पेंयि येंम्यि सहरावय
तारॖबल तरि ग्वरॖ नावय बोज़
ग्वरॖनाव वाँऽलिज्य मंज़ खनॖनॖ आवय
काऽल्य येंल्यि रावय फेरी मा।

* * *

लीला नं. ७२

-ग्वरुॅ लीला-

V. Imp

कुस क्या वन्यम छुनुॅ अथ सनुन
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन
तऽस्य छुम वनुन गुदुॅरून बनुन
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

१. कोंसुॅ माऽज्य कुस येत्यि मोल छुय
शोंदुॅ शोंदुॅ तुॅ पोंज़ कस लोल छुय
थव च़ूरि जिगरूॅक्य होल चुॅय
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

२. ब्यन्यि बाऽय यिम मायायि लाऽरय
लूभस छिना अथुॅ धाऽरि धाऽरय्
ज्ञानस छि किल्य दिथ अहमुॅ ताऽरय
गोंरूॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

३. ग्वरुॅ द्वार यिम किथुॅ कऽन्य अच़न
किथुॅ यूगुॅ मंडुॅलस मंज़ नच़न
यिनुॅ अहमुॅ नारस मंन्ज़ दज़न
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

४. यूज्ञीशरन न्यन्ध्या करन
तिम छिय हबा पानस फरन
यह लूक तुॅ परिलूक छुख डुबन
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

५. ममतायि मँन्ज़ आवुँर्य गऽमुॅत्य
मोंह न्यन्दुॅरि मँज़ किथुॅ कऽन्य प्यमुॅत्य
सम्साऽरि क्रिमुॅनुॅय छिय ख्यमुॅत्य
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

६. सरूॅखम तुॅ अपर्ण छुस बुॅ चे़ंय
ग्वरुॅ दीव चे़ंय रोंस कुस छु म्ये
अमृत कोंडुक वुज़नाव श्रेह
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

७. आऽव्युल छु नोंकुॅतय क्या वनय
ज़ाऽविज्य यि कथ किथुॅ भावुॅनय
अनुभव वराऽय किथुॅ हावुॅनय
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

८. वुज़ॅनाव शक्ती कोंडुॅलनी
इड़ा तुॅ पिंगला गछ़ि नऽन्यी
पतुॅ सुषमणा कड़ खऽन्यि खऽन्यी
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

९. अष्टांग चऽकुॅरस मँज़ अऽच़िथ
वाऽराग मनुॅसर बेह खऽटिथ
दम रठ तुॅ यिनुॅ न्येरख फऽटिथ
ग्वरुॅ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

१०. आधार ब्रह्मुक ओंमकार नाद
तऽथ्य छेंपि लगान यूगी तुॅ साद

ब्रह्मरन्ध्रॖ न्येरान नागॖराद
ग्वरॖ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

११. ज्योती अलौकिक थनॖ प्यवान
अमृत कोंण्ड़स यूगी चवान
प्रकाश तम्युक हरसू प्यवान
ग्वरॖ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

१२. ब्रह्मा तॖ वेंष्णो बेंयि महेश
गौरी पोंत्र वुछ श्री गणेश
यूज्ञीश्वरन चावान त्रेश
ग्वरॖ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।

१३. सेंदि स्योद **गरीबो** वन मॖ कथ
पानय चॖ पानस कर तॖ गथ
दयगथ वुछान मुशिकाव वथ
ग्वरॖ दीव नखि ड़खि छुम पनुन।।

* * *

लीला नं. ७३

प्राण वन्दुँयो हा बुँ ज्ञान वन्दुँयो
प्राण ध्यान वन्दय मस्तानुँ लो तय लो,
निष्कामुँ वन्दय मस्तानुँ लो तय लो।

१. यूगुँ सऽदुँरुँ छालि मँज़ लाल जान वुछमय
यूगुँ बलुँ के नूरूँ लो तय लो।

२. पँच ड़लुँ शीशुँ वत्यि शीशिनाग सूँत्य ह्यथ
शंकर कनुँ दूरूँ लो तय लो।

३. गूकल वाऽसी निष्कल कल ह्यथ
गूपियन हुँन्दि चूरूँ लो तय लो।

४. वछ यलुँ त्राऽविथ थोंवुँमख साऽविथ
वसि खाऽस्य चाऽविथ लो तय लो।

५. खशि वाँऽलिंजि सान रतुँ दाऽव्य पान वुछ
आऽईन खान के चूँरूँ लो तय लो।

६. तुलुँ मुलि ज़ाग ह्यथ परबतुँ द्रासय
शारिकायि हुँन्दि पीठुँ लो तय लो।

७. अमरनाथ गोंफि मँज़ गर्भुँशिव वुछमय
शिवुँ शिवुँ पोंरूँमय लो तय लो।

८. म्यानि बालुॅ गैसान्यि सोन कुन यिज़िहे
निज़िहे ज़ुव तुॅ जान लो तय लो।

९. शमशान मँज़ बाग सूरुॅ ड़ेर वुछिमय
गूरुॅ गूरुॅ कोरुॅमय लो तय लो।

१०. सूरुॅ अंबुॅरस मँज़ गाशि लाल वुछमय
ताबुॅवुन संसार लो तय लो।

११. गोरुॅद्वार यूगियन हुन्द जऽशिनुॅ ड़ीशिथ
वेंश्णुॅपाद रोंटुमय लो तय लो।

१२. गोरुॅवारि गोरुॅदीव आंगन सोन चाव
शक्ति पाद नोंन द्राव लो तयं लो।

१३. नालुॅमति रऽटिथुॅय लोतुॅ लोंत दोंपमस
रोंन्यि पाद बुॅ ललुॅवय लो तय लो।

१४. **गरीबस** अन्दुॅ वन्दुॅ पोशिवन फऽल्य फऽल्य
कऽल्य बूल्य कऽरि कऽर्य लो तय लो।।

* * *

लीला नं. ७४

'ग्वरुँ तीजुँ आगुर'

संऽजि ड़लस प्रँगवा छुना
ग्वरुँ डलस संघ शाह छुना
ध्यानुँ खलस रंगवा छुना

सत्संगस शिव नाद छुना
ज्योती अन्दर गोरूँ साद छुना
नाभि अन्दर नागराद छुना
ध्यानुँ खलस रंगवा छुना।

भखुँत्यि भावस शक्तिनाद छुना
पवनुँ साज़स सम्भाव छुना
सम्भावस सम नाव छुना
ध्यानुँ खलस रंगवा छुना।

तेल्यि वन चुँ भखुत्यो क्या गछ़ी
मन शोंद बनी शमुशान गछ़ी
शुमशानस मँज़ र्निमाण गछ़ी
ध्यानुँ खलस रंगवा छुना।

र्निमाण गऽछ़िथ न्यरवान गछ़ी
न्यरुँवानस मंज़ भगवान वुज़ी
पतुँ पानय अऽन्दुँरिम राज़ नन्यी
गोरूँबेंबि हुन्द ग्वरुँदीव राज़ वन्यी।

प्राणयामस मँज़ वऽटिथुँय रोज़
ॐ भूः भवः स्वः तऽतिनुँय बोज़

सोज़ि हमसू धारणायि मँज़ बोज
गोरुँदीवुँनि गोंफि मँज़ लोंत पाऽठ्य रोज़।

दोंधुँ शुरि सुँन्ज़ माया लाऽगिथ रोज़
पवुँनस ह्योंर गगुँनस सअरा कर
तपुँ ऋषिनुँय सूँत्य सूँत्य जऽशिना कर
छुनुँ काँह ति सन्नान अति क्या चुँ वुछान।

कथ प्यठ पानस छुख च़्यथ चुँ रछान
ममुँतायि सरफ छिय च़ूरि बुछान
रावुन मोल सीतायि सीनुँ तछान
ग्वरुँ दीव श्री रामस कोनुँ प्रुँछ़ान।

सोंनुँ सुँन्ज़ लंका वुछ किथुँ कऽन्य छि दज़ान
यूगीश्वरुँनुय छा काँह परवाह
गऽछ़ितन संहार या बोंड़ प्रलुँया
फऽरिसुँय तल भऽखुँत्यन छुय सावान।

बस यूगुँन्यन्दुँरा तिमुँनुँय पावान
तऽथ्य न्यन्दुँरे मँज़ भगवान हावान
तन मन पुशरिथ आनन्द प्रावान
परमानन्द अमृत चावनावान।

सर्वानन्द अन्दुँवन्द प्रकटावान
धऽम्बी रावुन पतुँ किथुँ छु मरान
पतुँ सूरस मँज़ किथुँ कऽन्य छु श्रपान
कथ क्रूठ **गरीबुँन्य** छख नुँ व्यपान
अहमुँच्यि शिलि प्यठ बऽल्य माल फिरान।

* * *

लीला नं. ७५

गोंरूँ बोय यूगीश्वर घरुँ द्राव
मूक्षद्वारस मँज़ जल जल च़ाव
संसारुँच्य बोज़ चऽटुँनय ग्राव
ग्वरुँबोय यूगीश्वर घरुँ द्राव।

१. ग्वरुँदीवन पानुँ चोवनय त्रेश
यूगवानुक पतुँ लोगनस वेश
दमनहालि समनबल पवनुँदीव आव
ग्वरुँबोय यूगीश्वर घरुँ द्राव।

२. प्रकाश आगुर कोंत सना च़ोंल
तवय पापव शापव संसार वोंल
गोंडुँ क्याज़ि होवुन युथ नेह द्राव
ग्वरुँबोय यूगीश्वर घरुँ द्राव।

३. राज्यरेंन्यि यूगनी आसुँ वनुँवान
हरिया म्ये हा गऽयि येंति कनुँवान
वाँऽलिंजि मँज़ मेंति तीर च़ाव
ग्वरुँबोय यूगीश्वर घरुँ द्राव।

४. मस्तान त्रोवथन कोरकुन हे
रोग्यि रोग्यि च़ोंलुँहम मूक्षद्वार हे
शिव ड़लुँ वुछिथम शंकर प्रभाव
ग्वरुँबोय यूगीश्वर घरुँ द्राव।

५. ब्रह्मरन्ध्र रऽछिथम अमृत धार
न्यत्रुँज्यूत्य होवुथ शिव संसार

गछ़ अलौकिक पोश वति वति छाव
ग्वरुॅबोय यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

६. भखुॅत्यन गोंडुॅ उपदेश ध्युतुॅथम
श्वास रऽटिथुॅय प्राण त्याग कोरूथम
गोंरूॅ दीवस सूॅत्य शुन्य गभ चा़व
ग्वरुॅबोय यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

७. कुलहम यूगियव कोंरूय जयकार
साकार रूपुॅ प्रज़ुॅल्योव ओंकार
न लोंगुय ह्यिुकं न लऽज्य तुल त्राव
ग्वरुॅबोय यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

८. शिवजी तुॅ गोंरुॅदीव आऽस्य सूॅत्य सूॅत्य
ब्रह्मा वेंष्णो महर्षि कूॅत्य
वछ़ि वाँऽलिंज्य असि लोल चोन आव
ग्वरुॅबोय यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

९. शुमशान फऽल्य ज़न बोज़ पोशि वन
ललुॅवान चे़ं वेंष्णो रूद्र दर मन
ग्वरुॅदीवन कोंरुॅनय गोंड़ सम्भाव
ग्वरुॅबोय़ यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

१०. चान्यि साधुॅनायि बुॅ लगय पाऽरि पाऽऱ्य
पथ मा गऽय वोंन्य म्याऽन्य अनुॅवाऽऱ्य
पतुॅ मा न्येरनम ननुॅवाऽरि नाव
ग्वरुॅबोय यूगीश्वर घरुॅ द्राव।

* * *

लीला नं. ७६

तेंल्यि हो चलवो येंमि संसारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य
वुनले मँज़ येंति छुम अन्धकारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य।

१. मन छुम सन्याऽस्य कति रोज़ यारो
छना काँह जाया येंति रोज़ुॅ हा,
हावतम चूरि पाऽठ्य सुय नवद्वारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य।

२. शिव छुख म्योनुय हा शाहसवारो
हा दमदारो बोज़ अख कथ,
शुमशानुॅ मनुॅ सुॅय बन लालुॅज़ारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य।

३. यारुॅबल पनुॅन्ये तारतम तारो
हा महापारो यीतनय आर,
बाकुॅय छु अपुज़ुॅय चुॅीय पोंज़ यारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य।

४. तुतुॅवाऽल्य बोंड्य होल कति छायि थावो
कस येंति बुॅ भावो गुदरुन हे,
ददुच्य ही बन चुॅय नवबहारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूॅत्य।

५. सन्मोंख तीज़स चे सिंयि आकारो
नवप्रभात कारो वन्दुँयो जान
यूगुँबल चोनुय तति इनतिज़ारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूँत्य।

६. ज़ुवजान म्योनुय प्राणाधारो
यि छु बाऽज़िगारो भ्रम संसार
छ़लुँगरि जोग्यो करु इकरारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूँत्य।

७. साधुँकन तुँ सन्तन हुन्द चुँ सरदारो
धारुँणायि धारुँयो चोनुय ध्यान
नन्यिवानुँ अथरोंट करू ड़खुँदारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूँत्य।

८. प्रशांत हृदयुक दितुँ त्युथ व्यचारो
युथ ग्रऽकि हारो मागस मँज़
संताप तापस बन शहजारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूँत्य।

९. कोंल्यि बठि **गरीबुँनि** वुछ वीरिवारो
ललि हुन्द इशारो स्यदुँ माऽल्य ज़ोन
रोंपुँद्येदि म्याने फोंलन गोशिवारो
वला जूग्य यारो रोज़तम सूँत्य।

* * *

लीला नं. ७७

'ग्रोगुॅ मिलवन तुॅ पोंज यार'

'अख छाँडव'

LMP

बुथ फिरिथ छुम सम्सार

कत्यो यारुॅ असान छुख

रोंटुॅमुत च़ें कुस गोशिवार

कत्यो यारुॅ असान छुख।

१. ज़न्मुॅ ज़न्मन हुन्द वनुन छुम

अज़लुॅ मिलवन छय प्राऽन्य

वोंन्य कर तुॅ अज़ मिलचार

क्तयो यारुॅ असान छुख।

२. तोंन्दुॅरस लऽजिस ना बो

.केथुॅ कऽनि दऽज़ुॅस ना बो

रूदुॅय नुॅ म्योन अमार

कत्यो यारुॅ असान छुख।

३. कंऽड़ि थरि प्यठ बुॅ अलवांज़

मीचुॅरि म्य अचान छिम

„चुॅय छुख म्योन ड़खुॅदार

कत्यो यारुॅ असान छुख।

४. ज़न आबुशारा छुख
सऽदुॅरस चुॅ रलान छुख
यिखुॅ नय वुछख मरगुज़ार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

५. समुॅयिच्य यि कोंसुॅ गाँगल
यिरुॅवुॅन्य नाव गऽयि म्यें
दऽज़ि दऽज़ि म्यें प्यव सब्ज़ार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

६. हा म्यान्यि कलि टाठ्यो
ठहराव कर तो वोंन्य
बेह तो मेंयनिश दोंह तारुॅ
कत्यो यारुॅ असान छुख।

७. जिगुॅरस म्य गऽमुॅत्य चाख
बेआर कोता द्राख
छुस मा बुॅय नाबकार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

८. अन्दर कुठि बुॅ बेहनाऽविथ
कुस ताम प्रज़ुॅनाऽविथ
ग्वरुॅसुन्द छुम ग्वरद्वार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

९. हा म्यानि जोग्यो बोज़
अऽन्द्रिमि दिलुक बोज़ सोज़
छुख म्योन आदुॅन्य यार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

१०. दऽज़ि दऽज़ि बन्यम शुमशान
वाऽरान मस्तानो
सूरस म्य फव्ल गुलज़ार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

११. ताव़ुॅनुन यि क्युथ बाज़ार
कऽलि वाऽन्य मेलान छिम
साऽरी छि येंति दागदार
कत्यो यारुॅ असान छुख।

१२. छुनुॅ काँह **गरीबस** सूॅत्य
नादार कुनुय पान
साऽरी येंति छि लाचार
कत्यो यारुॅ असान छुख।।

* * *

लीला नं. ७८

१. रूशिथ च़ोंलुॅहम कथ जायि ब्यूटुहम.
विज़िन्यव ड़यूँटुॅहम कथ जायि हे
बालुॅ पान आरुॅवल पतुॅ पतुॅ द्रायसय
च़ेंय कुन आसय वुछतम हे।

२. कस भावुॅ क्या छुस कऽमि सुन्द यार छुस
सम्सार यारुॅबल प्रारान छुस ।
तारूॅवोल निश छुम पानस वुछतम
अऽन्दरिम पान च़ूरि थावान छुस। रूशिथ।।

३. फुतुॅ फुतुॅ म्य केंरूमुत ममुॅतायि आऽलिस
समुॅतायि मँज़ शिव प्रारान छुस
दरुॅ सूॅत्य पानुॅय ह्योर छुस खारान
पतुॅ सोंम्बुॅरावान पानुॅय छुस। रूशिथ।।

४. यूगीश्वरन सूॅत्य अथुॅवास थावान
समनबल बोस लौंचुॅरावान छुस
भऽखुॅत्यन टाठ्यन दिल रंज़ुॅनावान
ग्रावन नुॅ ज़ाँह कन थावान छुस। रूशिथ।।

५. वैताल कोंल्यि प्यठ सम्साऽर्य प्रारान
यम भय तिमन दुॅनिरावान छुस
राज़ि इरफानस पान छेंपि ध्यावान
रसुॅ रसुॅ पतुॅ शोंमुॅरावान छुस। रूशिथ।।

६. आकाऽश्य मार्गस छुस पऽध्य त्रावान
सेंदि स्योंद प्रकाश त्रावान छुस

प्रकाश मंडुॅलस विगुॅनि वनुॅनावान
हमसू खाऽस्य भरुॅनावान छुस। रूश्यि।।

७. गोरुॅदीव यूगी सऽदुॅरुॅबल प्रारान
तारान छु खासन खासन सुय
हऽल्य कऽल्य बानुॅ छुम तऽत्य फुटुॅरावान
जानान जान जान तारान छुम। रूश्यि।।

८. यूगुॅ न्यन्दरि मँज़ छुस बऽड़ि खोंख मारान
मायायि लोर बऽल्य लागान छुस
मधुशालायि मँज़ साकुॅय म्यें चावान
अऽन्दरिम वदुर अति हावान छिम । रूश्यि।।

६. बह्म शब्दस छिम लोल जरुॅनावान
बम बम बूल्य करुॅनावान छुम
विगन्यि छि म्येठि हटि तस वनुॅनावान
त्रिकाल च्रऽट बेहनावान छुम । रूश्यि।।

१०. साधक तुॅ यूगी छि साज़ सोम्बुॅरावान
मन्यि मँज़ राज़ ललुॅनावान छुम
साज़स तुॅ राज़स छु यकुॅलय हावान
चतुॅर्ड़लुॅ पम्पोश छावान छुम। रूशिथ।।

११. ***गरीब*** छुम शमुॅनायि पोन्य फिरुॅनावान
चाकायि प्यठ फिरुॅनावान छुम
तावुॅहत्य प्राण छुम सुय सगुॅनावान
ज़ाँह ति नो पान भ्रमुॅरावान छुम।।

* * *

लीला नं. ७६

'त्रॆंपुरिथ इरफान'

१. गुफ्तुॅ कण्ठस सन्ध्या पऽरितन
स्तुती या निन्ध्या कऽरितन
वाऽराग सन्यिरस नार भऽरितन,
प्रकाशि वुज़मल छनुॅ धरानय
गॊर छु सन्मोंख पानुॅ भगवान
वष्टि बागस क्या हरानय।

२. कुष्ट ओस वास यमुॅनायि तऽल्य तऽल्य
छऽल्य बऽल्य द्राव राधा कृष्ण
प्रंगुॅ हऽत्य आऽस्य नंगुॅ त़ति मँगानय,
होंलि वाल्यन क्या रंगानय
गूकलस मँज़ शाह छु पानय
प्रवुॅ गुमानस मँज़ अच़ानय।

३. तन तुॅ मन प्राण श्वासुॅ जाँऽपान
वाशि मनुॅ मँज़ुॅ क्या छु प्रज़ुॅलान
अक्षदलप मँज़ छु सुमरान,
कोंनुॅ छुख क़थ चुॅ व्याच़ारान
गर्भुॅकँजि मँज़ुॅ कुस वुछानय
शाँत मन थाव साविधानय।

४. आलोक वति प्यठ कुस म्यें वुछिमय
तोंशि त्रकुॅरे पाशि कज़िमय

घऽन्य म्यें माया सऽन्य म्यें खऽनिमय
राग़ॖ यन्द्रस पतॖ म्यें कोतॖमय
तीलॖवाऽन्य पऽट् बुथि यिवानय
सोंय म्यें ड़ालान पाऽर्य ज़ानय।

५. खोरि रोंस हग़ॖरस लमानय
कति वसि हेंरि अति व्यमानय
दृष्टाँत दुविधा छुय प्रमाणय
ज्ञानॖवानय अति करन क्या,
हरॖमोंख गोंसोन्य ओस तति वुछानय
बऽल्य सु लय ओस वश करानय
ओंम त्रिवेणी दारि आकाश
राश कऽम्य सुन्द कुस लबानय।

६. समनबल सफ्तॖऋष परान क्या
भू भवः ॐ भूं भवः स्वः
ज़न प्रसान आऽस ब्रह्म कुमारी
वश कुमारस निश बुद्धि दाह
हंगॖ मंगय यूगी च़्यें म्येल्याह
समनबल जाँह लऽज्य नॖ दिवॖया
दार पातॖज्य छनॖ वसानय
प्रेम अमृत छुनॖ वुजानय।

७. वल **गरीब** प्राख मंडुॅलस
पाज़ करुॅहव वुन्य येंती
नित्य नियमी युस अभ्याऽसी
गगुॅनुॅ ह्योंर वुफुॅ परुॅगती
ग्वर पनुन यूगीश्वरा छुम
निश छु लूकन खऽट्य खऽटी
ज्ञानुॅ खलुॅ मँज़ बाऽगरानय
सम अथन मँज़ व्यथ वुज़ानय।।

* * *

लीला नं. ८०

१. हतो जोंग्यो कदम तुल म्येर पानस
सऽनिथ क्या वन च़्यें न्येरी यथ जहानस

२. न छुय घरॅबार नय छुय काँह पनुन हे
पनुन छुय सत्गोरॅय तऽस्य निश च़ुं गछ़ बेंह।

३. कमन छुख मोंखतुं दोंछुं वन बाऽगरावान
कमन छुख अमृतुंक्य कोंडं येंति च़ुं हावान।

४. अमर ज्योती म्यें ब्रहमरन्धरस छि दऽज़ुंमुच़
मगर संसारुं चिय छ़ाय क्याज़ि प्येमुंच़।

५. हतो जोग्यो च़ुं कर बन्द लोलुं गुफ्तार
च़ुं वुछ अथ ज़ागि रूज़िथ कोंहनुं सम्सार।

६. मोंधुंर लय मीठ आवाज़ च़ूरि थव तो
रंगन दिथ छलं पनुंन्य रंग पान खट तो।

७. कमन भावुन चें छुय वन राज़ि इसरार
नकारुंचि कोंलुं ग्रज़ान कति बनिचें इकरार।

८. ओंमस चोबुक छु हमसू बोज़ि कुस तार
च़्यें निश कुस वाति कस छुय त्यूत रफ्तार।

९. शिवस छुख नखुं शाहस मिलुंवन तमिच्य छय
घन्यर साज़स मगर काऽछ़ा मोंधुर लय।

१०. श्रपुन छुय पानुंसुंय मँज़ कथ छि बस यिय
फोंलुन छुय नाभि मँज़ बस वर्ग ज़न हिय।

११. ***गरीबस*** ज़ाऽन्य ज़ाऽन्य अनुंज़ाऽन्य लागान
समय छुख पाथुंल्युन छुख राग ज़ागान।

* * *

लीला नं. ८१

गुरू शिश्य संवाद

१. म्यें दोंपुंमस कुस भऽखुॅत्य ज़न आसि पोंखुॅतय,
तऽम्य दोंपुॅनम युस म्यें लागान भावुॅ मोंखुॅतय।

२. म्यें दोंपमस शामुॅ रंग छुख कृष्णुॅ भगवान,
तऽम्य दोंपुॅनम छुस बुॅ भऽखुॅत्यन डूरि्य सगवान।

३. म्यें दोंपुॅमस आदि दीव छुख ना महेश्वर,
तऽम्य दोंपुॅनम पानुॅ कासय ज़न्मुॅ क्रेछर।

४. म्यें दोंपुॅमस ग्व्‌र तुॅ भगुॅवान छा कुनुय वन,
तऽम्य दोंपुॅनम राजुॅ यूगस मँज़ चुॅ मो सन।

५. म्यें दोंपुॅमस शानुॅ बोंड़ छुख पानुॅ केवल,
तऽम्य दोंपुॅनम नाभि कुॅण्डुॅ मँजुॅ ग्व्‌र छुन्यरमल।

६. म्यें दोंपुॅमस तुरीधामस मँज़ चुॅ रोज़ान,
तऽम्य दोंपुॅनम ग्व्‌र तुॅ भगवान बस कुनुय ज़ान।

७. म्यें दोंपुॅमस यूगिराजो बोज़तम कथ,
तऽम्य दोंपुॅनम छुस बुॅ पूज़ान बस ग्व्‌रस न्यथ।

८. म्यें दोंपुॅमस दमनहाले चोंग कऽम्य जोल,
तऽम्य दोंपुॅनम दुयतुॅ रोंस युस तऽस्य म्य भोंर लोल।

९. म्यें दोंपुॅमस कथ समपर्ण छिय वनान तिम,
तऽम्य दोंपुॅनम शिव म्यें हावान लोलुॅ प्रतिबिम्ब।

१०. म्यें दोंपुॅमस होल जिगरस कासुॅहम़ कर,
तऽम्य दोंपुॅनम मन यन्द्रस कास गोंडुॅ वर।

११. म्यें दोंपुॅमस अष्टुॅलिंगम नादुॅब्यन्द ज़ाव,
तऽम्य दोंपुॅनम प्रेंयमुॅ सऽदुॅरूक शिव तऽती आव।

१२. म्यें दोंपुॅमस भ्रम दिवान ब्यियि ब्यियि छु संसार,
तऽम्य दोंपुॅनम रठ ग्वरस पाद ब्यियि चुॅ ग्वरुॅद्वार।

१३. म्यें दोंपुॅमस कोंत गछुन छुय म्यति चुॅ निखुॅना,
तऽम्य दोंपुॅनम शिव स्वरूपस मँज़ चुॅ यिखुॅना।

१४. म्यें दोंपुॅमस छिम त्योंगल लूख वति म्यें त्रावान,
तऽम्य दोंपुॅनम छुस तिमन कति सायि थावान।

१५. म्यें दोंपुॅमस काँह भऽखुॅत्यं छा पान मारान,
तऽम्य दोंपुॅनम त्युथ भऽखुत्य छुस लोंलि बुॅ ललुॅवान।

१६. म्यें दोंपुॅमस क्या ग्वरस निश रोज़ि चूरे,
तऽम्य दोंपुॅनम ज़ानुॅ वुन छुय सु दूरि दूरे।

१७. म्यें दोंपुॅमस आयितन त्यल्यि थावहस पान,
तंऽम्य दोंपुॅनम सुय बनावी मन गुलिस्तान।

१८. म्यें दोंपुँमस वश गछ़न कर वोंन्य म्यें यऽन्द्रे,
तऽम्य दोंपुँनम लाग सऽन्य चूर मँज़ न्यन्द्रे।

१९. म्यें दोंपुँमस मोल माऽज्य म्याऽन्य बेंयि भगवान,
तऽम्य दोंपुँनम थव गोंरस निश बन्द पनुँन्य प्राण।

२०. म्यें दोंपुँमस शांत ड़ल छा शोलुँ मारान,
तऽम्य दोंपुँनम तऽत्य छु आनन्द शांत रोज़ान।

२१. म्यें दोंपुँमस कर चुँ तारख वोंन्य म्यें तारस,
तऽम्य दोंपुँनम नारुँ ज़ाऽलिथ संगि पारस।

२२. म्यें दोंपुँमस कर चुँ हावख अऽन्दरिम पान,
तऽम्य दोंपुँनम दोंन विलय गछि येंलि सु यकुँसान।

२३. म्यें दोंपुँमस म्यानि ग्वरुँदीव बोज़ ज़ाऽरी,
तऽम्य दोंपुनम गछ़ लगुस अऽनदि अऽनदि चोंपाऽरी।

२४. म्यें दोंपुँमस छुख म्य सन्मोंख येंलि ति रोज़ान,
तऽम्य दोंपुँनम तेंलि वज़ान छुय राज़ि इरफान।

२५. म्यें दोंपुँमस शिव तुँ शख्ती कतिछि रोजान,
तऽम्य दोंपुँनम जूग्य सुँन्दि घरि तिम छि खेलान।

२६. म्यें दोंपुँमस वाश कड़ कथि छुस अज्ञाऽनी,
तऽम्य दोंपुँनम बन अम्याऽसी नित्य नेमी।

२७. म्यें दोंपुॅमस वासना छा ग्वरुॅदीवस,
तऽम्य दोंपुॅनम कोंत करान निन्ध्या चुॅ शिवस।

२८. म्यें दोंपुॅमस छा सु निष्काऽमी तुॅ यूगी,
तऽम्य दोंपुॅनम भूग कऽर्‌य कऽर्‌य न्यरुॅभूगी।

२९. म्यें दोंपुॅमस छा तऽमिस अमृत अंगन हे,
तऽम्य दोंपुनॅम शक्ति आधार यिनुॅचुॅ ख्यख वेह।

३०. म्यें दोंपुॅमस काम अऽन्दुॅरिम शक्ति सोपान,
तऽम्य दोंपुॅनम कामदीव तऽम्य कोंर परेशान।

३१. म्यें दोंपुमस तस छु आनन्द वन कमन सूॅत्य,
तऽम्य दोंपुनम तस फिदा परवानुॅ गऽयि कूॅत्य।

३२. म्यें दोंपुमस ओल अऽन्दरिम कुस छु येरान,
तऽम्य दोंपुनम युस अज़ल च्योन आसि शेरान।

३३. म्यें दोंपुॅमस दारि तल कऽम्य त्रोव परुॅतव,
तऽम्य दोंपुॅनम येंम्य पनुन ओंश टारि तऽल्य चव।

३४. म्यें दोंपुॅमस वन प्रकाशस कति परम थान,
तऽम्य दोंपुॅनम येंति अमर ज्योती छि रोज़ान।

३५. म्यें दोंपुॅमस घरुॅ घरुॅ फेरून नुॅ वोंन्य जान,
तऽम्य दोंपुनम गाटुला बेकुॅल चुॅ लागान।

३६. म्यें दोंपुॅमस पंच प्राणस सूॅत्य छम लय,
तऽम्य दोंपुॅनम ज़ान त्येलि टूठिथ च़्यें गोंय दय।

३७. म्यें दोंपुॅमस भऽखुॅत्यज़न सूत्य सूॅत्य थऽविज़्यख,
तऽम्य दोंपुॅनम शापुॅ गोरुॅदीव पापुॅ रऽछिज़्यख।

३८. म्यें दोंपुॅमस चीरुॅ रटुॅहथ नालुॅमति हे,
तऽम्य दोंपुॅनम जूग्य सुॅय निश चूरि पाऽठ्य बेह।

३९. म्यें दोंपुॅमस च़ुॅय वनुम कुस सूॅत्य निमुॅ बो,
तऽम्य दोंपुॅनम यस कुनुय बासान रात दोंह।

४०. म्यें दोंपुॅमस गोंफुॅबलस प्रकाश जाऽरी,
तऽम्य दोंपुॅनम वात सुलि तोंत रठ च़ुॅ वाऽरी।

४१. म्यें दोंपुॅमस छुस **गरीबस** सूॅत्य द्रामुत,
तऽम्य दोंपुॅनम शिव प्रकाश छुय घरि च़्यें ज़ामुत।

लीला नं. ८२

वतॖ चान्यि वुछान वतॖ लोसान मत्यो
कत्यो चॖ रोज़ान छुख.
हरणॖ चऽशिमन कोसम हराण मत्यो
कत्यो चॖ रोज़ान छुख।

१. वस छम म्यें चॖशिमॖच़ पानस मत्यो
कोफूर तन दऽज़ॖम म्यें हन हन
वनॖवाऽस्य वतन पकान मत्यो
कत्यो चॖ रोज़ान छुख।
वतॖ चान्यि वुछान वतॖ लोसान मत्यो

२. वछि तलॖ कुय कोंगॖ पोश रटो
कार्तिक ज़ून छस दरॖ लऽजिमॖच़
जोशि वऽछॖमॖच़ वछ चटान मत्यो
कत्यो चॖ रोज़ान छुख।
वतॖ चान्यि वुछान वतॖ लोसान मत्यो

३. कंऽड़िय थरि प्यठ छस कंऽड़िय रव्यवान हतो
होल गोम रगन चॖ सोंनुख मां जाँह
वोंन्य, खोल त्राऽविथ न्येरान मत्यो
कत्यो चॖ रोज़ान छुख।
वतॖ चान्यि वुछान वतॖ लोसान मत्यो

४. न्यरदय छुख किनुँ मार्युक मत्यो
छेंम्ब्य वथ छम सोंथ ज़न च़लान
यूगॅबलय तीर त्रावान मत्यो
कत्यो च़ुॅ रोज़ान छुख।
वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

५. गूकल के थनि च़ूरो हतो
गूपियन कोंत लिथुँनावान छुख
सार गभस मँज़ अच़ान मत्यो
कत्यो च़ुॅ रोज़ान छुख।
वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

६. राधे शाम छुख खऽट्य खऽट्य कत्यो
शोंध्य अन्तःकरण परुॅखावान
कहवचि मँज़ तरसावान मत्यो
कत्यो च़ुॅ रोज़ान छुख।
वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

७. रूमन रूमन रूम गऽयम हतो
समुॅतालि क्या च़ुॅ प्रज़ुॅनावान
बुमन बुमन च़ुॅ वुछान हतो
कत्यो च़ुॅ रोज़ान छुख।
वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

८. दरभि आसुँनस प्यठ शमान हतो
भ्रमान छु भ्रम तान्य हतो बोज़
शिव गर्भु मँज़ छुख चमुँकान हतो.
कत्यो चुँ रोज़ान छुख।
वतुँ चान्यि वुछान वतुँ लोसान मत्यो

६. बलाय दिमय ज़ुव जान मत्यो
योगिस्तानुँच्य वन कथा अख·
कोंसुँ लार छय छुख चलान मत्यो
कत्यो चुँ रोज़ान छुख।
वतुँ चान्यि वुछान वतुँ लोसान मत्यो

११. हंगुँ मंगुँ मरय वर गऽछिथ मत्यो
आऽविज्य कल रंज़ुँनावेंम कुस
रंगुँ साज़ छुख कति रंगान मत्यो
कत्यो चुँ रोज़ान छुख।
वतुँ चान्यि वुछान वतुँ लोसान मत्यो

१२. होल जिगुँरुँक्य मा चुँ तोलान मत्यो
रोंफ लागख तति वन कथ कथ
तति छुय सोरूय राऽस्य गछ़ान मत्यो
कत्यो चुँ रोज़ान छुख।
वतुँ चान्यि वुछान वतुँ लोसान मत्यो

१३. च़्यें वराऽय वोंपर येंति साऽरी मत्यो

चानि पान्यारूक छुम ना कसम

येंति छि टऽटिवाऽल्य रोज़ान मत्यो

कत्यो चुॅ रोज़ान छुख।

वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

१४. यक जान दुकाऽलिब गछ़ि ना मत्यो

राधा कृष्ण सन्मोंख यियि ना

तेंलि प्राणन म्युल गछ़ान मत्यो

कत्यो चुॅ रोज़ान छुख।

वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

१५. **गरीबुन** यार पोंखुॅतुॅकार मत्यो

साधुॅनायि मँज़ बस सु रोज़ान छुम

विगन्यि हटि म्यूठ वनुॅवान मत्यो

कत्यो चुॅ रीज़ान छुख।।

वतुॅ चान्यि वुछान वतुॅ लोसान मत्यो

* * *

लीला नं. ८३

कुण्डलिनी यूगुक अनुभव

दारि बर त्रोंपरिथ यल्यि छुस सुमराण
तेंलि छुस सुमरान चोनुय नाव
अंपण हमसू सुॅय मॅंज़ छिम प्राण
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ

१. यख छुम लोंगुमुत धंमस तुॅ कंमस
अर्धमस मॅंज़ मन यीरान छुम
अऽती बुॅ सरुॅदान अऽती बुॅ गरुॅमान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

२. समनवारि ऋषिपीर साधक छि समुॅखान
मन्यिगामुॅ रोंपुॅध्यद प्रज़ुॅलान छम
वुहवुन नार छुम तन मन ज़ालान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

३. श्रुपनखा रावुॅणस आऽस तम्बुॅलावान
वश करन श्री राम वनुॅ मॅंज़ बो
राम बाण वुछ तस नस छ्ऺयनुॅरावान

त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

४. वॉऽलिंजि क्राऽनिस छुस वनुनावान
न्यन्ध्यायि सोंम्बुॅरान हलुॅमस मंज़
पादन हुँन्ज़ गर्द शेरि छुस लागान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

५. सोंपुॅनस मँज़ ज़ाग्रत वुज़ुॅनावान
सन्ताप ताप दुॅन्यिरावान छिस
संसार कोंलि पाप पोंन्य यीरुॅ त्रावान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

६. भ्रमरन्धरस अनाहत नाद छुस बोज़ान
भावुॅ पम्पोश डाऽल्य सोज़ान छुस
रंगुॅनावि द्वादश ड़लुॅ मऽन्ज़ि न्येरान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

७. गिन्धन बाजन सूॅत्य गिन्दुॅनावान
यूगुॅबल पत छुस प्रारान हे
ग्वरुॅदीव मँज़बाग गाशि फऽत्य त्रावान

त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

८. निश छुम पानस तोति छुस नुॅ भावान
ग्वरुॅदीव छावान अलौकिक पोश
त्युहुन्दुय मुशुक छुम मन मुशिकावान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

९. मन छुय शिवालय कोंत ओर फेरान
राज्यरेंन्य रोज़ान अऽथ्य मँज़ छय
भावुॅ पम्पोश गछ़ तस शेरि लागान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

१०. सर्वुॅभू विषयन मँज़ छुम नुॅ रोज़ान
मन छुय दीवद्वार पूज़ान गछ़
ग्वरुॅदीव पूज़ायि मँज़ छुय समखान
त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

११. भास्क़र ग्वरुॅदीव गाश छुम त्रावान
गुपिथुॅय म्यें हावान ठोकुर कुठ
ठोकुर ग्वरुॅदीव पान छुम सन्यिदान

त्यलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

१२. यूगुॅ अंभ्याऽसी प्राण ह्योंर खारान
वातुॅनावान तिम योगिस्थान
पतुॅ छुम यूगियन सूॅत्य रास खेलान
तेंलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

१३. गाशिक्य् प्रंग छिस अंग गाऽशिरावान
वाँगुॅज्य वोर येंलि त्रावान छुम
पानुॅ शिव शम्भू पोश वर्षावान
तेंलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।

१४. **गरीबस** ग्वरुॅदीव कल्पुॅवृक्ष हावान
तमन्ना सम्साऽर्य सोरान छिस
राज़ि इसरार मा काँऽसि छुम भावान
तेंलि छुस सुमरान चोनुय नाव्
दारि बर त्रोंपुॅरिथ येंलि छुस सुमरान।।

* * *

लीला नं. ८४

१. चुॅ यिखना सोन ताल्युन म्योन फोंलिहे
अकी नज़रे म्यें यऽचुॅंकोल दोद बलिहे।

२. हतो जोगऽयो कसम छुय म्यानि लोलुक
मनुॅक्य पाप म्याऽन्य् तारुॅच्य् मव चुॅ तोलुख।

३. बुॅ अग छुस क्या करन मकुॅचय तुॅ तबुॅरय
हतो जोऽयो म्यें ज़ालुम पनुॅनि नारय।

४. दऽज़िथ नारस अन्दर बनुॅ तोति सूरुॅय
पेंयम योंद अख नज़र चाऽन्य बनुॅ बुॅ नूरुॅय।

५. म्यें वरकोंन अज़ुॅलसुॅय कर ताम गोमुत
बुॅ परुॅछ्योन अनिघऽटिस मँज़ छुस सोंत्योमुत।

६. सदाबन्द चाऽन्य आवाज़ राज़ि इरफान
च्यें छा परवाह नमान छुय थज़ुॅरुॅ असमान।

७. चुॅ छुख रूॅपीठ लगय ना लोलुॅ रूपस
गछय कोंरुॅबान चाऽनिस शिव स्वरूपस।
चुॅ आकाशस वछस मँज़ शोलुॅ मारान
ओंबुर प्राऽटिथ चुॅ सिंयुक रूप धारान।

८. दमा अख कड़ तुॅ फुरसथ बेह तुॅ सान्ये
बुॅ भावय बीनुॅ बीनय कर्मलान्ये।
दपय सम्साऽर्य लूकव क्या म्य कोंरुॅहम
अलाव गोंडुॅहम तुॅ ती ती पानुॅ वोंनुहम।

९. बुॅ आयस फटुॅनसुॅय वोंन्य भावुॅ कस बो
तवय ज़ोगऽयो चुॅ वोंन्य ठहराव कर तो।
अगर च़लुॅहम बुॅ ज़ालय त्यलि पनुन पान
बन्यम वाऽरान मन सोरूय म्यें शुमशान।

१०. हतो गोंरूॅदीव म्यान्ये जोंगिरायो
गंड़न मँज़ कमुॅखुर येंतिकर म्य द्रायो।
चुॅ कुलहम म्योन सोरुय च़्येय बुॅ अर्पण
बुॅ वुछिहथ वारूॅ जोग्यो बन म्यें दर्पण।

११. म्यें चाऽनी आश छम छुस ज़िन्दुॅ रूज़िथ
चुॅ नय यिख मा मरय यिय कथ बुॅ बूज़िथ।
छिना म्याऽन्य प्राण चान्ये जोलि मँज़ बन्द
बुॅ लरि लोंर रोज़ुॅहय च़्येय सूॅत्य अन्दुॅवन्द।

१२. मगर किथ अचुॅ म्यें वनतम जोलि मँज़ अथ
तवय दूरे करान छुस पोम्पुॅरुॅन्य गथ।
गऽमुॅच़ दथ जिगुॅरसुॅय फटुॅनस बुॅ आमुत
बन्धन फुटुॅरिथ चे़ं छ़ारुॅन्य पानुॅ द्रामुत।

१३. हय्डुन गेलुन म्य लूकन हुन्द कर्य्म क्या
चुॅ राऽज़ी रोज़तम त्यलि छुस शहनशाह।
गरीबा सऽदुॅरुॅ खोन्यि तल पान त्राऽविथ
शिहिज्य न्यन्दुॅरा करान खोंर वाहराऽविथ।।

* * *

कैंह वाख–८४ (क)

१. ग्वर छुय यारॅबल प्रारान
न्यथ प्रभातन खलि तारान
पनॅन्यन भऽखॅत्यन छु गोंडॅ गारान
गोंडॅ अनॅवारि तिमॅनॅय छु तारान।

२. अपारि द्वादश ड़लॅ मँज़ हे
गायत्री कोंण्डॅ कुय अमृत च्ये
अंगन अंगन हो फेरी श्रेह
अमृत दृष्टि नॅ तोलान वेंह।

३. द्वादश ड़लॅ नेर गाशस कुन
च़र्तुदश ड़ल छुय ब्रह्मा सुन्द
र्निवाण थम तथ विष्णू सुन्द
प्रकाश ज्ञानॅ थम शंकर सुन्द।

४. ग्वर यस छु पज़ि मनॅ आऽही करान
अन्दॅ वन्दॅ सुय दयि नाव सुमरान
मन शान्त सपॅदिथ ध्यान धारान
धारॅणायि मँज़ न्यरॅवान प्रावान।

५. ग्वरॅदीवस ताज पनुन ग्वरॅ महाराज
शाऽन्ती वनस मँज़ तऽमि सुन्द राज

६. शक्ती मोंख्ती भऽखुॅती तसुॅन्ज़
कऽरितन अन्दुॅ वन्दुॅ मेंय प्यठ राज।
मयखान चथ गछ़ खुमखानस
सरुॅखम कर तथ पयमानस
रगुॅ वन्दुॅ ना तस जान्यि जानस
नतुॅ बनिहे क्या म्यें गाऽर ज़ानस।

७. सत्वरुॅ सुयॅ शंकर कोंरूम ऐलान
कलि रोंस तऽस्य वन्दुॅ पनुॅन्यी प्राण
भऽखुॅती दिचुॅनम बोंड़ वरुॅदान
शिवुॅय म्यें बखुॅश्यम योगिस्थान

८. प्रयागुक दरशुन* वैलुॅ* प्रभात
गॅंगुतरी वोठ दिथ गंगुॅ बलवोत
तॅनुनाव तस मनुॅ सोऽर शिवनाथ
मनुॅ कंडु वुछ अमरनाथ

९. माऽलुॅं गरी बो वुछने द्राव
लथ दिथ वोरसस त्राजबल वाख
बॉंडु असना कथि नूरु मोत द्राव
नय त्रोववोश नय ~~[illegible]~~ सूज़ व्यराव
ज़ा वुय थारुॅबलपारान।

लीला नं. ८५

''ग्वरद्वारच सूक्षम परिभाषा''

येंति छु लोलस लोल पूज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे
येंति छु भगवान पानुॅ रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे।

१. येंति छि स्वर्गुॅचि हूरुॅ फेरान
गथ करान ग्वरुॅ पादुॅनुॅय
बर्गु कोसम र्वगुॅ न्येरान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे।
येंति छु भगवान पानुॅ रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे।

२. येंति छु रऽछुॅरिथ पान रोज़ान
येंति छु बोज़ान पानुॅ दय
मँगुॅनुॅ रोंस्तुॅय भोग सोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे।
येंति छु भगवान पानुॅ रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरुॅद्वार हे।

३. तारॅुचन विशवास तोलान
येंति छु शोलान कर्मुलोन
येंति फुटान सम्साऽरय ज़ोलान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

४. येंछि तुॅ पछि़ युस छु पान पुशरान
रोजि़ सुमराण ग्वर पनुन
परमॅु धामुक जाम चावान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

५. ग्वर यिमन यूगी छु आसान
तिम छि आसान भाग्यवान
मरनॅु भय तिमॅुनॅुय छु कासान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

६. येंति अपानस पान मेलान
येंति छु प्राणन म्युल गछ़ान
पानॅु गंगा येंति छि सगॅुवान

तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

७. त्रेशि हऽत्य यिम त्रेश छारान
पानॅु ग्वर चावान तिमन
मूक्ष सपॅुदान गथ छि प्रावान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

८. छुनॅु **गरीब** पान चूरि थावान
राज़ि दिल भावान ग्वरस
सॅूत्य सॅूत्य तस पोश छावान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।
येंति छु भगवान पानॅु रोज़ान
तऽथ्य दपान ग्वरॅुद्वार हे।

* * *

लीला नं. ८६

''सत्संगुक अमृतडल''

सतुॅसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय
पोम्पर बऽनिथ गऽय गथ करान
अर्पण गछ़ान जानानुॅसुॅय।

१. ब्यियि नाद मोंरली हुन्द दिवान
अज़ गूपियन कुस कल कड़ान
सोंय हूल्य लोलुॅच्य ब्यियि गिन्दान
कम रंग खसान असमानुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय।

२. ग्वरुॅद्वार ग्वरुॅ मंडुला बनान
आनन्द छु सर्वानन्द बनान
ब्यियि विगिन्य् वनुॅवुन छुम गछ़ान
अऽछ दरुॅ लगान दैवानुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय।

३. वुछ अर्धुरातन कम नचान
पतुॅ न्यथ प्रभातन रंग छ़टान
अछुॅ रछुॅ छि फिरि फिरि बेंयि वुछान
लोंत लोंत वनान दुरुॅदानुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय।

४. सतुॅसंग चि खोन्यि यक रंग खसान
कुलहम जहानस म्युल करान
अन्तःकरण अऽन्दुॅरी गरान
छिनुॅ केंह वनान बेगानुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय।

५. न्यरुॅगोंण सगोंण समता लबान
ग्वरुॅ गोंण करान असि पाऽरय ज़ान
सतुॅगोंण शरींरस मँज़ छि प्राण
तथ मँज़ वुछान नाराणुॅसुॅय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुॅसुॅय।

६. ग्वरुॅ दामनस यिम थफ करान
तपुॅ ऋष तुॅ साधक तिम बनान
यूगीश्वरन हुँज़ वथ लबान

पतुँ छिय रलान न्यरुँवानुँ सुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न र्सियि ताबान पानुँसुँय।

७. विश्वास सऽदुँरस तऽल्य अचान
लाले बदखशां जान्यि जान
तिम रिन्दुँ ज़िन्दुँ छिनुँ जाँह मरान
नोशा करान मयखानुँसुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न र्सियि ताबान पानुँसुँय।

८. ओंम ज़ीरुँ बम सतुँसंग चलान
हमसू अऽतुँर श्वासस रलान
रतुँछेंपि छि कम कम तथ लगान
छिव ना वुछान परुँवानुँसुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न र्सियि ताबान पानुँसुँय।

६. ग्वरुँ द्वार ग्वरुँ गंगा वसान
शंकर प्रसन्न चित अत्यि असान
शेशिकल छि नारस मँज़ वुहान
लाऽरिथ गछ़ान इरफानुँसुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न र्सियि ताबान पानुँसुँय।

१०. ग्वरुँदीव शेंऽश चेंय कुन वनान
छुख कोंनुँ पानस कुन लमान
कूरिथ पनुँन्य वस चेंय मलान
थलि थलि वुछान मस्तानुँसुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुँसुँय।

११. छुनुँ काँह **गरीबस** मँज़ अचान
या छुनुँ तऽमिस मँज़ काँह व्यपान
पानय छु पानस मँज़ श्रपान
ललुँवान ग्वरुँ दामानुँसुँय
सतसंग छु प्रेंयमुक रंग कड़ान
ज़न सिंयि ताबान पानुँसुँय।।

* * *

लीला नं. ८७

''यूगुँसदुँरुँच्य परम स्थिति''

चोर त्राऽविथ प्राण पूँछ़िम न्येरय्म त्यले
यल्यि विश्वास लगियम तूफानस मँज़।

१. पंच प्राण थोवुम रऽछुँरिथ सुले
नादुँ ब्यन्द किस आऽईनखानस मँज़।

२. पंच प्राणुँ स्य्न्ध्यि पम्पोशुँ ड़ल फ्वले
सु मुशक वुफे खुमखानस मँज़।

३. नरुक या स्वुर्ग त्यलि क्या म्यें करे
येंल्यि गुल फोंलन म्य शुमशानन मँज़।

४. अन्तःकरण पंच प्राणन रले
जाँह माँ च़ले सहरावन मँज।

५. आत्मा मां गव जाँह न्यन्दुँरे ज़ोंले
रूगी बले शशि–जहातस मँज़।

६. ओंम कुय सार पंच प्राणस भरे
छ़्यफ दिथ च़ले शुन्यखानस मँज़।

७. अथवास कऽरिथ पतुँ कुस फरे
पतुँ कुस वदे गोशिवारन मँज।

८. ***गरीब*** वस पनॅुन्य पंच प्राणस मले

पतॅु योंद च़ले छुनॅु केह परवाह।

९. अमर बने योंद ज़िन्दय मरे

दोरे च़ले बयाबानस मॅंज।

१०. ***गरीब*** दासॅुय दासॅु भावस रले

हंगॅु मंगॅु फ्वले लेंम्बि पम्पोश।

११. हमसू परान सूहम रटे

मोक्ष दाम रले न्यरॅुवानस मॅंज।

१२. ज्योत्यि आधार निराधार बने

पतॅु किथॅु नन्ये यिछ़ समता।

१३. कर्मुँ लाऽनिस पंच प्राण खसे

आत्मुँ देह रले भगवानस मॅंज।।

* * *

लीला नं. ८८

''दम फऽट्य फऽरियाद''

असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार
बेड़ि असि फुटराव बोज़ ज़ारुँपार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

१. जसुँदायि काऽछा पान मारान
थेंपि थेंपि चेंय कृष्णस छ़ारान
स्वर्दशन च़ऽकुँर वलुँ जल जल धार
बालुँ गूपाल अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

२. कलियोग वुछ छ़लुँ छ़लुँ मारान
साधुँकन तान्य वुछ दुँन्यिरावान
यूगियन ताम वऽछ़ येंति अऽश धार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

३. येंति वुछ कम कम कम्सास्वर
वोटुँ खोरि पाऽविन कम कलंदर
कुलहम सृष्टि गछ़ि मिस्मार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार।

असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

४. ज्ञान, ध्यान, साधना गऽय रावान
नरुॅकुॅक्य बर गऽयि यलुॅ त्रावान
मोसूम शुरिनुॅय रोव लोंकुॅचार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

५. यूगीश्वर वात जल जल योर
राखिसव येंति कोंर असि लयठुॅलोर
अकि अकि गालतख कालुॅ शाहमार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

६. सोंन्दर राधायि लछ़ि ड़ोलान
पाऽपियव त्राऽविहख नाऽल्य ज़ोलान
शान्तड़ल यारुॅबलुॅ दितुॅ जल तार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

७. काऽमी क्रूधी वासुॅनायि लाऽऽय
कलुॅ प्यठ असि वाल पापुॅन्य बाऽऽय
नतुॅ कर ज़गुॅतस वुन्य संहार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

८. नेहगटि कर चाख गाशि फऽत्य त्राव
नतुॅ कर प्रलुॅया असि मोंकुॅलाव
मटि छय पानस कुलहम खार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

९. नंगुॅ यिनुॅ द्रोंपदी ब्ययि करुॅनम
पतुॅ कुस बुथ दिख येंति वनतम
पतुॅ मा करनय च़्येय संघसार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

१०. वनुॅवाऽस्य असि गव ना आऽल्य नाश
रऽछुॅरिथ थऽव अख चाऽन्यी आश
यिनुॅ विश्वासस गछ़ि लुरुॅपार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

११. यितुॅ घरुॅ मन बन्यि गूकल सोन
अन्दुॅ वन्दुॅ पूशिन साया चोन
रासुॅ मंड़ोल त्यलि बन्यि घरुॅबार
बालुॅ गूपालुॅ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुॅच़ येंति च़लुॅ लार।

१२. सुय ब्ययि गिन्दुँहव प्रोणुय रास
दितुँ वोंन्य जल जल पनुँनुय बास
बन्सी नादुँ त्राव अमृत धार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

१३. च़ोंतुरबोज़ रूपस लगय वऽन्दि वऽन्दि
पान बस आलुँवय च़्येय अऽन्दि अऽन्दि
बन्द बाँधव चुँय म्योन गमखार
बालुँ गूपाल अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

१४. शिव चुँय वेंषणो चुँय ब्रह्मा
यूगियन मँज़ चुँय यूगीश्वरा
आनन्द वन फ्वलि म्योन ग्वरुँद्वार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

१५. कृष्णुँय साऽमियन हुन्द ति स्वाऽमी
कर्मयूगी अन्तरयाऽमी
चुँय दयासागर बखशनहार
बालुँ गूपालुँ अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमुँच़ येंति च़लुँ लार।

१६. चे़ंति मेंति पूशितन ग्वरॅु सुँन्ज़ सत्थ
पाद तऽस्य पूज़ान रूज़ितव न्यथ
यिकॅुवटॅु सारिनॅुय दियि असि तार
बालॅु गूपालॅु अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमॅुच़ येंति च़लॅु लार।

१७. **गरीबन** ग्वरॅुद्वारॅु मँज़ लोय नाद
दोंह रात पूज़ान ग्वरॅु सॅुन्दि पाद
शोलॅु मारान द्राव म्योन संसार
बालॅु गूपालॅु अज़ अवतार धार।
असि छय लऽजिमॅुच़ येंति च़लॅु लार।।

* * *

लीला नं. ८६

''यूगुॅ वनवुन''

शिवनाथ वरुॅनि आव सानि शिवाये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
प्रकाश त्रोवनस माजि ज़ालाये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग

१. गन्धर्व तुॅ यन्दराज़ आकाऽश्य आये
अछुॅ रछुॅ द्राये शिव लूक कुन
शिवनाथ थऽविज़्यस पनुॅनुय साये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरुॅनि आव सानि शिवाये।

२. दोंन म्युल कोरुॅनख कर्मलीखाये
यऽज़ुॅमन बाये छि सरस्वती क्या
अलौकिक् इसबन्द सों ज़ालान आये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरुॅनि आव सानि शिवाये।

३. ऋषिवारि कुन यिम सालर आये
ऋषिबाऽय प्रारान पोशि गोंन्ध्य ह्यथ
भावुॅपोश पिलुॅवनस छुख अभिप्राये

माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरॅुनि आव सानि शिवाये।

४. पोशि मदॅुनो मव पख छ़ायि छ़ाये
असॅुवॅुन्यि मोंखॅु फोंलॅुराव पम्पोश
आऽही सूज़नव माजि राऽज्ञिन्याये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरॅुनि आव सानि शिवाये।

५. ओंरज़ुव दोंरकोठ हुरिनव आये
यिनॅु हऽज्य ग्राये मारख ज़ांह
सोन छुख अऽछ गाश बेह थज़ि शाये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरॅुनि आव सानि शिवाये।

६. **गरीबुन** परिवार छुस भरान माये
वाँऽलिंज्य क्राऽनिस छि वनुनावान
सतॅुग्वरॅु वति वति थऽविनव साये
माजि शारिकाये त्रोवनस व्यूग
शिवनाथ वरॅुनि आव सानि शिवाये।

* * *

लीला नं. ६०

"अलौकिक लऽग्न"

महाराज़ शिवजी ह्यथ बरात आये
कर्मुॅलीखाये छु जय जयकार
ड़य्कुॅटिक प्रज़ुॅलान सान्यि ओंमाये
कर्मुॅलीखये छु जय जयकार
महाराज़ शिवजी ह्यथ "।

१. अलौकिक म्युल कोंरुख जयमालाये
फोंल्य बुबराये पोशि वन कूॅत्य
कर्मु ड़य्कुॅलाऽनिस धर्मुँ ज़ंग आये
कर्मुॅलीखाये छु जय जयकार
महाराज़ शिवजी ह्यथ "।

२. दीवी तुॅ दीवता आकाशऽय आये
गर्न्धव आये बाजि वायान
ग्वरॅुद्वार प्रारान पोशि पूज़ाये
कर्मुॅलीखये छु जय जयकार
महाराज़ शिवजी ह्यथ "।

३. शक्ती च्यें पूशिनय शिव सुन्द साये
आऽही करान छुव ग्वरॅु परिवार

अमृतुॅक्य चाऽन्य ज़ाऽल्य माजि शारिकाये

कर्मुलीखाये छु जय जयकार

महाराज़ शिवजी ह्यथ "।

४. सोंख तुॅ सम्पदा मोंग माजि राऽज्ञिनाये

ज़ालायि सूज़नव वुछ हुर आय

स्यदुॅ लक्षमी वुछ स्यदी ह्यथ आये

कर्मुलीखाये छु जय जयकार

महाराज़ शिवजी ह्यथ "।

५. **गरीबुन** परिवार लोलुॅ तय माये

शक्ति पाद चाये शिव आंगन

अलौकिक दिवुॅया लऽज्य जायि जाये

कर्मुलीखाये छु जय जयकार

महाराज़ शिवजी ह्यथ "।।

* * *

लीला नं. ६१

''यूगुँयात्रा''

वादुँ आदुँनुँक्य गऽयि लतनुँय तऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर
नागुँ जोयि ओंश द्राव वुछ टारि तऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

१. सम्चार वति प्यठ कोंह तुँ बाल आयम
सुँह तुँ शाल आयम बुथ बुछिन्ये
बोलुँवुन्य पोशनूल तिम ति गऽयि कऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुँ आदुँनुँक्य गऽयि लतनुँय तऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

२. वेंशिवुँ बऽठ्य द्रायिमा किनुँ सऽन्यगलिये
किनुँ गंगुँबऽल्य द्रायि नावने तन
शिव सागरस मा चायि तऽल्य तऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुँ आदुँनुँक्य गऽयि लतनुँय तऽलिये
पतुँ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

३. सर्वपाद ब्रह्मस्वरूप शांतड़ल रोज़ान
राश बोंड़ ललाटस गाश सोज़ान

अनाहद नादुॅ कोंडुॅ प्राण छऽलि छऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

४. शक्ति नाथ वुछ पकान शिव नाग–बऽलिये
शाशवत श्वास प्राण रठ चुॅ वरदान
विश्वास पम्पोश होशि ड़ल फोंलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

५. व्यदि छुय सोरूय अऽन्दुॅरिम तुॅ न्यऽबुॅरिम
चोंतुरदलुॅ सोंम्बुॅरिम भावुॅ हऽत्य पोश
दासुॅ भावुॅ हयख्ना मेंति अज़ मऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

६. दीशि पाठ वुछनय वनुॅ वाऽस्य वति द्रास
आभास प्रतिबिंब म्यें चोनुय छुम
नावि तार द्युतुॅथम कमि यारुॅबऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

७. वासुॅनायि चाख दिथ चुॅ पदुॅमाऽन्य द्रायख
चायख ग्वरुॅद्वार शोंमुरिथ पान
हमसु तार वाऽयिथ कमि यारुॅबऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

८. महर्त्रिष तुॅ साधक तीज़ुॅमालि छ़ारान
यूझी छि धारान यूगुॅबल ध्यान
शाह पता माँ द्युत तिमन सान्यि लऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।

६. फुलयिवन वुछ ***गरीब*** अलौकिक ड़ऽलिये
यिनुॅ रऽल्य रऽल्य चलियो पान
सम्सार छ़लुॅगोंर कऽऱ्य ह्योत मऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।
वादुॅ आदुॅनुॅक्य गऽयि लतनुॅय तऽलिये
पतुॅ छ़ऽलि छ़ऽलिये द्रायिहम कोर।।

* * *

लीला नं. ६२

"यूगुॅ वोंरुस"

फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस
उत्कृष्ठ थानस दिवुॅया लऽज्य
कलि हुॅन्ज़ कोंल रलि निष्काम प्राणस
घर गृहस्थानस दिवुॅया लऽज्य।

१. सम्पर्ण कुलहम विश्वास थानस
अभिमान पानस दुॅनुॅना लऽज्य
ताऽलियन गाटुॅजार ज़ोलनय दानस
दऽज़्य दऽज़्य पानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

२. रसुॅ रसुॅ हटि गुदोंम छुॅन चटिथ पानस
संरताजुॅ पानस मोंकुलि भ्रम फाऽस्य
लतुॅ मोंजि यिनुॅ गछ़ख लबि रोज़ पानस
न्यरलीफ़ पानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

३. ममतायि मोह त्राव चूरि गूरिय वानस
तति अभिमानस लत मोंड़ कर
राग छुय ज़ाग ह्यथ प्यठुॅ भ्रमथानस
गछ़ शिव थानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

४. सादुल सत वुछ आऽईनुंखानस
नादुॅ ब्यन्द थानस शिव प्रतिबिम्ब
शोलुंवुन शाहमोल वुछ दिप्तिमानस
परमुॅ नाराणस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

५. शीशि नाग सास ज़ेंवि पूज़ान इशानस
प्रकाश थानस परमुॅ पद ज़ाव
शाह सवारि वाऽराग्य परमस थानस
तति यूगुॅवानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

६. बम बम वुनि गछ़ान कऽलास थानस
शुन्यि गाश थानस प्रक्रम दिवान
आनन्द शांत ड़ल वस जल श्रानस
गछ़ न्यरूॅवानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

७. ग्वरुॅ द्वार च़ूरि बेंह स्मृणायि थानस
वाख स्यद पानस ब्रह्मरन्ध्र ज्यूत्य
शिव स्वरूप तीज़ फोंलि आनस आनस
यारि जानानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

८. साधनायि सम्भाव गुल फोंलन पानस
पतुॅ शुमशानस छु गछ्रुॅनुॅय कस
अऽगुॅनुॅ राज़ुॅ भावुॅ पोंश खारि असमानस
पानुॅ भगवानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।

९. वलुॅ **गरीब** शामुॅ छ़ायि रोगिच़ल पानस
मँज़ हमखानस बोल बोश कर
आत्मुॅरूप प्रज़ुॅल्यस दानस दानस
सत्‌गवरुॅ वानस दिवुॅया लऽज्य
फुतुॅ फुतुॅ जिगुॅरस दोंतुॅ दोंतुॅ पानस।।

* * *

लीला नं. ६३

''प्राणॅ श्रुक्यन शिव मंत्र''

ओ॑म भू पो॑रूम, सो॑म सो॑थ गो॑रुम
शम्भू वो॑रुम वरदानस मँज़
वैशाकॅ शुपि व्यथि गंड को॑रूम
शम्भू वो॑रुम वरदानस मंज़

१. श्रुक्य पे॑यि पथर ये॑लि सत्थ वो॑नुम
वेदान्त ओ॑मकार वन्यि को॑डुम
रतॅ दाऽव्य अपॅज़िस हो॑ट चो॑टुम
शम्भू वो॑रूम वरदानस मँज़।
ओ॑म भू पो॑रूम, सो॑म सो॑थ गो॑रुम।

२. न्यरॅभय बऽनिथ अभिमान रो॑टुम
त्रो॑पॅरिथ पनुन कुठ पतॅ दो॑गुम
पोवुम पथर गो॑रू छल को॑रूम
शम्भू. वो॑रूम वरदानस मँज़।
ओ॑म भू पो॑रूम, सो॑म सो॑थ गो॑रुम।

३. र्‌व छुम नॅ पानस मँज़ श्रपान
शिव शव छु प्राणस मँज़ व्यपान
मऽरि्य मऽरि्य ज़्यवुन अऽथ्य मँज़ वुछुम
शम्भू वो॑रूम वरदानस मँज़।
ओ॑म भू पो॑रूम, सो॑म सो॑थ गो॑रुम।

४. संगॅलाथ को॑छ शिठि ना ये॑ती
मुल मायि सरॅतलि सो॑न कती

वुफ़ुॅ किथुॅ म्यें पानस पर चोंटुम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़।
ओंम भू पोंरूम, सोंम सोंथ गोंरुम।

५. ग्वरुॅदीवुॅ तिछ़ शक्ती दितम
अपुॅज़िच्य फुटुॅज्य मूहिथ नितम
थपि थोंसि म्यें वोंदुॅरस क्या भोंरुम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़।
ओंम भू पोंरूम, सोंम सोंथ गोंरुम।

६. कुस भक्ति वत्सल आलुॅवीय
दिव्य चोंग सत्थ प्रज़ुॅलाविही
पऽजिरिथ थोंवुम लति तल रोंटुम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़।
ओंम भू पोंरूम, सोंम सोंथ गोंरुम।

७. **गरीब** दरबाग वऽछ़ फुलय
ज़न लऽज्य दुॅनन कोंत गऽयि डुलय
प्रलुॅया तवय खऽटिथुॅय थोंवुम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़।
ओंम भू पोंरूम, सोंम सोंथ गोंरुम।

८. ओंम भू पोंरूम, सोंम सोंथ गोंरूम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़
वैशाकुॅ शुपि व्यथि गंड़ कोंरूम
शम्भू वोंरूम वरदानस मँज़।।

* * *

लीला नं. ६४

'यूग्रीश्वर ग्वरुँदीवुँ सुँज़ पहचान'

त्रिकाल दर्शी त्रिवेणी ड्यकस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुँदीव नाव
साक्षी विश्वास छु भावुँ ड़लस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुँदीव नाव।

१. परमुँ चऽकुँरस प्रकरम दिमस
चऽकरीश्वरस ति युथ प्ययि गाह
यूगुँबलय डुण्गुँ दिथ तरस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुँदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

२. दर्दुँनयन सब्ज़ुँज़ार बवस
मुशकावस तत्यि योगिस्थान
समतालि अचस नमताल रटस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुँदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

३. सत–असथ विलय सर्म्पणस
वाख स्यदी असान अथ मँज़
काल नमान यूगीश्वरस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुँदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

४. नाभि अमृत सर्वदृश्य ड़लस
धर्म–खलस छु कर्म वरदान
अभिशाप नुॅ पोरान शाह खलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

५. ज्ञान–विज्ञान पादन मलस
शाह ज्यूत्य वुछस ललुॅ दय्दि पान
स्यदुॅ–माऽलिस दिमुॅ ताज कलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

६. पुशि सुँज़ पोशिमाल नाऽल्य शिवस
ज़पुॅ–माल् रऽटिथ् शिवमाल फिरस
अरकि गुलाब मन्यि वस मलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

७. इन्द्रे गुरिस चोबुक दिमस
शोंमरिथ बदन पारूद रटस
ज़ाऽल्य सेंदिज्यन ह्यन्दुॅवेंन्द बनस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

८. ज़खमुक सन्यर सागर नुॅ वन्यस
दुविधा च़ल्यस अद्धुयतस मँज़

प्रतिबिम्ब तम्युक वुछ यूगुॅबलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

९. नुन्दुॅबोन सत् ज़न तोसय कतस
ब्रह्मरन्ध्रस मँज़ पतुॅ चूरि थवस
सन्देह तुॅ वसवास हामुॅ चटस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

१०. प्रकृत गोंणन सोंन मोंखतुॅ जरस
कंऽड़िज़ाल चटस नवद्वारस मँज़
युवनुॅ सोंन्तुक ब्रेंड़ मुशक छकस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

११. शंग्रफ शफ़क गाह प्यव वछस
गटुॅपछस ति प्यव ज़ूनुॅ पछगाश
रासुॅ मंडुल बन्योव राज़ुॅबलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

१२. सम्साऽर्य बसान मायायि ड़लस
रागुॅबलस मँज़ मस्तुॅ बेहोश
बाहोश ज़ाग ह्यथ ग्वरुॅ ड़लस
म्यान्यिस बबस छु आत्मुॅदीव नाव।

त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

१३. दिवय अलौकिक नागॅबलस
अमृत ज़लस फोंल्य विरिकिम टूऱ्य
फालव मॅु तुंल वुन्यि वानॅबलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

१४. यूगॅु–मुकुट थोंव नॅु जूग्य कलस
तवय दिलस वुन्यि भखॅ्त्यन छ़ाय
शाहमाल्य रसॅु रसॅु पान छलस
म्याऽनिस बबस छु आत्मॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

१५. अर्धुरातस इन्द्रद्वार रटस
पतॅु प्रभातस हम़सु–द्वार खसस
पतॅु **गरीबॅुन्यि** यारॅबलय तरस
म्याऽनिस बबस छु आत्मॅदीव नाव।
त्रिकालदर्शी त्रिवेणी ड्यकस।

* * *

लीला नं. ६५

'नात्यऽरी''

प्राण त्याग करुँनस वुन्यि छुनुँ वारुँय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुँय बोज़
हमाऽम्य तुँ दमाऽम्य यि छु सरसारुँय
वुन्यि छु सोरूय उद्धारुँय बोज़।

१. शिव छुम शाशवत सृष्टि आधारुँय
प्राणायाम प्रणव धाऽरी कर
दशि चठ पानस लोंत गछि भारुँय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुँय बोज।
प्राण त्याग करुँनस वुन्यि छुनुँ वारुँय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुँय बोज।

२. वासुँदीव वास करि अंग चऽकुँरस तल
फेंरि छ़लुँ तऽल्य ग्रटुँ पकि रऽथ्य जल
साधनायि वान्ये तुलि पोंख्र्यन मल
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुँय बोज़।
प्राण त्याग करुँनस वुन्यि छुनुँ वारुँय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुँय बोज।

३. कोंन्धुँ छम ग्रकुँवुँन्य बानुँ छिम खामुँय
न्येरि पानय सोंन तय त्रामुँय

खास आसि कांछा बाकुॅय छि आमुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

४. कलुॅवाऽट वोंटुॅ तार कुस रिंदुॅ पकि अथ
कुस चीरुॅ विश्वासस करि थफ
सर्मपण गतुॅरेंन्य शमुॅहस पतुॅ गथ
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

५. मनुष्य रूप यूझियस न्यन्ध्यायि कंऽड्य वुछ
तन्यि गोस फुतुॅ फुतुॅ सम्सारन बुछं
पापुॅ छेंम्बि छेंम्बि भऽर्य भऽर्य थऽव कुंछ
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

६. यऽन्दुॅर तुल्य चाऽनिख न्यन्दुॅरि मँज़ बास्योम
ज़ाहरूक यि शीरुॅ वुछ रसुॅ रसुॅ चोम
ग्वरुॅ दिव्य दृष्टि ज़हर अमृत गोम
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय

वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

७. वरदान कोछि मँज़ अभिशाप ललवान
केंह छिम तोलान तुॅ केंह छि मोंलुॅवान
वऽज्य दगि आख छुस चूरि छलुॅनावान
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

८. नागुॅ बुबरि मांग छुम तुलकतुर फुटरान
सऽन्यिजि डऽल्य आरवल पान मारान
वावुॅ हाल्यि लोल छुम कुस शोलुॅनावान
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उ़द्धहारुॅय बोज।

९. नोंन यिनुॅ न्येरख **गरीबो** चूरि रोज़
यिनुॅ इरफान तारि वज़ि कांह सोज़
ज़मीन दूज़्य रुजिथ कन दिथ चुॅय बोज़
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज़।
प्राण त्याग करुॅनस वुन्यि छुनुॅ वारुॅय
वुन्यि छु सोरूय उद्धहारुॅय बोज।

* * *

लीला नं. ६६

''शुन्यि मँजुँशिवालय''

शुन्यि मँज़ शिवालय न्यराकार निरालय

साकार दिवालय करू पूज़ा

१. वोंथ पथ ति पानय उथ पाथ ति पानय

न्यरभय निधानय करू पूज़ा।

२. अनमोल लोल छुम शोलुँ मारानय

प्राण स्मराणय करू पूज़ा।

३. वश छुम टाक्यन पान शमानय

गछु शिव वानय करू पूज़ा।

४. साकारूँ रूपुँ शिव शंकर बनानय

शक्ती वरानय करू पूज़ा।

५. अवधारि वाऽतिथ कुस कस नमानय

अनुभव प्रमाणय करू पूज़ा।

६. सत्वर कोंड़लनी वाखदान पानय

प्रकाश वुज़ानय करू पूज़ा।

७. वोंदरस मँज़ छुनुँ ज़ाँह ति व्यापानय

प्रशान्त प्राणय करू पूज़ा।

९. नंग छनुॅ शिवसुॅय ज़ाँह ति यिवानय

अंग अंग प्रधानय करू पूज़ा।

१०. गाटुॅल्य तुॅ गोंणवान कम कम भ्रमानय

गछ़ यूगुॅवानय करू पूज़ा।

११. भाऽरव तुॅ सालिग्राम यिम गयि बहानय

न्येरू नन्यिवानय करू पूज़ा।

१२. खश दिथ अहमस अमृयथ वुज़ानय

अमर बनानय करू पूज़ा।

१३. गर्भस रऽछि रऽछि प्रलुॅया गछ़ानय

यूगुॅ वरदानय करू पूज़ा।

१४. दर्शनुॅ वर्षणुॅ भाव मुशकानय

सन्मोंख पानय करू पूज़ा।

गरीबुन सोंगात म्येलि शिव वानय

छ़ायि होंल पानय करू पूज़ा।।

* * *

लीला नं. ६७

''रुॅच़ ज़नुॅवान''

शिव छुख ज़ानान पानय पानय
अज़ ज़नुॅवानय बेंयि रुॅच़ आय
दग छम ज़खमन सोंय बुॅ ललुॅवानय
अज़ ज़नुॅवानय बेंयि रुॅच़ आय।

१. पाथलिस तल छुख चुॅ परमस थानय
मयान्यि जानानय किथुॅ यिमुॅ ओर
मऽत्य मऽत्य आयोस कमि अरमानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय

२. पाऽर्य पाऽर्य लगयो म्यान्यि मस्तानय
असुॅवुॅन्यि दहानय कर तुॅ अख कथ
कठकोंश यिनुॅ लग्यम पतुॅ मा हानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
• शिव छुख ज़ानान पानय पानय

३. आदुॅन्य यार छुम प्रंग पाऽरानय
कमि कमि बहानय न्येरान दूर
परमुॅ दीप प्रज़ुॅलिथ नेह छु ज़ालानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय

४. आवागमनस प्यठ छुम असानय .
तीर्थ मंड़लुॅ न्येरान भ्रम दिथ कोर

हम दम तुॅ भ्रम छुम, छुम नो पचानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय

५. मऽच़ ज़न बुॅ फलवा तस वनवानय
सु छु भ्रमथानय रोज़ानं बोज़
कस भावुॅ गुदरुन ज़्यूठ दास्तानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय

६. न्यत्रुॅ मंड़लुॅ त्रावान तीरुॅ कमानय
हता जानि जानय चुॅय म्याऽन्य प्राण
गगनुॅ वति द्राहम छ़ालुॅ मारानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय

७. **गरीबुन** कोशिखान च्योन तोशिखानय
स्मृणायि थानय बुॅ छ़ारान चुॅय
व्यसुॅरिथ पान छुम पतुॅ नऽशिरानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।
शिव छुख ज़ानान पानय पानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय
दग छम जखमन सोंय बुॅ ललवानय
अज़ ज़नवानय बेंयि रूॅच़ आय।।

* * *

लीला नं. ९८

'ग्वरुॅ आगम्न''

चूरि पाऽठ्य यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरदीव आव।

१. गगनुॅ मंड़लस मँज़ नाद ब्यन्द कऽड़िज़िहे
नेह घटि रऽटिज़िहे आत्म प्रकाश
यूग द्वार अछुॅ रछुॅ वनवान वुछिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरुॅदीव आव।
चूरि प़ाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे

२. आत्मज्ञान स्मृणायि निश थक कऽड़िज़िहे
समतायि वावस कऽरिज़िहे क्राव
ब्रह्म पदसुॅय प्यठ शक्ति पाद वुछिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरुॅदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंयं निश बिहिज़िहे

३. धर्मुॅ भूमि प्यठ कर्मु थल रुविज़िहे
ग्वरुॅ शब्दुॅ सुविज़िहे पनुनुॅय पान
नाभि नागरादुक सग अथ दीज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरुॅदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे

४. मूलाधारुॅ प्यठ शाह रग वुछिज़िहे
रोगि रोगि अऽचि़ज़िहे कोंण्ड़लनी मँज़

यूगॅुवान्यि गोंतॅु दिथ आसन रऽटिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरॅुदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे

५. प्रणॅुवॅु किस ड़लॅुसुँय भावॅु पोश वुछिज़िहे
दम दिथ रऽटिज़िहे समयुक लाल
प्रकाश दारि तऽल्य यूगबल चऽलिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरॅुदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे

६. तारबल वाऽतिथ शाह सवार वुछिज़िहे
नवद्वार वाऽतिज़िहे योगिस्थान
ग्वरॅुद्धार ग्वरॅुदीव शिव स्वरूप वुछिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरॅुदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे

७. ***गरीबो*** नोंमरिथ वरदान रऽटिज़िहे
खऽट्य खऽट्य रूज़िज़िहे ग्वर ब्यबि मँज़
ग्वरॅुदीवुन दास विज़ि विज़ि बऽनिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरॅुदीव आव।
चूरि पाऽठय यीज़िहे, मेंय निश बिहिज़िहे
लोंत लोंत वऽनिज़िहे ग्वरॅुदीव आव।

* * *

लीला नं. ६६

good

''कलियुग तुँ साधक''

१. दपान सोंनुँहाऽरयि पोशन रंग छु ड़ोंलुमुत
दपान मुश्कस छु कटुँकोंश पूरुँ लोंगमुत।

२. व्यचा़रुँचि मालि पन करताम छ्योंनुँमुत
दपान फोलादय जिगर ज़न शीनुँ गोंलुँमुत।

३. दपान गाटुँल्य ति वुन्यिक्यन पान मारान
अन्यन अऽछिनुँय अन्दर क्युथ गाश छारान।

४. मगर मस्तानुँ मोंत प्यठ गोशिवारस
प्रुँछान कऽन्य शेंछि् सुटाऽठिस लालुँज़ारस।

५. दपान वेदाऽन्ति ओंमकार कोंत छु गोमुत
दपान वेदन हुन्दुय रस तऽ्न्य छुचोमुत।

६. दपान अऽन्य दान्द कलियोंग येंति मत्योमुत
तवय अमृत कोंड़न मँज़ वछ शिठ्योमुत।

७. दपान विषधर तुँ शाहमार येंति मतेमुँत्य
दपान कलियोंग मनुष्य अहमन छिखेमुँत्य।

८. दपान खूँखार व्यतस्ता खून भऽरि भऽरि्य
वछस मँज़ लाशघर ज़िन्दय छि मऽरि मऽर्य।

९. जिगर पारस बुँ प्रुँछुँहा क्या प्रलय गव

शवस सूँत्य शिव यि किछ़ च़लुँलार दव दव।

१०. दपान यूझी छि डुंगुँ दिथ चूरि रोज़ान

छु सन्यिरस व्याप्त गन्यिरस चूरि रोज़ान।

११. अगर मोंर छुख येंती फोंर छुख शिवस सूँत्य

निराधारण तिमन आधार वुछ कूँत्य।

१२. दपान सम्भाव ललाटस पोश लागान

सुरूप यकसू दुयुत मा आसि ज़ागान।

१३. दपान स्यदिं तल अऽचि़थ पम्पोश खारान

मगर रोपोश मनकल नारुँ ज़ालान।

१४. मगर रफ़तार छु गुफ्तारस अन्दर बन्द

दपान गाशस तुँ शिनिहस रोवुमुत अन्द

१५. दपान वेंशिरा तुँ ज़ुँचुँ द्यद ब्ययि सों सोंखमाल

फिरान आऽस्य यूगुँबल ललि हुँन्ज़ कुन्यी माल

१६. दपान नन्दुँराम परमानन्द वनान यस

दपान खेंन्य ओस दिवान शिवसुँय पनुँन्य वस।

१७. दपान रोंपुँदय्‌द ज़गत माता छि पानय

रऽटिथ मन प्राण हमसू आस पानय।

१८. दपान ऋषिपीरुँनुँय येंलि नाद दियुतनय
दपान साऽरी तिंथ भटुँयार अऽन्यिनय

१६. शिवस शाहस छु संगम लल प्रमाणय
मगर शिव कुठ अऽचि़थ छुनुँ मन पचा़नय।

२०. खबर कोंत गऽयि कलंन्दर जूज्ञ तिम साध
मोंदुर लय मीठ आवाज़ लोलुँ हऽत्य नादं।

२१. वशिफ गोम पानुसुँय बऽल्य रन्दि कोंडुम पान
मगर ग्वरुँदीवनी आज्ञा बुँ पालान।

२२. अभय मंत्र छु शिवसुन्द ज़ीवुँनुँय दान
दुँयिथ अभिमान पतुँ व्यदि अदुँ कोंडुम पान।

२३. दपान गोंफि मँज़ ***गरीब*** वुछ लल बनावान
अमर अमृत छु शक्ती धार त्रावान।।

* * *

लीला नं. १००

अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये

आशायि चान्ये छस ना ज़ुवान

अज़लुॅ मिलवन साऽन्य यिथ नुॅ ज़ांह प्रान्ये

आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान

अलौकिक गोंसाने।

१. काऽत्या दकुॅ दोल दित्य संसारन
येंति महापारन ति वऽछ़ अऽशि धार
सोंखुॅ नाग दरुॅ लजि अऽछ कलि चान्ये
आशायि चान्ये छस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

२. मुचुॅरिथ वाँऽलिंज्य त्रोंपरिथ ति छुनुॅ कैंह
बेह म्यानि पारि मँज़ तुॅ जऽशिना कर
असुॅवुॅन्यि मोंखुॅ दितुॅ धारणा सान्ये
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

३. शक्ति तुॅ प्रकृती सृष्टी च़्यें मँज़ व्याप्त
अभिशापुॅ र्गभुॅ मँज़ च़्यें चूरि वरदान
स्वयं भू प्रकाशुॅ खंड़ नाभि मँज़ चान्ये
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

४. कस कामदीवस ति सूरमोंठ च्यें कऽरुॅथस
शिव स्वरूप अर्ध अंग थोवथस सॅूत्य
अभिमान खोंत तस दोंद चकि चान्ये
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

५. साद सऽनियाऽस्य कम तप ऋषि तॅु यूझी
भूत प्रीत जूझी तॅु कम जिगर पार
शुन्यि गाशि मिलॅुवन चाऽन्य कुस ज़ाने
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

६. मूलाधार तऽल्य श्वासॅु प्राण गोरुम
उत्कृष्ठथानॅु प्यठ खोरूम पान
अवलॅु सोंतॅु सग ध्युत चान्यि गंग वान्ये
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।

७. ज़ेठॅु जोशि गोशिवार कुस ***गरीब*** छोंडुथ
शिव नावि तोरुथ शांत सरॅु पान
मान अवमान निश गोंल दान्यि दान्ये
आशायि चान्ये छुस ना ज़ुवान।
अलौकिक गोंसाने म्यानि र्कमलान्ये।।

* * *

लीला नं. १०१

''जूगिस वुछिनुॅच दग''

जूग्यबाऽय जूग्य सोन कति चूरि थोंवथन
असि हय दऽज़ुॅमुॅच़ वस तान्य अऽड़िजन।

१. हमसू मालि पन शिव यन्द्रुॅ कऽतिज़्यन
गवहर छु ताबुॅवुन ह्रदुॅयि कुठि रऽछिज़्यन।

२. अर्धुरातन पतुॅ वुछिज़्यन प्रभातन
शिवलूकॅ फेरान षटुॅच़ऽक्रुॅ शिव ज़न।

३. भ्रम फाऽस्य दिच़ुॅमुॅच़ येंम्य संसारन
मायायि घन्यिरस मॅंज़ कोंत च़ुॅ लारन।

४. वोंन्दुॅ फुट बन्दुॅ बन्दुॅ रस गोम नीरीथ
रोगि रोगि जूज्ञ चोंल मव आव फीरीथ।

५. कमि वत्यि नीरीथ छेंफ दिथ बयूठुम
दीशुॅ त्याग कोंरुॅमस परदेस रूठुम।

६. शामुॅ पोंत छ़ायि मां ज़ून्यि द्राव गिन्दुॅने
तपुॅऋषिनुॅय सूॅत्य गिन्दुॅ भाषि करुॅन्ये।

७. सरताजुॅ ज़खुॅमन मा आव वुछिन्ये
भावुॅ पम्पोश म्याऽन्य वुछ लऽग्य दज़ुॅन्ये।

८. पाठ पूज़ा ध्यान वति वति धोरुम
सन्ताप तापुॅ पान वति वति गोरुम।

९. स्मृणायि आंगनस ति पान वोंथुॅरोवुम
सुषमणायि गर्भुॅ तऽल्य पान व्यऽपुॅरोवुम।

१०. मनसरुॅ भाव च़ोंग च़्येय आलुॅनोवुम
सतुॅर्कमुॅ मस खोस च़्येय क्युत थोवुम।

११. च़्यतुॅवोंतुॅरिस मँज़ भावुॅ ब्योल त्रोवुम
गगनुॅमंड़लुॅ नीरिथ शुन्यि गाशि प्रोवुम।

१२. पांचुँवय सऽन्य च़ूर लति तल थाऽविम
साधुॅनायि सादुॅ गंडुॅ अकि अकि पाऽविम।

१३. व्यथ मंऽद्य मंऽद्य ति छुनुॅ सत् च्योन न्येरान
व्यस्तार वऽट्य वऽट्य खऽट्य खऽट्य सु फेरान।

१४. कंऽड्य थरि अलुॅवोन्द रतुॅ दाऽव्य गव पान
पऽतिम्यन कर्मन हुॅन्ज़ छम म्ये कोंसुॅ हान।

१५. भ्रमुॅपादुॅ वरदान गंगुॅबल बुॅ छ़ारान
राधा बुॅ कृष्णस मऽत्य मऽत्य लारान।

१६. नेंहद्राव हाऽविन तुॅ रूॅप बदुॅलाऽविन
यूगुॅ मायायि हुॅज़ि न्यन्दुॅरि मँज़ साऽविन।

१७. मन बोंद कल छम वुछ अथुॅ मूरान
रागुॅ रोंस बोंम्बुरूॅ जूझ रोगि रोगि दूरान।

१८. उर्वशी आत्म रूप प्रतिबिम्ब त्रोवनस
अलौकिक गाशि मँऽज़्य लूकुॅपाल होवनस।

१९. वँगुॅ चोॅल पोशिनूल प्रभात समुॅयन

आहार गाऽलिथ ति व्यवहारस नुॅ छय्‌न।

२०. साऽरी त्राऽविथ रोटुॅमख बस चुॅय

भावुॅ भूमि सग दिम लोलुॅ फोॅलि शोकुॅ हिय।

२१. स्वय भावुॅ हिय पतुॅ लागुॅहय चरुॅनन

सहज़ कल्यि ध्यान दारि पांच़ प्राण ब्ययि मन।

२३. स्वय सहज़ अवस्था मेंति वुछिनावतम

शब्दुॅ भ्रम नादुॅ बयन्द शिव स्वरूप हावतम।

२३. सत् अपोर ताऽरिथ ज्ञान श्रोॅपुॅरावतम

मानुॅ दण्डुॅ अभिमान ज्ञानुॅ नारुॅ ज़ालतम।

२४. दुॅय दुॅनिराऽविथ शिव गथ हावतम

निष्कल मन ह्यथ समरस चावतम।

२५. दयलोन ग्वरुॅ सन्मोॅख थावतम

अन्दुॅ वन्दुॅ आनन्द श्रोॅपुॅरीथ थावतम।

२६. बानुॅकुठि बानुॅ फ़ुट्य ड़खुॅ कऽम्य कोॅडुॅनख

कर्मुखुर्‌य हंगुॅ मंगुॅ पान नंगुॅ कोॅरुनख।

२८. वलुॅ **गरीब** तहखानुॅ चूरि मऽट थऽविज़्यन

दोॅछ़ि दोॅछ़ि मोॅखतुॅ ब्योल सुलि सोॅन्तुॅ वऽविज़्यन

* * *

लीला नं. १०२

भावुँ समनबल

भावुँ समनबल लीला छि अलौकिक नावन तु निशाऽनियन हुँदिस गगनुँ मण्डलस प्यठ तु अनुँहारुँकेंन तारखमालन सूँत्य लोंय खोंय थवान। लल्लीश्वरी योंसुँ ज़न शेंव दर्शनुच सों अलौकिक र्सियि छें यम्युक प्रकाशसम्सारस क्या ब्रह्म–मंडल ति छटान रोज़ि! यिथय कन्य् डाक्टर विशाल, स्वामी परमानन्द, कृष्णुजू राज़दान, तीज़ुँमाल, सोंखुँमल तु ब्ययि वारुँयाह तिम साधक महर्षि, मुणीज़न तु तपुत्रृषि छि माऽजि कशीरि हन्दिस वछस प्यठ रम्भुँवुँन्य प्रकाशि फोंत्य। यिहुन्दतीज़ तुँ यूगुँ अभ्यास यह–लूकुँसुँय मंज़ अलौकिक सुगन्धी हुन्द गाशि आगुर छु!

यथ लीलायि मंज़ छि म्यें तिम अऽज़िक्यन भखुँत्यन, प्रेंमियन, साघकन तु श्रदायि हुँन्ध्यन तिमन माऽरिमुँन्दि यिवनुँ सम्साऽर्य भाऽवी स्यँद्ध पुरूषन, यूगीश्वरन हन्दि अनुँहार लभनुँ यिवान यिमन योंद दय सम्साऽर्य छ़ायि निशि रछयख यिम बनन माऽजि कऽशीरि हुँन्दि् शेव दुँशनुँक्य गाशि आगुँर्य रसुँ रसुँ यिन साधनायि हुँज़ि कोंन्धि मंज़ पयनुँ। यिथुँय छा पोंखतुँकार मोख्तुँ दोंछुँ छ्यकान! म्योंन सत्वर रूजिनख राऽज़्य तुँ अलौकिक आलोक दियिनख मीठय्!

लल्ली श्वरी रोंपुभ्वाऽन्य, परमानन्द, विशाल, कृष्णॅुजू, आफ्ताबजू, ऋषिपीर तॅु सालिग्राम हिव्य साधक तु यूगीष्वर गऽछ़ि ब्ययि यथ धरती प्यठ वथॅुन्य ताकि मोंह वाव हययि हे पथ तॅु समता, मानवता तॅु भक्ति प्रकाशिक्य सॅुदॅुर सगॅुवहन सान्यन दिलन तॅु विष्वासस तॅु शाँतीय हुरिहे आय तॅु पाय!

म्यें छि लल, रोंप, विशाल, कृष्णॅुजू राज़दान, सालिग्राम वागऽरॅु केवल कल्पनायि तॅु अनॅुहारॅु रंऽग्य इस्तिमाल कॅुरिमित्य! सतग्वर करिन यिमन अलौकिक सद्धऽरस मंज़ पनुन अपार अनुग्रह तॅु अनुकम्पा तॅु भावॅु समन बल प्रखटाऽविन यिहन्दिस अर्न्तगर्भस मंज़ प्रकाशुक अपार तु अच्छयोन व्यस्तार।

लेखक

* * *

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान
चान्यि विशावासुक छुम ना कसम
रोंपुध्यदिद कर्मॅुलोन धर्मॅु दीह प्रावान
चान्यि दीवदारूक छुम ना कसम
ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

१. कृष्णजू राज़दान वुन्यि छु डूरय शेरान
वुन्यि छुनॅु सगॅुदरॅु न्येरान पोन्य

साधुँनायि कोंलि छुनुँ कन्यि ह्योंर खारान

चान्यि साधुँभावुक छुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

२. ज्ञाऽनी विशालस केंह गंड़ छि बाकुँय

साकुँीय छु वॉकुीय तस नखुँ हे

श्रुक्य मुचुँराऽविथ पतुँ क्या छु बाकुँय

चान्यि गाशुँ लालुक छुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

३. सत्प्रंग ऋषिपीर वुछ गरुँनावान

अथ जरुँनावान विश्वास लाल

तहखानुँ रूज़िथ कथ दाऽन्यरावान

चान्यि सम्चारुक छुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

४. मोंत आफ़ताब छुम ज़ेठुँ जोश हावान

वुन्यि नज़रुँ रावान मायायि मँज़

पछ़ि हुँन्ज़ थफ छुनुँ तोति यलुँ त्रावान

चान्यि लोलुँ नारुक छुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

५. बेगम सालिग्राम पोश सोंम्बुॅरावान
मुशिकस छुनुॅ भ्रमुॅरावान पान
कुलहम पनुॅनुय पेशकश थावान
चान्यि एतिबारुक छुम ना कसम।
ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

६. ज़ुॅच़ दयद छि गोंफि मँज़ पान शोंमुॅरावान
गोंडुॅ च़ोंमुॅरावान वासना तुॅ भूग
वसवास रगि छय कलुॅ छ़य्नुॅरावान
चान्यि भ्रमुॅज्ञानुक छुम ना कसम।
ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

७. स्वरवुॅमाल छि मनुॅ हाकोल संऽदुॅरावान
ध्यानुॅ स्मृणायि हुँन्ज़ त्रावान ज्यूत्य
सम्सार छ़टुॅ छस वुन्यि व्यसुॅरावान
चान्यि प्रेमुॅभावुक छुम ना कसम।
ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

८. शाहस शिवस नखुॅ लल वनुनावान
भावस छु भावान अऽन्दुॅरिम अमार

स्यदुॅमोल छुनुॅ ज्ञान तति वुफ़नावान

चान्यि घाटुॅजारुक छुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।

६. गाशि तारकन मँज़ वुछ **गरीब** असमान

सतुॅऋष छि प्रज़लान ड़्यूकुॅ टिकुॅ ज़न

धर्मुॅ दाऽर रऽटिथुॅय़ पवनुॅ ड़लुॅ फेरान

चान्यि ग्वरुॅद्वारक दुम ना कसम।

ललि हुन्द परित्याग शम दम हावान।।

* * *

लीला नं. १०३

प्रकाशुॅ गुहुल-यूगुॅ प्रछ़

व्यष्टुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हावेम क्या
गर्भु आलव गंगाधरस गद्धा धरस म्यें हाव्यमक्या?

१. दरुॅ छु लोंगुमुत प्राणाधरस
विष्मबरस नुॅ अम्युक गम
वुछ़ छुय करान प्रमाधरस
गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?
विष्टुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

२. ज़ुॅतन छि पेमुॅच़ ब्रह्मासरस
अमा मरस बुॅ खोंरन तल
अऽन्य सुन्द आलव प्रकाशधरस
गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या
विष्टुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

३. विशाल न्यत्रन टंग लोंग बरस
क्रिच क्रिच करस खस्यस बोर
निष्कल कले सऽन्य चूर फरस
गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?
विष्टुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

४. अलाव गोंड्डुम सम्सार घरस

बरस तवय म्यें यलुॅ गव तोर

चोरा लोगुम खर गोम नरस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

५. त्रिकाल दरुॅ दिथ कालादरस

यमराज़ थरस बुथ छुनुॅ कैंहँ

अमर बऽनिथ पतुॅ कति मरस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

६. म्यें क्या करून खाऽरस तुॅ शरस

पनुॅनिस तुॅ गाऽरस म्यें करून क्या

समतायि अऽचि़थुॅय नचुना करस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

७. सरबन्द च़ऽटिथ सरखम करस

गाशस गरस शिव सुन्द लाल

अऽशि फ्ऱेय अन्तःकरणन जरस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

८. यड़ मां वोरय्म मँज़ माशरस

वोंशकल धरस शक नुं केंह

कोफुर अकुंले ज्योती छि धरस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

९. हीज दि पानो थऽज्य हुँदिस सरस

गरीब गुंगल कर्‌यस शुमशान

पतुं गछि रऽलिथ भस्माधरस

गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

विष्ठुर वुछुम विषाधरस गद्धाधरस म्यें हाव्यम क्या?

* * *

लीला नं. १०४

V. good

वोंन्यकल थवॅुन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी।
वोंन्य कल थवॅुन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी

१. दावा करान छि वाराह
पूज़ायि प्राण लागोस
विश्वास ब्रांदॅुसॅुय प्यठ
कति दरि यि सम्सारॅुय
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवॅुन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

२. वांगॅुजि वोर म्योनुय
कऽम्य अऽक्य सना ज़ोनुय
रम्बॅुवुन तॅु नुन्दॅुबोनुय
योर जिगर अमाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवॅुन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

३. संदेह छि छाय गाशस
वऽल्य वऽल्य छि नाल वुछितव
त्येलि पोंख्तुंकार वदन्ना
येंलि मोंख्तुं गछि वुजाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवुंन्य कमन हुंन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

४. कंह रिंदुं छि पान मारान
छेंपि चूरि खून हारान
अथुं छीय थोंकन ति धारान
लोसानं प्राऽरि प्राऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी।
वोंन्य कल थवुंन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

५. लुंयि किन्य अचान छु मोह वाव
ममता दपान छि वुजुंनाव
दोंगुंन्यार बस अऽती ज़ाव
गाटुंल्य बनान छि चाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवुंन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

६. शिव रूॅप आत्मा बन
कुलहम चॖॅ कर सम्पर्ण
शाहस शिवस छि मिलॖॅवन
वुछहन चॖॅ शाह सवाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवॖॅन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

७. सम्सार शोंगिथ छु शाहमार
छुय खोंश यिवुन यि सम्हार
ज़िसिसॖॅय अन्दर छु व्यवहार
होंतॖॅमुत मनुष्य चोंपाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवॖॅन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

८. कन्यि कन्यि कड्यख यि सम्सार
योदॖॅवय करन नॖॅ व्यवहार
कम कम गछ़ान छि लाचार
पतॖॅ गऽय बहान जाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी।
वोंन्य कल थवॖॅन्य कमन हुँन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

९. कर्मुॅच्य वदल छि गांगल
चटि कुस यिमन यि हाँऽकल
येंलि रोज़िह्यख सों पोंत कल
त्यलि म्येलि ताजधाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवुॅन्य कमन हुॅन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

१०. न्यरभय बऽनिथ चुॅ वुछ प्राण
रोज़ान अऽती छु इरुॅफान
अऽथ्य कोंड़लनी छि मोंलुॅवान
ललुॅवान राज़दाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवुॅन्य कमन हुॅन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

११. करतो **गरीब** असुना
वुछितो येंत्युक चुॅ जऽशिना
ज़्यव यिनुॅ तुली च़्यें फितना
दम करुॅ चुॅ दय्न गुज़ाऽरी
बायखतियार आऽसिथ बेयखतियार साऽरी
वोंन्य कल थवुॅन्य कमन हुॅन्ज़
लाचार येंति छि साऽरी।

* * *

लीला नं. १०५

LMP.

दयि लगॅुयो बेगम नावस
भक्ति भावस छाव हो आम
काऽर फुटॅुराव वरज़ॅुनिस वावस
भक्ति भावस छाव हो आम।

१. देह वाऽरॅुय शीरिथ थावस
वोंथुॅरावस् ददॅुक्य पोश
वछि तल कुय कोंग पिलॅुनावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगॅुयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

२. मनॅुसरॅुची गिल बोलॅुनावस
बोज़ॅुनावस सोज़ि हमसू
यूगॅुबल दिलि जिगरा हावस
भक्ति भावस छाव हो आम
दयि लगॅुयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

३. पंचनागस सॅूत्य पय थावस
शीशि नागस ह्यमुॅ वरदान
शुन्य खानय शिव वुज़नावस
भक्ति भावस छाव हो आम
दयि लगॅुयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

४. साद मुशताक शीतल स्वभावस
सर्व भावस फोंल्य कम बाग

नाऽगिन्यन अथि बुॅति वनुॅनावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुॅयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

५. ग्वरुॅ पाद बुॅति मन्यि मंज़ थावस
ललुॅनावस सुबुॅ तय शाम
सतुॅकर्मुच्य चून्यि जरुॅनावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुॅयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

६. दीवद्वारस सॅूत्य ग्वरुॅद्वारस
विशवपारस ग्वरुॅ नाव द्राव
ग्वरुॅ लगुॅयो सिर्यि प्रभावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुॅयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

७. लोंभ रूज़िथ यथ सम्सारस
येंल्यि नुॅ दारस तुॅ होरस क्या?
सीनुॅ कपुॅटिथ ब्रोंठुॅ कन्यि थावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुॅयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

८. नारूॅ बुज़्य गऽयि करताम हावस
त्यलि नुॅ दावस लगुॅनुय ज़ांह
मनुॅ बुलबुल हमसू पिचुॅनावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुॅयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

९. गतुँरेंन्यि हुँन्द्रि गथ करुँनावस
आलुँनावस ज़ुव तय जान
वादुँ वसुँलुक तति याद पावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुँयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

१०. शक्ति पातस मँज़ श्रपुँरावस
व्यपुँरावस सीरि इसरार
खून्यि जिगरा नोश करुँनावोस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुँयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

११. अज़ुँलुँ मिलुँवन म्यें तुँ तस यारस
हमसु द्वारस कम छि पूज़ान
तिम छि अपर्ण निष्काम भावस
भक्ति भावस छाव हो आम।
दयि लगुँयो बेगम नावस भक्ति भावस छाव हो आम।

१२. बुँति **गरीबुँन्य** डाऽल्य पिलुँनावस
तस नुँ हावस दियि ना केहँ
सतर्कमुक मस चावुँनावस
भक्तिभावस छाव हो आम।
दयि लगुँयो बेगम नावस।।

* * *

लीला नं. १०६

राज्ञा अस्तुति

तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय चे़ंय निश शरणागत
कामनायि दरवाज़ गोंडुॅ दिथ द्रासय
आसय चे़ंय निश शरणागत।

१. षटुदल पम्पोश ड़लुक राज़ुॅ आसय
कर्मु खुर्य ननुॅवाऽऱ्य दासुॅय द्रास
रासुॅ मंड़लुॅ मंज़ आभास रंग द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

२. दोंदरहामि सऽदुॅरुॅ तऽल्य करि म्य वतुरूॅवासय
भ्रमुॅ फासि घर गव नुॅ रासय सोन
ग्रकवुॅन्यि मंड़लुॅ मंज़ फ्रकुॅ होंत आसय
आसय चेंय निश शरणागत।
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

३. अष्टुॅचक्रुॅ मंज़ येंलि वुफवुन बुॅ द्रासय
डेंजि तऽल्य आसय प्रशांत प्राण
तति वुछुम अऽछ वऽटिथ चोन महारासय
आसय चेंय निश शरणागत।

तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

४. अमर कोंड़ वाँगुॅज्य रोंव्फ कुॅनिथ आसय
सोंन मोंख्तुॅ रटने आसय योर
वेशाक कोंडुॅ मंज़ गोंतुॅ दिथ द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

५. पुरूषार्थ मंड़लुॅ मँजुॅ शक्ति पाद खासय
पुरूषराम वनुॅवाऽस्य द्रासय बोज़
सीतायि कोंड कुय व्यलाप हय्थ आसय
आसय चेंय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

६. नागुॅबलुॅ च़ोंतुरूॅ च़ाकायि निश आसय
अमरज्यूत्य ब्रह्मरन्ध्रुॅ खासय बोज़
मानुॅ अवमान मस काऽसिथ आसय
आसय च़्येय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

७. यूगमंड़लुॅ वति योगिस्थान द्रासय
सर्वकद शुमशाद दासय चोन

कल्पॅवृक्ष डींशिथ नॅ ममता खासय
आसय च्येय निश शरणागत
तुलॅमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

८. न्यबॅरिम बर दिथ ग्रटॅबल चासय
तति समवासय छ़ल नॅ कांह हे
खारि हुँन्ज़ छ़लॅ गऽर लय छि श्वास भासय
आसय च़्येय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

९. ज़्येंष्ठा अष्टमी नागॅ शेंशि आसय
नाभि अमृत द्रासय ना पूर
विश्वास नालॅमति चोंल वसवासय
आसय च़्येय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

१०. वष्टॅमूर्तिस मँज़ कष्टॅ निंवासय
गुँगल कर ***गरीबो*** द्रासय तोर
राजॅरेंन्य राऽज्ञिन्यायि खोंर रटनि आसय
आसय चेंय निश शरणागत
तुलमुलि मन छुम वनवाऽस्य द्रासय
आसय च़्येय निश शरणागत।

* * *

V.I.M.P

लीला नं०. १०७

पान ओस पनुँनुय यिति छुम वोंज़ुमुय
आलुँनोवमुत छुम सतुँग्वरुँ सुँय
दऽदुँवन सब्ज़ार या फोंलितन हीय
आलनोंवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।

१. तारुँबल ताऽरितन या यीरूँ त्राऽवितन
या फाटुँनाऽवितन या बोंठ लाऽगितन
सादुँ बोन्यि शहजार पानय छाऽवितन
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।

२. सऩ्मोंख अऽन्दुँरिम पान मतुँ हाऽवितन
अनुग्रह प्रशाद सुति मतुँ मेंति ख्याऽवितन
युगुँ आसनस प्यठ मतुँ बेंहनाऽवितन
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।

३. सर्व प्रभातस नेंह गटि तुँ रातस
क्षणुँ क्षणुँ तुँ सातस सुय छुम सूँत्य
अन्तःकरणव नाद दिम प्रभातस
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँसुँय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुँग्वरुँ सुँय·

४. पदमॅु आसनस प्यठ लाल छिस जऽरि जऽरि
शिव आसनस प्यठ गऽरि गऽरि छि प्राण
विश्वास आसनस भक्ती छि भऽरि भऽरि
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।

५. परित्याग मनॅुकुय दारि तल चू़रे
तूरे छि वातान यूगी बोज़
प्रकाशि कोंडॅु वुछ चमकान दूरी
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।

६. छ़छ़ यिनॅु करॅुहम बोस मां रावीय
थावीय पतॅु कति भक्ति न्यधान
सऽन्य कथ गनिरॅुच्य मां नऽनिरावी
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।

७. दारॅुनायि केलास वति येंलि न्येरख
नवॅुद्वारॅु फेरख ब्रह्मरन्ध्र किन्य
गोंरूॅसॅुन्दि कलमय ड़्यकॅुलोन शेरख
आलनोवमुत छुम सतॅुग्वरॅुसॅुय।

पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुॅमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।

८. वीदमातायि रसुॅ रसुॅ न्येरख
गायत्री कोंडुॅ किन्य शेरख प्राण
विश्द्राख वत्यि मँज़ लोंति लोंति न्येरख
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।

९. कलुॅ नोंमराऽविथ बर मुच़रावख
ग्रटुॅबलुॅ त्रावख पापुॅन्य बाऽरि
मान अवमान अऽथ्य मँज़ व्यपुॅरावख
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।

१०. नंग छनुॅ जूगिस बूल्य प्रज़नावख
यूगुॅ सार थावख खऽटि खऽटि थऽन्य
गुरसस प्यठ यिनुॅ पान भ्रमुॅरावख
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।

११. वसवास भय छुनुॅ हेंल्यि हेंल्यि न्येरान
द्राति कोनुॅ चे़नान यि ज़ख्मी पान

विश्वास बागस कोनुॅ मुशकावान
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।

१२. राज़ि इसरार छुय **गरीब** फांऽफुॅलावान
छावान मन कुठि अलौकिक पोश
तहरवानुॅ गर्भस छुय चऽमुॅरावान
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।
पान ओस पननुय यिति छुम वोंजुमुय
आलनोवमुत छुम सतुॅग्वरुॅसुॅय।।

* * *

लीला नं०. १०८

''ग्वरुँ विरह-मिलन''

V ·1HP

व्यतरावुँ क्या ग्वरुँदीव द्राव
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुये
भऽखुँतीय बतस कर अन्यि म्यें छाव
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुँये।

१. यूगीशवरस पादन प्यमस
चरणामृत गलि गलि चमस
अशिवान्यि गोंड़ दिथ खोंर छलस
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुँये।

२. प्राऽटिथ जिगर ब्रोंह कन्यि थवस
रंग खूनुँ पनुँन्ये अथुँ रंगस
सोंय मांऽज़ पतुँ पादन मलस
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुँये।

३. राक्षुस म्यें कम्सास्वर फोंरूम
जिगरस म्यें तऽम्य फुतुँ फुतुँ कोंरूम
बेंयि तोति ग्वरुँ नावुँय सोंरूम
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुँये।

४. समतायि कऽम्य येंत्यि चाख ध्युत
कमर्स म्यें कऽम्य येंत्यि शाप ध्युत

ग्वरॅुदीवॅु चॅुय कऽरिज़्यम म्यें रूत
फीरिथ नॅु ब्ययि आव सोनॅुये।

५. दुशमन चोंपासे छिम पनॅुन्य
रतॅु दाऽव्य पानस कंऽड्य कडॅुन्य
तिम कंऽड्य म्यें छिम पतॅु वेंदि कडॅुन्य
फीरिथ नॅु ब्ययि आव सोनॅुये।

६. यूगी थवन प्रंगॅुसॅुय अन्दर
सोंदर बनावस त्युथ मंदर
असॅुवुन ग्वरू श्यामय सोंदर
फीरिथ नॅु ब्ययि आव सोनॅुये।

७. अन्तःकरण वऽदि वऽदि ग्यवन
गंगाधरस गछॅु ना शरण
गंगायि गोंडॅु प्यमॅु ना परन
फीरिथ नॅु ब्ययि आव सोनॅुये।

८. सोंय माऽज्य गंगा दिय म्यें श्रेह
दरियाव ओंश करि क्या म्यें वेंह
शिवनाथ दप्यम ज़ाहरॅुय चॅु चें
फीरिथ नॅु ब्ययि आव सोनॅुये।

९. ज़ाहरस बनाव्यम अमृतॅुय
अन्दॅु वन्द तसॅुन्ज़ थाव्यम सथॅुय

ज़न ग्रायि मारान वसि व्यथुॅय
फीरिथ नुॅ ब्ययि आव सोनुॅये।

१०. विशवास वाऽणी राऽछ कर
गोंरूदीवुॅ गटि मँज़ गाश कर
नारस अन्दर अबला पथुॅर
फीरिथ नुॅ ब्ययि आव सोनुॅये।

११. प्रकाश मंड़लस ज्ञानुॅ थम
यकलय वज़ान साज़ुक छु बम
सरखम रऽटिथ कर शम तुॅ दम
फीरिथ नुॅ ब्ययि आव सोनुॅये।

१२. ग्वरुॅदीवुॅ म्योन परमात्मा
तऽस्य मंज़ बसान म्योन आत्मा
सन्मोंख म्यें सुबुॅ शाम सुय छुना
फीरिथ नुॅ ब्ययि आव सोनुॅये।

१३. कथ नारुॅ तोंदुॅरस त्राऽवुॅहस
मायायि रज़ि सूॅत्य पाऽवुॅहस
बेड़्यन अन्दर बन्द थाऽवुॅहस
फीरिथ नुॅ ब्ययि आव सोनुॅये।

१४. फुटराव तम यिम बेड़ि जल
कंम्सास्वरस कर यूगुॅ छ़ल

ग्वरुँदीवुँ यूझी छुख प्रबल
फीरिथ नुँ ब्ययि आव सोनुँये।

१५. अवतार दाऽरिथ वात सोन
त्यलि काचुँ ज़ून्ये चलि म्यें ग्रोन
छुख म्योन अलोकिक र्कमुँ लोन
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुये।

१६. समतायि बोन्ये तल वुछुम
शाह चव रगव मंऽज़ि पय कोंडुम
दोंछि दोंछि म्यें तस मोंख्तय छोंकुम
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुँये।

१७. पोंत छाय येंलि चाऽन्यी प्यवान
छय हूरूँ दऽरिगंऽड़ि गंऽड़ि यिवान
वनवान च्येय पादन प्यवान
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुँये।

१८. चाऽन्यी बुँ गीता छस परान
मऽरि मऽरि ति छस ब्ययि ज़िन्दुँ गछ़ान
भजनन अन्दर सन्मोंख यिवान
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुँये।

१९. अऽगुँनी परीक्षा क्या कर्यम
वछि किस कुठिस त्यलि कुस फर्यम

ग्वरुॅद्वीवुॅ येंलि राऽछा कर्यम
फीरिथ सु बेंयि आव सोनुॅये।

२०. कर्मुॅच्य कुडुॅर वथ करि म्यें क्या
नऽन्य पाऽठ्य येंलि बन्यि ग्वरुॅ कृपा
हृदयस येंलि बन्यि शाऽन्ती वना
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुॅये।

२१. ब्रह्मरन्ध्र मँज़ ज्योती खसान
अमृत कोंड़स प्यठ वुछ दज़ान
अर्पण **गरीब** तऽश्य प्यठ गछ़ान
फीरिथ सु ब्ययि आव सोनुॅये।।

* * *

V. LMP

लीला नं०. १०६

''चूरि पाऽठ्य शेंछ वऽनिज़्यम
कति छुरव रोज़ान हे
कति छुख रोज़ान हे
अऽन्दुॅरिम म्याऽन्यी कथ
कति छुख बोज़ान हे।

१. वांऽलिंजि क्राऽन्यिस मँज़
दितिमय काऽत्या वऽन्य
गऽन्य छम माया हे
कति छुख रोज़ान हे।

२. पलुॅवन चाख दिथ बो
पोंत बाल न्येरय हे
बालव तुॅ संगुॅरव तऽल्य
मा छुख फेरान हे।

३. कर्मुॅ गंड़ छ़्यनुॅरावतम
मतुॅ येंत्यि मन्दुॅछावतम
सुमरना प्रावनावतम दितुॅ वरदाना हे।

४. पंजि कोंश वंजि मा द्राव
लंजि लंजि फ़्यूर तथ वाव
ज़न लोंग पाऽनिस दाव
कोंनुॅ छुख बोज़ान हे।

५. वाऽराग पानस छुम
रागा चोनुय हे

अवशानस मँज़ छुम
बोंड़ अथ त्यागा हे।

६. दोंसुॅ यऽन्दुॅरन तल छुम
दऽबिथुॅय पाना हे
वसखस बऽल्य छम हे
नतुॅ शुमशाना हे।

७. वटुॅखूर दिचुॅनम कऽम्य
फीरिथ नुॅ वोंनुॅनम तऽम्य
कटुॅ सुन्द फ्रटुॅतम हे
स्वय दग ललुॅवान हे।

८. हंगुॅ न्यन्दुॅरे नंगुॅ गोस
अथ चोनुय छुम कोस
फटुॅनस आमुत बोस
लोंचुॅरावखना हे।

९. शिव पादस मँज़ छुस
शीशुॅ नागस वन्यि कुस
पानुॅ कड़ान छुख मुस
म्येय दुन्यिरावान हे।

१०. नेज़ुॅ पेंत्य जिगरस लाऽर्‌य
चाऽरि चाऽरि तोति छुख टाऽरि
कऽम्य रऽट म्याऽन्य अति वाऽर्‌य
अफसूस ख्यावान हे

११. गंगॅुबलॅु आख नीरिथ
डुंगॅु दिथ गोख फीरिथ
येंति पान छस बॅु पाऽरिथ
क्याज़ि तरसावान हे।

१२. ओंम भूः भवः स्वः छुम
ज्ञानॅु कोंड़ अमृत दिम
नतॅु प्राणॅुय म्याऽन्य निम
कोनॅु मोंकॅुलावान हे।

१३. कुंड़लनी शख्ति यूगस
लोर छुख नॅु कुन्यि भूगस
न्यरमायि न्यरभूगस
क्याज़ि छुख मोंलॅुनावान हे।

१४. व्यतस्ता चॅ़ाऽग्य ज़ालान
यूगियस आलनावान
सऽदॅुरॅु दारि चावॅुनावान
जाम पिलनावान हे।

१५. ***गरीब*** रोपोश सम्भाव
भऽखॅुत्यन चॅ़ुय भाऽगॅुराव
टाऽठिस भऽखॅुतिस थव
चॅ़ूरि वरॅुदाना हे।।

* * *

लीला नं. ११०

अढ़गऽरि जन्जालन पामाल कोंरनस।
मूरचुॅ गरिस निश आयोस भो।।
ट्यदुॅव्यनुॅ नूनस मंज़ बाग दोगुॅहस।
वोंगुॅकिन्यि वुछहस ज़न वसान शीन।।
मलमल्यि दस्तार गोंडुॅ गोंडुॅ गोन्डुॅहस।
पतुॅ चंड दिचुॅहस डोलस बोज़।।
नाऽग्यन्यि रूपस र्सपुॅत्राय वुछुॅहस।
शीशिनाग थोंवहस वति वति राऽछ।।
राजुॅबल यमराजुॅ हावुन थोंवुहस।
वति वति वऽविहस मीचऽरि कंऽन्डि
भक्ति सदुॅरस पाँ गँड कोंरुहस।
पाँ मलऽर थवुॅहस समनायि तल।।
कृष्णु भगवानस राधा खऽटुॅहस।
रछ्छुॅ नाव कडिहस नन्दअ गाम तान्य।।
यूगीराजस सृष्टि र्कताहस।
थविहस ललऽवन्यि नुॅन्य नुॅन्य पामुॅ।।
संसार खलुॅ मंजुॅ दाँ मोठ न दिचुॅहस।
दोपहस कृष्ण भगवान छु बेछान।।
नन्दुॅ गाम कृष्णस गामुॅ गंड़ कोंरुॅहस।
होहराय वच्छ़ बोज़ र्स्वगस तान्य
तस भगवानस लच्छुल पतुॅ गोंडुॅहस।

नोंव तुॅ प्रोण मोंडुॅहस वति वति बोज़।।
गोंगुला कऽरिथुॅय थऽज्यवान नोवहस।
यूगीश्वरस छा तम्युक परवाय।।
गरीबस दामानुॅ वति वति छोलुॅहस।
पनन्यव तुॅ परुॅध्यव कोंरूख बदनाम।।
अन्दर नाभि मंज़ शयाम रंग वुच्छुॅहस।
हमसू शिव शख्ती हुन्द प्रमाण।।

* * *

लीला नं०. १११

''स्वयंभू आलोक''

जानानुॅ पकव प्रकाश वतन

येंत्यन नुॅ सम्खन ब्येयि छु काँह।।

येंत्यन छु दयसुन्द अनुग्रह गच्छ़न।

येंत्यन न परय प्यवन छु कांह।।

येंत्यन छि शख तय वस्वास गलन।

येंत्यन छि फोंलन अकाऽल्य पोश।।

येंत्यन प्रतिबिम्ब दिलन छु प्यवन।

येंत्यन न छ़्य्वन छि गोरु सुँज़ आश।।

येंत्यन छि दयगथ मंज़बाग नच़न।

येंत्यन न अच़न छि मदुॅहऽसि च़ूर।।

येंत्यन छि बुबुॅरायि अमृत वुज़न।

येंत्यन छु प्रकट स्वपुन नुॅ केंह।।

येंत्यन छु शेहजार प्यवान दिलन।।

येंत्यन छि क्य्‌ेम ताम बोलान ॐ।

येंत्यन न वुबॉऽलि समय छु रलन।।

येंत्यन न ममता फरन छि केंह।।

येंत्यन छि विश्वासस राज दिवन।

येंत्यन छि मुख्तीय ति गंडान गुल्य।।

येंत्यन छि इन्द्रे सोंत्य सोंत्य प्यवन।

येंत्यन न ख्यवन काँह ति अरमान।।

दश मुचुरऽविथ मन वश करन।

येंत्यन छु पदन ति वुज़न सोज़।।

येंत्यन छि योगी मस्तानॅु असन।

येंत्यन छु बसन अमृत कोंड।।

येंत्यन छु **गरीब** पानय नच़न।

अच़न छु पानय पानस मंज़।।

* * *

लीला नं. ११२

वथ छम कुडुॅर माऽज्य थफ च़ुॅ करतम
पनुॅन्यन शथुॅरन निश म्यें रछितम
सत्वरुॅ वति वति परदुॅ करतम
पनुॅन्यन शथुॅरन निश म्यें रछितम।

१. ग्वरुॅद्वारुॅ मंज़ छुस लायान नाद
राज्यरेंन्य माऽज्य बोज़ लोलुॅ फरियाद
सतुॅमार्गस मंज़ गाश अनुॅतम
पनुन्यन शथुॅरन निश म्ये रछितम।

२. सम्सार मोह ज़ाल त्रावान छिम
धर्मुॅचि वति निश ड़ालान छिम
बंधुॅनन हुँन्ज़ बेड़ि फुटरावतम
पनुॅन्यन शथुॅरन निश म्ये रछितम।

३. नादान सम्साऽर्य मायायि लाऽरि्
अहमन चाऽरि् चाऽरि् थऽविनख टाऽरि
वाहनाक वनुॅ मंज़ुॅ जल म्यें कडुॅतम
पनुॅन्यन शथुॅरन निश म्ये रछितम।

४. जिगुॅरस फुतुॅ फुतुॅ कोंरहम ना
तीय तीय मॉुऽज्य यैंति वोंनहमना
ग्वरुॅनावि करुॅनोव च़ुॅय म्यें बनतम
पनुॅन्यन शथुॅरन निश म्यें रछितम।

५. ग्वरॅु सॅुन्ज़ सत्वर च़ुय छख माऽज़्य
वति वति येंति तति रोज़तम राऽज़्य
योगीश्वरी चेंय निश बॅु सरॅुखम
पनॅुन्यन शथॅुरन निश म्यें रछितम।

६. शक्ती हुन्द प्रसाद दितॅु वोंन्य जल
न्यरॅुभय बऽनिथ पतॅु कुस करि छ़ल
न्यरूॅमल बऽनिथ पतॅु च़ॅुय म्यें वरतम
पनॅुन्यन शथॅुरन निश म्यें रछितम।

७. ग्वरॅुदीव यूगीश्वरस वन्दॅु पान
अथॅु रऽट्य रऽट्य करॅुनोवनस ज़ान
च़ॅुति माऽज़्य नखि ड़खि येंति रोज़तम
पनॅुन्यन शथॅुरन निश म्यें रछितम।

८. पम्पोशन मंज़ छु च्योन आसन
भऽखॅुत्यन तॅु दासन व्याऽज़ कासन
सन्ताप तापस साथि बनतम
पनॅुन्यन शथॅुरन निश म्यें रछितम।

९. रागॅु रोंस वाऽराग वति द्रामुत
पाद चाऽन्य मन्यि मंज़ रटॅुन्यि आमुत
च़ालि च़ालि ओंश वसान माऽज़्य वुछितम
पनॅुन्यन शथॅुरन निश म्यें रछितम।

१०. छलॅुगोंर संसार करि नॅु याऽरी
अऽशि ददॅुरायि म्याऽन्य बोज़ ज़ाऽरी

अभिज़्यथ गऽछ़ितन चुय म्यें वरुँतम
पनुँन्यन शथुँरन निश म्यें रछितम।

११. **गरीबन** ग्वरुँद्वारुँ वुछ माता
शख्ती–शिवा सोंय माऽज्य शारिका
शिव शख्ती हृदयस मंज़ म्यें छम
पनुँन्यन शथुँरन निश म्यें रछितम।।

* * *

कैंह वाख ११३

१. विश्वास करख ग्वरस नमख
ब्येंबि अन्दुॅरुॅय गाशि लाला लबख
क्रेछर चलि मेच्छर लबख
गरीबुॅन्य योंद लोलुॅ गीता परख।

२. दर्शुन छुय दुर्लभ येंलि नुॅ सनख
हमसू ग्वरुॅ पादन तल नुॅ वनख
लाऽरिथ ग्वरुॅ पादन श्वास रटख
अऽछ वऽटिथुॅय गाशुक राश रटख।

३. सम्साऽर्य बऽनिथ कामस किथुॅ कऽन्य
वनतम कमि छलुॅ लुरूॅ पार करख
ग्वरुॅदीवस येंलि च़ुॅय पाद रटख
सुय दाम दियी कामस त्रावख।

४. ब्रह्मरन्ध्रुक गाश प्येंयी दरमन
बुबरायि फोंलन वुछ पोंशि चमन
यूगुॅबलन जानानुॅ रटन
मन बुलबुल वुछ बेवायि पिचन।

५. वलुॅ दूर च़लव आकाऽश्य वुफव
ग्वरुॅद्वारस मंज़ दीदार करव
तति हाल दिलुक इज़हार करव
तति मदुॅनस अऽन्दि अऽन्दि पोश छकव।

६. ग्वरुॅदीव बुॅ छुस ना च़्येय सरुॅरवम
चुॅय अन्तःकरणन मंज़ ब्येंहतम
खम त्राऽविथ हमसू परुॅनावतम
रतुॅछेंपि लगुॅहय बस जल वरुॅतम।

७. मोंखती न्यरवान म्यें छुनुॅ हाजथ
बस अन्दुॅ वन्द पूशिन चाऽन्यी सथ
विशवासस अऽन्दि अऽन्दि बुॅति कर गथ
ज़न न्येरि ग्रज़ान वुछ लोलुॅच्य व्यथ।

८. प्रणुॅवस मंज़ धनुॅवुच्य राथ गऽयम
हापथ नारस मंज़ चूर पेंयम
मछ़ि माज़ुॅच्य वस बेवायि खेंयम
मंज़ मागस हारुॅच्य क्राय पेंयम।

९. गोंरूॅदीवन दोंह अकि लथ कऽडुॅनम
सोंपुॅनुॅच्यि खोंन्यि मंज जागृत अऽनिनम
वसुॅवासुॅच्य रग जल जल च़ऽटुॅनम
विशवासुॅच्यि रज़ि पत थफ रऽटुॅनम।

१०. घरि बिहिथुॅय होवुन स्वर्गुक द्वार
गोंरूॅदीव नमस्कार बारम्बार
ह्यचुॅथम ना मटि वुछ कोंसुॅ खुर्य खार
तुलनारस मंज़ बाग खोंत गुलज़ार।

११. वलुॅ न्येरव दोंनुॅवय यारुॅबऽली
गोंर नालुॅ रऽटिय वसुॅवास च़ली

येंछि पछ़ि तेंल्यि लोलस पोश फोंली
अऽतुरा लोलुच्य हेंरि बोंनॅु च़्यें मली

१२. मस्तानॅु **गरीबस** क्या परवाह
बेगानॅु तऽमिस मंज़ ज़ांह रलि मा
जानानॅु पनुन वरदान छुना
वछ़ि वाँऽलिज्य तऽस्य सूँत्य रास गिन्दिना।

१३. यूगी छुय पनुनॅुय पान हुमान
श्वासॅुच्यि गेंजि मंज़ छुय राज़ गंड़ान
पोंट जन छुय पनुनॅुय पान मंड़ान
गोंरूॅ पादन प्राण तय ध्यान वन्दान।।

* * *

लीला नं. ११४

मस्तानो सुनो तुम अल्हड़ हो
मृगतृष्णा को पानी न कहो
नाभी में है अमृत तेरा
पीते जाओ तुम बेगानो।

गुरू द्वार खड़े हैं तेरे देख
योगी बनकर तू पहचानो
अमृत की धारा को देखो
विश अजधा को तू ही मारो।

मस्तानो सुनो तुम अल्हड़ हो

गुरू आसन पर तो बैठे हैं
धीरे बोलो धीरे सुन लो
मानव कुंड में मानव भी नहीं
देव रूपी देवता भी नहीं;

वह ईशवर है परमेश्वर है
तुम उसकी बातों को घोलो
उसका बन्धन तो शिष्य से है
इस नाते को जल्दी जोड़ो।

मस्तानो सुनो तुम अल्हड़ हो

आकाश में वह इक तारा है
प्रकाश का इक गहवारा है
माया से तू अब मुख मोड़ो
गुरूदेव से तू नाता जोड़ो।

वह कण कण में हर बन में है
जीवन की धारा के संग है
अपना रंग उस रंग में घोलो
गुरूदेव से तू नाता जोड़ो।
मस्तानो सुनो तुम अल्हड़ हो

वह योगी है महायोगी है
भोगी होकर र्निभोगी है
जल को अन्दर से भरता है
इन्द्रिय का मल वह छलता है
डूमर ड़म ड़म भी करता है
एकान्त में बस वह रहता है
गरीब उसकी गंगा में
पानी बनकर तो बहता है।

संसार के सुख से मुख मोड़ो
गुरूदेव से तू नाता जोड़ो
मस्तानो सुनो तुम अल्हड़ हो।।

* * *

लीला नं. ११५

१. प्रभातुॅचि ज़ुॅचि मंज़ प्रमाद मऽशिरोवुम
सम्सार त्रोवुम तुॅ प्रोवुम थान
गर्भुॅचि कौंछि मंज़ ग्वर ललुॅनोवुम
यूगुॅबल प्रोवुम परमय थान

२. प्राणस वानुॅबलुॅ बर मुचुॅरोवुम
गंडुॅ रोस थोवुम सन्मोंख पान
वीदुॅ मातायि निश वीद परुॅनोवुम
ग्वर नाव प्रोवुम धॅमरस्थान।

३. ग्वरुॅ सुॅन्ज़ि लेंतुॅरे कलुॅ येंल्यि दोरूम
कलय चोॅटुॅनम तुॅ शूरनम पान
शीरिथ तऽथ्य मंज़ गोंरूॅ वाख थोवुम
भोवुम नुॅ कांऽसे शुन्य कुय थान।

४. शुमशान दऽज़िथुॅय सूर सोंम्बुॅरोवुम
पंच प्राण थोवुम अऽथ्य सूॅत्य शांद
अंदुॅ वंद पान प्रकरम करुॅनोवुम
सन्मोंख प्रोंवुम परुॅमय थान।

५. वुन्यि वुन्यि श्रोंपुॅरिथ नाफि मंज़ धोरूम
गोंडुॅ छलुॅनोवुम अऽन्दरिम पान
छल भूतेषस मल येंल्यि कोसुम
गरीब करनोवुम मन सरुॅ दान।

६. मन यारॅबल येंल्यि गोंतुॅ कडुॅनोवुम
अदुॅ वुज़ुॅनोवुम पंच प्रधान
बेकुॅलस निश येंल्यि पान खटुॅनोवुम
आऽकलस चे़नुॅवन तऽम्य लोंब थान।।

* * *

लीला नं०. ११६

१. श्वाड़सथानस षठुँदल द्रायस
छ़ारान बस शिव नाव
ग्वरुँदीव लगुँयो अथ शुर्य भावस
वावस मंज़ छम लऽजिमुँच़ नाव।

२. करूँनोव पानय बनतम जल जल
वलुँ गुहलिस मंज़ च़ुँय मोंकलाव
स्मृणायि वनुँ मंज़ मुश्क्योव पानुँई
अर्पण तथ गऽयि जानानुँय।

३. र्दपण दरुँमान्दुँ गऽयि वुछानुँय
शोंगुँन्यार मंज़ वुछ पुरुषा द्राव
वांग छय कामस राग छुय लूभस
च़ूरि मो थव आऽबदार छुय पान।

४. शूभिदार जानानुँ रिंदुँ गऽयि बोज़ान
मन मूँछित जल जल वुज़ुँनाव
घरुँ आम पानय येंल्यि राथ यूगी
भूगी बुँ वुछिहा क्या चऽशिमव

५. रूगी अऽछ आसुँ भूगस पतुँ पतुँ
जूगी मा पतुँ घरुँ म्योन च़ाव
प्रमाद विषयन जऽशिनुँ छुय आसान
ह्यस होश रंवान मायायि मंज़

६. आरब्यन्द चरूँणन कुस येंति पूज़ान
साधुँकन लोंगुमुत छुय चले जाव
नौ पऽट्य काह दास वऽस्य वऽस्य यिवान
मलबुॅ छुख समान मनुॅ सुॅय मंज़।

७. खशि वांऽलिंज्यि छुख अश अश सपुॅदान
वशिफ छु पानस वर मां द्राव
गरीब मऽरि मऽरि ज़िन्दुॅ बेंयि सपुॅदान
रिंदन छु करान गरि गरि साल

शिव शम्भू पनुॅने घरे बासान
अन्तरात्मा सुय श्रोंपरान।।

* * *

''भगवान कृष्णुॅ सुॅन्दिस ज़न्मस प्यठ
शिवजी सुन्द गूकलस मंज़ युन''

लीला नं०. ११७

जसुॅदायि माजि हुन्द युस छु सन्तान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान
शिव शंकर दर्शनस छु क्रेशान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

१. माऽज्य शख्ती गऽय सख परेशान
स्वाऽमी म्योन क्याज़ि लाम्पुॅ मेनान
बालन ताम छुम दुॅन्यिरावान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२. म्यानि स्वाऽमी कोर कुन चे़ न्येरून
शुन्य त्राऽविथ कोंत वन चे़ फेरून
सूरुॅमति नूरुॅ पान छुय च़्यें प्रज़ुॅलान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

३. दिवुॅया गूकलस मंज़ छि लऽजिमुच़
र्स्वगुॅच्य हिय हय तति छि फोंजिमुॅच़
तति हय छि खऽतिमित्य पोशि असमान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

४. नंगुॅ मोंत प्रंग त्राऽविथ बुॅ द्रासय
टाऽठिस कृष्णुन छुस बुॅ दासय

सत्गोंर कृष्णस वन्दुँ ज़ुव जान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

५. पवनुँ वति शिव द्राव गूकल कुन
मन मोंरली वाऽय कृष्णुँन्य धुन
जीरुँ बम जन वज़ान राज़ि इरफान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

६. कालुँ सम्हाऽरी त्रिशूल छुस सूँत्य
दीवी तुँ दिवता छिस वुछान कूँत्य
स्वर्गुँ हूरुँ दऽर्य गंऽड्य गंऽड्य छि वनुँवान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

७. त्रिजगत वोतमुत छु नन्दुँगाम बोज़
कन दिथ रोज़ बोज अलोकिक सोज़
वति वति तति वुछ जऽशिनुँ सपुँदान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

८. सन्तन तुँ साधन हुँन्ज़ लऽज्यि दिवय
साक्षात वुछिनि द्रास पनुँनुय शिवय
कृष्णस ति ज़ुव जान छुस ना वन्दान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

९. अऽन्दरिम गर्भ च्योन काँह नुँ ज़ानान
गर्भुँ लीला चाऽन्य कांह नुँ सुमरान
कम कम यूगी चेंय मंज़ बसान
गूकल छु आमुत कृष्णुँ भगवान।

१०. बस गोंसाऽन्या अख आंगन चाव
दोंह राथ सुमरान छुय कृष्णॅु नाव
रोंन्यि वज़ान श्रोंनि श्रोंनि भ्य्ख्या मंगान
गूकल छु आमुत कृष्णॅु भगवान।

११. जसुॅदा द्रायस बुथि पानय
रंगॅु रंगॅु भूज़न तस अनानय
लालॅु थाल अथन मंज़ शोलॅु मारान
गूकल छु आमुत कृष्णॅु भगवान।

१२. जसुॅदायि दोंपनस क्या गछ़ीवन
बॅु अनय सोरूय यूरि्य त्रिभवन
वन जल अऽन्दरिम कड़य अरमान
गूकल छु आमुत कृष्णॅु भगवान।

१३. जसुॅदायि दोंपनस खोंर चॅु ठहराव
यि मंगख ती दिमय रोज़ी नॅु ग्राव
सोंन मोंख्तॅु बेंयि दिमय लाल ताबान
गूकल छु आमुत कृष्णॅु भगवान।

१४. गूर्य बायि गूर्य शुर्य आयि लारान
तिम दपान गोंसाऽन्य येंति क्या छु छ़ारान
दोंदॅु कुॅयि अन्यि हस छुख नॅु माज़ान
गूकल छु आमुत कृष्णॅु भगवान।

१५. शिवजियन दोंपनस म्यें नय गछ़ि केंह
कुन तॅु केवल छुस गोसाऽन्या हे

बस कृष्ण हावतम छुस म्यें अरमान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

१६. जसुॅदायि छुस गोंसाऽन्य क्या करन ध्यार
कथ बकार मोंखतुॅहार लालुॅ अम्बार
घरि चान्यि ज़ामुत छु म्योन भगवान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

१७. शुमशान भस्मा छुय च़्यें मऽलिथुॅय
बाम्बरन कलंधर गछ़न गऽलिथुॅय
दोंदुॅ शुर कृष्ण छय च़ूरि थावान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

१८. गोंरुॅदीव म्योन सुय च्योन संतान
कुलहम सृष्टी युस छु पालान
म्याऽन्य प्राण दोंह रात यस छि सुमरान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

१६. त्रिभवन नाथस वन्दुॅ ज़ुव जान
सम्पूर्ण शिव तस छु कोंरुबान
हावुॅहन नुॅ त्रावय येंतिनुॅय प्राण
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२०. गोंसाऽन्य हठ जसुॅदायि म्यें मय करनाव
आगनस मंज़ म्यें मय पलव च़टुॅनाव
मन्यि मंज़ भख्ति भाव वुछतम ग्रकान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२१. होवनय म्येें कुन क्या च़्येें रोवुय
चॅसुॅ मत्यि वन च़्येें क्या गुदुॅर्‌योवुय
वुछ वुछ चे़ंय कुन ज़ग छि कांपान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२२. भूत प्रीत ध्यव ताऩ्य छिय च़्येें खोचा़न
छुख पकान पृथ्वी छु अलुॅ अलुॅ गछ़ान
काऽलास न्येर जल गुल्य छस गंड़ान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२३. कृष्णस दास छुस यीयतनय पास
काऽलास त्राऽविथ बुॅ नन्दुॅगाम आस
हावुॅहन नुॅ नन्दुॅलाल बुॅ ज़ालय पान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२४. धतुॅ छम गाऽमचुॅ यथ जिगरस
बस रतुॅछेंपि लगुॅ गग्वरुॅदीवस
ज़ुव जान टाऽठ्य प्राण करस कोंरबान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२५. वीलुॅ तय ज़ार येंल्यि बूज़्य कृष्णन
च़ोंतुरबोंज़ रूप तऽम्य कोंरूय धारण
शिवजियस निश आव दोरि लारान
गूकल छु आमुत कृष्णुॅ भगवान।

२६. जऽटि द्रायि गंगा खोंर छस छलान
शिवजी छु कृष्णस मोंन्यि मीठ्य करान

नालॖँमति अख अऽकिस किथॖँ कऽन्य रटान
गूकल छु आमुत कृष्णॖँ भगवान।

२७. लक्ष्मी तॖँ सरस्वती आयि लारान
स्वर्गॖँ लूक गूकलस निश छु मन्दॖँछान
कृष्ण तय शिव बस कुनुय बासान
गूकल छु आमुत कृष्णॖँ भगवान।

२८. सुगन्धी अलौकिक क्या छि न्येरान
कर्मॖँहीनन ति ड़य्कॖँलोन शेरान
यूगी छि गूऱय शुऱय खेला कराऩ
गूकल छु आमुत कृष्णॖँ भगवान।

२९. शिवजी आकाऽश्य वति घरॖँ द्राव
गरीब घरि पनॖँन्ये करयस पाऽराव
ग्रावन छ्यन लगि बन्यि यकॖँसान
गूकल छु आमुत कृष्णॖँ भगवान।।

* * *

लीला नं० ११८

''यूगुॅ-गर्भुॅ-आभास''

पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना
दर्शन डेडि तल गणपत हावय
हा जिगर पारो प्रारखना।

१. योगिस्थानुक राज़ त्येंल्यि भावय
गोंडुॅ परखावय अन्तःकरण
सूहम तोरि सूॅतय तिमय गरुॅनावय
पतुॅ प्रज़ुॅलावय अन्तःकरण।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

२. अऽन्दुॅरिम न्यबुॅरिम बन्धन छ्‌यनुॅरावय
ग्वर बन्धन त्रावय ज़न मोंख्तुॅहार
स्वयं भू प्रकाशिक्य सिर्यि तति हावय
दयिगथ हावय न्यरभय रोज़।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

३. यकुॅदम मरुॅनुक भयुॅ च़ऽलुरावय
मन्यि फोंलुॅरावय गाशि पम्पोश

नादॅुब्यन्दॅु मंज़ शिवनाद वुज़ॅुनावय
ब्रह्म ज्ञान हावय शोड़िस्थान।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

४. परमॅुपदॅु मंज़ शिवथान वुज़ॅुनावय
गर्भथान त्रावय अमृत–धार
यूगियन सॅूत्य अर्थॅुवास करनावय
निष्काम भावय ईश्वर भाव।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

५. यऽड़ हुँन्ज़ बोंछि पतॅु तत्यि मोंचॅुरावय
तत्यि आलॅुनावय अमृतॅुक्य चाँऽग्य,
भऽखॅुती तॅु मोंख्ती गुल्य गंड़िथ थावय
परमॅु शिव हावय यूगॅु दारि मंऽज़ि।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

६. रूंग तय पीड़ा जल मोंकॅुलावय
बुजिरॅुच्य थरॅु चऽलॅुरावय बोज़
समनबल यूगियन निश वुछिनावय
समतायि बॅु हावय आनन्द वन।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

७. आनन्दुॅसुॅय सर्वआनन्द थावय
यछाये रोंस हावुॅनावय बोज़
मोल माऽज्य बाऽय बेंन्यि तिम ति मऽशिरावय
कुडुॅर्य बन्धन छ्यनुॅरावय बोज़ ।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

८. चुॅ तुॅ बुॅ यकसू बऽनिथ हावनावय
परमुॅ आनन्द प्रावुॅनावय बोज़
पनुनुॅय पान गाशस रंगुॅनावय
परमुॅ दामय चावुॅनावय बोज़ ।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारा
हा जिगर पारो प्रारखनो

९. वीदुॅ गीता **गरीबुॅन्य** परुॅनावय
मऽर्य मऽर्य ति थावय ज़िन्दय बुॅ आश
सोंन्तुॅक्य अलोकिक पोश वथुॅरावय
मुशिकुॅ अदुॅफर त्रावुॅनावय बोज़ ।।
पथ पाहन भावय राज़ि इसरारो
हा जिगर पारो प्रारखना

* * *

लीला नं० ११६

सर्वुँभू समभू हमसू आव
सूहम पोशि मंज़ मस्तानुँ द्राव

१. कुस करि रावठ शिव लिवन्यि सूँत्य
यूगी पानय रावुँचि द्राव।

२. रोन्यि खाव त्राऽविथ चाव गर्भुँद्वार
सास भासकरुँ मंज़ प्रकाश द्राव।

३. अंगुँह्यून किथुँ पकि कंऽड्य वति प्यठ
शेरि नर कंऽड्य ज़ाल चटुँने आव।

४. खरुँ खरुँ क्या करि मोंट छस चम
जल गछ़ मदुँगम मोंकली ग्राव।

५. वटुँकस मंज़ खोंत वुछ नटुँराज
च्वन गोजन हुन्द वीदुँ गीत गाव।

६. शिव छुय शमनायि धारणायि फेर
यिनुँ च्येर लागख बोंन वसि भाव।

७. प्रशांत हृदयस शिव पाद ज़ाव
ओंमकार जोशि सूँत्य पान अन छाव।

८. चोर लाग येंत्यि छिय ठग तय चूर
वसुँवास मोंचिथुँय विश्वास ज़ाव।

९. शिलि पऽट सम्साऽऱ्य येंत्यि कडुॅनय

पानय पानस कर तुलुॅ त्राव।

१०. खर सम्सारस अडुॅकोंल लांग

कऽल्य बूल्य कऽरिथुॅय पान बऽचिराव।

११. ज्ञान गव भावुॅनुय ज्ञानुॅवानुॅनुॅय

छ़ोंटुॅसुॅय मंज़ गाटुॅजार मो हाव।

१२. तिलुॅवाऽन्य दांद मा न्येरि कुन दूर

अऽन्य पचि मंज़ मा नोंन गाश द्राव।

१३. योगिरस्थानुक राज़ कर बन्द

नागुॅबलुॅ पोंखिरितल पोन्य वुज़ुॅनाव।

१४. खुमखानुॅ गुम्बन्द गऽयि आवाज

मनुष्यि रूपुॅ यूगी घरुॅ सोन च़ाव।

१५. मोंछि मूरन यऽम्य हावसन कऽर

गर्भनाद वरदान तऽस्य मंज़ च़ाव।

१६. ***गरीबो*** वस गर्भुॅनिद्रायि मंज़

ग्वरुॅ महराजस छुम आवुॅ आव।

* * *

लीला नं० १२०

वछि़ वांऽलिजे दिवान खश
अश अश करान आस्या
दम फुट्य गऽछ़िथ वनन कस
ग्रावन शुमार आस्या।

१. भावुन यि हाल मनुँकुय
कोताह छु क्रूठ वनतम
यऽन्द्रे फटन च़्ये सऽदुरस
त्येंल्यि तथ करार आस्या।
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

२. ग्वरुँ यूगुँ चऽकुँरसुँय मँज़
शोलान छि लालुँ गवहर
मुशकावि कुल जहानस
त्युथ लालुँज़ार आस्या
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

३. ज़िन्दुँ आश चाऽन्य रूज़िन
येंत्यि तत्यि तुँवति वती हे
दोंन म्युल गछुन दिलन वन
तस एतिबार आस्या
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

४. परिछ़्योंन गोंमुत छु कुसताम
ड़ोलान पथ वनन मँज़

ज़ोलान नाऽल्य त्राऽविथ
तस पतुँ करार आस्या
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

५. यऽचुँ काऽल्य छ़ाय पेंयि अज़
शायद वदान छु गाशी
यथ ज़ूनुँ ड़बि छु गटुँज़ोंल
तति गाशदार आस्या
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

६. ब्रह नारुँ च़जि रटान छुस
शुमशान ज़न दज़ान मन
तस यूगुँ महारिन्ये वन
क्युथ गोशिवार आस्या।
दम फुट्य गऽछिथ वनन कस " " " "

७. पोंज़ तय अपुज़ **गरीबस**
रसुँ रसुँ वनान छि साऽरी
वोंन्य गव सु यारि जाऽनी
तस इनतिज़ार आस्या।।
वछि वांऽलिजे दिवान खश
अश अश करान आस्या
दम फुट्य गऽछ़िथ वनन कस
ग्रावन शुमार आस्या

* * *

लीला नं० १२१

''माऽरयमोंन्द जूज़्य''

पाद रटिमय म्यानि जोग्यो

जूऽय पानस लगुँयो

ज़ऽध्य तुँ गऽध्य म्याऽन्य मतुँ चुँ वुछितो

जूग्य पानस लगुँयो।

१. दामुँ दामय गलि गले म्याऽन्य अऽश्धार चतुँमो

पोख्तुँकारो मोख्तुँहारो म्यान्यि मनुँसरुँ फोलुँतो।

ज़ऽध्य तुँ गऽध्य म्याऽन्य मतुँ चुँ वुछितो

२. काँह नुँ ज़ानान छुख चुँ अनुँमोल

ज़ोल कऽम्य गोंडुँ नारुँ पान

तेह तुँ रेह छम भ्रमुँसरुँ म्ये

भ्रमुँ–बल तूर्य नितुँयो।

ज़ऽध्य तुँ गऽध्य म्याऽन्य मतुँ चुँ वुछितो।

३. हमसू गगुँनस चोंग ज़ोतान

ज्यूग्य वखुँनान ओम छु तथ

ओम ज़पान गाश आत्मुँ–प्रकाश

अन्यिगटि गाह म्यें दितुँमो।

ज़ऽध्य तुँ गऽध्य म्याऽन्य मतुँ चुँ वुछितो

४. दावुँ लाऽजिस वाल वाऽशिस

कर्मलाऽनी ठाऽसुँनस

भक्तिवत्सल छुख चुँ दाऽनी

हमसु खाऽसी चतुँमो।

ज़ऽध्य तुँ गऽध्य म्याऽन्य मतुँ चुँ वुछितो

५. छस च़्यें मंज़ बो आत्म–शक्ती
म्याऽन्य भखती रठतो
त्याग यन्दुॅरस प्रनवुॅ कतुॅतो
प्रनवुॅ रूपो यितमो।
ज़ऽध्य तुॅ गऽध्य म्याऽन्य मतुॅ च़ुॅ वुछितो

६. अंग हीन्यिस अंगुॅ अंगुॅ दग
अग छु कर्मुक ज़न्मुॅदूब्य
प्रंग गरहा शक्ति तूरे
शक्ति पातो यितुॅमो।
ज़ऽध्य तुॅ गऽध्य म्याऽन्य मतुॅ च़ुॅ वुछितो

७. कुण्डुॅलनी मंज़ कुल छि शक्ती
हमसू भखती दमुॅ दमय
यूगुॅ वानुॅच तथ छि मस्ती मरुॅतानो यितुॅमो।
ज़ऽध्य तुॅ गऽध्य म्याऽन्य मतुॅ च़ुॅ वुछितो

८. त्रिकाल द्रष्टी छय ललाठस
स्यज़रुॅ बावस ग्वर ड़खस
आशितोंशस परमुॅ पोशस मुशिकावान यितुॅमो।
पाद रटिमय म्यान्यि ज्योऽयो ज्यूऽय पानस लगुॅयो।
ज़ऽध्य तुॅ गऽध्य म्याऽन्य मतुॅ च़ुॅ वुछितो

९. मनुॅसरुॅ वस वलु गरीबो
भावुॅ ह्यरे सोंन सोंन
रोज रोपीश सन्यिरस मंज
पान तारान यितुॅमो।

* * *

लीला नं० १२२

''ग्वरुँ लीला''

V. Imp

भख्ति बोंछि येंछ़ि पछ़ि ग्वर पनुन सोंरिज़िहे
मनुॅसरुँ तऽरिज़िहे लो लो करान।
राग मन्साऽविथ वाऽराग रऽटिज़िहे
मनुॅसरुँ तऽरिज़िहे लो लो करान।

१. दर्दुॅच्यि रगि मंज़ लूभा दोंयिज़िहे
कुन्यिरुॅच्यि श्रोंगि मंज़ खऽटिज़िहे पान
क्रूधुॅचे वुनुॅले मंज़ अऽछ वऽटिज़िहे
मनुॅसरुँ तऽरिज़िहे लो लो करान।

२. भख्ती डलुॅसुॅय रावठ कऽरिज़िहे
कामुॅच्य गऽन्यि हिल यिनुॅ अन्यि गियूर
ग्वरुॅनाव हयथ अथ पाज़ा कऽज़िहें
मनुॅसरुँ तऽरिजिह लो लो करान।

३. ग्राव मां रोज़िही बतुॅ छावुॅ अऽन्यिज़िहे
भावु बोंछ क्षऽविज़िहेंक तीय गव जान
प्रेयमुक मस चथ रासा गिंदिज़िहे
मनुॅसरुँ तऽरिज़िहे लो लो करान।

४. याव़ुनुंन्य दोह तारुॅ चुॅत्यि येंत्यि भऽरिज़िहे
होशिच्यि रज़ि गोंड़ु वऽलिज़िहे पान
मंज़ुॅ बाग यूगस जऽशिना कऽरिज़िहे
मनुॅसरुॅ तऽरिजिह लो लो करान।

५. कुलहम लूभस चुॅख दिथ गऽछिज़िहे
धारुॅणायि संगुॅरन पेंयि हे गाश
गरीबस नखुॅ यिथ हमुॅराज़ बऽनिज़िहे
मनुॅसरुॅ तऽरिज़िहे लो लो करान।।

* * *

लीला नं० १२३

लग फुट्य तुँ लंजन यावुँनुँन्यी छाय पेंयस मा
मऽखुँती ड़लस मंज़ लोलुँ वछस ग्राय लऽजिस मां

१. द्वादश ड़लस मंज़ राज़ यिनुँ जांह रोटुँ गछ़न बोज़
सीमाब वछस अर्धुरॉतस ग्राय लऽजिस मा।

२. फुरसथ च्यें कर छय पूरुँ म्यें वन अन्तुँ समुँयस तान्य
शाहानुँ–ग्रटस नालुँ रटस ग्राय लऽजिस मा।

३. रुत–साथ समागम तुँ त्येल्यि मा म्येल्यि येंती यार
नतुँ नारुँ चंजव वस ति दऽज़स ग्राय लऽजिस मां।

४. समुँहालि वुछुम शीशि नागस दिल शिठिथ गोमुत
वैताल अऽछन बुमुँ ति दऽज़स ग्राय लऽज़स ग्राय
लऽजिस मां।

५. दर्शुन छु लबुन पान मारुन वानुँबलन मंज़
नतुँ राज़ुँबलन जाय रट्यस ग्राय लऽजिस मा।

६. दछिराऽठ ज़न अलुँवांऽज़ गाऽमुँच़ म्यान्यि मनुँच्य कल
गुलनारुँ अच़ान पोशि वनस ग्राय लऽजिस मा।

७. मस्तानुँ मस च्यथ अज़ छु करान क्राव ब्येयि पोशन
ज़ुल्फ़न अन्दर बन्द गोशिवारस ग्राय लऽजिस मां

८. वुछ शांत ड़लस मंज़ छि वज़ान तारि इरफाऽन्यी
इरफान च़टान तारुँ जिगुँरस ग्राय लऽजिस मा।

९. छु कर च्यें न्येरुन वन ***गरीबो*** लोलुँ बागस कुन
तत्यि विगन्यि लजिमचुँ इन्तिज़ारस ग्राय लऽजिसमा।

* * *

लीला नं० १२४

जूऽग्य लीला

बाऽलिये तुतुॅवाऽल्य कम होल जिगरस
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

१. पानन्यार हाऽविथ रसुॅ रसुॅ वाऽजिनस
सोंतुॅच पोशे फुलया ज़न
वछिकिस कुठिसुॅय गाश चोंग सुय छुम
दऽज़्य दऽज़्य त्राऽवनस तुॅ वनुॅ क्या हे।
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

२. शिव छुम सु पानय क्याज़ि अर्ज़नावान
अम्मार प्राचन ज़्येव छुनुॅ दिवान
दाऽन्य दाऽन्य व्यगलिथुॅय तऽस्य सऽत्य रलहा
यावन ग्रायन त्राऽवनस हे
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

३. पारुॅध्य चशमुॅ छस पार्थीश्वरुॅसुॅय
माऽड़्य मांडड़्य थऽवनस लिंग सुॅय मंज़
शिव–शक्ति वरदान अभिशापुॅ पाऽवनस
पतुॅ मशिराऽवनस तुॅ वनुॅ क्या हे।
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

४. साधुॅनायि डलुॅसुॅय न्यत्रद्वार वाऽजिनस
स्यन्दि मंज़ लाऽजिनस शिलि सूॅत्य बोज़

तारुॅबल जल–जल कति वातनाऽवनस
अड़वति त्राऽवनस तुॅ वनुॅ क्या हे।
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

५. शुमशान वाऽतिथ हेरि बोंनुॅ ज़ाऽजिनस
बस्मुॅ देगि चाऽनिनस ठानुॅ दिथ बोज़
थज़रुॅ हिमालय गोंडुॅ हय खाऽरनस
पतुॅ डुलुॅ डुलुॅ वुछ त्राऽवनस हे।
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

६. कन्यिनुॅय तुॅ पलुॅनय प्येठ बो ठाऽसनस
हृदुॅयि शीशुॅ चूरुॅ चूरुॅ करुॅनस बो
शाह प्राण शुन्यिहस ज़न चूरि थाऽवनस
ग्वरुॅ छ़लुॅ पाऽवनस तुॅ वनुॅ क्या हे।
गऽध्य छिम वांऽलिंजि तस क्या छु हे।

७. पतुॅ **गरीबुॅन्य** ड़लुॅ ज्यूग्य मिलुॅनाऽवनस
ज्ञानुॅ ज्यूत्य पिलुॅनाऽवनस शाहस सऽत्य
पुरू ज़नुॅमुॅच्य छ़ाय शीशस काऽसनस
हमसू परुॅनाऽवनस तुॅ वनुॅ क्या हे
गऽध्य छिम वांऽलिज तसुॅ क्या छु हे।।

* * *

लीला नं० १२५

''भावुॅ व्यदाख''

१. हन्दि पोशस यनुॅ व्यनुॅ पोश गोम
ग्वरुॅ शब्दस वसि हुन्द रस प्योम
वछि कुठिसुॅय शम तय दम गोम
ओम ज़ोम छुनुॅ तेंल्यि क्या हे।।

२. गरीबुॅन्य रहदार कोंल्यि मंज़ ह्यस प्योम
वर गोम सुॅतुॅरस कोंतुम नुॅ केंह
शिव सब्ज़ारस कोसम रंग गोम
यूगुॅबल नोंन गोम वनुॅ क्या हे।।

३. ओंम शब्दस रसुॅ रसुॅ सम गोम
खम त्राऽविथ चम प्योम कस वनुॅ हे
दमदारस हंगुॅ मंगुॅ गंड़ गोम
गाशदारस भ्रम गोम वनुॅ क्या हे।।

४. यूगुॅ मंडुॅलस मंज़ सऽन्य चूर प्योम
दाग दारस दाग प्योम बदनस मंज़
संग पारस हंगुॅ मंगुॅ संग प्योम
संघसार पान गोम वनुॅ क्या हे।।

५. आत्मुॅ ज्ञानस तुॅ पानस म्युल गोम
विज्ञानस गाह प्योम खुमखानस ताम
अबुॅसाऽविथ पतुॅ वसुॅलुक मस चोम
हऽस्य पान वऽस्य प्योम वन क्या हे।।

६. छानस तुॅ खारस येंल्यि येंल्यि म्युल गोम
विजि विजि राऽयल वन ज़न प्यठुॅ प्योम
छाऽविथ नारस सूरुॅय पान गोम
गरीब द्रोंग प्योम सोदा हे।।

७. खऽट्य खऽट्य रूज़िथ गोफि मंज़ गाह प्योम
मऽर्य मऽर्य ज़िन्दुॅ गोम विशवासा हे
गरीबस पान पनुॅनुय श्रोग गोम
द्रोंग प्योम यारानुॅ वनुॅ क्या हे।।

८. भ्रमुॅरन्ध्रस मंज़ चकुॅरूक वर प्योम
वर गोम पानस तुॅ वर मा द्राव
हरुॅ हरुॅ पानस ग्रकि विज़ि नून प्योम
ग्रटुॅबल छ़ल गोम कस वनुॅ हे।।

* * *

कैंह वाख १२६

१. ज्ञान क्रिया या प्राण क्रिया
मंज़ुॅ बाग मनस ग्वरुॅ राग छुना
यूझी पुरषस युस करि न्यन्ध्या
तस अर्थस कर खऽच़ ध्यान सन्ध्या।

२. बहरूप्य छि धारान बऽल्य आसन
यिम र्कमस कस वन खुर्य कासन
वाऽरूक नार हन हन छुख ज़ालन
पज़ुॅरस अपुॅज़्युक कलमा ड़ालन।

३. बतुॅ वर बेंछि बानस येंल्यि गछ़ि ज़ांह
खम थाऽविथ हमसू पतुॅ रटि मां
तेंल्यि वन तुॅ गरीबस कुस करि क्या
येंल्यि मन्यि ललुॅवान वुछि ग्वरुॅ पादा

४. मन्थुॅर तन्तुॅर या यन्तुॅर वन
तस काऽली नाग मां ज़ांह पोरन
तस अनुग्रह ग्वरुॅ सुन्द छुनुॅ सोरन
युस ग्वरुॅ सुॅन्ज़ि गोंफि मंज़ छुय रोज़न

५. शाऽन्ती यिथ प्राणुॅ क्रिया गऽय क्या?
च़्येंथ शोंमुॅरिथ व्यथ अथ मंज़ श्रपि ना
बोंछि सूरिथ यड़ तेंल्यि जांह वदि मां
कथि चान्यि गरीबो सन्यि कांछा

६. कोरुॅक्षेत्र घरुॅ घरुॅ येंत्यि गव ना
येंत्यि मुह डोंठ अकुॅलन वुछ प्यव ना
वुछ अमृत त्राऽविथ व्यह ख्यव ना
गंगा त्राऽव हेंनुॅरूक रस चोंव ना

७. अभिमाऽन्यी वन ग्वर प्रज़ुॅनाव्या
ग्वरुॅदीव तऽमिस जांह कथ भाव्या
ड़ोंलुमुत युस तस कांह हेंछिनाव्या
अर्थुॅवास **गरीबुन** जांह राव्या

* * *

सोंदाम चरित्र

सोंदाम चरित्र या सोंदामुन तुॅ भगवान कृष्णुन म्युल छु भजनुॅ किस सूरतस मंज़ वारुॅयाहव गोंणुॅमातव पॅनुनि अनुॅमानुॅ ल्यूखमुत! म्यति छु यि सोंदाम चरित्र भजनुॅकिस सूरतस मंज़ ल्यूखमुत! अथ मंज़ छि शुनम्मथ बन्ध! म्यें छु पनुॅनि तरफुॅ स्यठा प्रयास कोंरूमुत ज़ि सोंदाम चरित्र गोंछ़ हूबहू तिथय पाऽठ्य पेश करनुॅ युन यिथुॅ कऽन्य अमिच्य मूलुॅ अवस्था छि! शेर पाऽरय करुॅनस मंज़ अमिकि अॅऽन्दुॅरिमि गॅभुक रस न्यबर कडुॅनस मंज़, अम्युक अलौकिक प्रभाव तुॅ म्येछर भक्ति ज़नन तान्य वातनावनस मंज काऽचा–सफलता छि म्यें मीजि मुॅच़, अम्युक फाऽसुलुॅ ह्यकन परन वाऽल्य् कऽरिथ! बु छुस गुल्य ज़ुॅ गंऽड़िथ प्रार्थना करान! योंदुॅवय अथ मंज़ कॉंह खाऽमी–आसि रूज़ुॅमच़, म्यें गछ़ि ख्यमा करुॅन्य तुॅ तिमुॅ गलती बद्धि कऽडिथ म्यें तान्य वातुॅनावुॅन्य।

लेखक

ज़ुव जान टाऽठ्य प्राण तऽस्य आऽस्य वन्दानुॅ
अऽश टाऽरि भऽरि भऽरि आसानो
उपवास कऽरि कऽरि कृष्णस पूज़ानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

१. मायि मोंत सुदामा कृष्णुँ कृष्णुँ ज़पानुँ
भदर्भ नगर ओस रोज़ानो
न्यरुँधन आऽसिथ ति धनवान बासानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२. ज़ऽट म्यऽट नुँ आऽसिथ ति खोंश आऽस्य रोज़ानुँ
विज़ि विज़ि फाकुँ फरि रोज़ानो
फाकुँ फरि आऽसिथ ति कृष्णस वनवानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

३. सुशीला पतिवृता स्त्री आसानुँ
साऽमियस खोंरुँ शेरुँ करानो
संसाऽरिय मायायि निश लोंभ रोज़ानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

४. दोंख सोंख सोंपुनुँ माया आऽस्य ज़ानानुँ
कृष्णुँ ध्यान दोह रात धारानो
छेंन्य नऽन्य आऽसिथ ति अथुँ नो धारानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

५. कम या ज़्यादूँ यीय दय ओस सोज़ानुँ
सन्तोष तऽथ्य प्यठ आसानो

दोंख दाऽध्य आऽसिथ ति तऽस्य पान पुशरानॅु
भक्ति बोंछ कोंछि तस ललॅुवानो।

६. दोंह अकि यकदम ज़न प्योख असमानॅु
फाकॅु फरि येंल्यि शुरि् छि गीरानो
चोनॅुवय शुरि्य आऽस्य बोंछि सॅूत्य कांपानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

७. ओंश ड़ोंठ त्रावान साऽमियस वनानॅु
शुरि् छिम फाकय मरानो
कृष्णॅु भगवान चोन ग्वरॅु बोय आसानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

८. परमय मेंत्रस निश गछ़ तॅु जल पानॅु
भखॅुत्यन विज़ि विज़ि छु रछानो
अवतार धाऽरिथ भखॅुत्यन तारानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

९. भगवानस सॅूत्य यस आसि यारानॅु
वन कर तस छु परॅु पावानो
सोंख सम्पदा दिथ दोंख व्यगॅुलावानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

१०. स्वाऽमी दर जवाब बोज़ क्या वनानॅु
मूर्खु भावॅु त्रशणा च़्यें आसानो

त्रिशनायि सूॅत्य छुय ब्रह्म तीज़ रावानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

११. ब्राह्मण गव सुय यस नुॅ लूभ आसानुॅ
नख्यनय तोत्यि आसि तोशानो
बुजरस मंज़ वातुॅ कोतुॅ लूर ड़ऽखुॅरानुॅ
भक्ति बेंछि कोंछि तस् ललुॅवानो।

१२. ब्रह्मण सुदामा कलुॅ ओस ठासानुॅ
यि वुछिथ त्रिय वछ चे़टा़नो
सोंख मतुॅ मंगतस दर्शुन कर पानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

१३. दर्शन सूॅत्य छिय़ कर्मखुरि़ मोंकुॅलानुॅ
सन्तोषुॅ सोंख आसि मेलानो
वेलुॅ छुय वुन्यक्यन कोनुॅ छुख समुॅखानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

१४. बूज़िथ सोंदामा त्रिय कुन वनानुॅ
कुस टोठ निमुॅ तस नज़रानो
कंगाल ब्रह्मणस निश क्या आसानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

१५. भाग्यवान निर्धन छि भगवान सुमराणुॅ
धन ध्यार तिमछिनुॅ मंगानो
कर्म असि खोंट प्रोन ती अऽस्य भूगानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

१६. सुशीला अऽश्य टाऽरि भऽरि भऽरि दपानुँ
धन ध्यार बुँत्यि छस नुँ मंगानो
दॆशुन कऽरिथुँय छि मोंख्ती प्रावानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

१७. बूज़िथ सुदामा द्वारिकायि सखरानुँ
सुशीलायि मन छु रंज़नावानो
हमसायन निश कोंम सोंत सोंम्बरानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

१८. धोति लोंचि छेंनिमचि़ कोंम सोंत गंड़ानुँ
भावुँ डाऽल्य साऽमियस पिलवानो
कोंम दऽज्य चूरि चूरि कछुँ तऽल्य खारानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

१६. महागणपत सुन्द गोंडुँ ध्यान धारानुँ
कृष्ण द्वारस कुन छु न्येरानो
ज़ान्यि सुय वत्यि वत्यि क्या ओस सोचानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२०. कर्मुँहीनस ति छा दॆशुण मेलान
राज़ुँ छा असि हिव्यन समखानो
शुराह सास अख हथ अऽठ त्रिय आसानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२१. यीचऩ त्रियन छिय यीत्य महल असानुँ
गछुँ कोंत चोर छुस बेगानो

हेडुँनम लूख नतुँ फेरुँ हा पोंत पानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२२. पकान पकान वोत मंज़ माऽदानुँ
तोंत ताप तन तस ज़ालानो
सन्तापुँ स्यख छस तलुँपऽत्य ज़ालानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२३. अऽछ गाश रोवुस वुकरनुँ आव पानुँ
त्रेशि त्रेशि वुठ ओस फेशानो
भगवान यि वुछिथ ओंतुँनुँय वातानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२४. भगवान कोता खून ओस हारानुँ
दीवी तुँ दीवता ति वदानो
खीर सागर ति गव होंख्य होंख्य दज़ानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२५. सुगन्धी पवनुँ दिवता ओस त्रावानुँ
भगवान खोंन्यि मंज़ ललुँवानो
गल्यि गल्यि अमृत सुदामस चावानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२६. मीठ्य मीठ्यं भूज़न छुस आपरावानुँ
सरस्वती वीदुँ गीत ग्यवानो
महालक्ष्मी पानुँ गुमुँ छस वोंथुरानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

२७. सुदामा मस न्यन्दुॅरि ज़न सोंपुन वुछानुॅ
वयकोंण्ठ बन्यौव सेंकि मऽदानो
इन्द्राज़ अमृतुॅकि आबुॅशार चावानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

२८. गन्धर्व आकाऽश्य पोश आऽस्य त्रावानुॅ
पोशि अंबरन मुशक न्येरानो
गूपी तुॅ गूरि् शुर्य रास आऽस्य खेलानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

२९. र्दशणस यूझी तुॅ सत्ज़न लारानुॅ
नारूद ति सेतार वायानो
मुख्ती सोदामस गुल्य गंऽड़िथ रोज़ानुॅ
भक्ति बोछि कोछि तस ललुॅवानो।

३०. ताजुॅ दम सुदामा अऽछ येंलि मुच़रानुॅ
ब्ययि वुछुन सुय सेंकि मऽदानो
कृष्ण हय ओस सूॅत्य वुन्य कोंत च़ोंल पानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

३१. यिथुॅ तिथुॅ सुदामा द्वारिकायि वातानुॅ
सागुॅरस कम लहरुॅ डेंशानो
सोंनुॅ सुॅन्ज़ुॅ लरि जायि जायि जायि वुछानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

३२. लाल जवाऽहिरव पश आऽस्य ज़ोतानुॅ
सत्संग प्रथ जायि सपदानो

आंगनन मंज़ आऽस्य नागराद नेरानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३३. आऽखॅुरस सुदामा बज्यि डेडि वातानॅु
चूरि चूरि पोंत नज़रॅु दिवानो
वुछिनम डीडय वाऽन्य भरनम जेलखानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३४. भगवान कृष्णुन आसि युस महलखानॅु
तत्यि भऽखॅुत्यन गोंडॅु त्रावानो
मनॅु किन्य भगवान भऽखॅुत्यन छु पूज़ानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३५. कृष्ण ढ़ेड़ि अऽचिथॅुय ज्ञानॅु द्वार प्रावानॅु
अत्यि छु सन्मोंख पानॅु भगवानो
रॅुखमन्यी सॅूत्य ओस नरदस गिन्दानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३६. डीडयवाऽन्य सुदामस प्रॅुछॅुगाऽर लागानॅु
तीय हाल छि कृष्णस भावानो
ननॅुवोर तॅु छ़ेंनिमॅुच़ दूत्यि छस आसानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३७. कलॅु वोडुनोंन ज़्यूठ छ़ोग छुस आसानॅु
कमड़ंल तॅु लूर अथॅु ड़ऽखॅुरानो
नाव छुम सुदामा तीय ओस दपानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

३८. कृष्णस बासान सिंहासन चलानुँ
अऽशि दर्दुरायि ओंश न्येरानो
खोंर ननवाऽरी लारि लारि दोरानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

३९. डींशिथ कृष्णस सुदामा लारानुँ
खोरन अथुँ छुस लागानो
कृष्णुँ भगवान छुस नालुँ मत्यि रटानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

४०. दोंनुँवय लोलुँ हत्य ओंश कूत हारानुँ
पछ़ छनुँ दोंनुँवन्यि यिवानो
सोंपनस मंज़ मां छुस कृष्ण ड़ेंशानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

४१. पटुँराऽन्यन कुत वनान कृष्ण भगवानुँ
सृष्टि कर्ता छुस बुँ आसानो
वुछतव अज़ आव योर म्योन भगवानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

४२. ज़ेंविसूँत्य सुदामस तलुँपऽत्य ल्यवानुँ
अऽछिवुँय छुस कंऽड़ि कंड़ानो
अशिवान्यि सुदामस कृष्ण खोंर छलानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

४३. मंदुँछान सुदामा पथ खोंर निवानुँ
कृष्ण भगवान ज़ोरुँ अनानो

अऽठ पटॅुराऽनी छि हाऽरतस गछ़ानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४४. तिम दपान अऽस्य ति सीवा करॅहव पानॅु
कृष्णॅु भगवान छुनॅु मानानो
सुदामस अंगॅु अंगॅु च़न्दुना मलानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४५. इष्ट दीव ज़ाऽनिथ कृष्ण तस पूज़ान
रंगॅु रंगॅु भूज़न ख्यावानो
मऽल्य मऽल्य अऽतॅुरा पोश शेरि लागानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४६. बालॅु गूपाल पटॅुराऽन्यन वनानॅु
योर आमुत म्योन भगवानो
लोलॅु होंत सुदाम छु असमान प्यवानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४७. रॅुखमन्यी सुदामस विजिवाव करानॅु
अष्टॅु स्यद सन्मोंख असानो
भाग्यवान सुदामस कुन नज़र नॅु ठहरानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४८. रुखमन्यी तॅु सतॅुभामायि ख्यव अरमानॅु
स्वाऽमी क्याज़ि गव देवानो
ज़न सुदाम भगवान कृष्ण दास आसानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

४६. कृष्ण हय ओस बडुॅ अभिमानुॅ वनानुॅ
परमुॅ मित्रा छुम ज्ञानवानो
यि हय बुडुॅ ब्राह्मण न्यर्धन आसानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

५०. असि ओस बूज़मुत कृष्ण गाऽव रछानुॅ
थन्यि चूर घरुॅ घरुॅ करानो
वुछिथुॅय सुदामस रूद नो शक दानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

५१. कांऽसि हुँन्ज़ि ब्राँऽच़ मा कृष्ण छुम पूज़ानुॅ
कृष्णन कोस तस शक पानो
गोंर ओस कुन आऽस्य इकुॅवटुॅ परानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

५२. गोंरुॅ माज्यि क्युत आऽस्य ज़्युन वनुॅ वालानुॅ
दोह अकि वोंथ तत्यि तूफानो
रूदुॅ श्रानि वाज्यन त्रटुॅ तय बारानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

५३. गोंर तुॅ गोंरुॅ माऽज्य आयि जंगल लारान
छेंपि छेंपि असि आऽस्य छारानो
अडुॅ कज्यि ज़ेंवि आऽस्य नाद नाद लायानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

५४. यिछ़ि तूॅरि अथुॅ खोंर असि आऽस्य मोंमनानुॅ
वुछिथ अऽस्य ज़न लऽबिख सन्तानो

दोछ़ि दोंछ़ि आऽही पोश आऽस्य लागानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

५५. कृष्ण सुदामस प्रोन याद पावानॅु
जानानॅु च़ॅुय म्योंन आसानो
गऽल्य गऽल्य सुदामा कृष्णस वुछानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

५६. सृष्टि–कर्ता कवॅु म्ये शरॅुमन्दॅु करानॅु
सोरुय च़्यें आऽधीन आसानो
त्रिभवन चान्यि प्रकाशि छुय प्रज़लानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

५७. अविनाऽशी अमर ओंत कुछ छु वातानॅु
चान्यन गोंणन कांह नॅु वखनानो
सास ज़ेंवि शीशिनाग कृष्णॅु नाव सुमराणॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

५८. च़ोंतुर भोंज़ रूॅपस पाऽरि पाऽरि लगॅु पानॅु
शंख च़ऽकॅुर गदा पदम च़्यें प्रज़लानो
बारम्बार च़ेंय ड़ंडॅुवत करानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

५९. अस्तोंती बूज़िथ छु भगवान वनानॅु
भाभी सूज़ क्या नज़रानो
लोंलॅु ड़ाऽल्य कोंनॅु छुख जल जल मुच़रानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललॅुवानो।

६०. बूज़िथ सुदामा कलुॅ बोंन त्रावानुॅ
वन्यि क्या गल्यि ज़्यव छि गछ़ानो
सोंत दऽज्य रसुॅ रसुॅ कछुॅ ह्योर खारानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६१. थफ दिथ नियनस सोंत दऽज्य लोंलुॅ सानुॅ
मोंछि मोंछि पानस छु ख्यवानो
बोंन प्यव कांह फोंल ज़ेंवि सूॅत्य खारानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६२. ज़न यशोदा छस भूज़न आपरानुॅ
टास कऽड़ि् कऽड़ि् पानुॅ ख्यवानो
युथ ह्युव भूज़न छुम नुॅ ज़ांह मेलानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६३. रुॅखमन्यी दोंपनस बुॅत्यि ख्यमह दानुॅ
दाऽसी चाऽन्य छस आसानो
लोलुॅ ड़ाऽल्य अऽन्य खल्यि येंत्यि छिनुॅ भाऽगुॅरानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६४. सुदामा यूझी तुॅ पायबोंड़ ज्ञानुॅवानुॅ
सोंख दोंख यकुॅसान मानानो
अन्तःर्कणन मंज़ छुम पूज़ानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६५. यदुवन्शी कृष्णस सूॅत्य रोज़ानुॅ
पानुॅवऽन्य चोंयि आऽस्य करानो

येंत्यि कुस सुदामस ह्यिुव कंगाल आसानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६६. यीत्यि दूरि ओंनमुत सोंत छुन नज़रानॅु
कृष्णा कंगालस छु ख्यावानो
अिस ति वोंन्य ख्याविहे ज़ुॅय चोरय दांनॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६७. कुन तुॅ कीवल छुय मज़ुॅ सान ख्यवाणुॅ
बाकुॅयन छु वुठ फे़शनावानो
अन्तरयाऽमी भगवान चेनानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६८. कोलुॅ परिवारस छु भगवान वनानॅु
भावुॅ ड़ाऽल्य छुस नुॅ कांऽसि पुशरानो
पोंखतुॅकारस छुय मोंखतुॅहार शूबानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६९. ब्राह्मण चऱुॅणन यूज़ी छि पूज़ानॅु
परमुॅदीव सुदाम छु आसानो
दर्शण सूॅत्य तोंहि ति सपुॅध्यव कल्याणुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७०. मानॅु प्रंगुॅसुॅय प्यठ सोंदामस सावानॅु
लरि लोंर तस सूॅत्य रोंज़ानो
राऽत्य रातस प्रोण आऽस्य अभुॅसावानॅु
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७१. प्रेयमुॅ हऽच़ रुॅखमन्यी दास भाव रोज़ानुॅ
मोंठ दिवान सोंदामस प्रेमुॅ सानो
छयोनुॅमुत सोंदामा मस न्यन्दुॅरि गछ़ानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७२. सोंदामस तुॅ ऐश्वयी नुॅ कांह काऽम आसानुॅ
लेकिन सुशीला छि क्रेशानो
अंबार लालन बुॅ खारस पाऽन्य पानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७३. विश्वकर्मुॅहस आज्ञा छुय दिवानुॅ
सुदामा पुरी न्येर दोरानो
गछ़ बनाव रंभुॅवुन तुॅ शूभवुन महलखानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७४. अऽछ टिटुॅवारि मंज़ बन्योव तत्यि महलखानुॅ
च़ोंदहन लूकन न आसानो
अष्टुॅ स्यदी तुॅ नव रिद्धी तोंर सोज़ोनुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७५. न्यन्दुॅरि होंत सोदामा लरि फिरून दिवानुॅ
कृष्णुॅ भगवान अथुॅ ड़ालानो
लोलुॅ तय प्रेयमय मोंन्यि मीठ्य करानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

७६. कोंह काल गऽछ़िथुॅय सु रोंखसथ हेवानुॅ
भगवान डेड़ि तान्य न्येरानो

कऽरुँथम दया योर आखना पाऽन्य पानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

७७. अनुग्रह कृष्ण च्योन रूज़ितन पोशानुँ
मोहनी रूप कूत प्रज़लानो
घरुँ कुन सुदामा द्राव ना सोंखुँ सानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

७८. खाऽली अथुँ ह्यथ द्राव डालुँ मारानुँ
सुशीला घरि आसि प्रारानो
धन ध्यार मीलिथ गछ़िहम अभिमानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

७६. दर्शुण लभुँनुय प्रावुँन्य नवन्यधानुँ
जान गव केंह मोंगुम नुँ भगवानो
सोंखुँ मोंखुँ राविह्यम रोछुमुत भगवानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

८०. खरामा खरामा दिथ घरुँ नखुँ वातानुँ
अत्यि नुँ पनुँ पाऽर कुन्यि डेशानो
सोंनुँ सुन्द महलखानु अथुँ जायि ड़ेशानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

८१. लाल जवाऽहिर जायि जायि ज़ोतानुँ
पोशि वन छि द्वारिकायि मुशकानो
रंगुँ रंगुँ मेवन ड़ेर आऽस्य लगानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

८२. लंजि लंजि बोल बोश पोशनूल करानुॅ
स्वर्गुॅच्यि अछुॅ रछुॅ छि वनवानो
राऽछदर ड़ीड़िवाऽन्य सुदामस प्रुॅछ़ानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

८३. दास दाऽसी मस काम्यि मंज़ुॅ आसानुॅ
हाऽरान चशिमव यि ड़ेशानो
हंगुॅ मंगुॅ कत्यि आव रम्बुॅवुन महलुॅखानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

८४. सोंपुनॅ माया मां वुनुॅ छम वालानुॅ
खोंपुॅरि वन कर बन्यि महलखानो
येंत्यि छुनुॅ पनुॅ पारि हुन्द नेब निशानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

८५. त्रिय म्याऽन्य सुशीला फाकुॅ फरि संतानुॅ
मां म्यें रूद वुन्यि तिंहुन्द अरमानो
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

८६. कोंत गछुॅ कत्यि छ़ारख तिम भगवानुॅ
कोनुॅ छुख अवतार धारानो
वछ च़ऽटि् च़ऽटि् ओस पान जान मारानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

८७. सुशीलायि वन्यि कोंड़ स्वाऽमी भगवानुॅ
आऽनुॅ ड़बि प्यठुॅ क्रख लायानो

दास दाऽसी लारि लारि आयि दोरानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

८८. स्वाऽमियस म्याऽनिस छिव नुँ प्रज़ुँनावानुँ
मानुँ सान चाऽन्यूँन महलखानो
दास दाऽसी सुदामस पाद रटानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

८६. खूचुँमुत सुदामा खोंर पोंत त्रावानुँ
ब्राह्मणस नुँ ठठुँ करून शूबानो
असि क्या महलन सूँत्य काऽम आसानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

६०. महाराज तुहुन्दुय सोंनुँसुन्द महलखानुँ
दास छिस ज़ारुँ पारुँ करानो
पछ़ छस नुँ अख रछ़ केंह छुख नुँ मानानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

६१. वेंसुँ सऽदुँरुँ सूँत्य ह्यथ सुशीला द्रायि पानुँ
ड़ोंल्यि महारेंन्यि ज़न छि आसानो
आरती तस करान रत्नद्वीप ज़ालानुँ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुँवानो।

६२. रोवमुत विशवास ब्ययि ज़िन्दुँ सपदानुँ
सुशीलायि सूँत्य च़ाव महलखानो

त्रिय छस अऽतुॅलास क्यमुॅखाब लागानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६३. सुदामा तोत्यि छुय वोंश वोंश त्रावानुॅ
छुस दपान येंत्यि मशि में भगवानो
ज़ाऽन्य ज़ाऽन्य क्याज़ि छुख ब्ययि अज़ुॅमावानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६४. ज्ञाऽन्यी ति छिनुॅ चान्यि लीलायि वातानुॅ
दकुॅ मो दिम कृष्णुॅ भगवानो
बऽड़ि बऽड़ि राज़ुॅ गऽयि येंत्यि अथुॅ मूरानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६५. सम्पदा त्राऽविथ पारि मंज़ रोज़ानुॅ
शामुॅ रंग जामुॅ नाऽल्य त्रावानो
भुॅख्ती स्वधामस मुॅख्ती पाऽरानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

६६. ***गरीबस*** गरीबी कूॅच टाऽठ आसानुॅ
पारि मंज़ सुदामुॅन्यि रोज़ानो
सन्तोष पोश छिम मनुॅ वारि मुशकानुॅ
भक्ति बोंछि कोंछि तस ललुॅवानो।

* * *

गौरी अस्तुति—१२८

शक्तीय माता छि काऽशरिस शैवुॅ मतस मंज़ शिवसुन्द अछयोंन अंग तुॅ अम्युक सोंड.गोपान वॅणन छु संस्कृतस मंज़ करनुॅ आमुत! म्यें दासन ति छुॅ जगत मातायि हुन्द यि प्रज़लवुन स्वरूप काऽशरिस मंज़ भजनुॅ–किस सूरतस मंज़ लेखनुक प्रयास कोंरमुत! अनवाद ह्यकि नुॅ हूबहू आऽसिथ! म्योंन अभिप्राय छु ज़ि यि 'गौरी अस्तुति' गऽछ़ तिमन भखत्य् ज़नन ताम वातुॅन्य यिम नुॅ संस्कृत ज़ानान आसन! ज़गत ज़ननी शक्ती मातायि हुॅन्ध्यन ग्वनन हँन्ज़ व्याख्या करुॅन्य छि नामुमकिन! वोन्य गव भावुॅ पोश छि साऽरी राज्यरयन्य माजि याछ़ि पछ़ि तु हुबुॅ सान लागान।

लेखक

१.

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल लोकां
लोकातीतै-र्योगिभर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम्-ईडये।

काऽशुर तरजमुॅ

बुॅ छुस तस् माजि शख्ती पाद पूज़ान
यऽमिस पम्पोश हिश छय चऽशिमुॅ आसान।
करान लीलायि सूॅत्यन पाऽदुॅ ज़गतस
करान ठहराव तुॅ सम्हार कायिनातस।
यमिस ज्ञाऽनी तुॅ यूगी अन्दरुॅ छ़ारान
छु यम्यिसुन्द तीज़ लछ़ि बऽध्य सिर्यि ताबान।
छि ग्रऽज़ रूस ज़न प्रभातुॅक्य सिर्यि चमकान।
बुॅ छुस तस माजि शख्ती पाद पूज़ान।।

२.

आशा-पाश-कलेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां-पुरूषाणाम्
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम-ईडयेः।

काऽशुर तरजमुँ

शिवस अर्धाङग्नी छय माऽज्य शख्ती
अचिथ ज़ीवन अन्दर छय मंज्यिम नाऽड़ी।
स्यठा आऽव्युल छु अम्यसुन्द सूक्षम रूप
छि ज़ाऽहिर पाऽठ्य ज़गतस मंज़ यि अनुरूप।
करान पम्पोश चरणन हुन्द छि यिम ध्यान
यिमन आशयि हुॅन्जुॅ फासे छि आसान।
करान अनुग्रह तिमन तमुॅहुॅय छु सोरान
बुॅ छुस तस माजि शख्ती पाद पूज़ान।।

३.

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां
नित्यं चिते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम्
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तड़ित्-आभां
गौरीम-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम-ईडये।

काऽशुर तरजमुँ

धरान वृत धारणाये ध्यान धारान
बिहिथ यिम मंज़ समाधे यूग साधान।
छि पालान यिम नियम निष्काम भावय
तिमन यूगस अनान छख पानुॅ छावय।
चुॅ छख ना साधुॅकन आनन्द सोज़ान

चुॅ छख सतचित आनन्द शोलुॅ मारान।
चुॅ छख वुज़मल त्रिलोकी गाश हावान
बुॅ छुस तस माजि शख्ती पाद पूज़ान।
यऽमिस पम्पोश हिश छय चऽशिमुॅ आसान।।

४.

चन्द्रापीडानन्दित-मन्द-स्मित-वक्त्रां,
चन्द्रपीडालडकृत लोलाकमाराम,
इन्द्रोपेन्द्राम्यचित-पादाम्बुज-युग्मां,
गौरीम अम्बां अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम-ईडये।

काऽशुर तरजमुॅ

यमिस च़न्द्रम छु गाशुक लाल ताबान्,
प्रसन्न छख शंकरस छुई मोख च्ये ज़ोतान
बुछिथ तस कुन चुॅ वुठ छख गुमनावान,
बनिथ चन्द्रम कलस प्यठ मऽरिमोंन्द जान,
कलस प्यठ पाऽटय मस्तस गाह छु त्रावान,
यिमन पम्पोश च़रनन कूॅत्य पूज़ान,
इन्द्रह्युव राजुॅ विष्णु पानुॅ भगवान,
बुॅ छुस तस माऽजि शक्ती पाद पूज़ान।।

५.

नानाकारै शक्ति-कदम्बेर्भुवनानि,
व्याप्य स्वैरं क्रीडति स्वयं मेव,
कल्याणीतां कल्पलतामानति माजां,
गौरीम अम्बां अम्बूर हाक्शीम अहमीडी!

काऽशुर तरजमुॅ

यि शक्ती चाऽन्य त्रण लूकन अन्दर व्याप्त,
प्रबल शक्ति हुन्दुई आगुर चुॅ साक्षात,
यच्छ़ाये किन्य् त्रिलोकी पाऽदुॅ कऽरुॅथन,
कोंरूथ अनुग्रह तुॅ सृष्टी लोंल्यि च्ये रऽछिथन,
बनिथ काऽली च्ये पानै नाश कऽरुॅथन,
शरण यिनुॅ वालिनुॅय ड्यकुॅ–लोन शेरान,
चुॅ दाऽरथि कल्पवृक्ष मन रंजुॅनावान,
करिथ स्यद कामना भऽखुॅत्यन चुॅ तारान,
बुॅ छुस तस माजि शक्ती पाद पूज़ान।।

६.

मूलाधारात उत्थितवन्ती विधिरन्ध्रम,
सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङगीम,
धयेयां सूक्ष्मां सूक्ष्मतनुं तां-तडित-आभां,
गौरीम अम्बां अम्बूर हाक्षीम-अहम-ईडये।

काऽशुर तरजमुॅ

छि मूलाधारुॅ निशुॅ अभ्यऽसि खारान,
यि शक्ती कुण्डऽलनी छय पाऽदुॅ सपुॅदान,
इडा पिगंलायि हुन्द रूप गाह छु त्रावान,
प्रकाशिक्य सिर्यि चन्द्रमॅ निश छि दूरान,
खसिथ ह्योर ब्रह्मरन्दरस मंज़ छि वातान,
छि यूगी अमि स्वरूपुक ध्यान धारान,
छि अथ मंज़ सुशमना रूंप ज्यूत्य् हावान,
बनिथ वुज़मल छि सूंक्षम रूप धारान
बुॅ छुस तस माजि शक्ती पाद पूजान।।

७.

आदिक्षान्ताम-अक्षर मूर्त्या, विलसन्ती,
भूते भूते भूतकदम्ब प्रसवित्रीम,
शब्द-बह्मा-नन्द-मयींताम-अमिराभां,
गौरीम अम्बांम-अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम-ई०

काऽशुर तरजमुँ

अपार शक्ती हुन्दई छख चऽकुॅर धारान,
अछर 'अ' प्यठुॅ छु 'क्ष' हस ताम फेरान,
यिमव अछ़िरव छुॅ मूरत चाऽन्य न्येरान
च छख आकाश वायु पाऽचं भूतन,
यछ़ाये कायिनाथ कुल पाऽदुॅ कऽरुॅथन
अनाहद शब्द ब्रह्म माऽज्य रूप ताबान,
बनिथ ओंकार वाचख तीज हावान,
बुॅ छुस तस माज्यि शक्ती पाद पूज़ान।।

८.

यस्याकुक्षोलीनम-अखण्डं, जगत-अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर-अभूत्-अक्षतमेव,
भत्रा साधं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं,
गौरीम-अम्बां-अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम-ई०

काऽशुर तरजमुँ

च्यें यऽड़ मंज़ सोर ब्रह्माण्ड लीन कोरुॅमुत
तुॅ बारम्बार कुलहम पाऽठ्य द्रामुत,
प्रलय विज़ि पूरुॅ ब्रह्माण्ड लुप्त गोमुत,
छु कलपुऽकि ब्रोंठुॅय ब्ययि हय पाऽदुॅ कोरुॅमुत
छु बरथा चोन शंकर म्योन भगवान,

बिहिथ कैलास कोंहस प्यठ जोरि मारान,
चमक प्रकाश र्सियुक तीज़ न्येरान
शिवस नखुॅ नखुॅ बिहित शिवरूप धारान,
बुॅ छुस तस माजि शक्ती पाद पूज़ान।।

९.

यस्याम्-एतत्प्रोतम-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे-यत्-वत् क्वापि चर चाप्यचरं च,
ताम-अध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां,
गौरीम अम्बाम-अम्बु-रूहा-क्षीम-अहम-ईडये।

काऽशुर तरजमुॅ

जगत रूपी पनस मंज़ माऽज्य तारान,
चुॅ ताऽरिथ लाल अथ मंज़ माल धारान,
ज़गत ठीकिथ चे़ मंज़ यिथुॅ कऽन्य छु रोज़ान,
मूख छिनुॅ चोंन सूक्षम रूप जानान,
तमाम शक्ती छि चे़य मंज़ वर्गुॅ न्येरान
तुॅ यूगी आत्मुॅकि बलुॅ छी चे़ ड़ेंशान,
बुॅ छुस तस माजि शक्ती पाद पूज़ान।।

१०.

नित्या सत्यो निष्कल एको जगदीशः,
साक्षी यस्याः र्सगविधौ सहंरणे च,
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम अम्बाम्-अरबु-रूहा-क्षीम-अहम-ईडये।

काऽशुर तरजमुॅ

अखा येंत्यि कुस छु युस चाऽन्य ग्वन छु ज़ानान,

अजब चाऽन्यी यि लीला कुस व्यचारान
चुॅ किथुॅ कऽन्यि माऽज्य सृष्टी छख बनाबान,
बनाऽविथ पतुॅ चुॅ किथुॅ कऽन्यि अथ मिटावान,
यि अविनाऽशी अमर रूप कुस छु ड़ेंशान
फक्त परमीश्वरुॅय लीला छु ज़ानान,
गछ़्छ़ान अथ चान्यि लीलाये बुॅ कोंरबान,
करान वोंपकार ज़गतस दितुॅ म्य् वरदान,
स्वभावस मंज़ च्ये अनुग्रह शोलुॅ मारान,
शिवस अर्धान्गिनी सोंन्दर चुॅ शूबान,
बुॅछुस तस माजि शक्ती पाद पूज़ान।।

११.

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः,
वाचां रिद्धि सम्पत्ति मुच्चैः शिवभक्ति,
यस्यावश्यं र्पवत-पुत्री विदधाति।

काऽशुर तरजमुॅ

छि यिम यिम भक्तिज़न नित्य नियम सुमरान,
करिथ अन्तःकरण शोंद ध्यान धारान,
प्रभातन चाऽन्य यिम ग्वन छिय व्यचारान,
यि गौरी अस्तुती छख तारुॅ तारान,
शलूक यिम दह पऽरिथ कल्याण सपदान,
लबान सोंख सम्पदा प्रावान परम थान,
बनान स्यदी मोंखस प्यठ सरस्वती सान,
बनान थोंद भऽखुॅत्य भगवान पानुॅ टोठॉन,
गरीब छुस भावुॅ पोशिच्य मालुॅ त्रावान,
बुॅ छुस तस माजि शक्ति पाद पूज़ान।।

शिव महिम्न स्तोत्र

''शिवमहिम्न स्तोत्र के विषय में दो शब्द

प्राचीन समय एक गन्धर्व किसी राजा के अन्तःपुर के उपवन से प्रतिदिन पुष्प चुराकर ले जाया करता था। राजा ने इस पुष्प चोर को पकड़ने का भरसक प्रयास किया परन्तु उसकी कड़ी परिश्रम असफल रही। उसने चारों दिशाओं को अपने गुप्तचर भेज दिए पर चोर का पता न लग सका। राजा चिन्ताग्रस्त होकर बुद्धिजीवियों से परामर्श लेता रहा लेकिन आशा की किरण कहीं से भी फूट नहीं पड़ती। अन्त में राजा ने उस पुष्प चोर का पता लगाने के लिए दृढ़ संकल्प कर ही लिया। उसने यह निर्णय लिया कि शिव र्निमाल्य (भगवान की मूर्ति से उतरे हुए फूल) के लांघने से चोर के अन्तर्ध्यान होने की शक्ति नष्ट हो जाएगी। इस विचार से राजा ने शिव पर चढ़ी हुई फूलमाला उपवन के द्वार पार बिखरा दी। फलस्वरूप गर्न्धव राजा की उस पुष्पवाटिका में प्रवेश करते ही शक्ति कुंठित हो गई। वह स्वयं को क्षीण समझने लगा। उसने समाधि लगाकर तुरन्त ही इसके कारण का पता लगाया। ज्ञात हुआ कि मेरी शक्ति शिव र्निमाल्य के लांघने से कुंठित हो गई।

यह जानकर उसने देवादि–देव अविनाशी अमर, अजर सदाशिव नीलकंठ परम दयालू सुख–सागर भाग्य–विधाता शंकर भगवान

की यह वर्णन रूपी महिमा (महिम्न स्तोत्र) का गुणगान किया। उसी स्तोत्र के पश्चात ही शिव र्निमाल्य तथा शिव–स्तुति की विशेष महता का प्रचार हुआ। इस स्तुति के रचयिता यही गन्धर्व राजा श्री पुष्पदन्त थे। यही स्तुति अपरम्पार सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान करूणानिधि (सत्यं शिवं सुन्दरं) सुखसागर शिव महिम्ना स्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

"आचार्य पुष्पदंत सुन्द यि अलौकिक महिम्नस्तोत्र छु अपरम्पार तुं अम्युक बजर, थज़र तँ सन्यर छु शिव भक्ति हुन्द सु परम स्तोत्र यथ व्याख्या करुॅन्य छि अलौकिक भक्ति हन्दिस सागरस छपिह प्राण लॉगिथ शिव प्रकाशुक अमर प्रतिबिम्ब अन्तः करणन मंज़ धारण करवन बुॅ अख दास ति छुस यिमन–शलूकन कॉशिर ज़्यव दिनॅच कूशिश करान ताकि यिम भक्त परन वॉल्य न संस्कृत ज़ानान छि तिम ति ह्यकन स्यदि स्योद शिव प्रकाशुक असर पानस मंज़ रटिथ! हूबहू अनुवाद स्यठाह मुशकिल कॉम ति क्याज़ि संस्कृतुक मिज़ाज़ अछरुॅ मिलवन तुं भाव ह्ययकन नुॅ हूबहू तमी अनुमानुॅ कॉशरिस मंज़ अननुॅ यिथ! मगर म्यें छु स्यठाह प्रयास करूमुत यि महिम्नास्तोत्र कॉशरावनच तुॅ अथ भजनच शकॅल दिनच!"

लेखक

शिवमहिम्ना स्तोत्र

श्री पुष्पदन्त उवाज

१.

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिरब्रह्मा दीनामपि
तदवसन्नात्वयि गिरः अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि
-गृणन ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।

काऽशुर तरजमुँ

महिम्ना शिव स्तोत्र असि छु तारान
छु पुष्पय दन्त महिम्ना–पार भावान।
ब्रह्मा दिवता नुँ ज़ानान तुहुँज़ लीला
छु अपरम्पार आसान तुहन्द महिमा।
हेंक्या तेंलि अंख मनुष्य ग्वंन चाऽन्य भाऽविथ
ब्रहमा तान्य चाऽन्य लीला ह्योंक नुँ ज़ाऽनिथ।
यथा शक्ती मनुष्य दिवता छि साऽरी
करान चेंय शंकरस छिय आहुज़ाऽरी
यथा शक्ती छि ग्वन चाऽन्य व्यछुँनावान
ध्वखन–दाध्यन चुँ सान्यन मूल प्राटान।
बुँ पुष्पयदन्त छुस चाऽन्य ग्वन व्यचारान
बुँ छुस निष्पाप न्यरदोष अस्तोंती मान।।

अतीतः पन्थानं तवच महिमा वाड़मन
सयोरअततवृत्या यंचकितमभिधते थुतिरपि
स कस्य स्तोतव्य कतिविधगुणः कस्य विषय
पदे तर्वाचीने पतित न मनः कस्य न वचः।

काऽशुर तरजमुँ

बजर तय ब्ययि थज़र चान्यन ग्वनन क्या
हेंक्या मन ज़्यव व्यचाऽरिथ चाऽन्य ग्वन ज़ाँह
छि दोनुँवुँन्यि हुँज़ रूची सम्साऽर्‌य भूगन
यिमन भूगन मंजुँय आवुँर्‌य छि रोज़ान।
च्ये निश शंकर यि केंछा येंत्यि नयबर छुनुँ
ह्यकान सोंय शय ति ज़ाऽनिथ कांह अखा छुनुँ
छि चोंनुँवय वीद योंद ग्वन चाऽन्य ललुँवान
ग्वनन ललुँवान लोंलि छिनुँ तोति ज़ानान
लबान छिनुँ वीद अन्द या वोन्त चोनुय
बजर या च्योन थज़र कऽन्य अऽक्य सअ ज़ोनुय।।

३.

मधुस्फीता वाचः परमममृत र्निमितवतस्तव
ब्राह्मणं कि वागपि सुरगुरोविर्स्मय पदम
मम त्वेतां वाणी गुणकथन पुण्येन भक्तः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन पुरमथना बुर्दिव्यवसिता

काऽशुर तरजमुँ

ब्रहस्पत पायि बऽड्‌य गोंरूँ दीवताहन,
यसुँन्ज़ वाऽणी अन्दर अमृत छु आसन।
अलंकारन ग्वनन हुन्द युस छु भगवान
ग्यवान ग्वन चाऽन्य तस गलिज़्यव छि सपदान।
बुँ छुस अधुना मनुष्य क्या पाय म्योनुय,
अवय रोंटमुत छुमय दामानुँ च्योनुय।
फिरान गोंणुँ माल चाऽन्यी पाप वसनम
छ्येंट्‌योमुत मन अवय मां श्रूच़ सपुँद्‌यम।।

४.

तवैर्श्वंय यतज्जगदुदय रक्षा प्रलयकृत
त्रऽयीवस्तु व्यस्तं तिसृषुगुणभिन्नासु तनुषु
अभव्यानामस्मिन वरद। रमणीयामरमर्णी
विहन्तु व्याक्रोर्शी विदधत दहैकेजड़धियः।

कोशुर तरजमुँ

चुँ छुख शंकर वरद म्योन टोठ भगवान
मऽनदिथ वेद अमृतुक चुँय सार न्येरान
करान छुख पाऽदुँ ज़गतस बेंयिचुँ पालान
करान अथ राऽछ्य रावठ पतुँ करान फान
छि चान्ये ऐश्वरी हुँन्ज़ थऽज़ यि लीला
छुना कांह अख ति ज़ानान गुपिथ खेला
शरीरस मँज़ खऽटिथ गोंण तारुँ आसान
तमोगोंन रज, सतोगोंण छ़ालुँ मारान
ब्रह्मा विष्णो तुँ शिव किथुँ पाऽदुँ सपदान
अपार शक्ती यिमन चाऽन्य ज़न्म ध्यावान
कऽरिथ पाऽदा तुँ ठहराव पतुँ करान नाश
छु सोंन अख राज़ अथ मां ज़ांह ति गव फाश
छि केंह सम्साऽर्य मूर्ख तोंहि नुँ ज़ानान
बुछान बल ऐश्वरी चाऽन्य छिनुँ व्यचारान।।

५.

किमीहः किंकाय न खलु किमुपायस्त्रिमुभवंन
क़िमाधारो धाता सृजति किमुपादान इतिच
अतर्क्येश्वर्ये त्वरूयनवसर दुस्थो हत धियः
कुतर्कोयं कांश्चित्मुखरयति मोहाय जगतः।

कोशुर तरजमुॅ

छि केंह जाऽहिल नुॅ यिम चाऽन्य तत्व ज़ानान
करान अपुॅजुॅय बहस पान रावुॅ–रावान
दपान ब्रह्मा छु कुन्यि उपाय सूॅत्यन
करान कुन्यि कारणय पाऽदा छु त्रिभुवन
छि ड़ऽलिमित्य कति तिमन रोज़ान पहचान
शिवय आगुर छु शक्ती हुन्द परम थान
अपार छय एश्वरी ज़गतस चलावान
छि कुलहम सामग्री अम्यि शक्ति न्येरान।।

६.

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
माधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति
अनीशो वा कुंयात भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दा स्त्वां प्रत्यमखर संशेरत इंमे

काऽशुर तरजमुॅ

छि पृथ्वी सान सथ लूक पाऽदुॅ गाऽमुॅत्य
यिथय छा बारसस यिम लूक आमुॅत्य
ति छा मुमकिन यिमन हुन्द ज़न्म दाता
यिमन पालान तुॅ प्यत्रान आसि नुॅ काछ़ा
युहुन्द कर्ता अजन्मा अमर भगवान
ववान येंलि ब्योल वोंत्पथ तेंलि छि सपदान
अगर कर्ता वराऽय सम्सार बनिहे
बनावनुक साजुॅ सामान माँ सअ नन्यिहे
चुॅ छुख भगवान चाऽन्यी साऽर सृष्टी
म्यें छम यछ़ पछ़ चुॅ ईश्र दिम म्यें भक्ती।

७.

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च
रूचीनां वैचित्र्यात-ऋजु कुटिलनानापथजुषां
नृणामेको ग्म्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव

काऽशुर तरजमुॅ

छि त्रनवय वीद शिवमत सांखि शास्त्र
छि ललवान यिम शिवस युस छुय च़राच़र
मगर हक पोंज़ छु यीय मंज़िल यिमन अख
रलान येंलि पाँछ़ वतुॅ आऽखुॅर गलान शक
पकान ब्योंन ब्योंन वतन ह्यथ राग चोनुय
यिमन भऽखुॅत्यन चुॅ शेरान र्कमलोनुय
छि पछ़िवाऽल्य चान्यि वति ननुॅवाऽर्य लारान
छि यिथुॅकऽन्य जोय सऽदुॅरस नाद लायान
पकान ब्योंन ब्योंन वतव कोंह बाल प्राटान
गहे होंल होंल पकान सोंन वोंगुन चालान
छि यिम पतुॅ वुछ तुॅ सऽदुॅरस सूॅत्य मेलान
यिथय कऽन्य शिव भखुॅत्य न्यरवान प्रावान।।

८.

मोक्षः खटवाडंग परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयतव वरद तन्त्रोपकरणम
सुरास्तां तामृदिं विदधति भवदभूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृतृष्णा भ्रमयति।

काऽशुर तरजमुॅ

घरुॅच्य घरुॅव्येठ वरद भगवान यीय छय

खऽडा अख चारपाय बुड्डुँ दांद बेंयि तय
ब्रह्मा सुँन्ज़ कलुँ खोंपुँर सुँह मुँसलुँ फरसा
हऽटिस शाहमार वऽलिथँय मऽलिथ भस्मा
कृपाये चानि वृद्वियन दीव भूगान
कमान छय बुमुँ असि क्युत लोलुँ वरदान
रिद्धि सेंद्धी दिचुँथ कोंरथक चें एहसान
तवय दिवता छि सोंख आनन्द भूगान
विषय रूँपी मृगतृष्णा नुँ पोरान
यिमन हाऽसिल छु गोमुत चोन ब्रह्मज्ञान
यिमय समत्व बुद्धि यूगस छि वातान
तिमन छा जांह ति माया वुनुँ वालान
तिमय अथ ब्रह्मस्वरूपस मंज़ छि वातान
यिमन अनुग्रह छु चोनुय सूँत्य रोज़ान।।

६.

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वा ध्रुममिदं
परौ ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये
समस्तेऽप्येतस्मिन पुरमथन तैर्विस्मितच
स्तुवञिजहेलमित्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।

काऽशुर तरजमुँ

छि केंह गाटुल्य स्थिर सम्सार ज़ानान
छु दोंर सम्सार केंह गाटुँल्य नुँ मानान
स्थिर–अस्थिर छि दोंनुँवय कूँत्य ज़ानान
पिलान नज़रा तम्यी अनुँमान वखनान
मगर छुँनुँ कॉह अखा स्यकुँ पाऽठ्य भावान
यि सम्सार चऱ्लुँवुनुय छा किनुँ छु पोशान

छि कम ज्ञाऽनी तुँ गाटुँल्यि अति परेशान
तवय अथ ब्रह्मचि वुँनुँले मँज़ छि रोज़ान
तवय छुस काऽर नोंमरिथ तोंहि बुँ पूज़ान
स्यठा छुस डीठ छुख बकवास बोज़ान।।

१०.

तवैश्वर्य यत्नाधदुपरि विरिच्चो हरिरधः
परिच्छेतुं यातवनलमनिलस्कन्धवपुषः
ततो भक्ति श्रद्धाभरगुरू गृणताभ्यां गिरिशायत
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृतिर्न फलति।

काऽशुर तरजमुँ

चें केलासस अन्दर शिवजी खऽटिथ पान
यि लीला ऐश्वरी हुँन्ज़ कांह नुँ ज़ानान
ब्रह्मा साक्षात वेंष्णो पानुँ भगवान
यऽत्न कऽरय कऽरय ति छिनुँ चोन अन्त ज़ानान
छु वेंष्णो पानुँ पातालस चें छारान
ब्रह्मा जी वऽन्य दिवान आकाऽश्य फेरान
मगर छुनुँ कुन्यि यिमन पय तुहुन्द न्येरान
फुटिथ दिल छ़ोरहक तेंलि होवथक पान
यिथय कऽन्य दिल फुटिथ युस तोंहि छु छ़ारान
तिहुँन्ज़ सेवा तुँ भऽखुँती रथि चुँ खारान।।

११.

अयतनादापाद्य त्रिभुवनमवैयतिकर्म
दशास्यो यदबाहूनभूतं रथ कण्डूपखशान
शिरःपद्मश्रेणीरचितच रणाम्योरूहभले

स्थिरायास्त्वद भक्तेस्त्रिपुरहरंविरस्फूजितमि दम!

काऽशुर तरजमुँ

कोंरूथ त्रिपुँरास्वरस संहार शिवजी
वन्दय जुव जान दितम पनुँन्यी म्य भऽखुँती
चें रावुन न्यथ प्रभातन ओस पूज़ान
चऽटिथ कलुँ भावुँ पम्पोश शेरि लागान
वुछिथ भख्ती दिचुँथ तस नरय्न शख्ती
करुँन भऽखुँती वुछिन्य मा पेंयस सख्ती
यछ़ान ओस दुशमनन प्यठ ज़ोर हावुन्य
तमाह ओसुस योंदस मँज़ शोंथुँर पावुँन्य
चें ध्युतुमुत पानुँ ओस तस शक्ति वरदान
तवय बेवायि शोंथुँरन ओस कतरान।।

१२.

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बालत्कैलासेऽपि त्वदधिवसतो विक्रमयतः
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताडंग ष्ठशिररसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद ध्रुवपचितो मुह्यतिखलः!

काऽशुर तरजमुँ

करिथ सेवा चें रावुन द्राव बलवान
बन्योव अख शानुँ बोंड़ बलवीर शांहान
अहंकारन दिचुँस ज़ीर पऽथुँरि सोवुन
ह्यचोन कैलास पर्वत च्योन नहवुन
चें खोंर न्यठुँ सूँत्य बस अख ज़ीर दिचुँथस
सु वुकरनुँ आव बोंन वोत पातालस
मगर दुशवार गोस तति तूरय रोजुन

अहंकारन दिचुँस ज़ीर बेंयि नबोजुन
अज्ञाऽनी यिम मूर्ख येंलि ह्योंर छि वातान
अहंकार तेंलि तिमन ठऽल्य ठऽल्य छु त्रावान।।

१३.

यत्-ऋद्धि सुत्रामणो वरद् परमोच्चैरपि
सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रि भुवनः
न-तच्चित्रं तस्मिन वरिवसितरि त्वच्च रणयो
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनितः।

काऽशुर तरजमुँ

कोंरूथ भानास्वरस शंकर चें कल्याण
चें रऽटिनय पाद त्रिभवन गव सु ज़ोनान
छु हुर कूत तीज चान्यन चरणुँ कमलन
कोंरूथ अनुग्रह तऽमिस मन पोशि गमलन
अगर इन्द्राज़ पदवी गव सु त्राऽविथ
यि छनुँ हाऽराऽनिया गव मन्साऽविथ
बजर थोंद युथ छु चान्यन चरणुँ कमलन
खबर कूँच़ इन्द्र पदवी अति छि ड़ोलन
कऽरिथ सरखम छु युस चेंय पान पुशरान
सु छुय रंगुँ रंगुँ थज़र तय बजर प्रावान
रऽटिथ चाऽन्य पाद ब्रह्मरूप तस बनान पान
सु अविनाऽशी शिवस सूँत्य लीन सपदान।।

१४.

अकाण्ड़ब्रह्मांड़क्षयचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः

स कल्माषः कंठे तव न कुरूते नश्रियमहो
विकारोपि श्लाध्यो भुवनभय भडंगव्यसनिनः

काऽशुर तरजमुँ

त्रिलोचन म्योन शंकर पानुँ भगवान
चुँ रोजुम राऽज्य वन्दयना टाऽठ्य पनुँन्य प्राण
समन्दर येंम्यि विज़्यन आऽस्य दीव मंदान
मऽन्दिथ अमृत तुँ ज़ाहरुँय अति छु न्येरान
मगर राक्षस तुँ दीवता आयि तम्बलान
यि ज़ाहरुँय गोंछ़ नुँ सम्सारस करून फान
चे़ं शंकर येंल्यि वुछिथ यिम थाँथुँरेमुँत्य
चे़ं कऽरुँथक बऽड़ दया आऽस्य काऽर नोंमरिथ
वुछिथ महाकाल पानय ब्रोंठुँ द्राहस
चे़ं हटि वोंलुथ ज़हर नन्यिवानुँ चोथस
यि ज़ाहरूँय गव बऽनिथ कंठुक चे़ं श्रंगार
चें प्योंय नाव नीलुँकंठ फोंल्य लोलुँ गुलज़ार
भयस मख दिथ कोंरूथ ना कालुँसुँय ग्रास
ज़हर अम्यि चानि हटिकुय गवहरे खास
मोंलुल हटि नीलमणि ज़ोतान तुँ चमकान
प्रकाशिक्य र्सियिज़न छिय वोंदय सपदान।।

१५.

असिद्धार्थ नैव क्वचिदपि सदैवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः
स पश्यन्नीश! त्वामितरसुसाधारणमभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न-हिविशिषु पथ्यः परिभवः।

काऽशुर तरजमुँ

वोंथ्या काँह कामदीवा तीर अन्दाज़
गछान खाऽली तसुन्द वार छुनुँ यि क्या राज़
मनुष्य या दीवता या दूँत्य साऽरी
दपान आऽस्य कामदीव छुय लामिसाऽली
यिमव रूँपीठ बाणव त्रिभुवनय वोंल
सु दोंद चखि चानि शंकर बस अऽती गोंल
त्रेंयिम येंलि न्यत्र मुचरूथ नार त्रोवुथ
भस्म गव कामदीव मेंचि मंज़ चें सोवुथ
कऽरिथ वश इन्द्रियन छुखना जितेन्द्रीय
चें आऽधीन कायनाथ पूर्ण चुँ यूझी
अखा युस ब्रह्मस्वरूपस करि अनादर
गऽछ़िथ नाश कामदीवस द्रास कति वर।।

१६.

महीपादाघाताद व्रजति सहसा संशयपंद
पदं विष्णोर्भ्राम्यद भुजपधिरूऽणग्रहगणम
मुहुधौदौर्रथ्यं यात्यनि भृतजटाताड़ित तटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता

काऽशुर तरजमुँ

रछान सम्सार मारान लोलुँ ड़ालय
तमाम राख्यस वलान छुख मोंहनि ज़ालय
गऽछ़िथ मस ड़ालुँ कम कम तिंम छि मारान
यि शक्ती चाऽन्य तिमुँनुँय नचुँनावान
असान गिंदान नचान आनन्द छि भूगान
इशारव चानिवुँय छुय जऽशिनुँ सपदान
करान तुलॅ त्राव खोरन येंलि नचान छुख

गछ़ान छीय चाख पृथ्वी त्युथ गोंबान छुख
अगर नय चालि बार पाताल चलान छय
तऽमिस तिछि माज्यि पृथ्वी ताम लगान भय
चुॅ वाहरान नरि तुॅ वेंष्णो ताम कांऽपान
यसुँन्ज़ जाय आसमानस ह्योंर छि आसान
गिंदान टिकुॅ तार तऽमिसुॅजि बसन जाये
नटान तारा मंण्ड़ल क्या तिहुन्द पाये
गछ़ान छुय चूरुॅ चूरय तारा मण्ड़लस
दिवान हुॅकुॅ लथ चुॅ ज़न, छुख नारुॅ कोंण्ड़लस
जटायन ज़ेछिनुॅय येंलि ग्रायि मारान
चुॅ ज़न छुख दीव लूकन कमुॅचि वालान
जटायन हुन्द यि गोंब बार तिम नुॅ व्यत्रान
गंगा न्येरान जटायव असि छि सगवान
बजर शंकर थज़र च्योन काँह नुॅ ज़ानान
गरीबस कर दया छुखना दयावान।

१७.

वियदव्यापी तारागुणगुणितफेनोद्गमरूचि
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृटः शिरसि ते
जगतद्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्येने
नैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।

काऽशुर तरजमुॅ

छु कुल आकाश गाशुक तीज़ धारान
प्रकाश आकाश गंगाये वुछ छु न्येरान
छि सऽदुॅरस माऽरिमंऽध्य अथ लाल ताबान
तुॅ ग्रंऽन्ज़ रोंस गाशि तारक आयि ज़ोतान

मगर आकश गंगा गाशि तारख
वुछिथ़ चाऽन्यी जटा मन्द–छीय यिवान छख
जटायन मँज़ छि पाँ फेंरि सिर्यि ताबान
छि कम कम सिर्यि सरखम काऽर नोंमरान
छि सूक्षम कतरुँ चान्ये केशि न्येरान
यिमन कतरन समन्दर छुख बनावान
बजर फैलाव थज़र युस राज़ि पिन्हा
गरीबन साम दिथ कऽर ज़ान पाऽदा।।

१८.

रथा क्षोणी यन्ता शतधृततिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणि शर इति
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिविधेयैः
क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रा प्रभुधियः।

काऽशुर तरजमुँ

छु साँगन चान्यनुँय येंति कौंह नुँ
तुलन आडम्बरा त्रपुरा बुँ गालन
ब्रह्मा सारुँथ्य तुँ पृथ्वी रथ बनाऽविथ
कमाना बस हिमालय सूत्य थाऽविथ
बनाऽविथ पऽहियि चन्द्रम सिर्यि भगवान
तुँ वेंष्णो रूप भगवान गव बऽनिथ भान
यि त्रिपुरा गालुनुय ओस घासुँ कृऽट ज़न
अजब लीला कोंरथु मैदान्यि जंग ज़न
चुँ अऽछ टिटुँवारि कुलहम नाश करखना
यि लीला ज़ानि कुस अनज़ाऽन्य छीयना
गिन्दन योंद शक्तिमान ह्यथ सूँत्य दासन
मगर बलवान स्वाऽमीय आसन।।

१६.

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधायपदयो
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर् जागर्तिजगताम।

काऽशुर तरजमुँ

वनान त्रिपुरान्तकी शंकर बजर ज़ान
खोंरन चान्यन छु वेंष्णो पानुँ पूज़ान
सु नेंति पम्पोश सास छुय शेरि लागान
सदा गोरुँ रूँपुँसुँय मँज़ छुय चेंय ड़ेंशान
अकुय पम्पोश तस सासस गोंमुत कम
कोंडुन न्यत्रुँय च्यें लोगुन शेरि यकदम
वुछिथ अम्यसुँन्ज़ यि भऽरुँव्तीय गोंय प्रसन्न मन
प्रसन्न सपुँदिथ दितुथ ना तस सोंर्दषन
विष्ण जियनुय सोंर्दशन ज़गि छु पालान
गरीबस पाप तय संताप गालान।।

२०.

क्रतो सुप्ते जाग्रत्वमसि फलयोगेकृतुमता
क्व कर्म प्रध्वसंत फलति पुरूषारा-धनमृते
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौश्रद्धा बद्धवा दृढ़परिकरः कर्मसु-जनः।

काऽशुर तरजमुँ

ज़गत सोरुय च़्यें अवुँ किन्य रोज़ि पूज़ान
करान यज्ञ हवन छुख रुँत्य फल चुँ सोज़ान
छि यछ़ पछ़ मनुष्यनुँय प्यठ दीवताहन

मगर चुॅय छुख यिमन येंत्यि तारुॅ तारन
चुॅ छुख मूजूद योंद यज्ञ कर्म मोंकलन
करव नय अस्तोंतीय चाऽन्य तेंलि कर्म प्यन
कर्म मानव अगर योंद नष्ट गाऽमुॅत्य
करनवाऽल्य कर्म छीयनो शरण आमुॅत्य
चुॅ फल दिनुॅवोल पानय अऽस्य छि येंत्यि कम
गरीब छुय चेंय नमान चेंय कुन छु सरखम।।

२१.

क्रियादक्षा दक्षः कृतुपतिरधीशस्तनुभृतांमृषीणामार्त्विज्यं
शरणद सदस्याः सुरगणा
क्रतभ्रन्तस्त्वतः कृतफलविधानण्यसनिनौ
ध्रुवंकृर्तुः श्रद्धाविधुरमाभिचाराय हि मखाः।

काऽशुर तरजमुॅ

शरण यिनुवालिनुॅय छुख सायि थावान
तिमन छुख ना रछान दिल फाँफॅलावान
प्रजापत यज्ञकर्ता कूत ज्ञाऽनी
छि ब्रह्मा दीवता अति रोज़ाऽन्यी
ऋषी, मुनी, यूगी त्रिकालदर्षी
सभाये अथ अन्दर यिछुॅ बजि छि हऽस्ती
यज्ञस गयि दुॅह छेंतय हाऽरान गयि लूक
ब्रह्मा दिवता तुॅ मुन्यिवर करुॅन्यि लऽग्य शूक
यज्ञस डुबुॅ ड़ास कोंर ना चाऽन्य क्रूधन
अनादर येंलि च्यें कोंरनय प्रज़ापत्यन
श्रद्धा राऽवुॅस तुॅ यिरुॅवुॅन्य नाव गऽयि तस
यि मा ज़ोनुन ज़ि फलदिनुॅ वोंल चुॅय बस
गरीब दस्त बस्त शंकर नाव सुमरान
यि केंछ़ा रुत करव रुॅत्य फल छु सोज़ान।।

२२.

प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वा दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषमृष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगण्याधरभसः।

काऽशुर तरजमुँ

ब्रह्मा जी सृष्टिकर्ता कामनुँय वोंल
दोंपुन करुँ कोरि सूँत्यन भूग सुय ड़ोंल
वुछिथ यिछ़ वासना तमि कोरि त्राऽव दव
सु काऽमी मोल कोरे पतुँ पतय गव
बनाऽवुँन रूस्य कऽट कऽडुँनय कुनीय शीह
बन्योव हाँगुल सु ब्रह्मा तऽस्य पतय छुय
वुछिथ हाला च्यें ब्रह्मा सुन्द यि शंकर
तुलुथ धनुषा ब्रह्मस चायि थर थर
चज्योव स्वर्गस मगर तीस पतुँ छु दोरान
अऽदुँर ज़ऽट गोस अगादे पोंत नुँ छोरान
गरीब छुय सूरमऽत्यसुँय नूर ड़ेशान
न पूज़न वुठ छि तिम हर सातुँ फेशान।।

२३.

स्वलावण्याशंसाधृत धनुषमनहाय तृणवत
पुरः प्लुष्ट हष्टवा पुरमद्यथन पुष्पायुधमपि
यदि स्त्रैण देवी यमनिर तदेहार्ध धटना
दवैति त्वामद्धा वत वरद मुगधा युवतयः।

काऽशुर तरजमुँ

ब्रुँज़िस मँज़ कामदीव ह्युव धनुषधाऽरी

भस्म कऽरुँथस जवाऽनी पूरुँ साऽरुय
कोंरुथ अमि मँज़ च्यें पाऽदा ओंड़ शरीर
यि पानस मँज च्यें वन धारण कोंरुथना
छि माता पार्वती तनुँ प्यठुँ यि सोंचान
चुँ सोंन्दर नांऽरियन देवान सपदान
सऽती माजे ति ज़ाऽन्यनो चाऽन्य लीला
तवय शंकर च़्ये यिछ़ हाछ़ लाऽजिनयना
यि बेजा दूष शुभ्या जाँज च़्ये खारुन
फकत अर्धाङ्गनी नाऽरी चुँ ज़ानुन
अगर तमि माजि शख्ती द्युत च्यें इलज़ाम
पेंयी मा फ़ी च़्ये काँह छुख पोंख्तुँ नय खाम।।

२४.

शमशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर! पिशाचा संहचरा!
चिताभस्माऽलेपः सृगपिनृकरोटी परिकरः
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथाऽपि स्मृतृर्णा वरद! परमं मंगलंअसि

काऽशुर तरजमुँ

कोरुँथ ना सूर कामस कामदीवस
अजब चाऽन्य रंग वुछिथ फऽट तूँर ज़गतस
च्यें वुछितुँय लरज़ नफरत पाऽदुँ सपदान
गिन्दन मैदान मिसाले छुय च़्यें शुमशान
गिन्दन बाऽज्य भूत तय बेंयि प्रूँथ आसान
श्रंगार शमशान सूरुँक नूर त्रावान
मनुष्य कलुँ मालुँ छुखना नाऽल्य त्रावान
धर्म तय शास्त्र छुँनुँ श्रूच़ मानान

मगर साधक छि यिम चाऽन्य माल सुमरान
तिमन छुखना रछान सोंखुॅ सान थावान।।

२५.

मनः प्रत्यकिचते सविधमषधायाऽतमरूतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः
यदालजोक्याऽऽल्हांद हृद इव निमज्जयामृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं मिमिषि यमिनस्तत्किल भवान!

काऽशुर तरजमुॅ

करान यूगी छि प्राणायाम च्योनुय
रऽटिथ मन आत्मा बन्यि प्रज़लवोनुय
मुकामस वाऽतिथुॅय छिनुॅ तोति ज़ानान
करुॅन्य व्याख्या गोंणन दोंलभ छु भासान
वुछिथ साकार रूप आनन्द छु मेलान
कऽरिथ दॅशुन छि यूगी सोंत छावान
हमान छ्यख त्रेश न्यत्रन ज्यूत्य न्येरान
छि ज़न अमृत सरस मॅंज़ पान नावान
गरीब अशिवान्यि नालस मोंख्तुॅ लागान
छु शंकर स्वाऽमियस जयकार सोज़ान।।

२६.

त्वमर्कस्तंव सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं
हुतवहस्त्वमापस्त्वं ण्योम त्वमु धरणिरात्मात्वमितिच
परिछिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं,
न विदमस्ततत्वं वियमिह तु यत्वं न भवसि।

काऽशुर तरजमुॅ

सिर्यि चन्द्रम हवा नार पोन्य आकाश
छि पृथ्वी आत्मा बस च्योन बोंड़ गाश
भऽखुॅत्य ज्ञाऽनी फिरन ना चाऽन्य गोंनुॅमाल
ह्यकनमा भाऽविथुॅय सोन अऽन्दुॅरिमुॅय हाल
प्यवान वऽस्य गाटुजार तय अकुॅल पामाल
गोंनन हुन्द सोंन सऽदुॅर ताबान छीय लाल
स्व छ्यनुॅ काँह अख रछ़ा योंसुॅ छय्नुॅ च्यें मँज़ व्याप्त
गरीबस अर्धरातन गाशि प्रभात।।

२७.

त्रंयी तिस्त्रो वृतिस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा
नकारा धैर्वणैस्त्रिभरभिद धतीर्ण विकृतिः
तुरीयं ते धाम ध्वनि भिअवरून्धानमणुभिः
समस्तंव्यस्तंत्वांशरणद गुणात्वोमिति पदम!

काऽशुर तरजमुॅ

शरण दिनुॅवालि शंकर छुख गंगाधर
अवल ओंमकार वीदन मँज़ च़राच़र
यज्जर या साम या ऋघ वेद आसन
प्रकाश ह्यू चा्न्य रूपक जाँह नुॅ त्रावन
चुॅ त्रनुॅवऽन्य हालुॅतन मँज़ शोलुॅ मारान
स्वप्न, ज़ाग्रथ सुषप्ती मँज़ चुॅ रोज़ान
चुॅ पातालस तुॅ स्वर्गस मुत्युलूकस
स्वरूप च्योनुय करान ठहराव तत्यन बस
त्रलूक धारान ब्रह्मा वेंष्णो महेश्वर
रटान रास त्रिभुवनुॅच्य त्रनुॅवय छि अमर
छुं चूरिम च्योन परमय धाम आसान

तुरीधाम यथ छि ज्ञाऽनी लूक मानान
छि अथ चेतन स्वरूपस भर्ख़ुत्य सुमराण
ब्रह्मा वेंष्णो महेश गोंण व्यचारान।।

२८.

भवः शर्वा रूद्रः पशुपतिरथोग्र सहमहांस्तथा
भीमेशानाविति तदाभिधाना ष्टकमिदम
अमुष्मिन प्रत्येकं प्रविचरिति देवा श्रुतिरपि
प्रियायस्मैधामने प्राणिहितनमस्योऽस्मिभवते!

काऽशुर तरजमुँ

करान प्रथ रंगुॅ छुख शोंभ सृष्टिकर्ता
चुॅ देवादिदेव रुदन हुन्द विधाता
करान योंद क्रूध जगतस तोति पालान
चुॅ दीवन मँज़ महादीव छुय परमथान
चुॅ छुख गाहे भयानक रूप धारान
चुॅ छुख ना शानुॅ बोंड़ प्योंय नाव ईशान
चुॅ छुख रंगुॅ रंगुॅ कम कम रूप धारान
गरीब छुस भावुॅ ड़लुॅ पम्पोश सोज़ान।।

२९.

वपुषप्रार्दुभावाद् अनुमितिम इदं जन्मनि पुरा
पुरारे नैवाहम कौचिद्पि भवन्तम प्रन्तिवान
न, मन, मुक्ता समप्रत्यि प्यनुँ अहमगरेप्यन्तिमान
महीश क्षन्तव्यम तत इदं अपराधं दूयंपि!

काऽशुर तरजमुँ

म्यें शिवजी पऽतिम जन्मय आसहन पाप

अगर नय आसहन तेंलि मा वलन शाप
असीय योंद आसुँहन पोंन्य कर्म कऽरिमित्य
मनुष्य तेंलि आसहन दीवलूक खऽत्यमुँत्य
म्यें काँह नतुँ काँह अतुर छुम पानुँ कोंरमुत
तवय यथ मनुष्यलूकस मँज़ फस्योमुत
मनुष्य यूनी युन गव डंड़ भूगुन
कर्म छुम खोंट पऽतिम छुम अज म्यें पूरुन
खता कुस पऽतिमि ज़न्मय खोंत म्यों भगवान
बुँ मा पाद चाऽन्य ओसुस शेरि लागान
नमस्कार छुय करान अकि लटि ति युस जन
सु छुय पतुँ जन्मुँ–जन्मन मूक्ष सपदन
करुँन्य चाऽन्य अस्तोंती छुनुँ ज़न्म धारूण
लऽभिथ मोंख्तीय नमस्कार पतुँ नुँ सोजुन
पुर्वु ज़न्मय नमस्कार छुम नुँ कोंरमुत
लऽभिथ मोंख्तीय यितुँ गछ़ आसि चोंलमुत
स्यठा दुर्लभ करून तेंलि म्योन नमस्कार
चुँ बख्शुम यिम जुँ पाप छुख बखशनहार।।

३०.

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर। महिष्ठाय च नमः
नमोवर्षिष्ठाय त्रिनयन। यविष्ठाय च नमः
नमः र्सवस्मै ते तत्-इदम्-इति शर्वाय च नमः।

काऽशुर तरजमुँ

च्यें शिवजी कामदीवस कोंरूथ समहार
गहे नखुँ नखुँ गहे दूर म्योन गमखार

गहे कोता लकुट प्यून्त रूप धारान
गहे बाऽरीक भयानक रूप बनावान
चुँ छुख कुस काँह ति छुय नो प्रज़ुँनावान
बुँ चान्यन रूँपनुँय जयकार सोज़ान।।

३१.

बहलरजसे विशवोत्पतौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्वोद्रिकतो मृड़ाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रेगुण्ये शिवाय नमो नमः।

काऽशुर तरजमुँ

रजूग्वनुँ सान भव रूप तेंलि चुँ धाराण
चुँ येंलि येंलि आसहम सम्सार बनावान
सतोग्वन रूप सृष्टी छुख चुँ पालान
तमोग्वन रूप प्रलयस प्यठ चुँ धारान
त्रगोंन त्राऽविथ दिवान छुख पानुँ मोंख्ती
तुँ धारान शान्त न्यरगोंण रूप शिवजी
गरीब चाऽनिस प्रकाशस शिव स्वरूपस
करान छुय ना नमस्कार सिर्यि तीज़स।।

३२.

कृशहरिणति चेतः कलेशवश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लघिंनी शश्वत-ऋद्धिः
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद
– चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम

काऽशुर तरजमुँ

थज़र तय बेंयि बज्जर च्योन आँऽतुॅरोंस्तुय
छु महिमा च्योन पऽज्य पाऽठ्य वोन्तुॅ रोंस्तुय
भऽरिथ राग दुयतुॅ पापव सूॅत्य छुम मन
वोंलुस मायायि ज़ालन छुख चुॅ बोज़न
लभुन अति तार छुम दुष्वार बासान
छि इन्द्रे वश करान मन कूरुॅनावान
यि छुम हाऽबथ बुॅ कवुॅ ह्यकुॅ गोंण व्यचाऽरिथ
सिर्फ चाऽन्य भऽखुॅतिया मेंति हेंकि बचाऽविथ
अमी भऽखुॅती दिचुॅम ह्यमत तुॅ विशवास
बुॅ वाऽणी रूॅप् पोश चेंय लागने आस
म्यें मा छम सामर्थ गोंण चाऽन्य गयवुहा
म्य भऽखुॅती भावुॅ पोश खऽत्य यिम रटखना।।

३३.

श्री पुष्पदन्तमुखपंकजर्निगतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरत्रियेण
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपर्तिमहेशः

काऽशुर तरजमुॅ

बयान कोंर पुष्पदन्तन च्योन महिमा
स्तोत्र गालि पापन कड़ि सु तमना
स्तोत्र शिवजियसुॅय खोंश करान छुय
परन वाल्यन यि जल जल वर दिवान छुय
करी युस पाठ कण्ठस राग अमिकुय
शरण युस यिय तऽमिस टोठान शिवजी
गरीब रोपोश तस पम्पोश लागान
छि भावुॅच ही फोंलान मन वाऽर मुशकान।।

३४.

इत्येषा वांगमयी पूजा श्रीमतशंकरपादयोः
अर्पिता तेन में देवः प्रियतां च सदाशिवः

काऽशुर तरजमुँ

स्तोत्र रूँप पूजा कऽर म्यें शंकर
बुँ लागय चरणुँ कमलन छुख महेश्वर
बुँ लागय भावुँ रूँपीय लोलुँ कोसम
म्यें टोठुम रोज़तम सन्मोख म्यें हरदम।।

३५.

असितिगिरिसमं स्याकजजंल सिंघुपात्रे
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी
लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानमीश पारं। न याति।

काऽशुर तरजमुँ

अगर मील सरस्वती नील पर्बतुँच्य ज़न
समन्दर रूप बानस मील त्रावन
कलम अख कल्पवृक्षस ज़न बराबर
तुँ ब्येहमव लेख्न्ये गोंन चाऽन्य शंकर
लबव अन्द शान्द कति चान्यन गोंनन अऽस्य
ग्यवव गोंन सामर्थ कति प्येयि कलम वऽस्य।।

३६.

असुर सुरमनीन्द्रैर चितरस्येन्दुमौले-
ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुण स्येखरस्य
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो

रुचिरमलधुवृतै स्तोत्रमेतच्चकार।

काऽशुर तरजमुॅ

महिम्ना वुछ स्तोत्र माऽरिमोन्द जान
गोंणन मँज़ युस सरस छुय शोंलुॅ मारान
मुनी यूगी तुॅ राख्यस अथ छि पूज़ान
शिवस चन्द्रम ड्यकस प्यठ क्या छु लूभान
गोंणन चान्यन हुँन्ज़ुॅय शोंहरथ छि तरफन
चुॅ छुख थदि पायि यूगी सॅूत्य न्यरग्वन
भऽखुॅत्य चाऽन्य भाऽव्य ग्वन अऽम्यि पुष्पॅदन्तन
तुॅ व्यछुॅनाऽविन स्वन्दर पाऽठ्य मँज़ श्लूकन।।

३७.

अहरहरनवहां धूर्जटः स्तोत्रमंतत
पठति परशक्त्या शुद्धचितः पुमान्यः
स भवति शिवलोकेरूद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीतिमांश्च

काऽशुर तरजमुॅ

युसुय नित्य न्येमुॅ परि चान्यन श्लूकन
पऽरिथ शोंद मन शिवलूकस छि वातन
सु छुय इन्द्राजुॅ ह्युव बोंड़ राज प्रावान
सु राज़ा ताजुॅ ज़न गुलज़ार छावन
सु छुय भूगान कम कम सोंख तुॅ आनन्द
लबान हुर आय धन संतान अन्दुॅ वन्द।।

३८.

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः
श्रधोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरोः नमः।

काऽशुर तरजमुँ

वोंत्यम बस दीवताहन मँज़ छु शंकर
तवय अऽम्यसुन्द महिम्नापारं जल पर
करान युस लोलुँ माये चाऽन्य पूज़ा
तऽमिस छुनुँ जाँह ति पूजुन काह ति दिवता
अघूर अख च्योन मन्त्र लाज़वाऽली
ग्वरन हुन्द छुख गोंरू चुँय लामिसऽली।।

३९.

दीक्षा दानं तपस्तीर्थ ज्ञानं योगादिका क्रियाः
महिम्नस्तवपाठस्य कलां र्नाहन्ति षोड़शीम।

काऽशुर तरजमुँ

करन तप ज़प तुँ बेंयि दिन दान दख्यिना
हवन यज्ञ ज्ञान दिन र्तिथन गछ़नना
यि केंछ़ा फल यिमन म्येलान अम्युक छुय
शुराऽहिम हिस्सै महिम्ना पारकुय छुय
परी युस काँह महिम्नापार हुब्बुँ सान
तऽमिस तप ज़प यज्ञ करुँन्यी नुँ आसान
तऽमिस रिद्धी तुँ स्यद्धी आयितन छय
करान युस शीवुँ शीवय शीवुँसुँय जय।।

४०.

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजाः
शशिधर वर मोले र्देवस्य दासः
स खलु निज महिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोबात
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः।

काऽशुर तरजमुँ

यि आचाऽर्य पुष्पदन्त ओस पत्यिमि जन्मय

गंधर्व कोसम दर्शन नावुँकुय हय।
दपान करताम बूज़ अऽम्य चूरि चूरे
करान आनन्द सम्वाद शक्ति–शिवे।
वुछुन याम शिवजियन ध्युत शाप अंऽम्यिसऽय
चुँ बस बोंन दीवुँलूकय बन चुँ मनुशुय।
अलोकिक युथ महिम्नापार ल्यूखुन
दितुस युथ शिवजियन फल मोंख्तुँ साँऽपुन।।

४१.

सुखरमुनिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः
ब्रजति शिसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्वतनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम।

काऽशुर तरजमुँ

महिम्ना पारसुँय चाऽनिस छि पूज़ान
ऋषी मुनी तुँ दिवता लोंलि छि ललवान
सोन्दर तय लूभुँवुन्य बस चाऽन्य लीला
लबान मोंखती तुँ प्रावान स्वर्गधारा
अखा युस वश कऽरिथ यऽन्द्रेय तुँ ब्येयि मन
गंऽड़िथ गुल्य च्योन महिमा सेज़ि सुमरण
यिवान नखुँ च्येय निशन शिव रूप प्रावान
तऽमिस हयेरि स्वर्गुँ दिवता पोष त्रावन।

४२.

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुष्पगन्र्धव-भाषितम
अनौपरय मनोहरि पुण्यमीश्वरवणर्म्।

काऽशुर तरजमुँ

छू हर रंग पूरुँ महिम्नापार च्योनुय
कमावान पोंन्य करान कल्याण सोनुय
छु नो ब्येयि कॉँह ति ग्रंथा अथ बराबर
तवय शिव कोंड़ बनावुन पनुन मन सर।।

४३.

तव तत्वं न जानामि कीदृशेऽसि महेश्वरा
याहशोसि महादेव तादृशय नमो नमः

काऽशुर तरजमुँ

मशहूर छुख च्योन महिमा कॉँह नुँ ज़ानान
छि कम यूझी तुँ ज्ञाऽनी ओंत नुँ वातान
चुँ यिथुँ कऽन्य येंति ति आसख पानुँ रोज़ान
बुँ छुस ड़ाऽल्य भावुँ पोशिच तूरिय सोज़ान

४४.

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेत सदा
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोकं स गच्छति

काऽशुर तरजमुँ

महिम्नापार च्योनुय युस व्यचारान
परान नित्य नेमुँ बारम्बार सुमरान
सु छुय सम्साऽरिय पापव निश गछान नूर
सु रोज़ान दूषि रोंस पश्पान छुस नूर
लबान मोंकुँजार शिव लूकस छु वातान
बऽनिथ शिवतन ***गरीब*** लूभस छु ज़ालान।

भख्त्यन तुँ श्रद्धालुवन हुँज़ तीज़ुँ आगुँरुच भावथः-

Mystical experience does not lend itself to rational exposition.

Reason belongs to the domain of the tirst attention, while the mystical experience belongs, as the Mexican sages put it, to the second attention. Intellecual understanding is, at best, only peripheral. Reality is to be seen with ones ears and heard with ones eyes.

Not with standing, Mystics' urge to share their experience with their fellow-beings is inexplicably irrepressible. The mystics do not need words among themselves. In their domain silence is more eloquent than speech.

Yet, the fact remains that a handful of the initiated is but a drop in the vast sea of humans crying for enlightenment and subsequent release. It is for the sake of this multitude that the mystic puts his experience in words. It is usually a description and not a discussion. That is perhaps why it is seldom scholastic or wordy. Most often it is couched in words and phrases used in day to day life by common man. The term is invariably, lyrical.

Shriyut Pranji is my Sibling. He established himself as a poet of note in his early youth. How he graduated from the sphere of mundane poetry to the realm of the celestial song is more than I can tell now he abides in the realm of the mystic.

It is not an anthology of his devotional songs that we hold in our hands in the form of a book. It is his experience of the ultimate that he seeks to relate with a view to enlightening men like me who continue to live in error and ignorance. May we all be enlightened and his effert come to fruition.

PROF. G.L. BHAT, (MURRAN)
G.M. Science College, Jammu

अथ सान्यि ऋषि वारि यथ मंज़ शिव प्रकाशिक्य अलौकिक सिर्यि तमि अनुमानु प्रज़ुॅल्येयि तुॅ प्रज़लान रूध्य ज़ि अन्तःकरणन हुँन्ध्यन रवुॅकन प्यव त्युथ परतव ज़ि च़्यत रूॅपी आकाशस प्यठ आयि कुल कायिनातुॅक्य अज़ुॅमतुक्य तारख यिमन अभिनन्दन करान।

न छुम त्युथ ज्ञान, न ध्यान न अनुभवुॅच्य माऽरिमोंज़ सऽदुरुॅखोंन ज़ि बुॅ करुॅ भावत तऽमिस शिवस्वरूप आननद स्वामी योगीराज भाईजी महाराजिन्य यिम ज़न स्योंद सादुॅ मनुष्यि रूपसमंज़ गुपिथ यूगीश्वर छि। परमानन्दी आभास छुम तुॅ अमिचि टाकारुॅ सिर्यि ज़ुॅचुॅ छम तजरुबन पोछर दिवान तुॅ आय बख्शान। कम ज्ञाऽनी तुॅ गाटुॅल्य छि अति परेशान, क्या तरन यूगुॅ सऽदुॅर योंताम नुॅ यूगुॅ छांठ हेंछन यूगीश्वरस निश। न छुम अन्धुॅ विश्वास, न छुम हंगुॅ मंगु समर्पण आमुत–केंह चिह्य छि तिथ्य ति यिवान येंलि सतुॅग्वरुॅ सुँज़ि कृपायि सूॅत्य सम्पूर्ण सृष्टि हुन्द आनन्द अन्तःकरणन हुँन्ध्यन तहखानन मंज़ वासुॅनायि रोंस परमानन्दी रास करान तुॅ बासान छुम सम्पूर्ण सृष्टि छस बुॅय। मगर हना च़्यथ दिथ छस दपान यि सोरुय करुॅ अपर्ण पनुॅनिस टाऽठिस बबुॅराजस योगेन्दरस तुॅ यूगीश्वरस पादि कमलन हुँन्ज़ि गंदि। यि संजीवनी छि पऽज़्य पाऽठ्य अमृत कोंड़ तिमन भऽखुॅत्यन त्रेशि हत्यन साधकन तुॅ श्रृद्धालुअन हुँन्दि बापथ यिम दयस छारान तुॅ गारान छि! स्यदुॅमोल म्योन भाईजी महाराज छुम दपान च़्ये छुय लल बनुन। अऽश्यधार छम वसान तुॅ अन्तःकरणन छुम सुॅसर लगान ज़ि बुॅ अख साधारण नाऽरी कति वातुॅ शिव आकाशस मगर बासान छुम परित्याग तुॅ यऽन्द्रियनहुँन्द गुहुल नार छुम छ्यत

गोमुत तुॅ व्यतुॅ सूरस छुनुॅ कॉंह लूभ तुॅ निष्कल कल छम वुहान तवय मा हाव्यम दय दयिगत सत्वर स्वरूपस मंज।

वेदन तुॅ उपनिषदन हुन्द रस च्यथ छु म्योन यूगीश्वर भाईजी महाराज शिव गर्भस मंज़ पान खटान तवय छु सम्साऽरियन गाहब्यगाह भ्रम लगान।

क्यां भावुॅ आलोक मंडुॅलस?—बस म्योन नत—मस्तक प्रणाम छु भाईजियन्यन तिमन जायन तुॅ भऽखुॅत्यन येंत्यन तिम आत्म—प्रकाशस वेंष्ठुर तुलान छि।

समर्पित ग्वरुॅ प्रकाशिच
धूल
विजय रैना
आर्युविज्ञान नगर
नई दिल्ली

"Sanjeevani Bhajan Shankhala"— a collection of some of a multitiude of verses (Bhajans) yet to be printed bespeak volumes about mystic experiences of such a commanding hieght of the order of the Yogeshwara none other than "Bhaiji Maharaj"—the Master in salutation to whom I lay prostrate. The quintessence of the exposition is that in search of ultimate truth, this mundane world of material listic achievements pales into insignificance before the powerful and respelendent manifestations unfolded by unrelenting Sadhna, Surrender, Compassion, love, devotion and one-pointed direction to hormonise the inner being and thus the hymns and verses popularly known as "Leela—Bhajans" in common parlance in Kashmiri language encompassing the instant collection inspire a spiritual aspirant to tread into world of

truth and immannence. The massage of Kashmiri Shaivism has universal application and universalisation of Shiva surfaces from in-deapth experiences reflected in this Bhajan Sangrha—the Sanjeevani. Every word in every lyric and every sentence of each lyrical verse encompasses hidden and true cosmic fulness of etrnity. May "Sanjeevani" prove a treasure-house of bliss and God-realization to the seekers of truth!

— With humble submission
RAMESH C. JAD
(ANANTNAG) NARIANA VIHAR,
NEW DELHI

कशमीर एक विस्तृत स्वरूप है शिवर्दशन का। यह वह धरती है, जहाँ ऋषियों, मुनियों, साधुओं और योगेश्वर महात्माओं ने जन्म लेकर इसकी प्रकृति में आलोक और परमार्थ को केन्द्रभूत किया। सम्भवतः इसी धरती से, इंसी धरती के प्रवाहित संगम से हमारे पूज्यनीय गुरूदेव आनन्दस्वामी भाईजी महाराज जन्मे। उनके सम्पर्क में आकर मैंने क्या अनुभव किया। उसको शब्द देना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। एक साधक अथवा योगी की पहचान तब ही हो जाती है जब हम उनके अन्तरर्गभ को बारीकी से देख पायेंगे परन्तु अलौकिक नेत्रों तथा गुरू कृपा बिना अर्न्तर गभ मण्डल में प्रवेश करना असम्भव है। मनुश्य रूपी योगी की पहचान बाहरी गुणों से नहीं की जा सकेगी क्योंकि एक साधारण प्राणी और योगेश्वर में प्रकृति गुणों में लगभग समानता होती है। सत्संग के द्वारा उन्होंने भजनों और अनुभवों के द्वारा हमारे अन्तःकरणों में अमर 'संजीवनी' का रस

तो भर ही दिया परन्तु इस आनन्द अवस्था को परमानन्दी अवस्था तक ले जाने के लिए भक्ति, श्रृद्धा, विश्वास, तथा सर्म्पण की नितांत आवश्यकता है। गुरू द्वार में ही मोक्षद्वार है और सम्पूर्ण पराशक्तियां गुरू शिष्य के अनुशासित क्रम में ही सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन करके निर्माण और संहार के चक्र को चलाते हैं। स्वामी आनन्द स्वामी भाईजी महाराज की 'संजीवनी' वास्तव में समस्त भक्तजनों के लिए 'संजीवनी' ही प्रमाणित होगी, यदि ज्ञान का तत्व भक्ति के नीर से सींचा जाए! उनकी मधुर वाणी में उनके ही लिखित मंत्र व चित्तरूपी गगन मण्डल पर शीतल प्रकाश के सूर्य उभरते नज़र आते हैं!

मेरी यह हार्दिक कामना है कि सतगुरू वाणी सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अभय वरदान सिद्ध हो! मैं धूली का एक कण सदा पूज्यनीय योगेश्वर आनन्दस्वामी भाईजी महाराज के चारण कमलों में ही लिपटी रहूँ ताकि आन्तरिक प्रकाश मुखरित हो।

– ललिता रैना
ग्रेटर कैलाश,
नई दिल्ली

शवेत शिव प्रकाश की सजीव मूर्ति और ज्ञान–शील का केन्द्र बिन्दु आनन्द स्वामी भाई जी महराज का शांत स्वभाव उस परमतत्व की धरोहर है जहां साधना, तपस्या, योग तथा समदृष्टि का सूत्रपात होता दिखाई देता है।

भाव–प्रधानता ज्ञान प्रधानता तथा तत्त्व प्रधानता का अनुपम

संगम इस सम्पूर्ण 'संजीवनी' नामक काव्य श्रृंखला में दृश्टिगोचार होता है। मैं शत–शत कोटि–कोटि नतमस्तक प्रणाम गुरू चरणों में समर्पित करती हूं जिनके श्री चरणों की धूल से मुझ साधारण व्यक्ति में भी कुछ शब्द लिखने की प्रेरणा मिली। अलौकिक यात्रा में सांसारिक बाधाओं का होना स्वभाविक है परन्तु जब भक्ति, श्रद्धा, विश्वास और सम्पर्ण एक लय हो जाते हैं तो वास्तविक ज्ञान अनुभवों की आधारशिला पर अमरता का वरदान प्राप्त करता है। एक–एक भजन आननद स्वामी भाईजी महाराज के अनुभव से ओत–प्रोत साधना का प्रकाश केन्द्र है। गुरू शिष्य का क्षितिज गगन मंड़ल के पार योग अवस्था की अनुभूती का प्रधानत्त्व तब ही दिव्य दृष्टि का केन्द्र बिन्दू बन जाता है जब गुरू की गुरूता मानसपटल पर अंकित हो जाती है। गुरू अथवा शिव, जगत जननी अथवा शक्ति, ये सम्पूर्ण पराशक्तियां इस सारी सृष्टि के सर्वज्ञ, सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान अलौकिक सूर्य है जो शून्य से लेकर प्रकाशस्थान तक नियमानुसार परमशक्तियों का दर्शन कराते हैं। परम पूज्यनीय भाईजी महाराज के इस 'संजीवनी' नामक भजन संग्रह में नव रस, भक्तिवत्सलता, शिव दर्शन परिपूर्ण योगी का अनुभव, अलौकिक प्रेरणा का शांत स्तोत्र, संसार का नश्वर गुण तथा आराधना, प्रार्थना, याचना, सत्य–प्रकाश, ज्ञान–प्राण, इन्द्रियों का अभ्यास शिला पर मंथन निहित है। प्रभू मेरे सत्गुरू का प्रकाश भूमण्डल से लेकर परमस्थान तक फैला दे। संत, साधक अथवा योग्शेवर निन्ध्या, स्तुति प्रशंसा से बहुत ऊँची उड़ान भरकर

सम्पूर्ण प्राणियों के लिए शांति और कल्याण के लिए सत्गुरू और प्रभु से याचना करते रहते हैं। भजनों के गर्भ में जाकर स्वगर्भ तब ही विस्तार को छूता है जब साधक आनन्द स्वामी भाईजी महाराज के वेदों से ओत–प्रोत वाणी को श्रवणों के द्वारा अन्तःकर्ण की सीमाओं में उतार देता है। क्या लिखूं योग्ी के विषय में जो बिन्दू में सागर की परिभाषा भी नहीं। मेरा शत–शत प्रणाम बारम्बार स्वीकार करें। लिखने में कोई त्रृटि रही हो मुझे क्षमा करें।

गुरू चरणों की धूल
पम्पोश जद
नारायणा विहार
नई दिल्ली

लफ्ज़ुॅ चाऽर छि राऽस्य गछ़ान येंल्यि यूगीश्वर भाईजी महाराजस तुॅ यिहिंज़ि "संजीवनी" प्यठ कलमस वाश कड़व। म्ये छु बासान शिव स्वरूप भाईजी महाराज छि शिव गाशि नारुॅक्य अन्तःकरण। साधुॅनायि हुॅन्ज़ुॅ कोंलुॅ छि ग्वरुॅदेव सुँनदिस सऽदुरस मँज़ रास गिन्दान। अख–अख भजन छु अभ्यासुक तुॅ अनुग्रहुक ताबनाक सिर्यि। कलम छु वऽस्य प्यवान तुॅ ज़्यव ग्ल्य ग्ल्य गछ़ान भाईजी महाराज सुन्द यूगुॅ बोलुॅ बोश बूज़िथ। प्रकाश छु थकान शिव आलोक वुछिथ। म्योन शत–शत कोटि प्रणाम भऽविन

म्याऽनिस ग्वरुँदीवस तुँ तिहिन्दिस अज़मतस।

समर्पित दास

आई-के-रैना

पटोली जम्मू

गुरूदेव की पुस्तक 'संजीवनी' का प्रकाशन हम सब शिष्यों, उनके साथियों तथा प्रेमियों के लिये अत्यन्त हर्ष का विषय है। संजीवनी का हर शब्द हमारे लिये अनमोल रत्न है क्योंकि यह गुरूदेव के अपने अनुभवों से ओत–प्रोत है। इस वाणी को सुनते ही मनुष्य इतना प्रभावित होता है कि वह सब कुछ भूलकर एक भँवरे की भांति उनके पास मंडराता रहता है ताकि वह उनसे आत्मज्ञानवर्द्धक वाक्यों को सुन सके तथा उनके मुख से निकले हुए शब्द रूपी मोतियों को समेट सके। यह अमूल्य निधि जोकि हमारे गुरूदेव की अपूर्व देन है आज के मनुष्य को मानसिक शांति देगी तथा उसे संसारिक बन्धनों से छूटने का रास्ता दिखायेगी। जब भी हम गुरूदेव की वाणी को सुनते हैं तो पता चलता है कि चारों वेद अठारह पुराण तथा कितने ही अन्य शास्त्र इनकी वाक शक्ति में ठहरे हुए हैं। इन प्रकाश पुंज योगेश्वर को सिवाए दूसरों का उद्धार करने के ओर किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। यह पुस्तक इस बात का प्रमाण है। मुझे पूर्ण आशा है कि जो लोग इसे पढ़ेंगे, अन्नत लाभ उठायेंगे।

मैं अपने गुरूदेव का अत्यन्त आभारी हूं, जिन्होंने मुझे यह दो शब्द लिखने का अवसर दिया। त्रुटियों के लिये क्षमा चाहती हूं।

कृष्णा कौल
सेक्टर-३७, नौयडा

The cultural life of Kashmir has had the influence of great mystics and Shaivites. The latest to add to this tally is Shriyut Prannath Bhat "Gareeb" of Murran, Kashmir, a communion with whom on 8th January 1998 at Police houseing Colony, Gandhi Nagar, Jammu embossed a perrennial impression on me. We had our early education at Murran and Pulwana. Both of us were influenced in early life by the grace, benevolence and Kripa of Holy Mother — "Brari Maaji."

His commentry on Shrimat Bhagavad Gita, his spiritual hymns and Leelas speak volumes about his attainments. His life is dedicated to revival of spiritual values. He emphasises that the object of human being is attainment of God realisation and advocates that dependence on God delivers him from the dependence on the material world. Gareeb's spritual content reveals that death is ever sweetest and life bows before it. Lastly I understand that Gareeb's transition into fully grown, emancipated and illuminated soul was possible and achieved only by Guru Kirpa. May this Kirpa be showered on all of us through the medium of Shree Gareeb!

DR. RATTAN LAL DHAR (MURRAN)
MSc., PHD., FHS.
UGC VISITING FELLOW
JAMMU UNIVERSITY
DEPARTMENT OF BIO-SCIENCES

(राज्ञा भगवती तुलमुल्ला - क्षीर भवानी, कशमीर)